ISSN 2229-547X VIDEHA

'विदेह' २३३ म अंक ०१ सितम्बर 2017 (वर्ष १० मास ११७ अंक २३३)

ऐ अंकमे अछि:-

Go to the link below for download of old issues of VIDEHA Maithili e magazine in .pdf format and Maithili Audio/ Video/ Books/ paintings/ photo files. विदेहक पुरान अंक आ ऑडियो/ वीडियो/ पोथी/ चित्रकला/ फोटो सभक फाइल सभ डाउनलोड करबाक हेतु नीचाँक लिंक पर जाउ।

VIDEHA ARCHIVE विदेह आर्काइव

Join official Videha facebook group.

Join Videha googlegroups

Follow Official Videha  Twitter to view regular Videha Live Broadcasts through Periscope.

विदेह जालवृत्तक डिसकसन फोरमपर जाउ।

संपादकीय

विदेह "नेपालक वर्तमान मैथिली साहित्य" विषयक विशेषांक निकालबाक नेयार केलक अछि जकर संयोजक श्री दिनेश यादव जी रहता।

अइ विशेषांकमे नेपालक वर्तमान मैथिली साहित्य केर मूल्यांकन रहत। अइ विशेषांक लेल सभ विधाक आलोचना-समीक्षा-समालोचना आदि प्रस्तावित अछि। समय-सीमा किछु नै जहिया पूरा आलेख आबि जेतै तहिये, मुदा प्रयास रहत जे एही साल मइ-जून धरि ई विशेषांक आबि जाए। उम्मेद अछि विदेहक ई प्रयास दूनू पायापर एकटा पूल जरूर बनाएत।

विदेह द्वारा संचालित "आमंत्रित रचनापर आमंत्रित आलोचकक टिप्पणी" शृंखलाक दोसर भागक घोषणा कएल जा रहल अछि। दोसर भागमे अइ बेर नीलमाधव चौधरी जीक रचना आमंत्रित कएल जा रहल अछि आ नीलमाधवजीक रचना ओ रचनाधर्मितापर टिप्पणी करबा लेल कैलाश कुमार मिश्रजीकेँ आमंत्रित कएल जा रहल छनि। दूनू गोटाकेँ औपचारिक सूचना जल्दिये पठाओल जाएत। रचनाकारक रचना ओ आलोचकक आलोचना जखने आबि जाएत ओकर अगिला अंकमे ई प्रकाशित कएल जाएत।

अइ शृंखलाक पहिल भाग कामिनीजीक रचनापर छल आ टिप्पणीकर्ता मधुकांत झाजी छलाह।

जेना की सभ गोटा जनै छी जे विदेह २०१५ मे तीन टा विशेषांक तीन साहित्यकारपर प्रकाशित केलक जकर मापदंड छल सालमे दूटा विशेषांक जीवित साहित्यकारक उपर रहत जइमे एकटा ६०-७० वा ओइसँ बेसी सालक साहित्यकार रहता तँ दोसर ४०-५० सालक (मैथिली साहित्यकार मने भारत आ नेपाल दूनूक)। ऐ क्रममे अरविन्द ठाकुर ओ जगदीश चंद्र ठाकुर "अनिल"जीपर विशेषांक निकलि चुकल अछि। आगूक विशेषांक किनकापर हुअए तइ लेल एक मास पहिनेसँ पाठकक सुझाव माँगल गेल छल। पाठकक सुझाव आएल आ ओइ सुझाव अंतर्गत विदेहक किछु अगिला विशेषांक परमेश्वर कापड़ि, वीरेन्द्र मल्लिक आ कमला चौधरी पर रहत। हमर सबहक प्रयास रहत जे ई विशेषांक सभ 2018 मे प्रकाशित हुअए मुदा ई रचनाक उपलब्धतापर निर्भर करत। मने रचनाक उपलब्धताक हिसाबसँ समए ऊपर-निच्चा भऽ सकैए। सभ गोटासँ आग्रह जे ओ अपन-अपन रचना editorial.staff.videha@gmail.com पर पठा दी।

विदेह सम्मान

विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी सम्मान

१.विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी फेलो पुरस्कार २०१०-११

२०१० श्री गोविन्द झा (समग्र योगदान लेल)

२०११ श्री रमानन्द रेणु (समग्र योगदान लेल)

२.विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार २०११-१२

२०११ मूल पुरस्कार- श्री जगदीश प्रसाद मण्डल (**गामक जिनगी**, कथा संग्रह)

२०११ बाल साहित्य पुरस्कार- ले.क. मायानाथ झा (जकर नारी चतुर होइ, कथा संग्रह)

२०११ युवा पुरस्कार- आनन्द कुमार झा (**कलह**, नाटक)

२०१२ अनुवाद पुरस्कार- श्री रामलोचन ठाकुर- (**पद्मानदीक माझी**, बांग्ला- मानिक बंद्योपाध्याय, उपन्यास बांग्लासँ मैथिली अनुवाद)

विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपमे प्रसिद्ध)

1.विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी फेलो पुरस्कार 2012

2012 श्री राजनन्दन लाल दास (समग्र योगदान लेल)

2.विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपमे प्रसिद्ध)

२०१२ बाल साहित्य पुरस्कार - श्री जगदीश प्रसाद मण्डल कें “**तरेगन**” बाल प्रेरक विहनि कथा संग्रह

२०१२ मूल पुरस्कार - श्री राजदेव मण्डलकेँ "**अम्बरा**" (कविता संग्रह) लेल।

2012 युवा पुरस्कार- श्रीमती ज्योति सुनीत चौधरीक “**अर्चिस**” (कविता संग्रह)

2013 अनुवाद पुरस्कार- श्री नरेश कुमार विकल "ययाति" (मराठी उपन्यास श्री विष्णु सखाराम खाण्डेकर)

विदेह भाषा सम्मान २०१३-१४ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपमे प्रसिद्ध)

२०१३ बाल साहित्य पुरस्कार श्रीमती ज्योति सुनीत चौधरी- “**देवीजी**” (बाल निबन्ध संग्रह) लेल।

२०१३ मूल पुरस्कार - श्री बेचन ठाकुरकेँ "**बेटीक अपमान आ छीनरदेवी**" (नाटक संग्रह) लेल।

२०१३ युवा पुरस्कार- श्री उमेश मण्डलकेँ “**निश्तुकी**” (कविता संग्रह)लेल।

२०१४ अनुवाद पुरस्कार- श्री विनीत उत्पलकेँ “**मोहनदास**” (हिन्दी उपन्यास श्री उदय प्रकाश)क मैथिली अनुवाद लेल।

विदेह भाषा सम्मान २०१४-२०१५ (समानान्तर साहित्य अकादेमी सम्मान)

२०१४ मूल पुरस्कार- श्री नन्द विलास राय (**सखारी पेटारी**- लघु कथा संग्रह)

२०१४ बाल पुरस्कार- श्री जगदीश प्रसाद मण्डल (**नै धारैए**- बाल उपन्यास)

२०१४ युवा पुरस्कार - श्री आशीष अनचिन्हार (**अनचिन्हार आखर**- गजल संग्रह)

२०१५ अनुवाद पुरस्कार - श्री शम्भु कुमार सिंह (**पाखलो** - तुकाराम रामा शेटक कोंकणी उपन्यासक मैथिली अनुवाद)

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान २०१२

अभिनय- मुख्य अभिनय ,

सुश्री शिल्पी कुमारी, उम्र- 17 पिता श्री लक्ष्मण झा

श्री शोभा कान्त महतो, उम्र- 15 पिता- श्री रामअवतार महतो,

हास्य-अभिनय

सुश्री प्रियंका कुमारी, उम्र- 16, पिता- श्री वैद्यनाथ साह

श्री दुर्गानंद ठाकुर, उम्र- 23, पिता- स्व. भरत ठाकुर

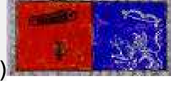
नृत्य

सुश्री सुलेखा कुमारी, उम्र- 16, पिता- श्री हरेराम यादव

श्री अमीत रंजन, उम्र- 18, पिता- नागेश्वर कामत

चित्रकला

श्री पनकलाल मण्डल, उमेर- ३५, पिता- स्व. सुन्दर मण्डल, गाम छजना

ISSN 2229-547X VIDEHA

श्री रमेश कुमार भारती, उम्र- 23, पिता- श्री मोती मण्डल

संगीत (हारमोनियम)

श्री परमानन्द ठाकुर, उम्र- 30, पिता- श्री नथुनी ठाकुर

संगीत (ढोलक)

श्री बुलन राउत, उम्र- 45, पिता- स्व. चिल्टू राउत

संगीत (रसनचौकी)

श्री बहादुर राम, उम्र- 55, पिता- स्व. सरजुग राम

शिल्पी-वस्तुकला

श्री जगदीश मल्लिक,५० गाम- चनौरागंज

मूर्ति-मृत्तिका कला

श्री यदुनंदन पंडित, उम्र- 45, पिता- अशर्फी पंडित

काष्ठ-कला

श्री झमेली मुखिया,पिता स्व. मूंगालाल मुखिया, ५५, गाम- छजना

किसानी-आत्मनिर्भर संस्कृति

श्री लछमी दास, उमेर- ५०, पिता स्व. श्री फणी दास, गाम वेरमा

विदेह मैथिली पत्रकारिता सम्मान

-२०१२ श्री नवेन्दु कुमार झा

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान २०१३

मुख्य अभिनय-

(1) सुश्री आशा कुमारी सुपुत्री श्री रामावतार यादव, उमेर- १८, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) मो. समसाद आलम सुपुत्र मो. ईषा आलम, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(3) सुश्री अपर्णा कुमारी सुपुत्री श्री मनोज कुमार साहु, जन्म तिथि- १८-२-१९९८, पता- गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही,जिला- मधुबनी (बिहार)

हास्य अभिनय-

(1) **श्री ब्रह्मदवे पासवान उर्फ रामजानी पासवान** सुपुत्र- स्व. लक्ष्मी पासवान, पता- गाम+पोस्ट- औरहा, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) टॉसिफ आलम सुपुत्र मो. मुस्ताक आलम, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी (बिहार)

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान (मांगनि खबास समग्र योगदान सम्मान)

शास्त्रीय संगीत सह तानपुरा :

श्री रामवृक्ष सिंह सुपुत्र श्री अनिरूद्ध सिंह, उमेर- ५६, गाम- फुलवरिया, पोस्ट- बाबूबरही, जिला- मधुबनी (बिहार)

मांगनि खबास सम्मान: मिथिला लोक संस्कृति संरक्षण:

श्री राम लखन साहु पे. स्व. खुशीलाल साहु, उमेर- ६५, पता, गाम- पकड़िया, पोस्ट- रतनसारा, अनुमंडल- फुलपरास (मधुबनी)

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान (समग्र योगदान सम्मान):

नृत्य -

(1) **श्री हरि नारायण मण्डल** सुपुत्र- स्व. नन्दी मण्डल, उमेर- ५८, पता- गाम+पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **सुश्री संगीता कुमारी सुपुत्री श्री रामदेव पासवान, उमेर- १६,** पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी (बिहार)

चित्रकला-

(1) **जय प्रकाश मण्डल** सुपुत्र- श्री कुशेश्वर मण्डल, उमेर- ३५, पता- गाम- सनपतहा, पोस्ट_ बौरहा, भाया- सरायगढ़, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) श्री चन्दन कुमार मण्डल सुपुत्र श्री भोला मण्डल, पता- गाम- खड़गपुर, पोस्ट- बेलही, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार) संप्रति, छात्र स्नातक अंतिम वर्ष, कला एवं शिल्प महाविद्यालय- पटना।

हरिमुनियाँ / हारमोनियम

(1) **श्री महादेव साह सुपुत्र रामदेव साह, उमेर- ५८,** गाम- बेलहा, वार्ड- नं. ०९, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **श्री जागेश्वर प्रसाद राउत** सुपुत्र स्व. रामस्वरूप राउत, उमेर ६०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

ढोलक/ ठेकैता/ ढोलकिया

(1) **श्री अनुप सदाय** सुपुत्र स्व. , पता- गाम- तुलसियाही, पोस्ट- मनोहर पट्टी, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **श्री कल्लर राम** सुपुत्र स्व. खट्टर राम, उमेर- ५०, गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

रसनचौकी वादक-

(1) **वासुदेव राम** सुपुत्र स्व. अनुप राम, गाम+पोस्ट- निर्मली, वार्ड न. ०७ , जिला- सुपौल (बिहार)

शिल्पी-वस्तुकला-

(1) **श्री बौकू मल्लिक** सुपुत्र दरबारी मल्लिक, उमेर- ७०, गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) श्री राम विलास धरिकार सुपुत्र स्व. ठोढ़ाइ धरिकार, उमेर- ४०, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

मूर्तिकला-मूर्तिकार कला-

(1) **घूरन पंडित सुपुत्र-** श्री मोलहू पंडित, पता- गाम+पोस्ट बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **श्री प्रभु पंडित सुपुत्र स्व.** , पता- गाम+पोस्ट- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

काष्ठ-कला-

(1) **श्री जगदेव साहु** सुपुत्र शनीचर साहु, उमेर- ३६, गाम- निर्मली-पुरर्वास, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **श्री योगेन्द्र ठाकुर सुपुत्र स्व. बुद्धू ठाकुर उमेर- ४५,** पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

किसानी- आत्मनिर्भर संस्कृति-

(1) श्री राम अवतार राउत सुपुत्र स्व. सुबध राउत, उमेर- ६६, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

(2) श्री रौशन यादव सुपुत्र स्व. कपिलेश्वर यादव, उमेर- ३५, गाम+पोस्ट बनगामा, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

अल्हा/महराइ-

(1) **मो. जीबछ** सुपुत्र मो. बिलट मरहूम, उमेर- ६५, पता- गाम- बसहा, पोस्ट- बड़हारा, भाया- अन्धराठाढ़ी, जिला- मधुबनी, पिन- ८४७४०१

जोगिरा-

श्री बच्चन मण्डल सुपुत्र स्व. सीताराम मण्डल, उमेर- ६०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

श्री रामदेव ठाकुर सुपुत्र स्व. जागेश्वर ठाकुर, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

पराती (प्रभाती) गौनिहार आ खजरी/ खौजरी वादक-

(1) श्री सुकदेव साफी

सुपुत्र श्री ,

पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

पराती (प्रभाती) गौनिहार - (अगहनसँ माघ-फागुन तक गाओल जाइत)

(1) **सुकदेव साफी** सुपुत्र स्व. बाबूनाथ साफी, उमेर- ७५, पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **लेल्हु दास** सुपुत्र स्व. सनक मण्डल पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

झरनी-

(1) **मो. गुल हसन** सुपुत्र अब्दुल रसीद मरहूम, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

(2) **मो. रहमान साहब** सुपुत्र...., उमेर- ५८, गाम- नरहिया, भाया- फुलपरास, जिला- मधुबनी (बिहार)

नाल वादक-

(1) **श्री जगत नारायण मण्डल** सुपुत्र स्व. खुशीलाल मण्डल, उमेर- ४०, गाम+पोस्ट- ककरडोभ, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) श्री देव नारायण यादव सुपुत्र श्री कुशुमलाल यादव, पता- गाम- बनरझुला, पोस्ट- अमही, थाना- घोघड़डीहा, जिला- मधुबनी (बिहार)

गीतहारि/ लोक गीत-

(1) **श्रीमती फुदनी देवी** पत्नी श्री रामफल मण्डल, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

(2) **सुश्री सुविता कुमारी** सुपुत्री श्री गंगाराम मण्डल, उमेर- १८, पता- गाम- मछधी, पोस्ट- बलियारि, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी (बिहार)

खुरदक वादक-

(1) **श्री सीताराम राम** सुपुत्र स्व. जंगल राम, उमेर- ६२, पता- गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) श्री लक्ष्मी राम सुपुत्र स्व. पंचू मोची, उमेर- ७०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

कौँरनेट-

(1) **श्री चन्दर राम** सुपुत्र- स्व. जीतन राम, उमेर- ५०, पता- गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **मो. सुभान**, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

बेन्जू वादक-

(1) श्री राज कुमार महतो सुपुत्र स्व. लक्ष्मी महतो, उमेर- ४५, गाम- निर्मली वार्ड नं. ०४, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) श्री घुरन राम, उमेर- ४३, गाम+पोस्ट- बनगामा, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

भगैत गवैया-

(1) **श्री जीबछ यादव** सुपुत्र स्व. रूपालाल यादव, उमेर- ८०, पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **श्री शम्भु मण्डल** सुपुत्र स्व. लखन मण्डल, पता- गाम- बढियाघाट-रसुआर, पोस्ट_मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

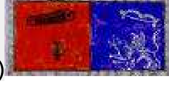
खिस्सकर- (खिस्सा कहैबला)-

(1) श्री छुतहरू यादव उर्फ राजकुमार, सुपुत्र श्री राम खेलावन यादव, गाम- घोघरडिहा, पोस्ट- मनोहर पट्टी, थाना- मरौना, जिला- सुपौल, पिन- ८४७४५२

(2) बैजनाथ मुखिया उर्फ टहल मुखिया-

(2)सुपुत्र स्व. ढोंगाइ मुखिया,

पता- गाम+पोस्ट- औरहा, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)



मिथिला चित्रकला-

(1) **सुश्री मिथिलेश कुमारी** सुपुत्री श्री रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार' पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) श्रीमती वीणा देवी पत्नी श्री दिलिप झा, उमेर- ३५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

खजरी/ खौजरी वादक-

(2) **श्री किशोरी दास** सुपुत्र स्व. नेबैत मण्डल, पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

तबला-

श्री उपेन्द्र चौधरी सुपुत्र स्व. महावीर दास, उमेर- ५५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

श्री देवनाथ यादव सुपुत्र स्व. सर्वजीत यादव, उमेर- ५०, गाम- झाँझपट्टी, पोस्ट- पीपराही, भाया- लदनियाँ, जिला- मधुबनी (बिहार)

सारंगी- (घुना-मुना)

(1) श्री पंची ठाकुर, गाम- पिपराही।

झालि- (झलिबाह)

(1) **श्री कुन्दन कुमार कर्ण** सुपुत्र श्री इन्द्र कुमार कर्ण पता- गाम- रेबाड़ी, पोस्ट- चौरामहरैल, थाना- झंझारपुर, जिला- मधुबनी, पिन- ८४७४०४

(2) **श्री राम खेलावन राउत** सुपुत्र स्व. कैलू राउत, उमेर- ६०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

बौसरी (बौसरी वादक)

श्री रामचन्द्र प्रसाद मण्डल सुपुत्र श्री झोटन मण्डल, उमेर- ३०, बौसरी/बौसली/बासुरी बजबै छथि। पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

श्री विभूति झा सुपुत्र स्व. कनटीर झा, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- कछुबी, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

लोक गाथा गायक

श्री रविन्द्र यादव सुपुत्र सीताराम यादव, पता- गाम- तुलसियाही, पोस्ट- मनोहर पट्टी, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

श्री पिचकुन सदाय सुपुत्र स्व. मेथर सदाय, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

मजिरा वादक (छोकटा झालि...)

श्री रामपति मण्डल सुपुत्र स्व. अर्जुन मण्डल, पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

मृदंग वादक-

(1) **श्री कपिलेश्वर दास सुपुत्र स्व. सुन्नर दास,** उमेर- ७०, गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **श्री खखर सदाय** सुपुत्र स्व. बंठा सदाय, उमेर- ६०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

तान्पुरा सह भाव संगीत

(1) **श्री रामविलास यादव** सुपुत्र स्व. दुखरन यादव, उमेर- ४८, गाम- सिमरा, पोस्ट- सांगि, भाया- घोघड़डीहा, थाना- फुलपरास, जिला- मधुबनी (बिहार)

तरसा/ तासा-

श्री जोगेन्द्र राम सुपुत्र स्व. बिल्टू राम, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

श्री राजेन्द्र राम सुपुत्र कालेश्वर राम, उमेर- ५८, गाम- मझौरा, पास्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

रमझालि/ कठझालि/ करताल वादक-

श्री सैनी राम सुपुत्र स्व. ललित राम, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

श्री जनक मण्डल सुपुत्र स्व. उचित मण्डल, उमेर- ६०, रमझालि/ कठझालि/ करताल वादक, १९७५ ई.सँ रमझालि बजबै छथि। पता- गाम- बढियाघाट/रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

गुमगुमियाँ/ ग्रुम बाजा

श्री परमेश्वर मण्डल सुपुत्र स्व. बिहारी मण्डल उमेर- ४१, १९८० ई.सँ गुमगुमियाँ बजबै छथि।

श्री जुगाय साफी सुपुत्र स्व. श्री श्रीचन्द्र साफी, उमेर- ७५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

डंका/ ढोल वादक

श्री बदरी राम, उमेर- ५५, पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

श्री योगेन्द्र राम सुपुत्र स्व. बिल्टू राम, उमेर- ५५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

डंफा (होलीमे बजाओल जाइत...)

श्री जग्रनाथ चौधरी उर्फ धियानी दास सुपुत्र स्व. महावीर दास, उमेर- ६५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर),जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

श्री महेन्द्र पोद्दार, उमेर- ६५, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

नडेरा/ डिगरी-

श्री राम प्रसाद राम सुपुत्र स्व. सरयुग मोची, उमेर- ५२, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

विदेहक किछु विशेषांक:-

१) हाइकू विशेषांक १२ म अंक, १५ जून २००८

Videha_15_06_2008.pdf Videha_15_06_2008_Tirhuta.pdf 12.pdf

२) गजल विशेषांक २१ म अंक, १ नवम्बर २००८

Videha_01_11_2008.pdf Videha_01_11_2008_Tirhuta.pdf 21.pdf

३) विहनि कथा विशेषांक ६७ म अंक, १ अक्टूबर २०१०

Videha_01_10_2010 Videha_01_10_2010_Tirhuta 67

४) बाल साहित्य विशेषांक ७० म अंक, १५ नवम्बर २०१०

Videha_15_11_2010 Videha_15_11_2010_Tirhuta 70

५) नाटक विशेषांक ७२ म अंक १५ दिसम्बर२०१०

Videha_15_12_2010 Videha_15_12_2010_Tirhuta 72

६) नारी विशेषांक ७७म अंक ०१ मार्च २०११

Videha_01_03_2011 Videha_01_03_2011_Tirhuta 77

७) बाल गजल विशेषांक विदेहक अंक १११ म अंक, १ अगस्त २०१२

Videha_01_08_2012 Videha_01_08_2012_Tirhuta 111

८) भक्ति गजल विशेषांक १२६ म अंक, १५ मार्च २०१३

Videha_15_03_2013 Videha_15_03_2013_Tirhuta 126

९) गजल आलोचना-समालोचना-समीक्षा विशेषांक १४२ म, अंक १५ नवम्बर २०१३

Videha_15_11_2013 Videha_15_11_2013_Tirhuta 142

१०) काशीकांत मिश्र मधुप विशेषांक १६९ म अंक १ जनवरी २०१५

Videha_01_01_2015

११) अरविन्द ठाकुर विशेषांक १८९ म अंक १ नवम्बर २०१५

Videha_01_11_2015

१२) जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक १९१ म अंक १ दिसम्बर २०१५

Videha_01_12_2015

१३) विदेह सम्मान विशेषाक- २००म अक १५ अप्रैल २०१६/ २०५ म अक १ जुलाई २०१६

Videha_15_04_2016

Videha_01_07_2016

१४) मैथिली सी.डी./ अल्बम गीत संगीत विशेषांक- २१७ म अंक ०१ जनवरी २०१७

Videha_01_01_2017

लेखकसं आमंत्रित रचनापर आमंत्रित आलोचकक टिप्पणीक शृंखला

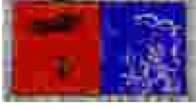
१. कामिनीक पांच टा कविता आ ओइपर मधुकान्त झाक टिप्पणी

VIDEHA 209th issue विदेहक दू सए नौम अंक

Videha_01_09_2016

विदेह ई-पत्रिकाक बीछल रचनाक संग- मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ रचनाक एकटा समानान्तर संकलन
विदेह:सदेह:२ (मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना २००९-१०)
विदेह:सदेह:३ (मैथिली पद्य २००९-१०)
विदेह:सदेह:४ (मैथिली कथा २००९-१०)
विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५]
विदेह मैथिली लघुकथा [विदेह सदेह ६]
विदेह मैथिली पद्य [विदेह सदेह ७]
विदेह मैथिली नाट्य उत्सव [विदेह सदेह ८]
विदेह मैथिली शिशु उत्सव [विदेह सदेह ९]
विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना [विदेह सदेह १०]
The readers of English translations of Maithili Novel "sahasrabadhani" and verse collection "sahasrabdik chaupar par" has intimated that the English translation has not been able to grasp the nuances of original Maithili. Therefore the Author has started translating his Maithili works in English himself. After these translations are complete these would be the official translations authorised by the Author of original work.-Editor
Maithili Books can be downloaded from:
https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/
Maithili Books can be purchased from:
http://www.amazon.in/
For the first time Maithili books can be read on kindle e-readers. Buy Maithili Books in Kindle format (courtesy Videha) from amazon kindle stores, these e books are delivered worldwide wirelessly:-
http://www.amazon.com/
अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

विदेह



मैथिली साहित्य आन्दोलन

विदेह- प्रथममैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA

रचनाकार अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना (जकर मौलिकताक संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखक गणक मध्य छन्हि) editorial.staff.videha@gmail.com कें मेल अटैचमेण्टक रूपमे .doc, .docx, .rtf वा .txt फॉर्मेटमे पठा सकै छथि। रचनाक संग रचनाकार अपन संक्षिप्त परिचयआ अपन स्कैन कएल गेल फोटो पठेता, से आशा करै छी। रचनाक अंतमे टाइप रहए, जे ई रचना मौलिक अछि, आ पहिल प्रकाशनक हेतु विदेह (पाक्षिक) ई पत्रिकाकें देल जा रहलअछि।

५ जुलाई २००४ कैंhttp://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html "भालसरिक गाछ"- मैथिली जालवृत्तसँ प्रारम्भ इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा "'विदेह'- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका" धरि पहुँचल अछि,जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब "भालसरिक गाछ"जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि। विदेह ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA


सिद्धिरस्तु

साहित्य

जगदीश प्रसाद मण्डल

बजन्ता-बुझन्ता



बजन्ता-बुझन्ता

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन

निर्मली

समर्पण भाव

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक ढेरपर बैसल
फुलवाड़ी लगौनिहारकेँ
समरपित



ISBN : 978-93-87675-20-9

दाम : ₹ 251/-

तेसर संस्करण : 2014

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल, बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : दी साहु प्रिन्टिग प्रेस. निर्मली (सुपौल) पिन : 847452

BAJANTA-BHUJHANTA
Collection of Seed Stories by Sh. Jagdish Prasad Mandal.

कथाक सत्तैर



कचोट

आजादीक चौंसैठम वर्षगाँठ मनबैले, खुशीक समुद्रमे बाल-वृद्ध डुमल। चौदह अगस्तक निसभेर राइत। अचानक पत्नीक छातीमे टनक उठलैन। दू बजैत। बारहे बजे रातिसँ जहाँ-तहाँ रबाइस-फटाका फुटैत। अधिक धिया-पुता भेने बेसीकाल घरवाली खन-खनाएले रहै छैथ। अपनो अभ्यस्त भऽ गेल छी। जइसँ ने डॉक्टरक ऐठाम जाइमे अबूह लगैए आ ने लसुनतेला बना मालिश करैमे। घरक अनिवार्य खर्चमे दबाइयो-दारू आबि गेल अछि, तँए करवनो मनमे चिन्तो-फिकिर नहियेँ जकाँ रहैए।

एक तँ सौन-भादवक अन्हार, तैपर मेघडम्बर जकाँ मेघौन। एत्ती रातिमे की करब। ने गाममे डॉक्टर छैथ जे लालटेनो हाथे बजा अनबैन, थाल-किचारक रस्ता, चारि किलोमीटरपर डॉक्टरक घर।

जहिना कोनो फनिगा मकड़जालमे फँसि छटपटाइत तहिना मन छटपटाए लगल। मन पड़ल दुनू परानीक जिनगी। समाजमे अपना सन केते जोड़ा अछि जे दोहरा कऽ सिनूर भरने हएत। जीता-जिनगी बिसवासघाती नै बनब। जे बनि पड़त तइमे पाछू नै हटब। उत्साह जगल।

घरक जेते टंगर रही, सेवामे जुटि गेलौं। कियो तेलक मालिश, तँ कियो सुखले ऐंठुआ ससार करए लगलैन। अपने रिक्शा भँजियाबए विदा भेलौं। मझिली बेटी माइक आँगुर फोड़ि-फोड़ि रोग जाँचए लगल। जहिना थर्मामीटर लगा डॉक्टर बोखारक जाँच करैत तहिना ने मलकारो मालक पाउज गनि रोगक जाँच करैए।

तीन बजे भोरमे रिक्शा नेने पहुँचलौं। माएकेँ उठा बेटा-बेटी रिक्शापर चढ़ौलकैन। जेठका बेटाकेँ संग केने डॉक्टर ऐठाम विदा होइत तेसर बेटाकेँ कहलिऐ-

"बौआ दिनेश, माल-जालक तकतान करब।"

गामेक मिड्ल स्कूलक पाँचमा क्लासमे पढ़ैत दिनेश, फस्ट करैए। शिक्षककेँ जहिना गुरुक आदर करैए तहिना अपनो दुनू बेकती-ले श्रवणे-कुमार छी।

साढ़े एगारह बजे घुमि कऽ एलौं। एक तँ रौद, तैपर कठगुमारी। पिआसे मन तबधल रहए। दरबज्जापर रिक्शा देखते दिनेश लोटामे पानि नेने पहुँचल। लोटाक पानि देख हृदए उमैड़ गेल। अनासुरती मुहसँ निकलल-

"बौआ, इसकूल..?"

अखन धरि दिनेश बिसैर गेल छल- पनरह अगस्त, स्वतंत्रता दिवस। बिसैर गेल छल झण्डाक संग मिलि चलब, बिसैर गेल छल नव बर्खक उपहार...।

दिनेश बाजल-

"नहि, केना जेतौं।"

मनमे असहनीय कचोट भेल। मुदा बात बहलबैत बजलौं-

"बौआ, एहेन फेड़ा जिनगीमे कहियो ने भेल छल। मुदा सभ शुभ-शुभ सम्पन्न भेल।"



शब्द संख्या- 315

काँच सूत

साठि बर्खक संगी पैंसैठम बर्खमे रहने तँ मोहनकेँ किछु नै बुझि पड़लैन मुदा सोहनकेँ मन कहलकैन जे भरिसक दुनू गोरेक बीचक सम्बन्ध काँच सूतमे बन्हल छल।

मोहनो आ सोहनोक-घर बीघा दुइयेक हटल। ओना दुनू दू जातिक मुदा दू जातिक बीच जेते दूरी बनल अछि तेते नै छैन। कारण जे एकठाम रहने बहुत बेमारी लगियो जाइ छै आ छुटियो जाइ छइ। तहिना दुनू गोरेक बीच रहने छैन। दुनू लंगोटिया संगी। ओना, किछुए मासक कमी-बेसी दुनूक बीच छैन, मुदा पाँच बर्ख धरि तँ बच्चाकेँ घरे-अँगना चिन्हेमे लगि जाइ छइ। गामक कतिका माने जाड़क मासक अखड़ाहासँ लऽ कऽ कबड्डी, गुड़ी-गुड़ीक मैदान होइत विद्यालय धरिक संगी दुनू गोरे। ओना गामक विद्यालयक पछाइत दुनू गोरे दू विद्यालयमे पढ़लैन, मुदा ग्रेजुएशन एके साल दुनू केलैन। साइंसक विद्यार्थी रहने मोहन कौलेजमे डिमॉस्टेटर बनला। आ सोहन एम.ए.मे नाओं लिखौलैन। पछाइत एम.एस-सी. केलोपरान्त मोहन लेक्चरर बनि तीन साल पहिनहि सेवा-निवृत्ति भेला। एक तँ जिनगी भरिक संगी, दोसर समाजक पढ़ल-लिखल तँए बैसार-उसार एकठाम अधिक-काल होइत। रौदियाह समय भेने पहिल शिकार खेतसँ जुड़ल लोक हेता, तँए अखन चौक-चौराहाक मुख्य विषय रौदी बनल अछि।

छह बजे साँझ। टहैल-बुलि कऽ दुनू गोरे आबि चौकपर बैसला। लाटमे पान-सात गोरे सेहो बैसला। धानक जरैत खेती देख सोहन दालिक खेतीक चर्च उठबैत कहलखिन-

“अस्सीक दशकसँ पहिने दालि सस्त छल आ अखन वएह महग भऽ गेल अछि। पानि नै भेने अखन उपाइयो तँ दोसर नहियेँ अछि। सरकारी जे अछि से कागतेमे अछि।”

जेना सोहनक बात मोहनकेँ लागि गेलैन। प्रतिवाद करैत बजला-

“हमरा उमेरसँ बेसी तोरो उमेर नहियेँ हेतह, जहियासँ देखै छिऐ दालिए महग अछि।”

विचारमे लोच दैत सोहन बजला-

“अपना ऐठाम कहबी छै जे ‘नीच काज कऽ ली मुदा राहैड़क बोइन नै ली।’ कोनो कहबी ओहिना नै होइ छइ।”

जेना केते घैल घी मोहनक सोहन हरा देने होनि तहिना आगि-बबूला भऽ उठि विदा होइत बजला-

“केकरो कहने किछु भऽ जाइ छइ।”

सोहन गुम्मे रहला। किछु-कालक पछाइत मनमे उठलैन की फूसि बाजल छेलौं? तखन लगलैन किए? नजैर पाछू दिस बढ़लैन। जहिना पहिया कऽ गाड़ीक पहिया चलैए तहिना पहिया कऽ देखलापर देखलैन जे जे जिनगी छलांगसँ उठै छै ओ ओहिना निच्चो होइ छै, मुदा धड़िया कऽ जे जिनगी उठै छै ओ धड़ियाइते रहै छै, चाहे जेमहर जाउ। आइ बुझै छी जे दुनू गोरे काँच सूतमे बन्हल छेलौं जे अबैत-अबैत आइ टुटि गेल। संगी रहने लोक हराइए, भँसियाइए। मुदा, असगर चलनिहार केतए हराएत। पत्ता पकैड़ बिच्ची पकड़ैक लूरि चाही।



शब्द संख्या- 384

बुधनी दादी

जहिना कुम्हारकेँ भादवक रौद वादलमे झँपा गेने दुर्दिन आगूमे नाचए लगैत तहिना बुधनी दादीकेँ साल भरिसँ भऽ रहल छैन। साल भरि पहिने तक–जाबे पति जीबै छेलैन–दिल्लीक कमाइसँ जे सुख केलैन, रहितो आब नइ भऽ पाबि रहल छैन। सोलह कोठरीक हथिसार जकाँ मकानमे असकरे रहैत डर होइ छैन जे कहीं सूतली-रातिमे भुमकम भेल आ घर खसल तँ महिनो दिनमे ऊपर हएब कि नहि। तरेमे सड़ि कऽ महैक जाएब।

जहिया बुधनी दादी नैहरसँ सासुर एली तहिए-सँ कहूँ आकि नैहरोमे तइसँ पहिनेसँ कहूँ.., नहेला पछाइत हनुमान चलीसा पढ़िते छैथ। सेहो किताब देख कऽ नहि, मुँहजुआनियेँ। गामक तीन टोलमे आबा-जाही बुधनी दादीक छैन। कोन-पाबैन कहिया हएत आ कोन उपास कहिया पड़त से हिसाब जोड़ए अबै छैन। तैसंग ईहो छैन जे सामाक गीत टोलक कोन बात जे गामेमे सभसँ बेसी अबै छैन।

छठिक भिनसुरका अर्घ पड़ि गेल, आइसँ सामाक गीत हएत। दसमा वर्गक राधा बुधनी दादी लग पहुँचल। पहुँचते राधा बुधनी दादीकेँ गोड़ लागि कहलकैन-

“दादी, अपन मोबाइल नम्मर दऽ दिअ। जखन अबैक छुट्टी हएत एबो करब नइ तँ मोबाइलेपर गीत लिखि लेब।”

मोबाइलक नाओं सुनिते बुधनी दादीक मन गाछसँ खसल कटहर जकाँ आँठी उड़ि केतौ, कमरी उड़ि केतौ आ नेरहा उड़ि केतौ,

छँहोछित भऽ गेलैन। बजली-

“बुच्ची, आब तोरा सबहक जुग-जमाना एलह। बेटा मोबाइल पठा देलक जइसँ कहियो-काल धियो-पुतो आ बेटो-पुतोहुसँ गप-सप्प होइ छेलए, सेहो केदैन चोरा लेलक। भरि दिन अँगनेमे बैसल रहब से पार लगत। मूस तेते भऽ गेल अछि जे ने नुआ-बसतरक सेखी रहए दइए आ ने खाइ-पीऐक।”

राधा-

“दादी, अहिना जिनगी चलै छइ।”

बुधनी दादी-

“बुच्ची, जीबैक मन होइए मुदा तेहेन-तेहेन आपैत-विपैत सभ अछि जे होइए तइसँ नीक भरमे-सरमे मरि जाइ।”



शब्द संख्या- 267

खिलतोड़

आकाशवाणी केन्द्रक कार्यक्रमक कृषि विभागसँ दयाकान्त तीस बर्खक पछाइत सेवा-निवृत्ति भेला। खेती-पथारीक कार्यक्रमक चिन्हार चेहरा बनौने रहला। नोकरी पाबि जिनगीमे बहुत किछु केलैन। तीनू बेटो आ दुनू बेटियोकेँ पढ़ा-लिखा, नोकरी धरा नेने छैथ। अपनो रहैक बेवस्था शहरेमे कऽ लेलैन। सेवा-निवृत्तिक चारि बर्खक पछाइत मन उबियेलैन जे शहरमे नइ रहब, बाप-दादाक बनौल गाममे रहब। मन उबियाइक कारण भेलैन जे पुरना संगी सभमे किछु गोरे आन-आन शहर, तँ किछु गोरे गाम आ किछु गोरे मरियो गेला। पछाइत जे संगी भेटलैन, हुनका सभसँ तेहेन सम्बन्ध नै बनि सकलैन जेहेन पहिलुका सबहक संग छेलैन। दूर रहने परिवारोक (बेटा-बेटीक) सम्बन्ध पतरा गेल रहैन। पत्नियो संगी नइ बनि सभ दिन भनसीए रहि गेली।

खण्डहर जकाँ घर-घराड़ी दयानन्दक। गाम अबिते पहिने घर-अँगना, बीस बर्खसँ परता पड़ल चापाकल उड़ाहलैन। दरबज्जापर अबैत-अबैत मास दिन लगि गेलैन। दरबज्जापर अबिते देखलैन जे ऐगला बाड़ी परती पड़ल अछि। जँ एकरा चौमास बना लेब तँ सालो भरि परिवारक तीमन-तरकारी तँ चलबे करत जे किछु बाँटियो-खोंटि लेब।

सहए केलैन। कहिया केतए-सँ परता पड़ल खेतकेँ गहींरसँ ताम करबा दयाकान्त चौमास बनौलैन। अखन धरि जे अल्लूक खेतीक सम्बन्धमे बुझै छला तही हिसाबसँ खेत तैयारो केलैन आ खाद-

कीटनाशक दऽ रोपबो केलैन।

रोपलाक बीस दिनक पछाइत खेतमे चारिअना गाछ देखलैन। मुदा घबड़ेला नहि, सबुर केलैन जे अखन जनमैयोक समय छइहे। तीस दिनक पछाइत जखन ओहो चौअन्नी गाछमे अदहा-सँ-बेसी जरिए गेलैन तखन माथ ठमकलैन। मुदा पुछबो किनकासँ कएल जाए। तहूमे जिनगी भरि अपने दोसरकेँ बुझेलौं। ..ओना ओझरी मनमे लगए लगलैन मुदा चेत गेला। जे खेतीक मर्म बुझैत होथि तिनकासँ बुझब नीके छी। 'बुझब', 'गहराइसँ बुझब' आ 'मर्म बुझब' भिन्न होइत अछि।

ठेहियाएल दयाकान्त दीनानाथ लग पहुँचला। दयाकान्तकेँ देखते दीनानाथ कहलकैन-

"आऊ-आऊ, लाल भाय।"

रेडियो स्टेशनमे 'लाल भाइक' नाओंसँ दयाकान्त छला तँए 'लाले भाइक' नाओंसँ जनै छैन।

चाह पीब दयाकान्त बजला-

"दीना भाय, अल्लू रोपलौं से गाछे ने भेल!"

जहिना सौरखीक पात देख डाँट पकैड़ सौरखी उखाड़ल जाइत तहिना दीनानाथ दयाकान्तक बातकेँ जड़ियबैत पुछलखिन-

"अल्लू खुनि कऽ देखलिऐ जे सड़ि गेल आकि जीविते अछि?"

"हँ, सभ सड़ि गेल।"

"खेतमे हाल केहेन अछि?"

"से तँ बढ़ियाँ अछि। ओते नै अछि जे अल्लू सड़ि जाएत।"

"तखन?"

"सएह नइ बुझै छी।"

“बीआ काटि कऽ रोपने छेलौं आकि सौंसे?”

“गोटगरहा सौंस रोपने छेलौं। तैसंग खादो आ कीटनाशको भरपूर देने छेलिऐ।”

खादक मात्रा सुनि दीनानाथ कहलकैन-

“देखियौ, कहिया केतए-सँ जमीन परता छल, खिलतोड़ भेल। ओकरा अपनेमे ओते शक्ति छै जे सुभर उपजा दऽ सकैए। तइमे तेते खाद दऽ देलिऐ जे बीए जरि गेल।”



शब्द संख्या- 395

मुँह-कान

कालि्हए बैंकक मैनेजर आबि सुनरलालक गाएकेँ देख गेल छला। एक्कैस हजारक गाए। गामक किसानक बीच एकछाहा चर्च। कियो सिलेब रंगक चर्च करैत तँ कियो सिंह-सिंगहौटीक। कियो थुथुनक चर्च करैत तँ कियो गरदैनक ऐगलाक।

जैठाम मनुखोकेँ उचित अन्न नै भेट रहल अछि तैठाम मवेशी पालन धिया-पुताक खेल छिऐ। केते दूधक जरूरत अछि, तइले केते मवेशीक जरूरत पड़त मूल प्रश्न भेल।

एक तँ एक्कैस हजारक गाए गाममे आएल अछि, अखन धरि जे नै आएल छल। दोसर, बैंकक लाभो जरूर भेल। ..मनधनो काका गाए देखए सुनरलालक ऐठाम एला।

गाइक रंग-रूप देख मनधन काका चैन होइत तमाकुल खाइले बैसला। खुशीसँ खुशियाएल सुनरलाल बाजल-

“काका, बहू-दिनसँ हीक गड़ल छल जे एकटा नीक गाए खुँटापर बान्हब, से भगवान पूर केलैन।”

भवधारमे बहैत सुनरलालकेँ देख मनधन काका बजला-

“बड़ सुनर गाए छह। मलकार की सभ कहलकह?”

काजक जड़ि दिस बढ़ैत सुनरलाल बाजल-

“चारि मासक पछाइत एक-संझू भऽ जाएत आ छह मास लागत।”

“केते दूध होइ छह?”

"दू किलो भिनसर आ डेढ़ किलो साँझमे।"

दूधक नाओं सुनि मनधन काका चौंकला, बाप रे केतए-सँ बैंकक कर्ज चुकौत, केतए-सँ गाइक खरच जुटौत आ केतए-सँ अपने गुजर करत। बातकेँ आगू नै बढ़ा मनधन काका सुनरलालकेँ चरियबैत कहलखिन-

"छब-दे तमाकुल खुआबह। एकटा काज मन पड़ि गेल।"

"एना अगुताइ किए छी, काका?"

मुदा मनधन काकाकेँ कोनो जवाब नै फुरलैन। मनमे नचैत रहैन युग तँ आर्थिक मोड़ लऽ रहल अछि। मुदा घिड़नीक चालि केमहर छै वस्तुक गुण दिस आकि सुआद दिस?



शब्द संख्या- 231

अनदिना

शिक्षक अमरनाथकेँ देखते रामकिसुन पुछलकैन-

"मास्सैब, अनदिना गाममे देखै छी?"

रामकिसुनक प्रश्नसँ अमरनाथ अचम्भित भऽ गेला जे एहेन बात किए पुछलैन! मुदा बाजबो तँ उचित नहियेँ हएत। रंग-बिरंगक जहिना शिक्षक छैथ तहिना विद्यार्थियो अछि। जेहने चलबैबला अछि तेहने चलौनिहारो अछि। की हमरा कहने झूठ भऽ जेतै जे शिक्षक सभ दरमहे-टा उठबए विद्यालय जाइ छैथ, आ ईहो कि झूठ भऽ जाएत जे सरकारो दहिन-गबैया जकाँ महिने-महिने दरमाहा देब छोड़ि सालक-सालेक पाहि लगबैए...।

अमरनाथक मन ठमकलैन। 'अनदिना गाममे देखै छी..!', 'अहाँ गामसँ हटि नोकरी करै छी..!', 'बिनु छुट्टीक दिन गाममे छी..!', की समाजक एतबे दायित्व बनै छै जे फल्लाँ भाइक सातो बेटा गुरुजी बनि गेलखिन..?

..अधभर मुस्की दैत अमरनाथ बजला-

"भाय, की कही, जुगेमे भूर भऽ गेल। अमैया छुट्टीमे गाम एलौं हेन आ ऐठाम देखै छी जे फैजली सभ कोशेबो ने कएल हेन।"

दिन ठेकनबैत रामकिसुन पुछलकैन-

"केते दिनक छुट्टी अछि जे एना हदिया गेलौं?"

"आब कि ओ जुग-जमाना रहल जे रोहनिया-सँ-फैजली तक खाइक छुट्टी होइ छइ। अदहासँ बेसी छुट्टी कटियो गेल अछि। जब

हमर स्कूल खुजत तेकर पछाइत आन-आन स्कूलमे छुट्टी हेतइ!"

रामकिसुन-

"ई तँ अजगुते भेल!"

दहिना हाथसँ चानि ठोकैत अमरनाथ बजला-

"अहाँ अजगुत कहै छिऐ। एतबे अछि। पहिने सरकारियो ऑफिसमे आ आनो-आनो ठाम किरानी होइ छेलै, अखनो अछि। तहिना स्कूलमे शिक्षक होइ छला, अखनो छैथ। मुदा आबक शिक्षक सालो भरिक नहि, छह-मसुआ बनि गेला। छह मास धिया-पुताकेँ पढ़ाउ आ छह मास ऑफिसक काज करू। जहिना नाचमे लेबरा सभ नै लेबराइ करैए तहिना ने हमहूँ सभ कखनो माल्थस-रॉविनसन करै छी तँ कखनो घरे-घर पहुँच बकरी-छागरक गिनती करै छी।"

अमरनाथक बात सुनि रामकिसुन ओल जकाँ कबकबेला नहि बल्कि मुस्की दैत बजला-

"होउ, अहीं सबहक जुग-जमाना छी, जे काटब से काटि लिअ।"

रामकिसुनक 'काटब' सुनि अमरनाथ अह्लादित होइत बजला-

"ठीके ने अहाँ कहै छी। अपना सभकेँ जे सभसँ छोटका दिन अछि, ओइमे कथीक छुट्टी होइए से बुझल अछि?"

"नहि।"

"बड़ा दिनक!"



शब्द संख्या- 307

अपन काज

तेजीसँ समय अगुएने, माने विकास भेने महगियोक विरधी धकधका गेल। तहूमे तीमन-तरकारीक तेजी भेने, बाड़ी-झाड़ीसँ टपि खेत-पथार दिस बढ़ल। जइ चौमासमे अन्डी-बगहन्डीसँ लऽ कऽ भाँग-धथुरक बिरदावन रहैत आएल छल ओ कटि-खोंटि चौमासो दिस घुसकुनियाँ कटलक।

अखन धरि कपलेसर, परिवार धरिक तरकारी उपजबै छल सेहो कोनचरमे सजमैनक गाछ आ गौसारपर अल्लू-कोबी, मिरचाइ-भट्टा उपजबै छल। आब ओ चारि कट्ठा कोबी-खेती करत। ओना पाँच बीघा जोतक किसान कपलेसर अछि, मुदा खेतमे खादक हिसाब धाने-गहुमक बुझैए। मिरचाइ बाड़ीकेँ कड़चीसँ भोला बतियबैत रहैथ आकि कपलेसर अबिते पुछलकैन-

“भैया, चारि कट्ठा कोबीक खेती करब, तइमे केते खाद लगतै?”

कपलेसरक प्रश्न सुनि भोला तारतममे पड़ि गेला। रंग-बिरंगक प्रश्न मनमे उठलैन। जइ खेतमे पहिल बेर खेती हएत आ जइ खेतमे साले-साल होइ छै, उपजैक दृष्टिसँ दुनू एक केना भेल। तेतबे नहि, कोबीक पैछला फसिल कि छेलै, सिरो तँ रंग-रंगक होइ छइ। कोनो छह आँगुर ऊपरे धरिक तँ कोनो बित भरिक, कोनो तोहूसँ गहींरक। जँ खेत खसले अछि तँ केते दिनसँ खसल अछि तही हिसाबसँ ने रसेबो करत। तहूमे पृथ्वीक रस तँ आरो एकभग्गु छइ।

..भोलाक मनमे लगले उठलैन जे जखन वेचारा पूछए आएल,

सेहो ओहिना नै देखबो करैए तखन किछु नै कहिऐ से केहेन हएत। किछु कहैले ठोर चटपटेलैन मुदा मनमे उठि गेलैन जे कोन खादक नाओं कहबै? ओहोमे तँ करामातीए अछि। एक्के खादमे कथूक मात्रा बेसी रहै छै तँ कथूक कम। मन अकछए लगलैन जे अनेरे अपनो काज बरदा मगजमारी कऽ रहल छी। मुदा धाँइ-दे किछु कहियो देनाइ केहेन हएत। मन घुमलैन अपन जवाब अपने उठलैन जे काज बरदाइए आकि दोसर काज ठाढ़ करैए? असथिर मन होइते पोखैरक पानिमे जहिना हवा पाबि हिलकोर उठैए तहिना भोलाक मनमे हिलकोर उठलैन। प्रकृतिक हिसाबसँ मौसम बनै-बदलैए। फसिलक अपन गति छइ। तैठाम क्षेत्र-क्षेत्रक मिलान नै हएत तँ उपजाक केते भरोस कएल जाएत? दुनियाँ घर अँगना बनि गेल अछि दूरक बात बेसी बुझै छी आ घरक बात बुझिते ने छी। गहुमेक बागुक समय इलाका-इलाकामे अलग-अलग तिथिसँ होइत अछि, तेकरा केना बुझब। अपन बात सहजे शीतगृहमे रखि देने छी, नइ तँ जयंती बाबड़ीमे थोड़े बन्हाइत।

..मन थीर होइते भोला कहलखिन-

“कपले, पढ़ल-लिखल जेहेन छी से तहूँ जनिते छह, आब तोरो उमेर कम नहियेँ भेलह। खेती करै छी, पुछलह तँ कहै छिअ। चारि किलो डी.ए.पी. तीन किलो पोटाश, कीटनाशक संग खेतमे मिला दिहक। नवका किस्मक बीआ छेबे करह सवा-हाथ-डेढ़-हाथपर रोपिहह।”



शब्द संख्या- 367

दूरी

जहिना समैपर काज भेने, भोजन भेने, अराम भेने मनमे हलचल कम उठैत तहिना नइ भेने बेसी उठैए। लोहोक मशीन नियमित चलने अपन जिनगीक गारंटी करैए तहिना मनुखोकेँ गारंटीक सीमा भरिसक हेबे करतै।

नियमित जिनगीमे चलैत चिन्तू चाहक प्रतीक्षामे बैसल छला। ओना, चाहक संयोग नीक छेलैन जे पुतोहुक बदला पत्नी-हाथक चाह कएक दिनुका पछाइत भेटतैन मुदा मन ओझड़ाइत रहैन जे पत्नी बिनु पुछनहि तीन दिनपर चारि बजे भोरे आबि गेलखिन। मनक ओझरीक दूटा कारण छेलैन। पहिल बिनु पुछने भाए-भौजाइ ऐठाम चलि गेल रहथिन, आ जहिना गेलखिन तहिना बिनु बजौनहि चलियो एलखिन। दोसर कारण रहैन जे जखन ने हम हुनका (पत्नी) भरोसे जीबै छी आ ने ओ हमरा भरोसे, तखन जँ नहियेँ पुछलैन तँ की हेतइ..?

समैसँ बहुत पहिने तँ नहियेँ, अपने दोसरे दिस रहैथ, मुदा साएक अन्त नहि, शुरूहे दिसक रहैन तँए चिन्तूक मन बेसी आगू नै बढ़ि ठमैक गेलैन। मुदा ठमकल रहलैन नहि, जेना पछुलके गप मनकेँ तेना ने हौंर-हाँरि देलकैन जे चाहक एके चुस्की लैत-लैत दोसर प्रश्न आगूमे ठाढ़ भऽ गेलैन। ओ ई जे पुरुष-औरत मिलि एक जिनगी ठाढ़ करैए, मुदा दुनूक बीच दूरी तँ अछिए। तखन किए कहै छै जे एक बाप-माइक दुनू परानीक बीच जे दूरी अछि ओकरो झूठलौल जा सकैए। दू इलाका, दू बोली, दू संस्कृति जिनगीक क्रिया...।

तैबीच अपसियाँत होइत पोता- 'इन्तू' आबि आगूमे ठाढ़ भऽ

गेलैन। इन्तूक ड्यूटी छेलै भिनसुरका चाह बाबाकेँ पहुँचेनाइ। चाह पहुँचा पत्नी अँटकली नहि, तैबीच इन्तू आबि गेल रहए। बाबाकेँ अनुकूल बनबैत इन्तू पुछलकैन-

"बाबा हौ, मन बड़ खुशी देखै छिअ?"

लत्तीए जकाँ बातो लतड़ै छइ। सांगह लगबैत बाबा पुछलखिन-

"से तूँ केना बुझै छीही?"

इन्तू टपैक खसल-

"दादियोकेँ हँसैत जाइत देखने छेलियह।"



शब्द संख्या- 265

पुरनी भौजी

बीस दिन बरिसाइत बितनौं झूर-झार आम पाकब शुरू नइ भेल अछि।

बिनु बर्खाक गरै जकाँ मेघ रूखि पकड़लक। दसो पोता-पोतीकेँ नेने पुरनी भौजी रोहनिया आमक झमटगरहा गाछ लग बैस दसोकेँ कहलखिन-

“जे पहिने पौत से मीरा, जे दोसर पौत से दोहल, जे तेसर पौत से तेहल आ जे चारिम पौत से चौहल।”

पुरनी भौजीकेँ तीनटा बेटा छैन। बिनु गहबर गेनौं पोता-पोतीक ढबाहि लगल छैन। बच्चाकेँ देख माइक ममता तँ सोभाविक अछि। बाप तँ भरि दिन बोनाएले रहै छथिन।

दस बर्खक पोता, जे मिड्ल स्कूलमे पढ़ैए; टेंटियाह सुग्गा जकाँ टाँहि-दे पुछलक-

“मीरा माने की भेल, दाइ?”

बिहाड़ि तँ बिड़हा गेल मुदा हवाक सिहकी उठल। ढेनुआर जकाँ धऽ कऽ भड़भड़ा गेल। के पहिने पौलक तेकर ठेकाने ने रहल।



शब्द संख्या- 117

छुटि गेल

तृतीयाक साँझ भगवती स्थानमे दऽ सावित्री बाबा लग आबि फुदकैत बाजल-

“बाबा, एकटा बात बुझलौं?”

मद भरल पोतीक बात सुनि आगू सुनैक आशामे आस काशीनाथ ओइ संगीत प्रेमी जकाँ मारलैन जे एकक पछाइत दोसरो सुनए चाहैए। मुँह बाबि पोती दिस देखए लगला। मुँह रोकि सावित्री महराइक पलगाँ जकाँ प्रतिक्षा करए लगल। ..काशीनाथक मन फुरफुरेलैन जे भरिसक चुप्पा-चुप, धुप्पा-धुप खेल ने भऽ गेल! हमरा उठलेसँ काज तँ हमरा बैसलेसँ काज...।

सावित्रीकेँ काशीनाथ पुछलखिन-

“की सुनलौं?”

“अबै छेलौं तँ अहाँ-दे लोक सभ बजै छला जे ओ आब केकरो नै गरियबै छथिन।”

गारिक नाओं सुनि सावित्रीकेँ अनुकूल बनबैत काशीनाथ कहलखिन-

“बुच्ची, केतेकेँ गरियाएब। अपने मुँह दुखा जाइए। छोड़ि देलिऐ तँए छुटि गेल।”



शब्द संख्या- 111

काल्हि दिन

हमरा गामक पजरेमे पाभैर हटल कटहरबा गाम छइ। हमरा गाम जकाँ बरहवर्णा तँ नहि, मुदा तैयो दू साए घरसँ ऊपरेक छइ। तीनिए-चारि जातिक बस्ती। समांगक पातर रहने परदेश नइ जाइ छी। अधपुरान साइकिलपर मसल्लाक कारोबार करै छी। हमर मेन मारकेट कटहरबे छी, मिरचाइ, हरदी, धनिया, लहसुन इत्यादि बेचै छी। पनरह-बीस घरक पाहि लगौने छी, सभ दिन हरियरीए रहैए। बनियाँ जाति बाँकी दुनियासँ कोनो मतलब नहि।

पैछला सालक भोँट दिन की भेलै से अखनो ने बुझै छी। एतबे देखै छी जे दुनू गामक बीच खूब मारि भेल। दुनू गामक लोक झोरा लऽ लऽ कोट-कचहरी करैए। चाहे जेकर गोटी लाल होइ तइसँ हमरा कोन मतलब। छगुन्तामे पड़ल छी जे मारि केलक कोइ, रोजी-रोटी हमर केना छीना गेल, एकठाम रहितो दुनू गामक आबा-जाही किए बन्न भऽ गेल? अपना खेत-पथार अछि जे अपने आगिए-पानियेँ निमहब! तैबीच पत्नी आबि पुछलैन-

“एना सोग-पीड़ामे परिवार चलत?”

हम कहलयैन-

“काल्हि दिन केना चलत सएह तँ अपनो विचारै छी!”



शब्द संख्या- 151

अप्पन हारि

मनकेँ केतबो अपना दिससँ बहटारए चाहै छी मुदा तैयो कुकुर जकाँ दुआर-दरबज्जा छोड़बे ने करैए। छोड़बो केना करत? कोनो कि आइयेक संगी छी आकि जहिए पशु-पक्षी दिस तकलौं तहिए-सँ ने ओहो संग लगि परिवारमे सटि गेल।

अपन दुरागमन भेल। आने सभ जकाँ अपनो बुझि पड़ए लगल जे सौंसे दुनियाँ दुल्हीनेसँ भरल अछि। तहिना पत्नियोक आँखि हमरा छोड़ि किछु देखबे ने करैन। थोपड़ी कि कोनो एक्के हाथे बजैए। ओइले तँ दुनू हाथ चाही। से भेबो कएल। बुझि पड़ए जे सौंसे दुनियाँ फूसि आ दुइए परानी सत् छी। एहेन स्थितिमे मेल-मिलानक कथे की। कान्हीसँ विचार धरिक।

जहिना दुनू कसमकस पार्टीक बीच फैसला उचित होइत तहिना भगवान निसाफो केलैन। तइसँ फलो नीक भेटल। जौंआँ बेटा भेल। जँ दुनू दू रहैत तँ बेइमानियोँ होइतए, से एक्के रहए। खुशी तँ दुनू परानीकेँ भेल मुदा दू दिशामे। अपना मनमे हुअए जे हे भगवान दसो साल जँ एहेन उपजा देलह तँ गाममे बीस भऽ जाएब। तरे-तर माघक खेसारी जकाँ मन गदगदाएल। मुदा पाटनरक विचार दोसरे रहैन। एकहरी बच्चाक होनहारी-दर्द दोहराएल रहैन तँए पाण्डु रोग जकाँ पीड़ी पकड़ने।

चारि-पाँच मासक पछाइत फेर दुनियाँ दिस दुनू पाटनर तकलौं। मुदा विचारमे खटपट हुअ लगल। खटपट एते बढ़ि गेल जे एक-एक बेटा बाँटि दुनू दू दिस भऽ गेलौं।

तीन बर्ख भऽ रहल अछि। पत्नीक हिस्साक बच्चा फूल सन लहलह करैए। वएह अपन दहिना हाथक चटकन दिन-राति खाइए। कोन दुरमतिया कपारपर चढ़ि गेल जे औझुका थापर एहेन लागि गेलै जे मुहेँ भरे माटिपर खसल।

अपन कोखिक कनैत बच्चाकेँ देख पत्नी गरियबैत बजली-

"पुरुख नहि, पुरुखक झड़ छी।"

सुनि क्रोध नै उठल। जेना मनक सभ ताप-सन्ताप मेटा गेल हुअए। लजाएल आँखि, आँखिपर देलिऐन तँ बुझि पड़ल जे झपैट लेती। मुदा जहिना रौद पानिमे आ पानि रौदमे सटि नव जीवन धड़ैए तहिना आब अपनो विचारै छी।



शब्द संख्या- 286

कनफुसकी

गामेक स्कूलमे सोहनक संग दोस्ती भेल। ओना कनीए हटि कऽ एक्के गाममे दुनू गोरेक घरो अछि मुदा आने गाम जकाँ। तीस साल पूर्व जखन एक्के विद्यालयमे नोकरी भेटल तखन नजदीकी आएल। पाँच बर्खक पछाइत अबरजात, नौत-पिहानमे बदैल गेल। दू जाति रहितो छान-बान कमल।

तीस बर्खक पछाइत आइ एहेन भऽ गेल जे नजैर-सँ-नजैर मिलए नै चाहैए। सभ गुण मिलतो एकटा अवगुन सोहनमे शुरूहेसँ रहल जे अनका कानमे फुसफुसा विचारकेँ घुसका-फुसका दइत। जे ऐ बेर बुझलौं। सेहो केना बुझलौं तँ जेकरा लग बजला ओ आबि जड़ि-सँ-अन्त धरि कहलैन। मन तुरैछ गेल। संग केने जखन सोहन लग पहुँच पुछलयैन-

“भाय, की सभ भोला भायकेँ कहलयैन?”

प्रश्न सुनि जेना सोहनक बीख ओइ साँप सदृश बुझि पड़ल जे हबक मारैले खेहारैए केकरो आ काटि लइए तेसरकेँ, तहिना। ने ओ किछु बजला आ ने अपने दोहरा कऽ किछु पुछलयैन।



शब्द संख्या- 132

मुँहक बात मुहेँमे

पछबारि गामबलाक एहेन दशा कहियो ने भेल रहैन जेहेन आइ बहिरा माए केलकैन..!

पछबारि गामक घटक बहिरापर अबै छला। गाम-घर आ बरक चर्च सुनि नेने छेलखिन। मन मानि गेल रहैन जे अपना-जोकर कुटुमैती नीक अछि। गामक सीमानपर अबिते एक गोरेकेँ पुछलखिन। सभ गुणक चर्च नीके बुझि पड़लैन मुदा 'बहिरा' नाओं सुनि मन भिनभिना गेलैन। मन भिनभिनाइते, बैलून जकाँ देहक शक्ति निकलए लगलैन। आमक गाछ देख, निच्चाँमे बैस सोचए लगला जे आब की करब..?

घटकक भाँज लगिते बहिरा माए विदा भेली। घटक लग पहुँच बजली-

"कोन गाँ रहै छी, केतए जाएब?"

घटक कहलकैन-

"एतै, एकटा लड़का उदेसे आएल छेलौं मुदा लड़िकाक नउए बहिरा छिऐ। मन भिनैक गेल। आब घुमि जाएब।"

तैपर बहिराक माए बजली-

"जँ बेटा-बेटी खेलाइ पाछू बेहाल रहत आ माए-बापक आदेश नै सुनत, तँ की बाप-माए ओकरा मारतै आकि बहिरा कहि छोड़तै?"



शब्द संख्या- 134

कनीटा बात

कनीटा बात केते नमहर भऽ जाइए ओ आब बुझै छी। पढ़ुआ काका बेटे जकाँ बुझै छला। जे कहै छेलिऐन आँखि मुनि बिसवास कऽ लइ छला। खास कऽ पाइ-कौड़ीबला काजमे कहियो दोहरा कऽ नै पुछलैन।

ओइ दिन कोन दुरमतिया चढ़ि गेल जे मुहसँ झूठ निकैल गेल। खाएर.., तैसंग ईहो गलती भेल जे पुनः ओइ बातकेँ झूठ नै कहि देलिऐन। मुदा हुनका लग कोन झूठपकड़ा मशीन छैन जे ओ बुझि गेला आ कहलैन-

"बौआ, तहूँ तहिना!"

एतबे नहि, 'तहूँ तहिना' कहैत आगूमे थूक फेक देलैन!

तैयो सकपकाइत कहने रहिऐन-

"की, कक्का?"

मुदा पढ़ुआ काका दोहरा कऽ किछु नै बजला, जे आब बुझि रहल छी।



शब्द संख्या- 101

गति-गुद्दा

सोलह बर्खक पछाइत सुखदेव बम्बइसँ गाम आएल। पहिलुका सुखदेवा नै जे ठोर-नमरीसँ जानल जाइ छल। ओ सुखदेव जे बम्बइक गली-कुचीसँ नोकरी करैत सोलहम जिनगी शिवाजी एयर पोर्ट पहुँच गेल अछि। खाली नोकरीए नहि, नोकरी तँ ओहनो होइत अछि जे पानि पीयौनिहार गलियो-कुचीमे रहैए आ एयरपोर्टोमे। ओ सुखदेव जे होटलक मसल्ला पीसब-टा नहि, काजक गति सेहो आ मानसिक गति सेहो तेज केलक। जीप-कारसँ लऽ कऽ ट्रकक ड्राइवर सुखदेव, ग्रेजुएट सुखदेव, ऑफिसर सुखदेव!

गाम अबिते सुखदेव भँजियौलक तँ भाँजपर चढ़लै जे भरि गाममे खुशीलाले बाबाटा एहेन रहला अछि जिनकर समांग नै बहरेलखिन। पुरना ढर्ड़ाक लोक खुशीलाल बाबा, जिनगी ओइठामसँ देखने जैठाम पालकी, महफा, ओसारक ओहार, घरक ओहार चलै छल। आइ की देखै छी। मन-चित मारि अपन कुल-खनदानक जड़िमे पानि ढारैत जीब रहला अछि। जैठाम गाम हमरा छोड़ि देलक आ हम गामकेँ छोड़ि देलिऐ, एहेन बहैत धारक त्रिवेणीक मोरपर खुशीलाले बाबाटा छैथ। कनी जिरेला पछाइत भेँट करबैन।

तीन बजेक समय। सुखदेव खुशीलाल बाबा ऐठाम पहुँच गोड़ लागि अपन परिचए देलकैन।

बाबा बैसैक इशारो करैथ आ सुखदेवक समाचारो सुनैथ। मने-मन खुशियो होनि जे अही माटि-पानिक बम्बइक शिवाजी टर्मिनलमे ऑफीसर बनल अछि। जहिना साँप अपन छन्द सुनबैत-सुनबैत पड़ा

गेल मुदा गड़ूल देखबे ने केलक। तहिना खुशीलाल बाबा सुखदेवक समाचारमे हरा गेला।

बजैत-बजैत सुखदेवकेँ बुझि पड़लै जे भरिसक हम अपने खिस्सा सुनबए एलिऐन। विचार रोकि पुछलखिन-

“बाबा, अपना दिसक की हाल-चाल अछि?”

जहिना पुरना संगी पाबि हृदए खोलि सभ गप करैत, तहिना खुशीलाल बाबा कहलखिन-

“बौआ, ऐठामक गिरहस्तकेँ कोनो गति-गुद्दा अछि। धार माटि दुइर कऽ देलक! कोसी नहर ठीकेदार खा गेल! मौनसूनी बर्खाकेँ रौदी खा गेल! की कहबह..!”



शब्द संख्या- 250

बिसवास

पनरह दिनसँ परेशान डॉक्टर परमेसर अपन माझिल भैयाक पेटक ऑपरेशनसँ परसुए पलखैत पौलैन मुदा अपन अस्त-व्यस्त जिनगीकेँ पटरीपर अनैमे दू-दिन आरो लगिए गेलैन। पटरीपर अनैक मतलब भेल निसचित समैपर निर्धारित काज करब।

साँझक सात बजैत। चाह पीब सिगरेट सुनगा पहिलुक दमक धुआँ मुहसँ फेकिते रहैथ की मनमे उठलैन, ऑपरेशन करैबला नीक डॉक्टरमे हमरो लोक जनैए मुदा अपन भाइक मन किए ने मानलकैन? जखन अपने घरक समांग बिसवास नै करत तखन दुनियाँक अशे की? मुदा मझिलो भैया तँ ओहन नहियेँ छैथ जे आँखि मूनि किछु कऽ लइ छैथ।

जेते डॉक्टर परमेसर इनारक पानि जकाँ डोलसँ ऊपर करैथ तइसँ बेसीए पानि तलाव टुटल मोकर जकाँ मनमे भरि जाइन। हाँइ-हाँइ तीनटा सिगरेट पीब गेला मुदा प्रश्नक उत्तरक माटि नइ छूबि सकल। बिसवास करब.., नइ करब.., मनमे ओझरी लगि गेलैन। जहिना नन्हकी काँट बुढ़-बुढ़ानुसक नजैरपर नइ पड़ैत आ धिया-पुता लप-दे निकालि लैत तहिना डॉक्टर साहैबकेँ अन्तिम विचार मनमे अँटैक गेलैन जे भागेसर भैया आन थोड़े छिआ जे लाज-संकोच करब। हुनकेसँ पुछि मन थीर कऽ लेब।

ओना भागेसरक आदत छैन जे सोझहामे पड़िते पुछि दइ छथिन जे भैया कि काका आकि बौआ, की हाल-चाल अछि। तँए जखने पुछता आकि टटके प्रश्न पुछि देबैन।

आराम करैत भागेसर गपे केनिहारक प्रतिक्षा करैत रहैथ। डॉक्टर परमेसरकेँ लगमे देखते पुछि देलखिन-

“बाउ, की हाल-चाल?”

‘हाल-चाल’ सुनिते डॉक्टर परमेसर व्याख्या करैत बजला-

“हाल-चाल कथी रहत भैया, अहाँसँ निवृत्ति भेलौं आ एकटा बात मनमे उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेल।”

बिच्चेमे भागेसर टोकलकैन-

“एते भूमिका बन्हैक कोन प्रयोजन, कोन बात?”

“पेटक ऑपरेशनक डॉक्टर हमहूँ, केतेको ऑपरेशन करबो केलौं, आइ धरि अजश नइ भेल। मुदा अहाँ जखन पुछलौं तँ पुछै छी, दोसरकेँ किए पसिन केलिऐ?”

भागेसर कहलखिन-

“बौआ, अहाँ साधारण श्रेणीक लोक नइ छी जे किछु कहि देब। दू रूपमे ज्ञान काज करै छइ। गुण आ निर्गुण। अहाँ छोट भाए छी, जखन पेट काटितौं तखन छाती दहैलियो सकै छल। मुदा देखैक जे भार देलौं से अही दुआरे जे अपन जेठ भाय बुझि नीकसँ तकतियान करब।”



शब्द संख्या- 316

कचहरिया-भाय

कचहरिया भायकेँ देखवते नीरस टोकलकैन-

“भाय, ओहूँकेँ कचहरिया-उतरी भरिसक नहियेँ उतरत?”

कचहरिया भाय आ नीरस लंगोटिया संगी। भरिसक नै साल तँ महिने, नइ महिना तँ दिने, नइ दिन तँ घन्टे-मिनटक नीरसे पैघ हेतैन। जिनका जनम-टिप्पैन लिखाएल हेतैन तिनका ने आ जिनका नइ लिखाएल हेतैन ओ तँ अपने टीपत...।

कचहरिया-भाय बच्चेसँ चँगला से नीरसमे कम छल। जहिना बौगला पोखैर वा पानिक किनछैर धड़ैत तहिना एकठाम रैन-बसेरा रहितो कचहरिया-भाय कचहरीक लाट पकैड़ लेलकैन। नीरसक प्रश्न कचहरिया भाइक मन हौंर देलकैन। दुनियाँ बड़ीटा छै, झूठ-सच चलिते रहतै। चलबो केना नै करतै, कोनो की अन्हार-इजोत एकदिना छी जे ओरा जाएत? तखन तँ भेल जेतए छी तेतए कुहेसकेँ भगा कऽ राखी। तहूमे नीरस लंगोटिया भैयारी छी, कोन दिनक कोन गप एहेन हएत जे नै बुझल हेतैन। रसे-रसे मनकेँ सोझ करैत बजला-

“बौआ नीरस, रहल तँ रस नइ तँ बेरस। आब अपना सभ अन्तिम घाटक घटवार भेलौं। भगवान तोरा सन बेटा सभकेँ देथुन जे कन्हाक भार उताइर अपना कन्हापर लऽ लेलक।”

आगूक बात बजैले कचहरिया भाइक ठोर पटपटाइते रहैन कि बिच्चेमे नीरस टोकि देलकैन-

“अहाँक बेटा की दब छैथ?”

जेना कचहरिया भाइक छाती चहैक गेलैन। फुटल कसताराक दही जकाँ मुहसँ निकललैन-

“रसगुल्ला रसक चहैट शुरूहेसँ लगि गेल जे अपनो बुझै छी। हलवाइक कुकुर जकाँ एक्कोटा रुइयाँ देहमे नै अछि मुदा चहैटो तँ चुहैट कऽ चोहटबे करत।”

बाल-बोध जकाँ नीरस मनकेँ फुसलबैत-बहलबैत कहलकैन-

“अच्छा भाय, एकटा कहू जे जुआनी आ बुढ़ाड़ीमे की बुझि पड़ैए?”

सह पबैत कचहरिया-भाय भगैतक पलगाँइ जकाँ बजला-

“गेल रे जुआनी फेर केतए पएब!”

नहलापर गुलाम फेकैत नीरस भाय बजला-

“कृपा पाबि कियो मूकसँ वाचाल बनैए तँ कियो वाचालसँ मूक..!”

मुड़ी डोलबैत दुनू गोरे जिनगीक कुंज भवनमे घुमए लगला।



शब्द संख्या- 270

गोहाइर

कमला कातक नवटोलीक गहबर बड़ जगताजोर। सएह सुनि अपनो गोहाइर करबैक विचार भेल। भाँज लगेलौं तँ पता चलल जे तीनू वेरागन–सोम, बुध आ शुक्र–भगता भाउ खेलाइ छैथ, मुदा शुक्र दिन तँ साक्षात् कालीए-माइक आवाहन रहै छैन। मन थीर भेल। डाली लगबए पड़ै छै तँए ओरियौनक विचार भेल। मन भेल जे पत्नीकेँ डाली ओरियौनक भार दिऐन। मुदा बोलकेँ रोकि विचार कहलक-

“देवालयक काज छी, एकोरत्ती कुभाँज भेने गोहारियो उनटे हएत। डालीक वौस बाजरसँ कीनए पड़त। मुदा सस्त दुआरे जनिजाति उनटा-पुनटा वौस कीनि लेती।”

मन उनैट गेल। अपने हाथे वेसाहैक निर्णय केलौं।

बजार पहुँच फूल काढ़ल सीकीक रँगर डालीक संग बेसीए दाम दऽ दऽ नीक-नीक वौस वेसाहलौं। मन पड़ल जे भरि दिन उपासो करए पड़त। चाहो तक नइ पीब सकै छी। जँ पीबैयोक मन हएत तँ गोसाँइ उगैसँ पहिनहि भलेँ पीब लेब।

तनावसँ भरि दिन मन उद्गिन रहैए। ने काज करैक मन हुअए आ ने कियो सोहाइत रहए। एहेन तनाव दुनियाँमे केकरो भरिसके हेतइ। कोन जालमे पड़ि गेलौं। तहूमे एकटा रहए तब ने। जालक-जाल लागल अछि। जमीन-जत्थाक जाल, जन-जाल, मन-जाल, तन-जाल, शब्द-जाल, अर्थ-जाल, विचार-जाल, वाक्-जाल.., नहि जानि केते जाल बनौनिहार केते जाल बना कऽ पसारि देने अछि! एक तँ

ओहिना इचना माछ जकाँ लटपटाएल छी तैपर सँ जालक-जाल! गैंचीक नजैर तँ नहि जे ससैर-फसैर छछारी कटैत जान बँचा सोल्हैनी जिनगी पाबि लेब। तँए नवटोलीक गहबरमे डाली लगेलौं।

गुहरियाक कमी नहि। अकलबेरेसँ गुहरिया पहुँच पतियानी लगा बैसला। गहबरक भीतर बैस कऽ भगत धियान मग्न भऽ गेला। गहबरसँ उद्वेलित भाव भगतक हृदैकेँ कम्पित करैत रहैन। हाथमे जगरनथिया बेंतक छड़ी नेने भगत गोहाइर करए बाहर निकलला। गोहाइर शुरू करैत बजला-

"भगत-अश्रमसँ श्रमक बाट पकैड़ चलि जाउ। आगू किछु ने हएत।"

भगतक पछाइत डलिवाह चेतौनी दैत बजैत रहथिन-

"पाछू घुमि नै ताकब। केतबो जोगिन सभ कानि-कानि किए ने बाजए मुदा घुमि नै ताकब।"

हमरो नम्मर लगिचाएल। मुदा एक्के वाक् सुनि उत्सुकता ओते नहियेँ रहए जेते नव वाक् सुनैक होइत। अनेरे मनमे तुलसीक विचार उठि गेल। कहने छैथ जे जेकरा जंजाल रहै छै तेकरा ने चिन्ता होइ छइ मुदा जेकरा नै छइ..?

तही बीच भगत हमरो सोझहामे आबि पैछले बातकेँ दोहरबैत एकटा नव बात पुछलैन-

"छुटि गेल किने?"

बिनु तारतमे बजा गेल-

"हँ।"

विदा भेलौं। बाटमे विचारए लगलौं जे अश्रमक अर्थ की होइ छइ? मुदा कोनो अर्थे ने लागल। हारि कऽ ऐ निष्कर्षपर एलौं जे एक

सोगे आएल छेलौं दोसर नेने जाइ छी।

गाम अबिते टोल-पड़ोसक लोक भेँट करए आबए लगला। सभ एक्के बात पुछैथ-

“की भेल?”

किछु गोरेकेँ प्रश्ने बना कहलयैन-

“अश्रमक अर्थे ने बुझलौं। अहीं कहू।”

मुदा जेते मुँह तेते रंगक उत्तर भेटए लगल। सुनैत-सनैत मन घोर-मट्ठा भऽ गेल। पछाइत जे कियो पुछैथ तँ कहए लगलयैन-

“जहिना छेलौं तहिना छी। जहिना छेलौं तहिना छी।”



शब्द संख्या- 432

शिवजीक डाक-बाक्

चौदहो भुवनक भ्रमणमे काक-भुशुन्डी वौराएल रहैथ, तैबीच शिवजीक संग गुरुओजी पहुँचलैथ। सज्जा सजल शव जकाँ काक-भुशुन्डी ने गुरुएजीकेँ आ ने शिवजीए दिस तकलैन। मणिक जोहमे अपने समुद्रमे डुमकी लगबैत रहैथ।

दलदल पानि सद्दश गुरुजी तँए कोनो आनि-पीड़ा नै भेलैन। मुदा पाछू पिछड़ैत काक-भुशुन्डीकेँ देख शिवजीक क्रोध सीमा तोड़ि बहरा गेलैन। शाप दैत बजला-

"बैठि रहेसि अजगर इव पापी।

जो रे अभगला! तों अजेगरोक कान कटलँह। जो तूँ साँप हेमे।"



शब्द संख्या- 70

सोग

आने दिन जकाँ तरगरे प्रोफेसर लीलाधरक नीन टुटलैन। जेना आन दिन नीन टुटिते ओछाइन छोड़ि टहलए विदा भऽ जाइ छला से आइ नइ भेलैन। ओछाइन छोड़ैसँ पहिनहि मनमे उठि गेलैन- 'एक्कैस मार्चकेँ पचास बर्ख पूरि एकावनममे प्रवेश कऽ रहल छी।'

प्रोफेसर लीलाधरक मनमे एलैन जिनगीक पचास बर्ख। जँ साइए बर्खक अधार बनबै छी तैयो अदहा टपि गेलौं। मुदा से केना हएत? जिनगी तँ विभाजित अछि। तँए एकक पछाइत दोसरमे प्रवेश आ पैछलाक नीक-अधलाक समीक्षा। मुदा हिसाबे उकड़ूमे पड़ि गेल अछि। साए बर्ख जीबे करब तेकर कोनो गारंटी अछि। तखन अदहा केना मानब? लगले नजैर नोकरी दिस बढ़लैन। जइ दिन नोकरी शुरू केने रही तइ दिन बत्तीस बर्ख जोड़ने रही। गुन भेल जे तीन बर्ख बढ़ि गेल, पैंतीस बर्खक नोकरी भऽ गेल जइमे पच्चीस बर्ख पूरि गेल अछि। दसे बर्ख बँचल अछि। अहू पच्चीस बर्खमे आठ बर्ख ओझे-गुनी खेलक। सतरह बर्खक नोकरीकेँ नोकरी बुझलौं, जखन कौलेज सरकारी भेल। एकाएक बीस गुना जिनगीमे उछाल आएल। साठि हजारक नोकरी कोनो मामूली छी, जैठाम अखनो केतेको लोक पेटेपर खटैए। मुदा जहिना तीआरि जालक ओझरीकेँ छोड़बै दुआरे लोक पूजियो गमा फेकिए दैत अछि। मुदा से तँ लीलाधरकेँ नइ भऽ पाइब रहलैन हेन। ओझरी जेते छोड़बए चाहैथ तेते अमती काँट जकाँ ओझराइते जाइ छेलैन।

तखने पत्नी ओछाइन छोड़ि, कपड़ासँ मुँह पोछि ऐनामे देख,

कटोरिया धोइध नेने फुदकैत विजयी-मुस्की दैत पतिक ओछाइन लग पहुँच मुँह दिस तकलखिन।

टक-टक आँखि तकैत लीलाधर पत्नीकेँ नै देखलैन। मनुख की चिड़ै आकि कौछ छी जे अण्डा दऽ पड़ा जाएत। पड़ाएल आकि पड़ौल गेल ऐ प्रश्नमे लीलाधर ओझरा गेला।

टकटकी देख पत्नी डरि गेली। मुदा तैयो अपन अर्ज निमाहैत बजली-

“कथीक सोग..?”

प्रोफेसर लीलाधर बजला-

“किछु ने!”

मुदा मनमे रहैन जिनगीक सोग। मरैयो बेर तक पत्नी सिरे चढ़ि खेती। काल्हि धरि की केलौं? यएह ने जे तेते हित-अपेछित बना लेलौं जे सालक दस प्रतिशत कमाइ भोजे-भातमे चलि जाइए। तैपर अपनो सभ दिन अनके खेबै, से केहेन हएत। मुदा सभ दिन जँ भोजे खेबै तँ विद्यापतिक हिसाब–अदहा जनम हम नीन गमाओल–केँ की करब। एक तँ किछुओ पाइ जमा नइ करि सकलौं आ जेहो केलौं ओ दस बर्खक बादे भेटत। की तीनू बच्चाकेँ आगूक शिक्षा दऽ पाएब?



शब्द संख्या- 341

पनचैती

परसूसँ सौंसे गाममे यएह चरचा जे ई पनचैती केना हएत। एक दिस सोनेलाल बाबा आ दोसर दिस विधायकजीक प्रतिनिधि। तहूमे खासे मसियौत सेहो छिऐन।

विधायकजी भिन्ने गजुआइत जे एक जातिक भौंट प्रभावित हएत। मुदा अपनो आदमी किछु नै कहत सेहो बात तँ नहियेँ। नीक हएत अस्पताल धऽ ली। भेँट करए सभ एबे करत, ओतइ सँ फरिया देब।

सोनेलाल बाबाक दियाद-वाद, जाति-समाज इन्दिरा अवासक भाँजमे। तँए या तँ गबदी मारि दैत या तँ सोझहा एबे ने करैत। पुतोहुक दुआरे बेटोसँ मिलान नहियेँ जकाँ। मुदा बिना फरियौने तँ टुटल गाड़ीक पहिया जकाँ गेबे करत- ‘काँकोड़ रोटी’

चेहरासँ सोनेलाल बाबा अस्सी बर्खक बुझि पड़ै छैथ मुदा छैथ छियासैठे बर्खक। जरल मनमे आगि उठलैन। तीन साल पहिने इन्दिरा आवास वएह प्रतिनिधि विधायकजीक सोझहामे गछलखिन। सोनेलाल बाबा तही दिनसँ वौआइ छैथ। मुदा अखन धरि नै भेटलैन। वेचाराक मनक धधरा ओइ दिन धधैक उठल जइ दिन सोनेलाल बाबा पुछलखिन-

“नेताजी, दौगैत-दौगैत टाँग टुटि गेल। आबो कहू?”

प्रतिनिधि कहलकैन-

“आइक युगमे बिना खुऔने-पीऔने काज चलै छइ?”

सोनेलाल बाबा बजला-

“ई बात ओइ दिन किए ने कहलौं जइ दिन हमरो हाथमे भोँट छल।”

“अखन एते छुट्टी नइए, दोसर दिन बात करब।”

पगलाएल सोनेलाल बाबा की केलैन से अपनो नै बुझलखिन।



शब्द संख्या- 195

कनमन

साढ़े चारि बजैत। हाइ स्कूलसँ अबिते सुधीरक नजैर दरबज्जापर बैसल बाबा–श्याम सुन्दर–पर पड़लैन। बाबाक खसल मन देख दरबज्जा-अँगनाक बीच मोड़पर सुधीर तेकठी जकाँ ठाढ़ भेल। केमहर डेग बढ़ौत से फरिछेबे ने करइ। पहिने बाबाकेँ पुछिऐन जे किए मन खसल अछि, आकि किताब रखि कपड़ा बदैल आबी। रस्तेसँ भूखो-पियास लगल अछि। नबे बजेक खेलहा छी...।

तेकठीक तीनू खुट्टाक बीच अपनाकेँ सुधीर पौलक जे दूटाक कनाइत 'तेकठी' नाओं धरबैए जखन कि तेसरक नाओं 'गोड़ी' भऽ जाइ छै, जेकरा ऊपर लाद लादि लदाना दइ छइ। बाबाक बात बुझब सभसँ जरूरी अछि, मुदा बरदाएल हाथे कइए की सकबैन..?

कपड़ा बदलब ओते महत नै रखैए तँए एना करी जे बाबाकेँ कहिऐन- हमहूँ आबि गेलौं जइसँ जाबे ओ अपन बात बजता-बजता ताबे पोथी रखि आएब। कनी डेगेमे झाड़ आनए पड़त...।

सहए करैत बाजल-

"बाबा, किए मन खसल अछि?"

कहि पोथी रखए आँगन गेल। पोथी रखि श्याम सुन्दरक लग आबि सुधीर बाजल-

"बाबा, मन खसैक कारण की अछि?"

आस-निआसक बीच श्याम सुन्दर ओझड़ाएल छला, तँए नजैर खसल छेलैन। पोताक प्रश्न भारी पबै छला। चालीस बर्खक संगी हेरा-

फेरीमे जहल चलि गेल छेलैन, तेकरे सोग रहैन। मुदा बाल-बोध लग बाजी वा नै बाजी? छिपाएब झूठ हएत नै छिपाएब सेहो तँ नीक नहियेँ हएत। नीकक चर्च हेबाक चाही, अधलाक तँ फलो अधले हएत...।

सोचैत-विचारैत श्याम सुन्दरक मनमे उठलैन- एहनो तँ भऽ सकैए जे छिपबैत-छिपबैत छिनारक छिनरपनीए छीप जाए! मुदा एहनो तँ भऽ सकैए जे एक-दोसराक अधला छिपबैत-छिपबैत छिपारेक समाज बनि जाए! ..तत्-मत् करैत श्याम सुन्दर बजला-

“बौआ, अखने सुनलौं जे रूपलाल जहल चलि गेल। मिरचाइक झाँझ जकाँ वएह मनकेँ मलीन केने अछि।”

श्याम सुन्दर जे कहि अपनाकेँ हटबए चाहैथ से लगले नइ हटलैन। कारण भेल जे जहलक नाओं सुनि सुधीर दोहरा देलकैन-

“किए रूपलाल बाबा जहल गेला?”

सुधीरक प्रश्न श्याम सुन्दरकेँ ज्वर आनि देलकैन मुदा ज्वार नै बनि तुरछैत ज्वारि तँ आबिए गेल रहैन। बुझबैत कहलखिन-

“एते पुरान रहितो रूपलाल समैकेँ ठेकानबे ने केलक। पुरना चालिसँ आब काज चलैबला छै! बुझथुन जे केहेन दादासँ पल्ला पड़ल।”



शब्द संख्या- 323

अजाति

गुरु काका, बड़का काका, पढ़ुआ काका, लालकाका, भैया काका, दोस काका, संगी काका सभ कियो एकठाम बैस रघुनाथक गप चलौलैन।

गुरु काका बजला-

“शेतानक चरखी अछि रघुनत्था।”

सह मारैत बड़का काका बजला-

“एहेन छुतहर एकोटा ने कुल-खनदानमे भेल!”

अस्पष्ट विषय आ स्पष्ट एकमुहरी गप देख दोस काका बजला-

“एना गौं-गौं केने नै हएत। किछु स्पष्ट विचार करए पड़त।”

अपन भार हटबैत पढ़ुआ काका टपकला-

“भने दोसक विचार छैन। लाल भाय अहीं अपन निर्णय सुना दियौ।”

गम्भीर होइत लालकाका फैसला देलखिन-

“रघुनाथ अजाति भऽ गेल।”



शब्द संख्या- 90

पटोर

किशोरी ऐठामक बिआहक काज तेतरी सेहो देखलक। पक्का पति-भक्त तेतरी। राति-दिन पतिक विचारक सेवा हृदैसँ करैत।

रंग-रंगक पटोर साड़ी पहिरल देख लाड़-झाड़ करैत पति–गुलेती–कैँ तेतरी कहलक-

“हमरो पटोर साड़ी कीनि दिअ?”

अनुकूल रखै दुआरे गुलेती अनुकूल शब्दक सहारा लैत सोचए लगल जे जहिना अन्हार घर साँपे-साँप होइ छै तहिना ने दुनू बेकती छी। रंगक चमकी देख ओ (तेतरी) लटुआएल अछि आ अनुकूलक अपने लटुआएल छी। मुदा छी तँ दुनू एक्केरंग। जखन एक्केरंग छी तखन बीचमे बाधा कथीक। जेहने अपने पटोर साड़ीक सम्बन्धमे जननिहार, किननिहार छी तेहने ने ओहो अछि। तखन तँ भेल जे ‘की परसै छी तँ फूसि। तहन कनी लगाइए कऽ देबै... ।’

ओना, अपन आँट-पेट देख गुलेती सहमल नहि। बुझलक जे जहिना गुलेतीक शिकार तहिना ने मुँहक शिकार होइए। दुनूक सोल्हैनी गारंटी थोड़े अछि। तहूमे चोबिसो घन्टा संग रहनिहारि नारीक नश-नश नै बुझी तँ ई केकर दोख... ।

जहिना कलीसँ गुलाब छिटैक छिटकए लगैत तहिना चौअन्नियाँ मुस्की छिटकबैत गुलेती बाजल-

“केहेन पटोर लेब?”

जहिना स्वर्गक आशामे लोक, सभ किछु दान करैले तैयार रहैए

तहिना पटोरक आशामे तेतरी। हजारोक भीड़मे जहिना प्रेमी प्रेमीकेँ पकैड़ सटि जाइत तहिना गुलेतीक हृदैमे तेतरी सटि गेल। गोदीक बच्चाक सुतैक भार जहिना गोद लैत तहिना अलिसाएल तेतरी बाजल-

"जेहने किशोरीक अँगनामे देखलिऐ।"

"एक्के रंगक देखलिऐ?"

"नहि, सभ रंगक रहइ।"

एकटा संगी रहने ने लोक हराइए मुदा जँ तइसँ बेसी होइ तखन केना हराएत? जेतइ हराए लगत तेतइ संगी भेट जेतइ। ..पत्नीकेँ हराइत देख गुलेती बाजल-

"अहाँक विचार नै मानब तँ दुनियाँमे केकर विचार मानैबला अछि। अहाँकेँ हाथ पकैड़ अनने छी तहन विचार केना नै मानब। अहाँक मांग मानि लेलौं, कागतमे लिख लेलौं। जइ दिन बजार जाएब तइ दिन कीनने आएब। खाली बजार जाइ-घड़ी पुरजी मोन पाड़ि देब अहाँ। अच्छा एकटा बात बुझल अछि, ओ साड़ी एक्के बेर पहिरला पछाइत खीचल जाइ छै? से सभ दिन केतए खीचबै?"

'साड़ी खीचब' सूनि तेतरीक विचार ठमैक गेल। बाजल-

"तखन ऐ बेर छोड़ि दियौ। आगू साल अगते कीनि देब।"

भार घुसकैत देख गुलेती दुनू जाँघपर हाथक शान पिजबैत बाजल-

"कहू तँ भला, अच्छा अहीं मोन पाड़ि दिअ जे एतेक उमेरमे अहाँक कोन गप कहिया कटलौं?"

केकरो गप अपने टुटि जाइ छै तँ ऐमे केकर दोख। हँ तखन ई बात जरूर भेल अछि जे गामक चालि बदलल। पहिने गाममे चोरकेँ अबिते जएह देखलक सएह 'चोर-चोर' हल्ला करए लगै छेलै, मुदा

अर्थक चक्का तेहेन दिशा पकैड़ लेलक जे समाजिकता तहस-नहस भऽ गेल अछि। जहिना राम-रावणक बीचक जे तीर चलइ आ दस-दस-बीस-बीस गरदैन कटि हवामे उधियाइत एकठाम भऽ सटि जाइत, तहिना ने भऽ रहल अछि।



शब्द संख्या- 409

(ई बीहैन कथा–"पटोर"–श्री मनोज कुमार कर्ण उर्फ मुन्नाजी-ले...)

फुसियाह

सुभितगर समय भेने अनुकूल काजक विरधी जिनगीकेँ आगू मुहेँ ओहिना ससारैए जहिना प्रतिकूल भेने विपरीत दिशामे पाछू मुहेँ ससारैए। मुदा किछु भेद तँ भाइये जाइ छइ। ओ छी कम-बेसीक गणित।

साँझक आठ बजैत। ओना माघक आठ, 'राति' कहबैए मुदा से नहि, सौन-भादोक आठ, 'साँझे' कहबैए। आठ घन्टा दमकल चला घरपर आबि कमलदेव गदगदाएल मने पत्नी–सुचित्रा–केँ कहलखिन-

"पहिने चाह पिआउ, पछाइत एकटा गप कहब?"

जहिना कर्मकेँ वचन सदिछन दबैत रहैए तहिना सुचित्रा चाह बनबैसँ पहिने हठ करैत बजली-

"सुनल रहत तँ चाहो बनबै बेर विचारब, ओना खटखुट मन केने कहीं चाहो ने दुइर भऽ जाए। से नइ तँ कहिए दिअ"

पत्नीक बात सुनि कमलदेव सोचमे पड़ि गेला। शुभ काजमे अशुभ बात ओहन करामात कऽ दैत जहिना एकटा छिक्का हाइ-कोर्टक फैसला उनटा-पुनटा दैत अछि। हो-ने-हो कहीं अही गपक धुनिमे चाहक धुनि बिसैर जाइथ। तखन तँ दिन-भरिक मेहनत मेहनते रहि जाएत, बजला-

"अनेरे कोन झूठ-फूसक फेरिमे पड़ै छी पहिने चाह पिआउ, तखन दुनियाँ-दारीक गप-सप्प हेतइ।"

मुस्की दैत सुचित्रा बजली-

“तँए ने पहिने घर-परिवारक काज निबटा लिअ चाहै छी। अहाँ सन पुरुख हम थोड़े छी जे भरि दिन छाती भरे खटै छी आ गामक लोक ‘फुसयाहा’ कहैए।”

पत्नीक बात सुनि कमलदेवक मनमे झोंक एलैन। जहिना गुम हवामे सुरूजक ताप अपन करामात करैत तहिना एक तँ कमलदेवक मनमे चाहक झोंक चढ़ल रहबे करैन तैपर सँ पत्नीक मुहेँ ‘फुसियाह’ सुनि आरो तेज भऽ गेलैन, बजला-

“ने अहाँ कहने कटहर हएत आ ने गौंआँ कहने बरहर हएत। कटहर कटहरे रहतै, बरहर बरहरे रहतै। एक रंग आँठी-कमड़ी भेनहि की हएत?”

पतिक विचारकेँ अँकैत सुचित्रा बजली-

“अहाँ तमसा गेलौं। तमसाउ नहि। लोक जे अहाँकेँ फुसयाहा कहैए तेकर कारण अछि जे काजक हिसाबसँ समय नै दइ छिऐ, घड़ीक हिसाबसँ समय दऽ दइ छिऐ।”

पत्नीक विचारकेँ अँकैत कमलदेव दोहरबैत पुछलखिन-

“कनी फरिछा कऽ कहिऔ?”

सुचित्रा कहलकैन-

“केकरो खेत पटबैक जे समय दइ छिऐ ओ खेतक हिसाबसँ समय दियौ। काजक समय दोसर होइ छै आ घड़ीक समय दोसर।”



शब्द संख्या- 311

गति-मुक्ति

सज्जासनसँ उठि आँखि मीड़िते बाबा रमचेबलाकेँ उठबैत कहलखिन-

"रे रमचेलबा, दिन-रातिकेँ लोक एकबट्ट करैक भाँजमे अछि आ तूँ ढेंग जकाँ पड़ले रहमेँ?"

आँखिक काँच-सुखल काँची पोछैत रमचेलबा ओछाइनेपर सँ बाजल-

"जे कहै छहक से तँ कइए दइ छिअ। तखन ढेंग किए कहै छह?"

जाधैर बाबा नहलापर गुलाम फेंकितैथ ताधैर ओछाइनपर सँ उठि रमचेलबा लगमे पहुँच गेलैन। बाबा बजला-

"रे तों तँ हमर ने कऽ दइ छेँ, तइसँ हेतौ।"

मुँह बाँबि जहिना चूजा अहार मंगैत तहिना रमचेलबा पुछलकैन-

"तब?"

रमचेलबाक जिज्ञासा देख बाबा कहलखिन-

"अपना-ले कर।"

बाबाक पक्का चेला रमचेलबा। एक पाइ बाम-बुच नहि। मुड़ी डोलबैत बाजल-

"अच्छा, गिरह बान्हि लेलियह। मुदा ढेंग किए कहलह?"

रमचेलबाकेँ मानै-जोकर भाषामे बाबा कहलखिन-

“देख, जाबे गाछक शील काटि कऽ रखल रहै छै ताबे ढेंग कहबै छइ। ओकरे जखन आड़ा-मशीनपर लऽ जा तख्ता चीरा नाव बना पानिमे दौड़बै छै तखन ओहो अपन भरि पेट आदमीकेँ धारमे झिलहोरि खेलैत पार करै छइ। मुदा एकटा बात कहि दइ छियौ, जे जे पुछबाक होउ से पुछि ले, किए तँ एको मिसिया जीबैक मन नइ होइए।”

पाछू उनैट रमचेलबा तकलक तँ बुझि पड़लै जे जाबे जीबैक लूरि नइए ताबे जीबै केना छी। तहूमे बाबाक संगे। मुदा बुढ़-बुढ़ानुसक बिसवासे केते जँ कहीं टटके आँखि मूनि देलैन तखन तँ अपनो मन आ हुनको मन लगले रहि जेतैन। बजला-

“बाबा हौ, गति-मुक्ति केकरा कहै छइ?”

रमचेलबाक प्रश्न सुनि बाबा विह्वल भऽ गेला। भावावेषमे बजला-

“चौबिसो घन्टा जँ समयक संग मनोनुकूल जिनगी जीबए लगी, सएह भेल गति-मुक्ति।”



शब्द संख्या- 238

चौकीदारी

तीन दिन झंझारपुर-मधुबनी दौड़-बरहा केला पछाइत चौकीदार रामटहल दास पैछला आठ मासक दरमहो आ आनो-आन भत्ता उठा सात बजे गामपर पहुँचल माने घर पहुँचल। रस्तेसँ निआरि लेलक जे आरो जे हेतै, से पछाइत हेतै पहिने भरि पोख सूतब। तीन दिनक दौड़-बरहा कोनो लज्जैत देहक रहए देलक। ने नहाइक ठेकान आ ने खाइक। ठाकुरोजी-कैँ एक लोटा जल नै चढ़ा सकलौं। खाएर जे हौउ, 'जे पूत हरबाहि गेल, देव-पितर सभसँ गेल।' मुदा ओछाइनपर पहुँचैसँ पहिने जे काज अछि से तँ करए पड़त...।

मुँहक रोहानीसँ पत्नी परेख नेने रहैन तँए पाँचटा तरुआ-भुजुआक ओरियानमे जुटि गेल छेली।

स्नान-धियान, तिलक-चानन आ पूजा-पाठ करि रामटहल दास भोजन करए आँगन पहुँचल। अँगनाक चुहचुही देख मनमे खुशी भेलइ। मुदा चुहचुहीक कारण नजैरपर पड़बे ने केलइ। पत्नीपर आँखि पड़िते आँकि लेलक जे चुहचुही आँगनक किरतबे नहि, आँगनवालीक किरतबे भेल अछि।

चिक्कनि माटिक ठाँओं, नमगर-चौड़गर आसनपर बैसते पाँचटा तरुआ, पाँचटा भुजुआक संग अचार-चटनी सजल थारी राम टहल दास आगूमे देखलक। देखते पत्नीसँ किछु पुछैक विचार भेलै मुदा थारी रखि रामपियारी सुतैक ओछाइन सेरियौनाइकैँ काजक एक नम्मर सूचीमे रखने, तँए अखन गप केना करितैथ।

सरकारीकरण नै भेलासँ पहिने चौकीदारी समाजक दायित्व बुझल जाइ छल। टैक्सक रूपमे चौकीदारी छोट-पैघ किसानसँ लेल जाइ छल आ पनरह रूपैआ मासिक वेतनक रूपमे देल जाइ छल। अन्हरियाक सप्तमीसँ लऽ कऽ इजोरिया खष्टी धरि, माने पनरह दिन धरि गामक पहरा चौकीदार करै छल।

..गाममे दूटा चौकीदार तँए एककेँ हाथमे फरसा आ दोसरकेँ हाथमे भाला रहै छल। घरसँ निकैलते चौकीदार जोरसँ टाँहि दइ छल जइसँ गामोक लोक बुझि जाइ छेलै जे पहरूदार पहरा दइले निकैल रहल अछि। निन्न टुटिते बीड़ी-तमाकुलक संग केतौ माल-जालक तकतान तँ केतौ लघी-बिरती शुरू भऽ जाइ छल। टोले-टोले घुमि-घुमि चौकीदार ठहकबो करैत आ जगेबो करैत। जँ केतौ चोर अभड़ै तँ संग मिलि आगू-आगू दौगबो करैत।

..विल्कुल पारदर्शी कारोबार छल।

ओछाइनपर पति–रामटहल दास–केँ देखते रामपियारीक मन सिहरलैन। मन सिहैरते विचारक भाव बदललैन। एक तँ कमासुत पति तोहूमे आठ मासक बँकियौताक गरमी। बदलल मनमे उठलैन जानक जंजाल परिवार होइए। जानकेँ अकछ-अकछ केने रहैए। एक बोल दुनू परानी गपो करब सेहो ने होइए...।

रामपियारीक मन घुमलैन। तँए कि लोक मनो-मनोरथ छोड़ि देत। सहैट कऽ पति लग आबि बजली-

“दरमाहा उठबैमे पाइयो-कौड़ी खर्चा भेल?”

पत्नीक जिज्ञासा भरल शब्द सुनि रामटहल बाजल-

“जाबे बबाजी नै भेल छेलौं ताबे आ अखनमे बड़ अन्तर भऽ गेल अछि। सौंसे थानाक सेक्रेटरी छी। आन-आनकेँ तँ खर्चा हेबे करै छै मुदा हमरा नै होइए।”

तैपर पत्नी पुछलखिन-

"केते भेटल?"

'केते भेटल' सुनि रामटहल दासकेँ, जहिना सीक परहक मटकूर खसिते टुकड़ी-टुकड़ी भऽ छिड़िया जाइत तहिना भेलइ। सुखक नीनकेँ छोड़ए नै चाहलक। मुदा तैयो बजाइए गेलइ-

"भेटत की अल्हुआ! धैन समाज अछि जे मुँहक लाली अछि नइ तँ अठ-अठ महिना पेट बान्हि के खटत। जेकरा ऊपर-झपटी छै तेकरा ने, हमरा कोन अछि।"



शब्द संख्या- 442

झगड़ाउ-झोटैला

भोरे अर्द्धांगिनीक रग्गड़सँ ठमैक लालकाका दरबज्जाक बीचला खुट्टामे ओंगैठ कुही होइत मने-मन विचारै छला जे औझुका दिन भंगठले अछि। जहिना यात्रा-काल भंगठल इंजनक कोनो भरोस नहि, तहिना पत्नीक खटपटसँ लाल कक्काक मनमे होइत रहैन। औझुका दिन केहेन हएत केहेन नहि, तेकर कोनो ठेकान अछि। अपनो किछु हूसलौं। हूसलौं की! पावर चढ़ल छेलए। ओह: भोरे लोक राम-नाम लैत उठैए आ हमरा कोन दुरमतिया चढ़ि गेल से नहि जाइन। कोन एहेन पहाड़ टुटि खसल जाइ छेलै जे भोरे अढ़ौती-अढ़ा देलिऐन। निअमानुसार अपन-अपन पुरौला पछाइते ने कियो दोसर दिस देखत...।

तैबीच हाथमे चाहक गिलास नेने मुस्कियाइत पत्नीकेँ अबैत लालकाका देखलैन। जेना कोनो कोकनल खुट्टाबला घर हड़हड़ा कऽ खसैए तहिना लालकाका अकाससँ खसला। मुदा भिनसुरका तामस सोल्होअना नै मेटाएल छेलैन, तँए चाह-ले हाथ नै बढ़ौलैन। ससुराएल लोक जकाँ लालकाकाकेँ देख लालकाकीक मनमे उठलैन जे पुरुख छिआ आकि पुरुखक झड़! हाथ पकैड़ कहबैन जे चाह लिअ? आगूमे ताड़क गाछ जकाँ लालकाकी ठाढ़ रहली।

जहिना नमहर गाछक ऊपरका डारि टुटि डारि-डारिपर रूकि-रूकि कऽ निच्चाँ खसैत तहिना लालकक्काक मन फेर खसलैन। थोड़े सवुर मनमे सेहो भेलैन जे दुपहरियाक खेनाइ नै गड़बड़ाएत। पाछू उनैट तकला तँ मन पड़लैन जे एहेन-एहेन झगड़ा तँ बेसी-काल होइए।

मुदा खेनाइ-पीनाइमे कहाँ कहियो बाधा भेल। ओह! तामसमे बिसैर गेल छेलौं। पत्नीक चौअन्नियाँ मुस्कीक जवाबमे लालकाका अठनियाँ ठाह दैत हाथक गिलास पकड़ैत बजला-

“मीठगर चाह अछि किने?”

लालकाकाकेँ मुँहमे गिलास लगबै धरि लालकाकी ठमकल रहली, मुदा मुहसँ गिलास हटैबते बजली-

“ठोरमे ठोर सटैए किने?”

चाहक गरमी लालकाकाकेँ चढ़िते रहैन। अवसरकेँ बिनु गमौने बजला-

“दूधसँ नै चीनीसँ।”



शब्द संख्या- 243

घबाह ट्यूशन

घिड़नीक तिनकमिया बंशीक घबाएल माछ जकाँ बुधियार काका बीस बर्खक नोकरीक पछाइत घबाएल मने अपना दिस तकलैन। घबाएल मन अइले जे प्रतियोगिता परीक्षामे बैसै-जोकर बेटा भऽ गेलैन। उचित तँ यएह ने बनैत जे वयस देख-देख अपन विषयक बात बेटोसँ पुछि लेब। एकर मतलब ई नहि जे छौड़ाकेँ बापक पैरक जूतो आ देहक अँगो अँटि जाइ छइ। जइ दिन नोकरी शुरू केलौं, तीन मन धान महिना गौंआँ मिलि दइ छला। राजा-रजबारक गाम नहि, जे स्कूल-अस्पताल खुजत। परिवारो तहिना छल, गौंआँक मुँह देख कोनो-धरानी गुजर करै छेलौं आ गामेक बच्चाकेँ पढ़ेबो करै छेलौं। अपनो बुझि पड़ै छल आ समाजो शिक्षक बुझै छला।

अपने ऊपर दुरिमतिया चढ़ल आकि समाजक ऊपर चढ़लै आकि सरकारक ऊपर चढ़लै से बुझबे ने करै छी। जे विद्यालय या तँ बेकती-विशेषक वा समाजिक स्तरपर चलै छल ओकरा आगू केना बढ़ौल जाए ई मूल प्रश्न छल। मुदा भेल की..?

खाली संस्कृते विद्यालयकेँ कहबै आकि मेडिकल, इंजीनियरिंग आदि जेनरल विद्यालयकेँ, सभटा एक्के सिरहाने पेटकुनियाँ लधने अछि।

प्रकाशकेँ सोर पाड़ि बुधियार काका कहलखिन-

“बौआ, आब तोरा-ले दुनियाँक बहुत बाट खुजैक समय आबि गेलह मुदा समय एहेन बनि गेल अछि जे जेते सहयोगक जरूरत तोरा

पड़तह ओते नै दऽ सकबह। अपनो जुआन भेल जाइ छह, अपनो तँ किछु सोचिते हेबह?”

पिताक विचार सुनि प्रकाश बाजल-

“बाबूजी, ट्यूशनक नव क्षेत्र तँ बनिते जा रहल अछि, बुझल जेतइ।”

प्रकाशक विचार सुनि, कनी-काल गुम रहि बुधियार काका बजला-

“बौआ, तीनटा विद्यार्थीकेँ ट्यूशन पढ़ा अपनो शिक्षक बनलौं, मुदा आब लड़कीक शिक्षा बढ़लासँ ओहो घबाह भेल जा रहल छइ।”



शब्द संख्या- 244

दादी-माँ

सत्तैर बर्खक दादी-माँकेँ अखनो वहए चुहचुही गाममे बुझि पड़ै छैन जे चुहचुही सासुरमे सभकेँ बुझि पड़ैत। जइ दिन रंगल वस्त्र, भरल पेट, काजर लगौल आँखिसँ गाम देखलैन ओ जीते-जी केना बिसैर जेती।

ओना, दादी-माँकेँ परिवारमे दू पीढ़ीसँ मुखतियारी चलि अबैत मुदा पलखैतक दुआरे ऐ बातपर नजैरे ने कहियो गेलैन। कारणो अछि जे दू तरहक जिनगी लोककेँ भेटै छै, एककेँ बनल-बनाएल आ दोसरकेँ टुटल-फुटल। टुटल-फुटल घरकेँ दादी-माँ सभ दिन चिकने करैमे लागल रहली तँए सासुरक सुख दिस धियाने ने गेलैन। एक तँ औहुना जे कुरसीपर बैस जाइए ओ थोड़े बुझै छै जे कुरसीक पुबरियो पार छै आ पछबरियो पार। तँए जिनगीकेँ तीनू पार देखैक लूरि हेबाक चाही। मुदा से दादी-माँ केँ नइ छैन, परिवारक सबहक धौजैन सुनैक अभ्यस्त छैथ तँए आश्वासन तँ सभकेँ दइते छथिन मुदा जे पहिने बिसरै। सत्तैर बर्खक अपनाकेँ नै बुझि दादी-माँकेँ छोड़ल केचुआ जकाँ लहलही छैन्हे। तहूमे कोरा-काँखकेँ सभ दिन बच्चा सभकेँ लैत रहली तँए रहबो किए नै करतैन।

छह बर्ख पहिने परिवारमे एकटा गाए एलैन। जहिना मनुखसँ लऽ कऽ बाध-बोन धरि लक्ष्मी छिड़ियाएल छैथ तहिना दादी-माँ गाएकेँ बुझि सेवा करए लगली। थैर-गोबर अपन काजक सूचीमे लऽ लेलैन। छबे बर्खक दौड़मे आइ दसटा गाए खुट्टापर छैन। पहिने एकटाकेँ थैर-गोबर करैक अभ्यास छेलैन अखन दसटा-क भऽ गेल छैन, किए

मनक चुहचुही कमतैन।

ओना अखन धरि सभ तूर परिवारक काजमे सटि चलै छैन मुदा दुनू पुतोहुओ आ भाइयोमे खटपट हुअ लगलैन से भनक छैन मुदा जेकरा जे मनमे हेतै से तेहेन पाऔत, तँए धैनसन। दुनू बेटो आ पुतोहुओक बीच उठैत विवादक कारण पिता–शिवशंकर–नीक जकाँ बुझैत रहथिन। जैठाम लाखक विधायक, सांसद, वेपारी, ठीकेदार करोड़मे कुदि अरबमे टहैल रहल अछि, तैठाम मनक उछाल सोभाविके। तँए शिवशंकर गुम्म छला।

जहिना दृष्टिकूट विश्राम बेर होएत तहिना दादी-माँकेँ बुझि पड़लैन। पति–शिवशंकर–सोझहासँ गुजैरते रहैथ कि दुनू बेटा, ताल ठौकैत पहुँचलैन। दुनू बेटाकेँ देख अधरस्तेपर दादी-माँ अँटैक गेली। शिवशंकर पुछलखिन-

“तोरा दुनू भाँइक बीच एना किए होइ छह?”

पिताक प्रश्नसँ दुनू भाँइ प्रकाशो आ जोगियो एक दोसरपर दोख मढ़ए लगल। तही बीच आँगनमे दुनू पुतोहुओ डंका पीटए लगली। शिवशंकर बुझि गेला जे अँगनेक आगि असमसान तक जाइ छइ। भार हटबैत शिवशंकर दुनू भाँइकेँ कहलखिन-

“माएसँ पुछि लहक?”

अपना-अपनीकेँ प्रकाशो आ जोगियो दुनू भाँइ बाँहि पसारैत दादी-माँकेँ पुछलक-

“माए, तूँ केनए?”

गरमाएल साँस छोड़ैत दादी-माँ बजली-

“केम्हरो नहि, अपने दिस।”

शिवशंकरो आ दादियो-माँ, दुनू बेकती विचारए लगलैथ जे

समय एहेन दुरकाल बनि रहल अछि जे रातिक कोन बात जे दिनोमे सुरक्षित रहब कठिन भऽ गेल अछि, तैठाम घरेमे कुकुर-कटौज करत तँ जानत अपने। आब कि जीबैक कोनो लिलसा अछि, कमाइ छी खाइ छी।



शब्द संख्या- 411

पटोटन

अद्राक पहिल बर्खा। मास्टर साहैब आ बड़ाबाबू एक्के मोटर साइकिलसँ दुनू गोरे गामसँ झंझारपुर जाइ छला। साते किलोमीटर झंझारपुर तँए दुनू गोरे गामेसँ जाइ अबै छैथ।

थानाक बड़ाबाबू नहि, कोर्टक बड़ाबाबू–देवनन्दन–आ हाइस्कूलक शिक्षक–प्रेमनन्दन। ओना दुनू गोरे शहरुआसँ बेसी गमैये छैथ मुदा तैयो कलप कएल कपड़ा पहिर कऽ एबे-जेबे करै छैथ।

पँचकोशीमे सिंहेश्वरक नाओं एकटा नीक घरहटियाक रूपमे लोक जनैत। ओना, नाउएँ तँ नाओं छी, तइमे तँ कमी नै भेलैन अछि मुदा परदेसियाक कमाइ आ इन्दिरा आवासक चलैत काजमे कमी तँ भाइये गेलैन अछि। उमेर बेसी भेने मनमे खुशीए होइत रहै छैन जे भने काज कमि रहल अछि। एक तँ परदेश भगने नव घरहटिया नै बनि रहल अछि, दोसर हमहीं सभ जे पुरना पाँच गोरे छी सएह केते सम्हारब।

ब्रह्मपुर गाममे प्रवेश करिते बुन्दाबुन्दी पानि शुरू भेल। बड़ाबाबू ड्राइवरी करैत आ मास्टर साहैब पाछूमे बैसल। बून तँ गोटगर पड़ैत रहै मुदा कम-सम। बित-डेढ़ बितक दूरीपर बून खसै तँए कपड़ा सोंखने चलि जाइत, मुदा जेते आगू बढ़ै छला तेते पानियों बेसियाएल जाइत। बढ़ैत-बढ़ैत सिंहेश्वरक घर लग अबिते अँटैक जाएब नीक बुझलैन। सड़केपर गाड़ी लगा दुनू गोरे सिंहेश्वरक दरबज्जा दिस बढ़ला। दरबज्जा कि मालक घर। आधा घरमे माल बन्हैत आ अदहामे दरबज्जा बनौने। दरबज्जा कि एकटा चौकी मात्र। सिंहेश्वर अपने दरबज्जेपर। चारसँ

चुबैत बूनकेँ निहारि-निहारि देखैत जे रौदमे फाटि गेल अछि आकि कौआ खोदने अछि। मुदा लगले मन पड़ि गेलैन आद्रा आबि गेल, घर कहाँ छाड़लौं। तखने दुनू गोरे पहुँचला। चौकीपर सँ उठि सिंहेश्वर दुनू गोरेकेँ बाँहि पकैड़ चौकीपर बैसबैत अपनो बैसला। तरतरौआ बर्खा शुरू भेल। कलप कएल शर्टपर खढ़क चुबाटसँ दाग जकाँ हुअ लगलैन। एक तँ वेचारेकेँ अपने मनमे दुख होइत हेतैन जे केना साल खेपब तैपर सँ हमहूँ भारी बना दिऐन से उचित नहि। दागे लगत तँ की हेतै, कोनो कि केरा-दारीमक दाग छी जे नै छुटत। मुदा बड़ाबाबूकेँ मुहसँ बजा गेलैन-

“अहाँक नाओं पँचकोसीमे अछि सिंहेश्वर भाय, मुदा अपना घरक हालत एहेन बनौने छी?”

बड़ाबाबूक विचारसँ सहमत होइत सिंहेश्वर बाजल-

“बड़ाबाबू, गामसँ लोककेँ भगने गाममे काज बढ़ि गेल अछि, मुदा काजक धुनि तेहेन पकैड़ लेलक जे ठेकाने ने रहल जे बरसात आबि गेल। आब पानि छुटैए तँ नै छाड़ल हएत तँ पटोटनो तँ दइए देबइ।”



शब्द संख्या- 350

मुसाइ पण्डित

मुसाइ पण्डित गाम भरिमे विख्यात छैथ। ओहन पण्डित जिनकर बात मुसाइए पण्डितक नाओंसँ विख्यात अछि। मध्यम् जातिक मुसाइ पण्डित, माइक कोरपच्छु बेटा भेने दौजी फड़ जकाँ तीन सालमे माए आ सात सालमे पिताक श्राद्ध केलैन। मुदा बाल-बिआहक शुभ फल भेट गेल रहैन। पिताक श्राद्धसँ तीन मास पहिने बिआह भऽ गेलैन। जँ कहीं तीन मास पछुऐतैथ तँ सिमरिया-गाड़ी जकाँ मास नै कऽ पबितैथ मुदा भाग्य तँ भाग्य छी, से मुसाइ पण्डितकेँ सुतरलैन। जेकरा माए-बाप रहै छै तेकरा तँ पोथी-पतरा काज दइते छै जे बिनु-माइयो-बापबलाकेँ सुतरल। मुसाइ पण्डित पिताक श्राद्धक तीन दिनक पछाइत ससुरकेँ अरियातै-काल पुछलखिन-

“बाबू, आब तँ यएह सभ ने माता-पिता भेला, हमर की हएत? भाए-भौजाइक हालत अपनो गाममे देखते हेथिन।”

जमाइक प्रश्न सुनि कमलाकान्त गुम्म भऽ गेला। मने-मन विचारए लगला जे बेटी-जमाइक भार उठाएब भारी होइ छइ। फेर मन घुमलैन जे भगिनमान तँ कुलश्रेष्ठ होइए! मुदा लगले मन बदैल गेलैन धी-जमाए-भगिना...। जहिना घरमे सिदहा नै रहने भूखक लहैर जोर मारै छै तहिना आगूक जिनगी मुसाइकेँ जोर मारलकैन। दोहरबैत बजला-

“बाबू, किछु बजलखिन नहि?”

कमलाकान्तक मन फेर बहटलैन। पत्नीसँ पुछि लेब जरूरी

अछि मुदा से खोलि कऽ केना समधियौरमे जमाए लग बाजब। बेटोकेँ तँ पुछि लेब अछि। मुदा पुतोहु बेरमे पुछबे ने केलौं आ बेटी-जमाए बेरमे किए पुछबै। मन बनिते बजला-

"दुनू भाय-भौजाइकेँ बजबियौन। आखिर माता-पिताक परोछ भेने तँ वएह सभ ने माता-पिता भेला।"

मुसाइ दुनू भाँइकेँ पुछलैन। एक तँ औहुना लोकक घराड़ी घटल जाइ छै तैपर जँ बढ़ि जाए, ई के नै चाहत। दुनू भाँइयो आ भौजाइयो मुसाइकेँ सासुर जाइक आदेश दऽ देलक। गाए-नेरूक मिलान तँ ठेहुने-पानि दुहान।

कमलाकान्त संगे चलए कहि पुछलखिन-

"कपड़ो-लत्ता लेब।"

मुसाइ बजला-

"हँ, हँ, जेते सरधुआ कपड़ा अछि ओ जँ नै लऽ लेब तँ ऐठाम मूसे-दिवार खा जाएत।"

एक तँ ओहिना मुसाइ सहलोल, तैपर सासुरक विद्यालय पहुँच गेला। सासुरमे जँ सारि-सरहोजिसँ गलथोथरिमे हारि जाएब तँ कोन डोराडोरिबला भेलौं। जहिना विषुवत रेखाक समान दूरीपर दुनूमे दिशा समान मौसम होइत तहिना अन्हार-इजोतक बीच सेहो होइत अछि।

पच्चीस बर्खक अवस्थामे मुसाइ सासुरसँ 'मुसाइ पण्डित' भऽ दूटा धिया-पुता नेने गाम आबि गेला। जहिना फुटलो खपटाक जरूरत समय पाबि होइ छै तहिना मुसाइ पण्डितक जरूरत गाममे आइ भेल।

मौसमी बेमारीक जानकारी दइले गाममे बहरबैया सभ औता। जखनेसँ मुसाइ पण्डित सुनलैन तखनेसँ मटिया तेल देलहा कुत्ता जकाँ मनमे उड़ी-बीड़ी लगि गेलैन।

जहिना समय निर्धारित छल तहिना कार्यक्रम शुरू भेल। अभ्यागती सुआगत सभकेँ भेलैन। बारहो मासक मौसमी बेमारी आ ओइसँ पथ-परहेजक नीक जानकारी देलखिन। गाममे नव फल भेटल। बीचमे बैसल मुसाइ पण्डित सुनैपर कम धियान देने रहैथ। संगसोरमे जहिना लोक हरेलहो जगहपर गपे-गपमे पहुँच जाइत तहिना मुसाइयो पण्डित पहुँच गेला। हरलैन ने फुरलैन उठि कऽ बीचमे ठाढ़ भऽ गेला। ठाढ़ होइते बैसलाहा सबहक आँखि पड़ए लगलैन। दुनू हाथसँ शान्ति बना रखैक इशारा दैत मुसाइ बजला-

"अभ्यागत लोकैनक विचार उत्तम अछि, सभकेँ अनुकरण करक चाहिऐन।"

अपन समर्थन पाबि बाहरी लोकैन आरो ऐगला बात सुनैले जिज्ञासासँ कान ठाढ़ केलैन। मुदा जे पहिने बाजत ओ चोर, गाम-घरक खेलक मंत्र छइ। तँए आँखि, कान तँ मुसाइ पण्डित दिस सभ देलैन मुदा मुँह घुमौनहि रहला। मुसाइ पण्डित-ले धैनसन। कहिया लोक हमर बात सुनलक आ देखलक। सुनह आकि नै सुनह, मनक उदगार छी, बजबे करब। मुदा साइयो आँखि भीष्म–पितामह जकाँ गड़ल देख सम्हरैत मुसाइ पण्डित बजला-

"आम-जामुन इलाकाक हाड़-पाँजर टुटब, किसानी काजमे साँप-कीड़ा काटब, हाड़मे पैसल जाड़केँ सेहो तँ देखए पड़त, ईहो तँ मौसमीए बेमारी भेल किने?"

गौंआँ वक्ता बुझि जोरसँ सभ थोपड़ी बजौलक मुदा थोपड़ी सुनि मुसाइ पण्डित अकबकमे पड़ि गेला जे लोकक थोपड़ीक अवाज की छइ। हास हँसी आकि हँसी हास।



शब्द संख्या- 568

भरमे-सरम

बच्चामे बाबू केतबो पढ़बैक परियास केलैन मुदा हम नहियेँ पढ़लयैन। अपनेसँ जे कनैठी दऽ नाम-गाम सिखा देलैन ओ अखनो कानेपर रखने छी।

पचासम बर्ख चलि रहल अछि। पौरुसाल शिक्षामित्रक उजैहिया उठल। चौक-चौराहा, हाट-बजार, गल्ली-कुच्ची सगतैर एक्के हवा बहए लगलै। जहिना हवा पीब अधमरुओ साँप फनफना उठैत तहिना मनमे उठल। उठिते गर अँटबए लगलौं। एहेन बहैत गंगामे स्नान नै कऽ लेब तँ सभ दिन पापीए रहि जाएब। दरबज्जापर बैसल विचारिते रही आकि सुन्दर भायकेँ धड़फड़ाएल अबैत देखलयैन। हुनका देखते अपन चिंता पड़ा गेल। दया उमैड़ आएल। वेचारे एक्को कौड़ीक आदमी नइ रहला। आचार्यक उपाधि लैयो कऽ गोबर-माटि भेल पड़ल छैथ। नोकरी नै भेलैन। लग अबिते पुछलयैन-

"भाय, केमहर-केमहर?"

चौअन्नियाँ मुस्की दैत बजला-

"बेतरनी पार होइक लग्न आबि रहल अछि। डारि चुकल बानरक जे गति होइ छै वएह गति अवसर चुकल मनुखोकेँ होइ छै, तँए गंगामे हाथ धोइ लिअ।"

धारक मोइन जकाँ विचार चकभौर लेलक। पुछलयैन-

"से की?"

कहलैन-

“ऐगला साल तेते शिक्षा मित्रक बहाली हएत जे एक्कोटा पढ़ल-लिखल नै बँचत।”

असमंजसमे कहलयैन-

“भाय, हमरा तँ नामे-गामटा लिखल होइए।”

ठाहाका मारि सुन्दर भाय कहलैन-

“डेर-दू हजार खर्च करू, तेहेन सर्टिफिकेट आनि कऽ देब जे पहिलुके बहालीमे भऽ जाएत।”

रूपैआ दऽ देलिऐन सर्टिफिकेट आनि देलैन। भैकेन्सी भेल।

बेटो बी.ए. पास केने अछि। दुनू बापूत गामेक स्कूलमे दरखास दइक विचार केलौं...। कागतक जखन मिलानी केलौं तँ बेटाक उमेरसँ दू बरख कम अपन उमेर! मुदा एहेन अजोध बात बजबो केतए करब। भरमे-सरम चुप्पे रहि गेलौं।



शब्द संख्या- 233

देखल दिन

मृत्युसँ छह मास पूर्व मुनेसर काकाकेँ बेटा लग मन उबियेलैन तँ असगरे दिल्लीसँ गाम विदा भेला। परिवारसँ समाज धरि सभकेँ अचरज लगलै जे मुनेसरकेँ मनमे की चढ़ि गेलैन जे असगरे एते साहस केला..!

मुनेसरकेँ असगरे विदा होइक कारण भेलैन जे बेटाकेँ पाँच दिन समय नहि, एक तँ औहुना बैंकमे कम छुट्टी होइ छै तैपर अपनो कारोबार ठाढ़ केने अछि। पुतोहु सहजे पुतोहुए छथिन, भरि दिन एअर-कंडीशनमे बैस देश-विदेशक खेल देखब आ साज-सिंगार छोड़ि दुनियाँमे किछु देखबे ने करै छैथ। मुदा मुनेसर कक्काक साहसक कारण ईहो भेलैन जे एकेटा गाड़ी दिल्लीसँ सकरी पहुँचा देतैन। सकरी तँ औहुना घरे-अँगना भेलैन।

गाम अबिते मुनेसर काका देखलैन जे घर-अँगना तँ खण्डहर भऽ गेल, केतए रहब। अन्डी-बगहन्डी, भाँग-धथुरसँ भरल अछि। जखने बोनाह भेल तखने साँप-छुछुनैरक संग बिढ़नी-पचैहिया हेबे करत। बाप-पुरुखाक डीहक दशा देख दुख भेलैन जे जखन घरे नै तखन मनुख केना रहत। जखन मनुखे नइ रहत तँ बाप-पुरुखाकेँ के चिन्हत..? मने-मन विचार ऊपर-निच्चाँ होइते रहैन कि एक गोरेकेँ रस्ता धेने जाइत देखलखिन। ओना दस साल पहिनौं देखनै रहैथ मुदा मनुखोक बुनाबट तँ अजीव अछि। जहिना बीस बर्खक अवस्था धरि बाढ़िक आगमन रहैए तहिना साठि बर्खक पछाइत रौदियाहक। दुनू सएह तँए पुछैक जरूरत दुनूकेँ भेलैन। कमलेशकेँ अइले पुछैक जरूरत

भेलै जे आन-गामक जँ रहितैथ तँ रस्ते-रस्ते एला, चलि जैतैथ। ठाढ़ भऽ निहारि किए रहला अछि। जखन कि मुनेसर काकाकेँ जरूरी भेलैन जे जखन पुश्तैनी गाम एलौं, परिवार चलि गेल तँ चलि गेल, समाज तँ अछि आकि ओहो मेटा गेल। मोबाइल जकाँ नहि, जे अगुआ कऽ किए फोन करब, पाइयो खर्चा होइ छै! बल्कि ओइ सम्प्रदाय सदृश अछि किने जे अगुआ कऽ जेकर नजैर पड़त ओ पहिने अभिवादन करत। मुदा भेल दोसरे, जहिना पनचैतीमे एक संग अनेको बजनिहार बाजए लगैत वा मोबाइलेपर दुनू दिससँ दुनू परानी बाजए लगैत, तहिना मुनेसरो काका आ कमलेशो एक्के-बेर दुनू दिससँ बजला। आग्रह करैत कमलेश अपना ऐठाम तीन दिनक अभ्यागतीमे मुनेसर काकाकेँ लऽ गेलैन।

गाम-समाजक कुशल-समाचारक संग मुनेसर कक्काक मनक जड़िमे अपन परिवार नाचए लगलैन। कोन धरानी बाबू, एकटा साधारण पोस्ट मास्टर रहि तीस बीघा खेत बनौलैन। दस गामक बीच एकटा पोस्ट ऑफिस। मनिऑडरक रूपैआ अगुआ-पछुआ, संग-संग जिनकर रूपैआ दिअ जाथि दू-चारिअना ओहो देबे करैन। आमदनी बढ़ने पढ़ा-लिखा हाकिम बना देलैन। अखन तेसर पीढ़ी चलि रहल छैन। ..डण्डी तराजू जकाँ मुनेसर परिवारकेँ तौल रहल छैथ जे एक पीढ़ी, पिताक पीढ़ी समाजमे की सभ केलैन? बीचक की भेल आ आइ उजैर-उपैट गेल। जहिना चढ़ैत जुआनीक जिनगी बौड़ा जाइ छै तहिना ने अबैत मृत्युकेँ रोग-सोग सेहो भेटए लगै छइ।

कमलेशक घर देख मुनेसर काका चिन्ह गेला जे ई तँ संगीए-क घर छी! पुछलखिन-

“बाउ, परिवारमे के सभ छैथ?”

कमलेश बाजल-

“तीन पीढ़ीक सभ छैथ।”

मुनेसर काकाकेँ आगू बकार नइ फुटलैन। जहिना तकितो आँखिमे ज्योति नै रहै छै तहिना मुनेसर कक्काक स्थिति भऽ गेलैन।



शब्द संख्या- 441

फज्झैत

सोनेलाल आ जीयालालक बीच करीब बीस बर्खसँ चिन्हा-परिचए छैन। ओना दू गामक छैथ मुदा सटल गाम रहने खेतो एकबधू आ हाटो-बजारमे भेँट-घाँट होइते रहै छैन। कहैले दुनूक बीच अपेछो छैन, एकबधू खेत रहने अड़ियो छैथे मुदा दुनू गामक विपरीत समाजिक चालि-ढालि रहने बात-विचारमे अन्तरो छैन्हे।

कामेकेँ धाम आ कर्मेकेँ धर्मक विचार रहने जीयालाल कम आँट-पेटक सम्पैत रहनौं ने कहियो बेकारी महसूस करै छैथ आ ने गुजर-बसर करैमे परेशानी होइ छैन। जहिना मौसमी फल बरह-मसियो होइत अछि तहिना मौसमी खेतीकेँ बरह-मसिया दिस ससारैमे दिन-राति लगल रहै छैथ। जखन कि सोनेलाल सोल्हैनी मौसमी किसान छैथ।

अन्नक खेतीक संग जीयालाल फलो-फलहरी आ तरकारियो-फड़कारीक खेती करै छैथ। खेतक हिसाबसँ अपने भरि खेती करै छैथ मुदा मेहनत बेसिया दइ छैन जइसँ अदहा-छिदहा बिक्री-बट्टा सेहो भाइये जाइ छैन। जइसँ आनो-आनो काज चलिते रहै छैन। फलक खेती केने लताम, नेबो, धात्री, अनारसक गाछ नर्सरी जकाँ रहिते रहै छैन। मुदा जहिना धर्मक जड़ि 'दया' छी तहिना खेतीक जड़ि 'बीआ' सेहो छी, तँए फलक कोनो गाछ बेचै नइ छैथ। ओहिना–मंगनीए–दोसरकेँ दइ छथिन।

नेबोक एकटा गाछ जीयालालसँ सोनेलाल मंगलकैन। रस्ते-पेरेक गप छल। जीयालाल कहलखिन-

“जखन आएब भऽ जाएत।”

साल बीत गेल। ओना दुनू गोरेक बीच भेँट-घाँट होइते रहै छेलैन मुदा गाछक कोनो चर्च नहि।

दोसर साल दुनू गोरेकेँ नवानीक दुर्गा-पूजा-मेलामे भेँट भेलैन। चाहे दोकानपर बैस दुनू गोरेक बीच दुनियाँ-दारीक संग अपनो खेती-पथारीक गप चललैन। जेना हराएल वस्तु भेटने देहमे पानि जगै छै तहिना सोनेलालकेँ जगलैन। दोकानपर चारि-पाँच गामक चारि-पाँच गोरे बैसल छला। सोनेलाल जीयालालकेँ कहलखिन-

“हमर बाँकीए अछि?”

‘बाँकी’ सुनि जीयालालोकेँ धक-दे नेबो गाछ मन पड़लैन। सुहकारैत कहलखिन-

“हँ, हँ, से तँ अछिए। भऽ जाएत।”

तेसर साल, विजलीपुरमे समैधक ऐठाम दरबज्जापर सोनेलाल बैसल रहैथ तखने मधेपुरसँ अबैत जीयालालपर नजैर पड़िते सोर पाड़लखिन। समाजो आ परिवारोक पान-सात गोरे बैसल रहैथ। सोनेलालक अवाज सुनि जीयालाल सड़कसँ पच्छिम मुहेँ साइकिलो घुमौलैन आ विचारियो लेलैन जे फज्झैत करबैन। तइसँ पहिने मनमे उठि गेल रहैन जे जखन दुइए गोरेक बीचक काज छी तखन दुनियाँकेँ जनबैक कोन जरूरत। जरूर किछु बात छै तँए फज्झैतसँ जड़ि पकड़त। दलानक दावामे जीयालाल साइकिल लगैबते रहैथ कि सोनेलाल महाजनीक स्वरमे बजला-

“हमर बाँकीए अछि!”

सोनेलालक स्वरो आ जगहो देख जीयालालक देह अगिया गेलैन। एक तँ औहुना पुरुखक आदत रहल अछि जे घरोवाली लग आ

सासुरो-समधियौरोमे अलंकारिक भाषाक प्रयोग करैए। ..नजैर तेज करैत जीयालाल, लूरिगर सिपाही जकाँ जे दुश्मनेक हाथक हथियार छीनि प्रहार करैए, तहिना समाजकेँ अगुअबैत बजला-

"अहूँ सभ अपन समधिक हाल सुनू। बेटा-पुतोहु, बेटी-जमाएबला भऽ गेला, मुदा अखन धरि एकटा नेबौओक गाछ नै छैन!"



शब्द संख्या- 401

अकास दीप

दिवालीक एक दिन पहिने गाममे रंग-बिरंगक अकासदीपक खुट्टा गड़ल देख मनोहरोक मनमे उठलै जे अपनो ऐठाम जराबी मुदा लगले मन घेरा गेलै जे पाबैन-तिहार तँ परम्पराक हिसाबे चलैए, जँ से नइ तँ एके समाज माने एक जातिक समाजमे एकेटा पाबैन किछु गोरेकेँ होइ छैन आ किछु गोरेकेँ नहियोँ होइ छैन। कारणो स्पष्ट अछि जे जाति दियादमे बँटल अछि। जँ दियादीक भीतर पाबैनक दिन अशौच भऽ जाइए तखन टुटि जाइए। किछु गोरे खण्डित बुझि जोड़ि लइ छैथ, किछु गोरे छोड़ि दइ छैथ। तैसंग ईहो होइत रहै छै जे बहरबैया आमदनीपर जिनका नहियोँ होइ छेलैन ओहो नव शिरासँ शुरूहो करै छैथ। ओझराइत मनोहर, बाबासँ पुछैक विचार केलक।

मनोहर हाइ स्कूलमे पढ़ैए। घरक कोनो काज करैसँ पहिने बाबासँ पूछब जरूरी बुझलक।

सात बजे साँझ। चाह पीब पान खाइते श्यामलाल गप करैक मूडमे एला। केकरो नै देख चौक दिस जाइक विचार करिते रहैथ आकि मनोहर आबि पुछलकैन-

“बाबा, एकटा विचार मनमे भेल?”

“की?”

“ऐ बेर अपना गाममे साइयोसँ बेसी अकास दीप दिवाली दिन बरत!”

“ई तँ नीक बात भेल।”

श्यामलालकेँ अनुकूल होइत देख मनोहर बाजल-

"बाबा, अपनो दरबज्जापर..?"

श्यामलाल मुड़ी डोलबैत सोचए लगला- मनोहर बच्चा अछि हलहोरिमे मन उड़ि गेलइ। काँच कड़ची वा पघिलल काचकेँ जेहेन साँचामे देल जाइ छै तेहने ने वस्तुओ बनै छइ। सोचि श्यामलाल कहलखिन-

"बौआ, जइ गाममे मटिया तेल, जेकर उपयोग गाममे खाली डिबिए-टामे होइ छै, तहूक हाहाकार मचल रहै छइ। तैठाम तूँ भरि राति मासो दिन डिबिया बारबह से केहेन हएत?"



शब्द संख्या- 235

बुधि-बधिया

रामकिसुन आ देवनारायण लंगौटिया संगी। एकठाम बैस खेती-पथारीसँ लऽ कऽ कुटुम-परिवार सहितक गप-सप्प दुनू करैत। रामकिसुनक बेटा दरभंगासँ धड़फड़ाएल आबि कहलकैन-

“बाबू, रूपैआक ओरियान कऽ दिअ। काल्हिए भरि फार्म भरैक समय छइ।”

अपना हाथमे रामकिसुनकेँ पनरहे साए रूपैआ, पाँच साए ओरियान करब छेलैन। जैठाम लोक बेसी गप-सप्प करैए तैठाम घरक नूनो-तेल आ खेतक खरीदो-बिकरीक गप सेहो करिते अछि। मनमे भेलैन जे पैंचेक गप अछि तँ अनका किए कहबैन। पहिने दोसेकेँ कहै छिऐन, जँ नै हएत तखन बुझल जेतैक। कोनो कि पैंच-उघारक अकाल पड़ि गेल अछि जे नै भेटत। यएह तँ गुण अछि जे जेते खगल दुबराइये, महाजन ओते मोटाइये।

देवनारायणकेँ रामकिसुन कहलखिन-

“दोस, पान साए रूपैआक बेगरता भऽ गेल अछि, सम्हारि दिअ।”

देवनारायणक हाथमे रूपैआ रहबे करैन, मुदा दोससँ सूदि केना लैतैथ। महाजनी सूदिक गुण तँ बुझल छेलैन। कनी-मनी झूठ-फूस धन- सम्पैतक लेन-देनमे चलिते अछि। सुहरदे मुहेँ उत्तर देलखिन-

“दोस, जखन अपना बुझि हमरा लग एलौं तँ घुमाएब उचित नै हएत, मुदा इमानदारीसँ कहै छी अपना हाथमे एको पाइ नइ अछि।”

रामकिसुन बजला-

“तब तँ काजमे बाधा हएत!”

तैपर देवनारायण कहलकैन-

“से नइ हुअए देब?”

रामकिसुन-

“कहै छी हाथ खालीए अछि तखन बिथुत केना नै हएत?”

देवनारायण-

“अपन ने खाली अछि, हुनकर (पत्नीक) हाथमे छैन। मुदा..?”

रामकिसुन पुछलखिन-

“मुदा की?”

देवनारायण-

“आना दर सूदि तँ महाजनीमे चलै छै मुदा स्त्रीगणकेँ तँ माइक देलहा कोसलिया रहै छै किने, तँए दू-अना दर सूदि लागत।”

‘सूदि’ सुनि रामकिसुन गुम भऽ गेला। मनमे उठलैन जे सोझ हाथे नाक नै छुबि घुमा कऽ छुअब भेल। जेते घुमौन बाट रहै छै तेते ने लोको हराइये। मुदा काज खगौने तँ जिनगी खसै छइ। यएह ने परीक्षोक घड़ी छी।



शब्द संख्या- 267

पहाड़क बेथा

सौनक फुहार पड़िते जहिना नरम-गरमक बीच गप-सप्प शुरू होइत तहिना धाराक संग निकलैत पहाड़ समुद्र दिस बढ़ल तँ कबइ माछ जकाँ समुद्रो सिरा ससैर पहाड़ दिस बढ़ल। जहिना अकासक बून पबिते पानि रंग जकाँ चुहैट धड़ैए तहिना दुनूक बीच भेल। पनचैतीक ओइ पंच जकाँ जे अपन बेथा कहए जाइत आ अनके तेते बेथा रहैत जे अपन तर पड़ि जाइत, तहिना समुद्रोकेँ भेल। ओना अपन-अपन बेथा दुनूकेँ रहै मुदा सिर चढ़ल पहाड़ रहने समुद्र चुपे रहल। मनमे संतोष भेलै जे जिनगीए केहेन छैन तँए बेथे केते हेतैन। कनी पाछुए अपन बेथा राखब। खिलैत कोढ़ी जकाँ, जे फूल बनत आकि फल, बिहुँसैत समुद्र पुछलक-

“भाय, बड़ तबधल देखै छी, पियास लगल अछि की?”

जहिना पियासल बटोहीकेँ कोनो दरबज्जापर पानिक लोटा सोझहा अबिते आत्माक तरास लपैक कऽ पकैड़ लैत तहिना पहाड़ बेथित भऽ बाजल-

“देखू जे सात बितक केहेन अछि जे एक तँ अदहासँ बेसी फटले छै तैपर केहेन ठट्ठा केलक हेन!”

बेथामे नहाएल पहाड़केँ देख समुद्र पुचकारि कऽ पुछलक-

“भैया, अहूँ जँ बेथा-जेबइ तँ हमरा सबहक की गति हेतइ। अहींक आशामे ने हमहूँ जीबै छी?”

रसाएल समुद्रकेँ देख क्षुब्ध होइत पहाड़ बाजल-

“कहू जे एहनो ठट्ठा होइ छै जे टिकमे बान्हि देने अछि, खुनलौं पहाड़ निकलल चुहिया। यएह निसाफ होइ जे मेडिकलक किताब पढ़निहारकेँ जँ कियो कहै जे अहाँकेँ सरदियो छोड़बैक लूरि नै अछि, ई केहेन हएत।”



शब्द संख्या- 216

उमकी

भोलन बाबा गंगा नहाइले निरधनमाक संग गेला। गंगामे दुनू गोरे संगे पैसला, ऐ आशासँ जे जँ बुढ़–भोलन बाबा–भँसियेता तँ पोता निरधनमा पकड़तैन आ जँ बाल-बोध निरधनमा भँसियाएत तँ भोलन बाबा पकड़तैन। जाधैर दुनू गोरे पकड़ा-पकड़ी नै करितैथ ताधैर एक कालखण्ड-भरि संगे केना रहि पबितैथ।

गंगामे पैस निरधनमा पुछलकैन-

“अँए हौ बाबा, सभ चीजक गाछमे देखै छिऐ सभटा एक-रंग रहल आ गोटे-गोटे भुलैक जाइए?”

निरधनमाक प्रश्नसँ बाबाकेँ दुख नै भेलैन जे हमरे ठीकिया कऽ ने तँ पुछलक। मुदा हमरा ठिकिया कऽ बाल-बोध किए पुछत। जहिना जेठुआ पानि पीबते धरती पुरना खढ़केँ गलेबो करैए आ नवकाकेँ जनमेबो करैए तहिना तँ अखन निरधनमो अछि...।

ताधैर दुनू गोरे छाती भरि पानिमे पहुँच गेला। छाती भरि पानिमे पहुँचते जेना सर्द माथ धरि पहुँच गेलैन। सर्द पहुँचते निरधनमा दोहरा कऽ पुछलकैन-

“बाबा, जखन छाती भरि पानिमे आबिए गेलौं तँ अहीले ने लोक एते हरान रहैए, आब घुमि कऽ कथीले जाएब, से नइ तँ..?”

निरधनमाक प्रश्न सुनि भोलन बाबा हरा गेला। पानिमे जेना डुमि गेला। मनमे उठलैन जे अही उमेरमे ने बाल-बोध पानिमे नहाइले जाइत तँ उमकए लगैत। कहीं अही उमकीमे ने निरधनमा बेसी पानिमे

पहुँच भँसि जाए! जँ भँसि गेल तँ फेर एहेन लोक भेटत कि नहि! ..मन रोकलकैन, पहिने मुहसँ मनाही कऽ दइ छिऐ। नइ मानत तँ अपने ने गंगा लाभ हएत। मुदा बुढ़ाड़ीक बाट तँ अपनो टुटि जाएत। ओकरा छोड़ि एक लोटा पानियोँ देनिहार थोड़े भेटत, तेहेन जुग-जमाना भऽ गेल अछि जे...। जैठाम ताड़ी-दारूक लाइसेंस दऽ दऽ बेरोजगारी हटौल जाइए। की ऐ रोजगारसँ मिथिलाक माटि जे बाउलसँ भरि बलुआ गेल अछि–ओ उपजाऊ भूमि बनत? जाधैर नै बनत ताधैर हम सभ ओहिना बरहमासाकेँ छहमासा बनाएब आ छहमासा चौमासा तीनमासा करैत पराती-साँझ कानि-कानि गाएब, 'माधव, हम परिणाम निराशा..!'

डुमकी लइसँ पहिने बाबा निरधनमापर नजैर देलैन तँ देखलखिन जे ओ हमरे बाट ताकि रहल अछि। बजला-

"एक्के बेर डूम लिहेँ। सभ तीरथ बेर-बेर गंगासागर एकबेर।"

जहिना कियो दोस्ती करैकाल गंगाक सप्पत लैत, तहिना संगे दुनू गोरे गंगामे डूम लैत स्नान कऽ घुमि गाम एला।



शब्द संख्या- 321

बजन्ता-बुझन्ता

पोखैरक धड़िक विशाल सिमरक गाछपर दूटा सुग्गा बैस, जतिआरए सम्बन्ध बनबैत रहए। मुदा नाम-गामक ठेकान बिनु बुझने उड़ैबलाक कोन ठेकान। तँए दुनू सहमत भेल जे पहिने अपन ठौर-ठेकानक सम्बन्ध बना लिअ तखन कथा-कुटुमैतीक सम्बन्धक चर्च करब। दोसर डारिक सुगा लग पहुँच गेल। दुनू बुझैत जे घर-परिवारक गप आन किए सुनत, तँए कानमे कान सटा पहिल सुग्गा दोसरकेँ पुछलक-

“बेरादर, तोहर नाओं की छिअ?”

कनी-काल गुम रहि ओ कहलकै-

“उढ़ड़ाकेँ गामक ठेकान होइ छइ! की नाओं कहबह। तोहीं अपना विचारे रखि दएह। हमहूँ आइसँ मानि लेब।”

पहिल सुग्गा बाजल-

“बड़बढ़ियाँ।”

‘बड़बढ़ियाँ’ सुनि दोसर धाँइ-दे पुछलकै-

“भाय, तोहर नाओं की छिअ?”

पहिल कहलकै-

“पोसा।”

दोसर सुग्गा पुछलकै-

“पोसा केकरा कहै छइ?”

‘पोसा’ जवाब देलकै-

“जे मनुखक संग रहैए।”

अकचकाइत पुछलकै-

“तब तँ पिजरामे रखैत हेतह?”

पोसा कहलकै-

“हँ, पिजरोमे रहै छइ। मुदा हम ओहन पोसा छी जे बिनु पिजरेक मनुखक संग रहै छी।”



शब्द संख्या- 147

चर्मरोग

एक तँ कातिकक पूर्णिमा दोसर गहन सेहो लगत। तहूमे केते सालक पछाइत पूर्ण-ग्रहन लगि रहल अछि। गामक लोकक उजाहि देख दुनू परानी दोस काका सेहो कमला नहाइक विचार केलैन। तीनिए दिन जाइ-अबैमे लगतैन।

दोस काका काकीकेँ कहलखिन-

“जखन तीनिए दिनक बात अछि तखन किए ने घरेसँ बटखर्चा लऽ जाइ। अनेरे केहेन-कहाँ दोकानक खाएब। एक तँ बेचनिहारक हाथ-पएर नीक नै रहै छै, तहूमे कोन-कहाँ माछी सेहो भिनकैत रहै छइ।”

दोस कक्काक विचारमे अपन विचार मिलबैत काकी उत्तर देलखिन-

“अपन घर फेर अपन घर छी। कौओ-मेना अपन घरक सुख बुझैए। हम सभ तँ सहजे मनुख छी। एतबो-अचार विचार नै रखब से केहेन हएत। तहूमे तेते ने चीज-वौस महग भऽ गेल अछि जे लोक आब भरि पेट खाइए आकि मनकेँ बुझा पानिसँ पेट भरैए।”

मुड़ी डोलबैत दोस काका कहलखिन-

“काल्हि चारि बजे भोरमे गाड़ी अछि। घन्टा भरि टीशन जाइमे लगत। एक-डेढ़ बजेमे सभ कियो उठि जाएब आ जाबे दुनू पुतोहु बटखर्चा बनौती ताबे दुनू गोरे नहा-सोना लेब।”

काकी बजली-

“बड़बढ़ियाँ।”

कमला स्नान करैक विचार, तँए दुनू परानी अबेर तक गपे-सपमे जागि गेलैथ। अबेर-के सूतने नीनो अबेर तक खिहारलकैन। एक-डेढ़ बजेक बदला अढ़ाइ बजेमे नीन टुटलैन। घड़ी देखते दोस काका अपन दोख घुसकबैत पत्नीपर गुम्हरला-

“अढ़ाइ बजैए, आब करवन चुल्हि पजारल जाएत। तहूमे सभ सूतले अछि!”

दोस काका दिस अपन क्रोध नै घुसका काकी पुतोहुपर जोरसँ गरजली-

“कोन कुम्हकर्णक बेटी सभ घर चलि आएल से नहि जाइन। कहू जे एना कऽ सिखा कऽ दुनू दियादिनीकेँ कहने छेलिऐ जे एक-डेढ़ बजेमे उठि चुल्हि पजारि बटखर्चा बना देब, से चलचलउ बेर तक सूतले अछि!”

मुदा पुतोहु-ले धैनसन। सूतलमे गारिए की, जे सुनबे ने करत। पुतोहुक चाल-चुल नइ सुनि काकी अपने ठंढा गेली आगू बढ़ि जेठकी पुतोहुकेँ सोर पाड़ि बजली-

“एना कऽ कहने छेलौं, से अखन तक सूतले छी?”

भलेँ कातिक मास रोगाह किए ने हुअए मुदा जेठक राति ओहन सोहनगर थोड़े होइए, जेहेन सिनेह-सुख कातिकक निनियाँ देवीक होइए ओ जेठजनीकेँ थोड़े होइ छैन। धानसँ भरल बसुधा जहिना कड़कड़ाइत रहैए तहिना ने देवियो कड़कड़ाइत रहै छैथ। ..ओछाइनेपर सँ जेठकी पुतोहु भकुआएले जवाब देलखिन-

“अखन बड़ राति छै, एते किए औगताइ छैथ!”

एक तँ औहुना पैंतालीस-पचास बर्खक उमेर दुनू परानी-दोस

कक्काक, तैपर सँ पुतोहुक बात आरो ढील कऽ देलकैन। मुदा तैयो गारजनी रूआब झाड़ैत काकी छोटकी पुतोहुकेँ उठबैत बजली-

“कनियाँ, नइ खाइक ओरियान केलौं तँ नै केलौं, मुदा निकलबो बेर तँ अपन घर-दुआर सुमैझ लेब आकि सूतले रहब?”

पहिलुका बात छोटकी सूतलेमे गमौलैन। मुदा अन्तिम ‘सूतले रहब’ बेर नीन टुटि गेलैन। ओछाइनेपर सँ बजली-

“दीदी, सूतले छथिन?”

रातिक भुखल भोरमे जहिना छह-नम्बरा कोदारि कान्हपर लऽ खढ़होरि तामए विदा होइत तहिना खिसियाएल मने दोस काका तीन दिनक धर्मक घाट पहुँचबाक विचार जगबैत काकीकेँ कहलखिन-

“पनरहे मिनट समय बँचल अछि, झब-दे तैयार होउ, नइ तँ जहिना बटखर्चा छुटल तहिना संगियो आ कमलो स्नान छूटत।”

एक तँ ओहिना जेठुआ रौदमे सुखाएल केराउ, तैपर खापैरमे पड़िते जहिना भड़भड़ा कऽ उड़ए लगैत तहिना काकी भड़भड़ाइत दोस काकाकेँ कहलखिन-

“आन पुरुखक जे बोल राखब से निमहत। कियो अपना घरमे पुतोहुओ अनलक आ दान-दहेज लछमियो अनलक। कियो तेहेन लूरिगर पुतोहु अनलक जेकरा देहेमे सभ किछु तेहेन छै जे परिवारकेँ शिखरपर पहुँचबैए! आ अहाँकेँ आँखिमे कोन चर्मरोग भऽ गेल अछि जे चूनि-चूनि पुतोहु अनलौं!”

पत्नीक बात सुनि दोस काका सहैम गेला मुदा सासुर, समधियौर आ पत्नी लग जँ मुँह बन्न भऽ गेल तँ पुरुखे कथीक। मुदा एको डारिक पत्ता धरिक बोध तँ पत्नीकेँ हेबे करै छैन जे करनी-धरनीक सीखमे सीखिते छैथ। मुदा तैयो दोस काका अगुअबैत बजला-

“जाएब की नहि?”

लपैक कऽ काकी बजली-

“ढौआ जेबीमे लऽ लिअ आ झनझनबैत चलू..!”



शब्द संख्या- 571

शंका

चालीस बर्खसँ संग-संग रहनौं श्याम काकाकेँ काकीपर अखनो शंका बनले रहै छैन। ओना सोल्हैनी शंका नहि, मुदा तैयो शंका तँ शंके छी। सोल्हैनी अइले नइ जे परिवारक आन काजमे एको पाइ शंका नइ रहै छैन, मुदा पाइ-कौड़ी खर्चक भाँजमे तँ रहिते छैन। जइसँ आइ धरि कहियो मुट्ठी खोलि नइ धरबै छथिन।

जाधैर श्याम कक्काक माए जीबैत रहथिन ताधैर पुतोहुक हाथमे कहियो जरूरीसँ बेसी कोनो वस्तु नइ जाए देलखिन। कारण छल जे अपने जकाँ कुशल गृहिणी बनबए चाहै छेली। कुशल अइले जे कम-सँ-कम वस्तुमे जीवन-यापन करैक लूरि भेलासँ जिनगीक गाड़ी समुचित ढंगसँ चलैए से चलैत रहैन।

आब तँ सहजे नाति-नातिन, पोता-पोतीसँ घर भरि गेल छैन, मुदा तखन शंका किए छैन? ओना ओ बुझै छैथ जे घरसँ बाहर धरि जोड़ि चलैक लूरि जेकरा होइ ओ कुशल गारजन भेल, मुदा से काकीकेँ रहितो किछु विशेष सिनेह नाति-नातिन, पोता-पोतीसँ रहने अवगुण तँ छैन्हे। ओना श्याम काकाकेँ अपन इच्छा कहियो दोकान-दौरीसँ नोन-तेल करैक नै रहलैन, आब तँ सहजे नहियेँ छैन। तँए काकीए दोकान-दौरी, नोन-तेल करै छथिन। दोकान-दौरीक करैक पाछू दोसरो कारण छैन। ओ ई छैन जे कनियाँ-पुतराक की मांग हेतैन से हुनका लग तँ बाजि सकै छैथ, मुदा श्याम काका लग थोड़े बजती।

काकियो कम नइ ने छथिन, दोकानक सभ समान कहि पाइ जोड़ि कऽ लऽ लइ छथिन आ तहूपर सँ किछु उधारी केने अबै

छथिन। उधारीक कारण होइ छैन जे काजक वस्तु कहि पुतोहु चलबाकाल कहि दइ छथिन जे चौकलेट, नवका विस्कुट दोकानमे बड़ सुन्नर एलैए। पुतोहुक आग्रह केना काकी नइ मानथिन। जइसँ किछु ने किछु उधारी दोकानक भाइये जाइ छैन।

तगेदा भेलापर श्याम काका बुझबे करै छैथ आ देबे करै छथिन। मुदा मनमे कुवाथ तँ भाइये जाइ छैन जे एते धिया-पुताकेँ चसकाएब नीक नहि।

भोरे की फुरलैन कि नहि, उपराग दैत काकी श्याम काकाकेँ कहलखिन-

"एते दिनसँ एकठाँ रहलौं, मुदा भरि मन बिसवास कहियो ने भेल?"

काकीक बातकेँ गौर करैत श्याम काका पुछलखिन-

"से की, से केना..?"

श्याम काकाकेँ आगू बजैले रहबे करैन कि बिच्चेमे काकी टपैक पड़ली-

"मुट्ठी खोलि मुट्ठा कहियो मुट्ठीमे आबए देलौं?"



शब्द संख्या- 325

ओसार

नोकरीक बीस बर्खक पछाइत वसन्त भाय दू मंजिला घर बनौलैन। दू मंजिला बनबैक कारण छोट घराड़ी। कोठरी मात्र चारिए-टा।

सभ परानी मिलि वसन्त भाय घरवासो लेता आ परदेशो छोड़ता। रहैक घर आ जीबैक अपन अनुकूल कारोबारक कमाइ कमा अनने छैथ। आठ बजे राति घरवासक समय छैन।

घरवासक सभ ओरियान जुटा एकठाम सभ जुटि गप-सप्प शुरू केलैन। आइ दोसर गपे की हएत। वसन्त भाय माएकेँ कहलखिन-

"माए, परिवारमे आब पोता-पोती धरि भऽ गेलौ। सभसँ सिरगर परिवारमे तोंही छेँ, बाज कोन कोठरी लेमेँ?"

एक तँ ओहिना माइक मन उधियाएल जे जेते दिनुका दुख लिखल छेलए से कटलौं। आब तँ लिखलहो कटल। धिया-पुताकेँ जे हेतै, अपन कऽ लेत। हमरा जीबैत धरि तँ घरक दुख मेटा गेलइ। सौंसे परिवारपर आँखि खिड़बैत माए बजली-

"बौआ, कोठरी तोंही सभ लएह, ओसारक एके भाग हमरा-ले बहुत हएत?"

अपन जीत देखैत पुतोहु झाड़-झाड़ैत बजली-

"माएकेँ कहियो घरसँ सिनेह भेलैन जे हेतैन?"

अपन जीत माए सेहो देखैत। सभ दिन सहीटमे रहलौं, चललौं-फिरलौं, मुदा आब ऐ बुढ़ाड़ीमे जे सीढ़ीपर ऊपर-निच्चाँ करैत टाँग-

हाथ तोड़ि ली, एहेन वुधियारि हमहीं छी। पुतोहु दिस देखैत बजली-

“कनियाँ, कहुना भेलौं तँ बाले-बोध भेलौं। एकटा उझटो बात बाजब तँ हम नै बरदास करब तँ आन करत। हमरा लिऐ सभसँ नीक ओसारे। सभ दिन राति-बिराति घरक चौबगली घुमै-फिरै छी, घर-अँगना टहलै-बुलै छी। अन्हार-धुन्हारमे ऊपर-निच्चाँ करब नीक हएत?”



शब्द संख्या- 210

छोटका काका

दियादिक दसो भैयारीमे मुनेसर सभसँ छोट, तँए सभ 'छोटका काका' कहै छैन। जाधैर भैयारीक सभ जीबै छेलैन ताधैर कहियो छोट-पैघिक बात मनमे नै उठलैन। उठबो उचित नहियेँ। मुदा छोटका कक्काक जखन उमेर बढ़लैन, भैयारीक नबो भाँइ दुनियाँ छोड़ि देलखिन, तखन तँ उठबो उचिते छेलैन आ उठबो केलैन। उठलैन ई जे जखन सभ भाँइ छला तखन जँ छोटका काका कहै छल तँ कहै छल मुदा आब किए कहैए? जँ से कहैत रहल तँ ऑफिसक चारिम श्रेणीक कर्मचारी जकाँ बड़ाबाबू कहिया बनब? साठि बर्खक उमेर टपलौं, माथो उजरा गेल मुदा 'छोटका कक्का'क 'छोटके काका' रहि गेलौं! एक तँ औहुना छोटकासँ सझिला, सझिलासँ मझिला, मझिलासँ बड़का बनैमे केते टपान अछि, तैपर अखन धरि एको टपान नै टपलौं। देहक रंग-रूपसँ बाबा बनैक खाढ़ीमे आएल जाइ छी मुदा पीरारक गाछ जकाँ बाढ़ि कहाँ अबैए..?

असमंजसमे पड़ल मुनेसरक मनमे उठल। प्रचार प्रसारक जमाना आबि गेल अछि। नकलियो असली बनि बजारमे दौड़ रहल अछि, तँए जँ किछु करब नहि तँ ओहिना रहि जाएब। भीखमंगो तँ नहियेँ छी जे जन्मेसँ बाबा कहबए लगब। अपन पैरवियो अपने केना करब! अनेरे लोक धरखनाह कहए लगत। मुदा जे विचार अपने उठि रहल अछि ओ पत्नीकेँ कहाँ उठि रहल छैन? ओ तँ 'छोटकी काकी' सुनि आरो मुस्कियाइत रहै छैथ।

पत्नीकेँ सोर पाड़ि मुनेसर बजला-

“देखियो जे घर-परिवारसँ लऽ कऽ समाज धरि ‘छोटके काका’ कहैए से उचित भेल?”

छोटका कक्काक मनमे रहैन जे स्त्रीगण जानि कऽ कहै छिऐन जइसँ दसठाम औहुना बजती। तइसँ अपन काज ससरत। मुदा छोटकी काकी गबदी मारि देलखिन। केतौ किए बजती। अपन लाभ के छोड़ैए जे ओ छोड़ितैथ। ..काकीकेँ कहि छोटका काका कान पाथि देलैन जे केम्हरोसँ तँ हवा चलबे करत।

मुदा केतौ चाल-चूल नहि। मास दिनक पछाइत पुन: छोटाक काका काकीकेँ मन पाड़ैत दोहरौलैन-

“कहने जे रही तेकर सुनि-गुनि कहाँ केतौ पबै छी?”

एक दिस छोटका कक्काक उदास मन, दोसर दिस काकीक ओलड़ैत-मलड़ैत मन...। दोसरकेँ अनुकूल बना किछु कहैयौमे आनन्द अबै छइ। मुदा जहिना पुरुखकेँ जेठ भेने आनन्द अबै छै तहिना तँ स्त्रीगणोकेँ छोट भेने अबै छइ। जँ नै अबितै तँ किए भौजाइकेँ सभ एक लाड़ैन लाड़ि दइए। भलेँ एक लाड़ैनक बदला सात लाड़ैन किए ने खाए मुदा होइ तँ सएह छइ। छोट भेने एते लाभ तँ होइते छै जे जेठ जकाँ अशिष्ट बोलीसँ बँचैए...।

मुनेसरक मनकेँ बुझबैत काकी बजली-

“अच्छा देखियो ने समय केतौ भागल जाइए। भदबरिया मेघ कि कोनो साँझ-भोर तकैए।”

जहिना चाह पीब मन तँ मानि जाइए मुदा पेट नहि, तहिना टकटकी लगा मुनेसर छोटकी काकी दिस देखैत रहला।



शब्द संख्या- 398

सीमा-सरहद

खेते-पथार जकाँ आनोक सीमा-सरहद होइ छइ। मुदा किछु मानबो करैए तँ किछु अतिक्रमणो करैए। किछु बुझनिहार बुझितो तोड़ैए तँ किछु बिनु बुझनौं तोड़ैए।

इंजीनियरिंग कौलेजसँ रिटायर भेलाक पाँच सालक पछाइत सुधीर काका गामेमे रहबाक विचार केलैन। विचार अपने नइ केलैन, काकीक दवाबमे केलैन। कारण भेल जे राजधानी–शहरमे अपन मकान बेसाहैकाल मनमे ऐबे ने केलैन जे राजधानीक राजधानीकरण भऽ जाइ छइ। सभ तरहक राजधानी बनैक लक्षण आबि जाइ छइ।

अपराधीक भाँजमे पड़ि सुधीर कक्काक जे धन लूटेलैन से तँ सवुर केलाह, जे बाढ़िक पानि जकाँ आएल-गेल, मुदा दुनू परानी मारि तेहेन खेलैन जे राजधानी छोड़ि गाम दिसक बाट धऽ लेलैन।

दुनू परानी–सुधीर काका–गाम तँ आबि गेला मुदा इंजीनियर रहने मनमे रहबे करैन जे गामो-समाज तँ सएह बुझत। मुदा से नइ भेलैन, बाहरे जकाँ गामोमे बुझि पड़ैन। भातिजकेँ सोर पाड़ि कहलखिन-

“मनोज, गाम अही दुआरे एलौं जे अपन दर-दियाद, सर-समाजक बीच हबगब करैत जिनगी ससारि लेब। मुदा... ।”

सुधीर कक्काक विचार मनोज बुझि गेल। मुदा समुचित उत्तर नइ देब उचित बुझि, प्रश्नकेँ बहटारि बाजल-

“काका, गामक लोकमे ओते सूझ-बूझ छै जे..?”

मनोजक उत्तरसँ सुधीर काकाकेँ संतोष नइ भेलैन, तँए दोहरौलैन-

“नइ बौआ, किछु दोसर बात छइ।”

मनोज कहलकैन-

“काका, जाधैर गाम-समाजक सीमा सरहद बुझि अपन सीमा-सरहद नइ बनाएब, ताधैर... ।”



शब्द संख्या- 200

रमैत जोगी बहैत पानि

की मनमे एलैन कि नहि, एकाएक राधाकान्त बाबा घर-परिवारसँ भागि जाइक मन बना लेलैन। ओना समाज तँ समाज छी जे खाइकाल वौसैए, पड़ाइ-काल वौसैए, रूसलमे वौसैए, नहि जानि आरो कोन-कोन-काल वौसैए। मुदा से राधाकान्त बाबाकेँ कियो नै वौसए एलैन। ओना मनमे रहैन जे कियो औता तँ अपन मनक बेथा कहबैन। केना नहि कहिऐन! उपदेश झाड़लासँ झड़ै छै आकि उपैत केलासँ। मुदा मनक बात मनेमे अँतरी जकाँ घुरियाइत बहत्तैर हाथक भऽ गेलैन। केकरो नइ देख फेर मनमे उठलैन जे जखन समाजे नहि, तखन परिवारक केते आशा? बड़ करत तँ मुँहमे आगि धरौत, कठियारी के जाएत? तहूमे तेहेन चालि-ढालि सभ धेने जाइए जे एको दिन रहब की जहलसँ कम अछि..! मुदा तैयो राधाकान्त बाबा आशामे रहैथ जे परिवारोक कियो जँ वौसए चलि औत तँ वौसा जाएब। अनेरे ऐ बुढ़ाड़ीमे केतए वौआएब। मुदा आशा अशे रहि गेलैन। ओना अन्त-अन्त धरि आशा रहैन जे आन-आबए वा नहि, मुदा..?

दादी तँ दादीए भऽ गेली। सृजनकर्ता कुम्हार बरतन गढ़ि ओकर मुँह-कान नै सोझ करए, तँ केहेन बरतन बनत? तहिना दादी अपना बोनमे हराएल। किए वौसए औतैन। तहूमे कोनो कि हराएल बात अछि जे मरैबला मरबे करैए आ चुड़ियो-सिनूर फोरि-मेटा जीबैबला जीबे करैए। मुदा जीबैक जगह तँ चाही...।

दरबज्जासँ उठि राधाकान्त बाबा कम्मरक मोटरीमे लटकैत कमण्डल कान्हपर लैत ओसारसँ निच्चाँ उतरला कि पोता देखलकैन।

देखते दौगल आबि पाछूसँ मोटरी पकड़ैत कहलकैन-

“केतए चललह?”

बहैत पवित्र धारक स्नान जकाँ राधाकान्त बाबा हरा गेला। मनक बेथा मनेमे गुमसैड़ प्रेमक पेंपी बनि मुहसँ निकलए लगलैन। मुदा किछु उत्तर नहि पाबि पोता कहलकैन-

“हमहूँ जेबह!”

संगी पाबि बाबा उत्तर देलखिन-

“रमैत जोगी बहैत पानि..!”



शब्द संख्या- 253

गंजन

जखने सुनीता दादी बेटीक हाल-समाचार सुनलैन जे तेहेन रौदीमे पड़ि गेल जे एको कनमा धान नै हेतै, तखनेसँ बाबापर आँखि गड़ौने रहैथ जे जखने अवसर भेटत, नीक जकाँ गंजन करबैन। ओना बाबाकेँ बेटी कि इलाकेक समाचार बुझल रहैन मुदा सुनीता दादीक कानमे अइले नै देलखिन जे कएले की हेतैन, तखन तँ मनरोग चढ़ा देबैन। तइसँ नीक जे कहबे ने करबैन, अनका मुहेँ जे सुनबे करती तँ औहुना घोंघौज कऽ लेब।

गर चढ़िते सुनीता-दादी बाबाकेँ कहलखिन-

"कहाँ दन मृत्युनजय-बेटीकेँ एको कनमा धान नै हेतै! सात तूर दिन केना खेपतै? सभटा आगि लगौल अहाँक छी। जेहेन गाम ओइ तीनू बेटीक केलौं तेहेन गाम अहाँकेँ मृत्युनजय बेटी-ले नै भेटल!"

दादीक गंजन गजिते बाबाक मनमे उठलैन जे जिनगीमे जँ किछु अराधि कऽ, माने संकल्पित भऽ कऽ नइ चललौं तँ खाली डिब्बामे झुटका दऽ झुनझुना बनौने की हएत। 'दस कोस सीमा जे बन्हलिऐ..!' लोरिक की फूसिए कहने छथिन? जैठाम राँड़-बाँड़ भेल गामक खेत जकाँ अनेको छोटका-बड़का आड़िमे जिनगी बन्हि गेल अछि, तैठाम कइए की सकै छी? अखनो ओ विचार मनमे मरल कहाँ अछि जे एक बाप-माइक धिया-पुता एकरंग जिनगी नइ जीबए...।



शब्द संख्या- 178

सजए

बजैत लाज होइए, मुदा नहियोँ बाजब तँ पुरुख कथीक...। जहिना सभकेँ होइ छै तहिना जूति-भाँति लेल पत्नीसँ मुहाँठुट्ठी भऽ गेल। दुनू दू दिशाक बुझनूक छी। खिसिया कऽ अपने काज करए खेत चलि गेलौं। जलखै नै पहुँचल। सबुर केलौं। मुदा खीस आरो तबैध गेल। अबेर धरि खेतेमे खटैत रहलौं।

गामपर आबि नहा-सोना खाइले गेलौं। ओढ़ना ओढ़ि पत्नी घरमे सूतल छेली। तामसे नै टोकलयैन। मुदा तैयो अनठा कऽ बच्चाकेँ पुछलिऐ-

"बुच्ची, माए केतए छथुन?"

कहलक-

"मन खराप छै, सूतल अछि।"

पुछललिऐ-

"तोरा बुते खाएक परसल हेतह?"

कहलक-

"भानस कहाँ भेल हेन।"



शब्द संख्या- 90

घटक बाबा

एहेन अगियाएल क्रोध घटक बाबाकेँ जिनगीमे पहिल दिन छेलैन जेहेन आइ भोरे उठलैन। एक तँ औहुना देह घटने थोड़-थाड़ क्रोध सदिखन रहबे करै छैन मुदा घटबी जिनगीमे घटती काज भेने जहिना होइ छै तहिना भेलैन। ओना देहक घटबी अनका जकाँ नइ रहैन, किएक तँ सभ दिन रहने केकरो फेहम बनल रहै छै, सभ किछु दुरुस्त रहै छै, मुदा तइसँ भिन्न घटक बाबाकेँ भेलैन। जेना केरा गाछक वा अनरनेबा गाछक पानि सुखने खलपैट जाइए तहिना भेने घटक बाबाकेँ घरक पहिलुका सभ कपड़ो-लत्ता आ जुतो-चप्पल भऽ गेलैन। दहेजुआ देल कुरतो-गंजी आ जुत्तो-पप्पल ढिल-ढिलाह बनि गेलैन। एकर माने ई नहि जे कुरतो-गंजी आ जुतो-चप्पल बढ़ि कऽ ताड़ भऽ गेलैन तँए ढिल-ढिलाह भऽ गेलैन। अपने सुखि कऽ पलास भऽ गेल छैथ। ओना घरमे तेते-रास कपड़ो आ जुत्तो-चप्पल छैन जे अपन जीता-जिनगीकेँ के कहए जे मुइलोपर दान-पुन करैत उगड़िए जेतैन। मुदा कुछप भेने ओहो सभ कुछपिये जेतैन जइसँ कोनो सोगात नै लगतैन। जँ अपनो पहिरता तँ लेबरे जकाँ लगता आ दानो-पुन करता तैयो सएह हेतैन। खाएर जे हौउ, मुदा औझुका अगियाएल क्रोध बिनु हवोक ने पजैर जाए तेहने लहलही छैन।

कनभेंटक सातम श्रेणीक पोती–सरस्वती–जिज्ञासु बनि पुछलकैन-

“बाबा, पढ़ल-लिखल लड़काक संग बिनु पढ़ल-लिखल लड़कीक बिआह केते करौलिऐ आ बिनु पढ़ल-लिखल लड़काकेँ

पढ़ल-लिखल लड़कीक संग केते करौने हेबइ?"

पोतीक पुछल प्रश्नक उत्तर बाबा नकारि केना सकै छैथ। कविताक तुकबन्दी जकाँ भलेँ कुछप किए ने हौउ, मुदा लय तँ भरबे करता...।

छ-अनियाँ मुस्की दैत घटक बाबा कहलखिन-

"कोनो की डायरी लिखि कऽ रखने छी, अनगिनती बुझह।"

बाल मन सरस्वतीक, अनगिनतीमे ओझरा गेल। मुदा जहिना भूखक तृष्णाकेँ पानियोँसँ किछु समय बिलमौल जा सकैए, मुदा तृष्णो तँ तृष्णा छिऐ। ठोस जहिना पानिमे नै भँसियाइत, पानि हवामे नै उड़ैत तहिना सरस्वतीक तृष्णा नइ उड़ल। पुन: दोहरा कऽ बाजल-

"बाबा, बिआह किए होइ छइ?"

पाँच किलो मोटरीकेँ तँ टारि देलिऐ, मनहीकेँ केना टारबै? जहिना पएर पड़िते साँप फन-फना उठैए तहिना घटक बाबाकेँ फनफनी उठलैन। एक तँ औहुना घटबी देह थरथराइते रहै छैन तैपर आरो पकैड़ लेलकैन। मुदा जहिना गनगुआरि देख नागक फनकी टुटि जाइत, तहिना दस बर्खक पोतीकेँ सोझहामे ठाढ़ भेने घटक बाबाकेँ भेलैन।



शब्द संख्या- 335

आने जकाँ

हलसल-फूलसल पत्नी बजली-

"आइ धरि अहाँ कहियो मोनसँ नै चाहलौं। सभ दिन बिगड़ले रहै छी!"

पत्नीक बात सुनि क्षुब्ध भऽ गेलौं जे एहेन बात किए कहलैन? निच्चाँ-ऊपर देख पुछलयैन-

"अहाँ केते चाहै छी?"

कहलैन-

"जहिना सभकेँ देखै छिऐ।"

कहलयैन-

"आने जकाँ हमहूँ भऽ जाइ तखन ने?"



शब्द संख्या- 46

दान-दछिना

तरगरे उठि पण्डित काका नित्य–कर्मसँ निवृत्ति भऽ झुनझुनाबला बत्तीक ठेंगा नेने सड़कपर आबि चिकैर-चिकैर बाजए लगला- “ई समाज रहैबला नै अछि। आन बिसैर जाए तँ बिसैर जाए मुदा मरै बेरमे केना मुँह बन्न करब जे पुरान-पोथीक दान सभसँ नीक नै होइ छइ।”

आँगनसँ पत्नी सुनिते धड़फड़ाएल दौगल आबि पुछलकैन-

“भोरे-भोर की भऽ गेल जे एना अड़ाहै छी?”

पत्नीक प्रश्नसँ पण्डित काकाकेँ दुख नै भेलैन। खुशीए भेलैन। कम-सँ-कम पत्नियो तँ लगमे आबि पुछलैन। ..खखास करैत बजला-

“कहू जे भोज-काजमे लोक लाखक-लाख रूपैआ फूकि दइए, धोती-लोटा बाँटि दइए। अहीं कहू, जे लोक आब जग-गिलास भऽ गेल, फुलपेन्टे-कोट भऽ गेल किने। तैठाम धोती-लोटाकेँ के छूअत। जे छुऐबला अछि ओइले एकोटा पाइ नहि, लुटबए चाहैए, तखन अनेरे रहि कऽ की करब। मन हुअए तँ अखने विदा भऽ जाउ।”

पण्डित काकाकेँ संगीक जरूरत देख पण्डिताइन काकी वौसैत कहलखिन-

“अखन धरि अहूँ ने तँ कहियो बाजल छेलौं। समाज दोखी बनौत। तामस घोंटि लिअ।”



शब्द संख्या- 151

उड़हैड़

एक तँ ओहिना जुड़शीतलक भोर, चारिए बजेसँ इनार चन्द्रकूप बनि अकास-पताल एक केने, सिरसिराइत वसन्त सिर सजबै पाछू बेहाल, जे जेतइ से तेतइसँ पीह-पाह करैत, तैपर तीन दिनसँ एकटा नवका गप सेहो गाममे उपैक गेल अछि। ओ ई जे कपरचनमा उड़हैड़ गेल! कपरचना उड़हैड़ गेल..!

ओना ऊपरका जहाज जकाँ स्त्रीगणक बीच गप हवाइ भेल मुदा पुरुखक बीच कोनो सुनि-गुनि नहि। तँए कपरचनमाक पिता–रघुनाथ–ले धैनसन। माए कुड़बुड़ाइत रहइ, मुदा सासुक डरे मुँह नै खोलैत। ओना, परगामी भेने माइयो आ पत्नियोंक मन ओते घबाह नइ होइत। होइत तँ ओतए अछि जेतए सीमानक आड़ि धारक बाढ़िमे भँसिया जाइए। कपरचनमाक दादी–कुसुमा दादी–क मनमे मिसियो भरि हलचल नहि। कोनो कि बेटी जाति छी जे अबलट लागत। बेटा धन छी जेतए रहत ओतए खुट्टा गाड़ि कऽ रहत। कियो बजैए तँ अपन मुँह दुइर करैए।

जुड़शीतल पाबैन, अपने हाथे कुसमा दादी इनारसँ पानि भरि असिरवाद बँटबे करती। तहूमे तेहेन गप परिवारक उड़ल छैन जे बाँटबो जरूरीए छैन। ओना दादी अन्हरगरे उठली, मुदा पहरक ठेकान नै रहलैन। जखन गाममे पीह-पाह शुरू भेल तखनए फुरफुरा कऽ उठि लोटा-डोल नेने इनार दिस बढ़ली। मनमे ईहो रहैन जे इनार परहक असिरवाद अँगनाक अपेक्षा बेसी नीक होइ छइ। तँए सभसँ पहिने इनारपर पहुँचब जरूरी बुझलैन। आब कि कुशक जौर आकि घट थोड़े

रहल, मुदा तैयो...।

इनारसँ डोल ऊपरो ने भेल छेलैन कि नवनगरवाली अबिते देखलैन जे दादी असगरे छैथ तँए अवसरक लाभ उठा ली, नइ तँ पचताइये कऽ की हएत...। उपरागी जकाँ नवनगरवाली पुछलखिन-

"उढ़ड़ा एलैन कि नहि?"

नवनगरवालीक बोल कुसमा दादीकेँ मिसियो भरि नै कबकबौलकैन। मनमे नचैत रहैन जे एके पीढ़ी ऊपरक लोकक ने संकोच करैए, हम तँ दू पीढ़ीक छी। बाल-बोधक उकठपनो गपक जवाब उकठपने जकाँ दिऐ से केहेन हएत! नवनगरवालीक आँखिमे आँखि चढ़बैत दादी बजली-

"कनियाँ, अहाँ कहुना भेलौं तँ पोते-पोती भेलौं। किछु छी कपरचना तँ बेटा धन छी। जँ केकरो लैयो कऽ चलि गेल हेतै तँ सोचि नेने हेतै जे ठाठसँ जिनगी केना बिताएब। जेतए रहत जगरनथिया खन्ती गाड़ि देत।"

भादवक बर्खा जकाँ कुसुमा दादीक मुँह बरिसैत रहैन। इनारक किनछैरमे कनबाहि भेल दुलारपुरवाली सेहो दादीक सभ बात सुनि नेने रहैथ। मन भिन-भिना गेल रहैन। तैपर जुड़शीतलक उखमजक जे टटका-बसियाक भिरंत छिहे। टटका नीक आकि बसिया? बसिया नीक आकि तेबसिया? तेबसिया नीक आकि अमवसिया? मुदा टटके नवनगरवालीक पक्ष लैत दुलारपुरवाली दादीक सोझ आबि बजली-

"सभटा कएल हिनके छिऐन। दुनियाँमे नाओंक अकाल पड़ि गेल छेलै जे 'कपरचनमा' नाओं रखलखिन?"

सतैहिया बर्खाकेँ छुटैक आशामे थोड़े छोड़ल जा सकैए। बीचोमे जोगारक जरूरत अछिए। जँ से नइ तँ बिल-बाल होइत केमहर-केमहर बहि जाएत से थोड़े बुझि पेबइ। कुसमा दादी

दुलारपुरवालीकेँ कहए लगलखिन-

"तों सभ फुलक नाओंकेँ बेसी पसिन करै छहक, मुदा तोंही कहह जे जेते अपना गाममे फूल अछि ओकर मूल्य कि हेबाक चाही। मुदा देखै कि छहक। पोताक नाओं कोनो अधला रखने छी जेहेन चालि-ढालि देखलिऐ तेहेन नाउओं रखि देलिऐ।"

दादीक उतारा सुनि नवनगरवाली मुँह चमकबैत बजली-

"दादी, अबेर भेल जाइ छइ। एक चुरूक असिरवाद देती तँ दोथु नइ तँ अपन राखथु।"

अगुआएल काजकेँ पछुआइत देख दादी डोल नेनहि नवनगरवालीकेँ कहलखिन-

"मन तँ होइए जे सौंसे डोल उझैल दिअ मुदा अखन काजक बेर अछि, जा तोहूँ घर-अँगना देखहक।"



शब्द संख्या- 504

मतहानि

भोँटक तीन मासक पछाइत श्याम आ कमलनाथकेँ भेँट भेल। ओना एक गामक रहितो एनाहे-ओनाहे सम्बन्ध दुनूक बीच भोँटसँ पहिने छल, मुदा महिना दिनक दौड़ एते लग आनि देलकै जे एक्के गाछक फल जकाँ बुझि पड़ए लगल।

एक तँ तीन मासक बँकियौता गपो-सप, अपन पार्टीक हारियो आ दोसराक सरकारोक हाल-चाल पार्टी लोकक मुहेँ सुनबो तँ जरूरीए अछि। तैसंग माटिक बान्हपर चैत-बैशाखमे धूरा-गर्दा सेहो उड़िते अछि, तहूमे तेहेन घोड़दौड़क समय अछि जे आरो उड़ि अकासकेँ अन्हरौने अछि...।

भोँटक हारिसँ कमलनाथक मन झूकल तैसंग परिवारक तीन पुश्तक सेवा सेहो हराइत-बिरहाइत देख आरो झूकि गेल। खसल मने कमलनाथ बाजल-

“भाय, की हाल-चाल अछि?”

कमलनाथकेँ श्याम आँकि लेलक। हारल लोकक बीच चढ़ा-उतरी होइते छइ। खसैत कमलनाथकेँ देख चढ़ैत श्याम बाजल-

“पूरबते।”

श्यामक उत्तर पाबि कमलनाथ भक-चकमे पड़ि गेल। पैछला बात बुझने बिना आगू केना बढ़ल जाएत। मने-मन सोचए लगल जे ‘पूरबत’क की अर्थ भेल? मुदा श्यामक पूरबतक अर्थ रहए अपन राजनीति। देशक जे हेतै से देशक लोक जनतै; तइसँ हमरा की। अपन

ठीकेदारी, ऑफिसमे हेरा-फेरीक संग समाजमे सराध-बिआह चलैत रहतै, सभ अबाद रहत। ई की सेवा नै भेल?

श्यामक उत्तर नइ बुझि कमलनाथ पुन: दोहरबैत पुछलकै-

"भाय, नै बुझि पेलौं?"

अपन गोटी लाल होइत देख श्याम अगुआएल नेता जकाँ विचारए लगल जे अगुआएब तँ वएह ने भेल जे अपन विचारकेँ रूचिगर बना दोसरकेँ बुझाएब। मुदा लगले मन चकभौर लेलकै। मुहाँ-मुहीं बाजब आ मुँह घुमा कऽ बाजब एक्के भेल! वएह ने कला छी। ..अनुकूल होइत श्याम बाजल-

"भाय, भोँटक पछाइत जेना हमरो मन उड़िया-बिड़िया गेल। पहिने जेना करै छेलौं से आब कहाँ कएल होइए। तखन तँ ढीलो-उड़ीसक दवाइ खा-लेब,से केहेन हएत?"



शब्द संख्या- 258

मेकचो

पछुआ पकड़ैक मिथिलांचलक किसानकेँ अपनो दोख ओतबे छैन जेते सरकारक। किएक तँ ओहो अपनाकेँ जनतंत्रक किसान नइ बुझि पेलैन।

पाँच बीघा जोतक किसान चुल्हाइ। आठम दसकमे गहुमक खेतीक संग सरकारी खादक अनुदान आएल। बीघा भरि गहुमक खेती चुल्हाइ करत। एक बोरा यूरिया आ एक बोरा ग्रोमर खादक पूजी लगबैक विचार केलक। ओना समुचित खादो आ पौष्टिक तत्वो खेतमे देब जुरब परहक फुरब भेल।

ब्लौकक माध्यमसँ खाद भेटै छइ। पाँच दिन बरदा चुल्हाइ भी.एल.डब्ल्यू.सँ फर्म भरौलक। तीन दिनक पछाइत कर्मचारियो लिखि देलखिन। दू दिनक पछाइत बी.ओ. साहैबक लिखला पछाइत फर्म ब्लौक-ऑफिस पहुँचत जे आठम दिन भेटतै।

फार्म जमा केला पछाइत घरपर आबि चुल्हाइ चपचपाइत पत्नी लग बाजल-

"ऐ बेर अपन गहुमक खेती नीक हएत!"

पतिक चपचपीमे चपचपा रूसनी चपि-चपि गैंचियाइत नजैर दैत बजली-

"फगुआमे नवके पुड़ी खाएब।"

तीस दिसम्बरकेँ चुल्हाइ गहुम बागु केलक। पच्चीस किलो कट्ठा उपज भेल।

टुटैत उपजासँ टुटल चुल्हाइक मन पत्नीकेँ कहलक-

“ऐ बेरसँ नीक पौरुके भेल। चालीस किलो कट्ठा भेल रहए।”

रूसनी बजली-

“एना किए भेल?”

चुल्हाइ बाजल-

“तेहेन चमरछोंछमे पड़ि गेलौं जे मेकचो-पर-मेकचो लगैत गेल। जइसँ बागु करैमे डेढ़ मास पछुआ गेलौं! उपजा टुटि गेल!”

पतिक घाउपर मलहम लगबैत रूसनी बजली-

“खेती जुआ छिऐ। हारि-जीत चलिते रहै छइ। तइले की हाथ-पएर मारि बैस जाएब।”

बिसवास भरल पत्नीक बात सुनि संकल्पित होइत चुल्हाइ बाजल-

“आब एहेन फेरिमे नै पड़ब।”



शब्द संख्या- 216

झुटका विदाइ

जहिना हारल नटुआकेँ झुटका विदाइ होइ छै तहिना ने हमरो भेल! मनमे अबिते प्रोफेसर रतनक चिन्तन धार ठमैक गेलैन।

पिताक श्राद्ध-कर्म सम्पन्न भेलाक तेसरा दिन प्रोफेसर रतन दरबज्जाक कुर्सीपर ओंगैठ कऽ बैस मने-मन बीतल काजक समीक्षा करै छला। जहिना नख-सिखक वर्णन होइत तहिना ने सिख-नखक सेहो होइए। मुदा काजक समीक्षा तँ मशीन सदृश होइए, जे पार्ट पाछू लगौल जाइए आ खोलैकाल पहिने खुलैए।

प्रोफेसर रतन छगुन्तामे पड़ल छैथ जे समय केतए-सँ-केतए ससैर गेल आ...। आब की थारी-लोटा आ कपड़ा-लत्ताक घटबी ओइ तरहेँ अछि जेना पहिने छल? कहू, ई केहेन भेल जे एते रूपैआ लोटा पाछू गमा देलौं! जँ समाजक बात नै मानितौं तँ दोखी होइतो, मानलौं तँ की मानलौं! लोटाक चर्च हुनका सभकेँ नै करक चाहिऐन। तहूमे तेना लाबा-फरही करए लगला जे इस्टिलिया केना देबै, लोहा छी अशुद्ध होइए। नियमतः फूल, पितैर वा ताम हेबाक चाही! चानी-सोना तँ राजा-रजबारक भेल। ..विचार अनिवार्य भऽ गेल। फेर एहेन प्रश्न किए उठल जे घरही नै दऽ बच्चासँ बुढ़ धरि जे पंच औता सभकेँ होइन। सियानोक पनिपीबा वएह हएत जे धिया-पुताक। तखन तँ लोटासँ लोटकी धरिक ओरियान करू। तहूमे तेहेन अनरनेवा गाछ जकाँ भरिगर गाछ ठाढ़ कऽ देलैन जे हाइ स्कूलक शिक्षक–गंगाधर–लोटाक संग धोतियो बँटलैन। तैठाम एको अलंग नै करितैथ, से केहेन होइतैन।

बजारसँ घुमला पछाइत जहिना नीक वस्तु देखलापर मनमे उमकी उठैत, आ अधला देखलापर डुबकी लिअ पड़ैत, सएह ने भेल...।

प्रोफेसर रतनक मन कोसी-कमलाक एकबट्ट भेल पानि जकाँ घोर-मट्ठा भऽ गेलैन। चिलहोरि जकाँ झपटैत पत्नीकेँ कहलखिन-

“मन बिसाइन-बिसाइन भेल जाइए आ अहाँकेँ एक कप चाहो ने जुड़ैए?”

पतिक आदेश सुनि सुजीता चाहक ओरियान केलैन।

चाह दैत सुजीता, पजरामे बैस जट-जटीन जकाँ पुछलखिन-

“की भेल जे एना मन विधुआएल अछि?”

ओना चाहक चुस्कीसँ रतनक बिसबिसी थोड़े कमलैन जरूर, मुदा निड़कटोवैल भऽ कऽ छुटल नै छेलैन। ओही झोंकमे झोंकि देलखिन-

“हएत कथी झुटका विदाइ भेल!”

पतिक बात सुजीता नै बुझि सकली। बुझियो केना सकितैथ। मुदा रोड़ाएल दालिक सुगन्ध जकाँ अनुमानए लगली। मनमे जे कुवाथ भेल छैन से जाबे खोलता नइ, ताबे केना बुझब? जँ कोनो तेहेन बात रहितैन तँ एना साँप जकाँ गैंचिया-गैंचिया किए चलितैथ! बजली-

“कनी-काल अराम करू, हमरो हाथ काजेमे बाझल अछि, ओकरा सम्हारि लइ छी।”



शब्द संख्या- 359

मुँहक खतियान

ऐ बेर दुर्गापूजाक नव उत्साह अछि। उत्साहो उचिते, हाले-सालमे मलेमासक विदाइ भेल अछि। एक दिन माघ बितने तँ आशा फुरफुराइत पाँखि झाड़ए लगैए, भलैं पच्चीस दिनक टप-टप पाला खसैत शीतलहरी आगू किए ने हुअए। मुदा से नहि, कहियो नावपर गाड़ी चढ़ैए तँ कहियो गाड़ीपर नाव। तहूमे दुनूक बीच, एहेन रंग-रूपक मिलानी रहै छै जे दुनू दुनूकेँ पीठेपर उठबैए आ पेटेमे रखैए। से ऐ बेर थोड़े हएत, तेते ने लोक रौदियाएल अछि जे महारेपर सँ कुदि-कुदि उमकत...।

औझुका दिन भगवतीक माटि लेल जाएत। भोजक पाते देख धिया-पुता चपचपाए लगैत जे खूब खेबैन। आखिर भोज होइते किए छइ। चारि बजे भोरेसँ पीह-पाह शुरू भऽ गेल। ओना रघुनी भायकेँ बुझल रहैन मुदा तैयो पीह-पाह नीक नै लगैत रहैन। कारण रहइ जे दिनक फल भोजन बुझि क्रमिक काजक क्रिया बुझै छैथ। जाबे चौकक हवा-पानि पीबए जइतैथ, तइसँ पहिनहि चाहक चुल्हि पजरल देखलैन।

अपन मनकमना पुरबैत तेतरा दस कप चाहक भोज केलक। भोजक सत्तैरमे भोजैत अपन बात बजिते अछि, तेतरो बाजल-

"भाय, ट्रेन्ड डरेबर भऽ गेलियौ, भगवतीक दयासँ आब कोनो दुख-तकलीफ परिवारकेँ नै हएत।"

दोकानक दोसर ब्रेंचपर पोखरिया, असामी आ रामेसर सेहो

बैसल छल। तेतराक बात जेना रामेसरक छातीमे छेद केलकै तहिना रामेसरकेँ झोंक चढ़ि गेलइ। बाजल-

“बाप जे मरूआ लेलकै से तँ अखन तक सठाएले ने भेलइ। आ..!”

रामेसरक बात सुनिते तेतरा लोढ़ियौलक। मुदा कएल की जाए। दुनूकेँ थोम-थाम लगबैत रघुनी भाय कहलखिन-

“दू घन्टा लोककेँ बातो बुझैमे लगतैन, तँए दू घन्टा दुनू गोरे अपन-अपन घरपर जाउ।”

घर दिस रामेसर बढ़ैत बाजल-

“बाढ़िमे घर खसि पड़ल, नइ तँ अखने बोही आनि कऽ पंचक बीचमे फेक दैतिऐ।”

घरमुहाँ होइत तेतरा बाजल-

“की बुझि पड़ै छै जे बबेबला सनकी अछि, झाड़ि देबइ। जँ ओकर बाँकीए छै तँ मनुख जकाँ फुटमे कहैत।”



शब्द संख्या- 278

कोसलिया

सीकसँ खसल मटकूर जकाँ सोमन कक्काक मन छहोंछित भऽ फुटए लगलैन। बिनु भाँग पीनौं जेना अफीमक निशाँ चढ़ि गेलैन तहिना नितागैत भेल देहकेँ खरौआ जौड़ीसँ घोरल खाटपर चितंग पटकलैन। दंगल जकाँ नहि, जे किछु हारबो करैए, किछु जीतबो करैए आ किछु खिचड़ियो बनैए। औनाइत मन उधिया-उधिया बजैत जे चारू बेटाक पिता छी, पालन-पोषन करै छी तखन किए ने बुझि पेलौं जे घरमे कोसलिया सेहो बसि रहल अछि? मनक सीमा टपि सोमन कक्काक मुहसँ निकललैन-

“अनेरे परिवार-परिवार करै छी, सत्तैर बर्खक पसेनाक की मोल रहल! यएह ने जे घरे-परिवारेमे एहेन मोइन फोड़ि दुदिसिया धार बहए लगल। कुट्टी-कट्टा जकाँ जँ दुनू दिस धार बनाएब तँ नारक मुट्ठी घुसकबै-काल हाथ खड़ाइक डर रहबे करत!”

सोमन काकाकेँ देख घुरनी काकीक मन मिसियो भरि हलचलेलैन नहि। जिनगीक अनेको क्रोध देखने छैथ, अनुभवी छैथे...। कनी फरिक्केसँ थर्मामीटर लगा घुरनी काकी कक्काक रोग नापए लगली। मुदा पुरना थर्मामीटरसँ तँ पुरना रोग परेखमे अबैत नवका केना औत? सहए भेल। ओना, सोमन काका अपने ठकमुड़ा गेल रहैथ जे एना किए भेल! मुदा तैयो घुरनी काकी बीख उतारैक मंत्र चलौलैन-

“बेसी भीड़ भऽ गेल। मन थीर कऽ कऽ नहा-खा लिअ। खा कऽ जखन अराम करब तखन अपने मन चेन भऽ जाएत।”

काकीक खटमधुर गप सोमन काकाकेँ आरो अमता देलकैन। झटकीक झटका जकाँ झटहा झटैक देलखिन-

"जअ-तिल आनि उसरैग दिअ। हमहूँ अहाँकेँ उसरैग दइ छी। कोन भाँजमे अनेरे पड़ल छी। जैठाम द्रौपदीसँ लऽ कऽ रघूबाबू धरि कुरसी जमौने छैथ, तैठाम पार पाएब असान छइ..!"



शब्द संख्या- 234

हूसि गेल

भोज खा बाबा अबिते रहैथ कि पोता–रमचेलबा–मन पड़लैन। तखने देखलैन जे तीमन-तरकारीक मोटरी माथपर नेने दच्छिनसँ अबैए। रमचेलबाकेँ देखते बाबाक मन सहैम गेलैन जे सभ दिन पोताकेँ संग नेने जाइ छेलौं, आ...। लगले मनमे एलैन जे 'जे पूत हरवाहि करए गेल देव-पितर सभसँ गेल...।' तैबीच हाथमे लोटा देख रमचेलबा लग आबि पुछि देलकैन-

"केतए गेल छेलह बाबा हौ?"

बाबा अवाक भऽ गेला।मनमे उठलैन- आब तँ यएह सभ ने करत, तँए अनुकूल बना राखब जरूरी अछि। निधोख होइत बाबा बजला-

"बौआ, तूँ हाटपर गेलह आ एमहर बिझो भऽ गेलै तँ की करितौं?"

जहिना निधोख बाबा बजला तहिना रमचेलबा पुछलकैन-

"बनलह किने?"

बाबाकेँ मन पड़ि गेलैन पूर्वांचलक मणिपुरी भोज; जइमे जे वस्तु जेते नीक रहै छै ओ ओते पहिने परोसि खुऔल जाइए। मुदा अपना ऐठाम तँ अन्नकेँ अन्न बुझनिहार आगूमे आएल पहिल अन्नक पूजा करत...। बाबा बजला-

"बौआ, नीक भेलौ जे तों नइ गेलेँ।"

अपन बात सुनि रमचेलबा पुछलकैन-

“से की हौ?”

अनुकूल होइत रमचेलबाकेँ देख बाबा कहलखिन-

“धुर! हूसा गेल।”

अकचकाइत रमचेलबा पुछि देलकैन-

“से की हौ?”

“की कहबौ, भात-दालि बड़ पवित्र बनल छेलै, तैपर अल्लू-परोरक तरकारी तेहेन बनल छेलै जे देखिए कऽ मन हलैस गेल। खूब खेलौं। तेकर पछाइत जे नीक-नीक विन्यास सभ आबए लगलै, ओकरा दिस केना तकितौं!”

“तब तँ खूब बनलह?”

“अपूछ भऽ गेल!”



शब्द संख्या- 204

पोखला कटहर

पान साए रूपैआ खरच भेला पछाइत झबरी काकीकेँ अदहा छूटपर एक हजार रूपैआ बैंकसँ लोन भेटलैन। अखन धरिक जिनगी बोइन-बुत्ताक रहलैन तँए ओहन रोजगार चाहैत रहैथ जे करि सकैथ। ओना, झबरी काकीक घरे लग रोजगरनी सभ छैन मुदा जातिक विभाजन काजोकेँ कम सक्कत विभाजित नै केने अछि। तँए लगमे रहितो झबरी काकी अनाड़ीक-अनाड़ीए छैथ। मुदा पुछबो केकरा करथिन। एक हजार रूपैआक बात अछि। के केना झपैट लेतैन तेकर ठीक नहि...। काकीक घरक आगूए-क रस्ता-देने श्याम जाइत रहथिन। श्यामकेँ देखते काकी टोकि देलखिन-

“बौआ सियाम, तोहीं सभ ने बेटा-भातीज भेलह। रोजगार करैले एक हजार रूपैआ लोन देलक हेन।”

झबरी काकीक बात सुनि श्याम नजैर खिड़ौलैन। बगलेमे देख कहलखिन- “पचहीवालीकेँ सोर पाड़ियौ।”

पचहीवालीकेँ अबिते श्याम पुछलखिन-

“भौजी, अहाँ अपना संगे तरकारी बेचैक लूरि सिखा दियौ। अपनो किछु पूजी भाइये गेलैन। ऐ बेर तेते आम फड़ल अछि जे कटहरकेँ के पुछत। ओना बेसी फड़ने पोखलाहे कटहर बेसी अछि, मुदा चौथाइ कमाइ लऽ कऽ बेच लिअ।”



शब्द संख्या- 154

सरही सौबजा

दिन भरि सात गोरेक संग झंझारपुरिया वेपारी आम तोड़ि काँच-पाकल आ फुटल बेरा, टौकड़ी बना, ट्रकक प्रतिक्षामे टहलैत गामक चाहक दोकानपर आबि अनेरे बजैत-

“एहेन ठकान जिनगीमे नइ ठकाएल छेलौं, जेहेन आइ ठकेलौं!”

चाहे दोकानक छर्ड़ा बुझि आनो-आन छर्ड़ा छोड़लक-

“झंझरपुरिया तँ इलाकाकेँ ठकैए आ ओकरा ठकि लेत हमर गौंआँ?”

वेपारियोकेँ मनमे किछु रहै तँए पाछू हटैले तैयार नहि। बत-कटौवैल एहेन चलि गेल जे ने एकोटा ऐ गामक नीक अछि आ ने झंझरपुरिया। बोलीक मारि तँ धुड़-झाड़ होइत, मुदा आगू बढ़ैक साहस कियो ने करए। एकटा गामक प्रतिष्ठा बुझि तँ दोसर घोड़नक कटान बुझि।

ओना चौकक रोहानी ठीक छेलै किएक तँ सूर्यास्तक समय छल। चौकक रोहानी देखते जटा भाय चाहे दोकानपर बैसला। समाजिक प्रश्न, तँए हस्तक्षेप कएल जा सकैए। जटा भाय पुछलखिन-

“कथीक घोंघौज छी?”

झंझारपुरबला वेपारी कहलकैन-

“अहीं गाममे लखनजी सँ पाँच हजारमे सौबजा आमक एकटा गाछ नेने छेलौं तइमे ठकि लेलैन।”

अपन चर्च सुनि लखनजी सेहो मोबाइलक दोकानपर सँ चाहक दोकानक आगूमे आबि ठाढ़ भेला। वेपारीक प्रश्न उठिते लखनजी पुछलखिन-

“की ठकि लेलौं, बाजू।”

वेपारी कहलकैन-

“कलमी बुझि नेने छेलौं, सरही दऽ ठकि लेलौं!”

तैपर लखनजी पुछलखिन-

“केतेमे नेने छेलौं आ आम केतेक भेल?”

“से तँ नफगर अछि, पाँच हजारमे नेने छेलौं। खर्च-बर्च काटि कहुना पाँच हजार बँचबे करत?”

जटा भाय पुछलखिन-

“तखन जे एना बजै छी से उचित भेल?”

वेपारी कहलकैन-

“हमर बात दोसर अछि। सौबजा कलमी होइ छइ। हिनकर अँठियाहा छिऐन, माने सरही छिऐन। ओना साइजोमे ठीक छैन।”

जटा भाय-

“अहाँ केना बुझै छी जे मुँह-नाक एक रहितो सरही छी?”

वेपारी कहलकैन-

“चचाजी, अहूँ भासि जाइ छी। कहुना भेलौं तँ वेपारी भेलौं किने। कुमारि-बियौहतीक भाँज जँ नै बुझबै तँ घटकैती कएल हएत?”



शब्द संख्या- 269

तेरहो करम

अबेर कऽ भाँज लगने कनटीर काका खेत देखए नइ गेला। ओना मनमे उठलैन, मुदा भदवारि जानि नै गेला। विचारि लेलैन जे इजोरिया छीहे भोरगरे देख लेब।

छगाएल मन साढ़े तीनिए बजे नीन टुटि गेलैन। नीन टुटिते नजैर दौग कऽ काज पकैड़ लेलकैन। तीन-हथ्थी ठेंगा लऽ कनटीर काका बाध दिस विदा भेला।

श्रीविधि खेती-ले जे धानक बीआ भेटल छेलैन वएह धान। रौदीक किरतबे विधि तँ भंग भऽ गेलैन मुदा साए रूपैए घन्टा पटा बीघा भरि खेती केलैन। संयोगो नीक बैसलैन। कोसी नहैरक पहिल पानि हाथ लगने सुतरलैन।

नबे दिनक पाकल धानमे भरि जाँघ पानि, चुट्टी-पीपड़ीसँ लदल सीस देख कनटीर कक्काक मन चोटसँ चोटाए लगलैन। असहाज होइते बमछैत घर दिस घुमि गेला। मोहनलालक घर लग अबिते आरो बमैक-बमैक बमछी छुटए लगलैन। आँखि मीड़िते मोहनलाल आँगनसँ निकैल कनटीर कक्काक लगमे आबि पुछलकैन-

“काका, एना किए भोरे-भोर बमकै छिऐ?”

ओना कनटीर काका आ मोहनलालक उमेरक दूरी बीस बर्खसँ बेसी हटल, मुदा विचारक दूरी लगीच बनौने तँए दुनूक बात दुनू सुनबो करै छैथ, सुनेबो करै छैथ आ मानबो तँ करिते छैथ।

‘बमकी’ सुनि कनटीर काका ठमकैत बजला-

“की कहियह बौआ, परसू धान काटि तोर बागु करैक विचार केने छेलौं। तोहूँ तँ खेती करिते छह, तोहीं कहह जे धानक-नारक की गति हएत, छनुआँमे केते भीड़ होइ छै से कि कोनो नै बुझै छहक। तैपर कहिया खेतक पानि सुखत आकि फेर दोहरा कऽ पानि औत तेकर कोन ठेकान छइ?”

कनटीर कक्काक दहलाइत छातीकेँ खढ़ फेक असथिर करैक विचार मनमे उठिते मोहनलाल कहलकैन-

“डुमैक कोन आशा करै छी काका, उगैक आस करू।”

मोहनलालक तोष कनटीर काकाकेँ जेते संतोष देलकैन तइसँ बेसी असंतोष बनौलकैन। मनमे एलैन जे एक तँ ठेकाइन कऽ नहरक पानि नै अबैए तैपर सँ छहरक बान्ह-छेक सेहो नियमित नै अछि आ तैपर सरकार कहत जे कानून अपना हाथमे नै लिअ! बजला-

“एको कर्म बाँकी नै रहत। तेरहो कर्म भाइये जाएत। सबहक नजैर दैछने खाइपर लटकल छै से केना उतरतै?”

मोहनलाल-

“काका, ‘जे कुदै-फानै तोड़ै तान से राखए दुनियाँक मान’ बिसैर गेलऐ?”

किछु मन पाड़ैत कनटीर काका बजला-

“हौ, छोड़ियो केना देब, अकाल मृत्यु केना हुअए देब!”



शब्द संख्या- 322

डुमैत जिनगी

डुमैत कारोबार देख झड़ीलाल डुमैत जिनगी जहिना ओछाइनपर पड़ल चारक कोरो-बत्ती लोक देखैत तहिना देख रहल छैथ। तड़पैत मन बेथित भऽ दुनियाँ निहारिते बुदबुदेलैन-

“एतेटा दुनियाँमे अपन किछु ने रहल!”

मुदा लगले मन ठमैक गेलैन। जिनगी तँ परती खेत जकाँ नै अछि जे जेतइसँ तेमहर जेबाक हुअए तेतइसँ तेमहर कोणा-कोणी रस्ता बना लिअ! जिनगीक तँ नाप अछि।

ओना पचास बर्खक झड़ीलाल अखन धरि हारि मानैले तैयार नइ छला मुदा एकाएक मृत्युक समीप देख थर-थरा गेला। हारि नै मानैक कारण छेलैन जे जे गौरव गाममे केकरो नै देखै छला ओ अपनामे देखै छला। ओ छिऐन समैया फसिल जकाँ भिन्न-भिन्न नाओं। अनेको नाओंसँ अपन प्रतिष्ठा बनौने छैथ। कियो ‘वेपारी भाय’, तँ कियो ‘डॉक्टर भाय’, कियो ‘दिलीप भाय’ कहै छैन। मुदा स्त्रीगणक बीच ‘झड़-झड़हा’ नाओं चलै छैन! यएह छिऐन झड़ीलालक जिनगीक मान-प्रतिष्ठा...। मुदा जे हौउ, झड़ीलाल अपनाकेँ मेहनती वेपारी जरूर बुझै छैथ।

सालमे तीन-चारि जोड़ टुटल बरद[1] सस्तामे आनि, दुनू परानी जमि कऽ सेवा करै छैथ आ डेढ़िया-दोबरमे बेच अपना जीविकाक अधार बनौने छैथ। घुमै-फिरैबला छैथे तँए तीनू बेटीक बिआह तेहेन

[1] गाड़ीक टुटल, घास-पानिक टुटल, रोगाएल इत्यादि

नजरिये केने छला जे कहियो भार नै बुझलैन।

अन्तिम खेप माने ऐ खेपमे ठका गेला। आठे दिन खुट्टापर बरद अनला भेलैन कि पाँचे दिनक बीच जोड़ो भरि बरद मरि गेलैन।

खुट्टापर पड़ल मुइल बरद लग बैसल दुनू परानी झड़ीलालक अक-वक बन्न। तरसैत मन कलपैत देवसुन्नैरक, जहिना रौद-पानि वा शीतमे सिताएल चिड़ै पाँखि फुरफुरबैए, तहिना मन फुरफुरेलैन-

“भगवान हाथक काज छीन लेलैन!”

पत्नीक बातक उत्तर झड़ीलालकेँ नै फुरलैन। फुरबो केना करितैन, जिनगीमे कहियो पहरनियाँ देवीक पूजा पहाड़पर चढ़ि नै केने छला। मुदा तैयो घिंघियाइत स्पष्ट उत्तर देलखिन-

“दुनियाँ बड़ीटा छै! एकटा काज छिनाएल तँ दोसर-तेसर-चारिम ताकि लेब।”

पतिक उत्तरसँ देवसुन्नैरकेँ झँपन-तोपन बरसाती सुरूज जकाँ आशाक किरिण फुटलैन, मुदा लगले फेर तोपा गेलैन...। बजली-

“काज-ले तँ लूरि चाही, से..?”



शब्द संख्या- 286

चोर-सिपाही

चोरिक बाढ़ि एने गामे-गाम चोरक सोहरी लगि गेल। जहिना घोरन लुधकैत तहिना चोरो लुधकए लगल। सेहो एकरंगा नहि, सतरंगा! पाँखिसँ बिनु पाँखिबला घोरने जकाँ घुरछा-घुरछे! जेकर बहुमत तेकर राज-पाट! शासक-सँ-सिपाही धरि...।

अगहन मास। गामक अदहासँ ऊपर उपजल धानक खेतमे 144 लगि गेल। कोनो बटेदारीक चलैत तँ कोनो फटेदारीक। सरकारियो काज तँ सरकारीए छी। एक घन्टाक काज मासो दिनमे हएत तेकर कोनो गारंटी नहि। तखन 144 मे जप्त भेल खेत 44 दिनक बदला 44 मासो रहि सकैए। खाएर.., ओस पला गेल। दिन खिआ कऽ पानि भऽ गेल। दिन-राति शीतलहरीमे डुमि गेल। दर्जनो भरि सिपाही धानक ओगरबाहि करैत अपना जिनगी दिस तकलक तँ बुझि पड़लै जे जान बँचब कठिन अछि।

पहिल सिपाही बाजल-

“खस्सी मासु खाइ-जोकर समय अछि।”

दोसर सिपाही बाजल-

“जँ बनबैले तैयार होइ तँ खस्सी आनि देब।”

सएह भेल। दूटा सिपाही विदा भेल। जेना हाथमे हथियारो आ देहमे वर्दियो रहबे करइ तहिना दिनके देखल खस्सियो आ घरो छेलैहे। अपने जकाँ एक गोरे मुँह दबलक आ दोसर उठा कऽ लऽ अनलक।

बना-सोना कऽ सभ भरि मन खेलक। मुदा दोसरे दिनसँ दुनू

सिपाहीकेँ आन-आन सिपाही 'चोरबा' कहए लगल।

सालो नइ लगलै, ग्लानिसँ ओ दुनू सिपाही गड़ि दुनू नोकरी छोड़ि अपन पुरना वृतिमे लगि गेल। एक समाज 'चोर-सिपाही' तँ दोसर समाज 'सिपाही-चोर' कहए लगलै।



शब्द संख्या- 202

दूधबला

फगुआक समय। पीह-पाहसँ मौसमक रंग चढ़ि रहल छल। दिनुका काज उसारि नित्यानन्द काका दरबज्जापर बैस सालक फगुआक नीक-बेजापर ऊपर-निच्चाँ विचारि रहल छला। जाड़सँ गरमीक प्रवेश भऽ रहल अछि। ठाढ पानिकेँ इनहोराइ-ले ठंढ मारि तँ सिरसिसाइए पड़तै। जँ से नइ तँ इनहोराएत केना? मुदा तेहेन दोखाह दोरस हवा बहि गेल जे सोझ बाट माने नीक रस्ता बाउल-गरदासँ अन्हरा कऽ तेहेन बहबाँरि बनि रहल अछि जे भरि मुँह बाजब कठिन भेल जा रहल अछि।

सूर्यास्त तँ भऽ गेल मुदा अन्हराएल नै छेलइ। मोटर साइकिलसँ उतैर मनोहर नित्यानन्द काकाकेँ प्रणाम करैत आगूक चौकीपर बैसल।

किछु दिन पूर्व धरि नित्यानन्द काका मनोहरकेँ दूधबेच्चा बुझै छला, मुदा पनरह-बीस दिन पहिने शंका जगलैन से जगले रहि गेलैन। जइसँ विचार बदलए लगल छेलैन। मुदा कोनो विचारकेँ बदलैसँ पहिने ऊपर-निच्चाँ देख लेब जरूरी बुझि पुछलखिन-

“कारोबारक की हाल छह?”

नित्यानन्द कक्काक उत्तर दइसँ पहिने मनोहरक मनमे आएल जे जखन फगुआक सनेस अनने छिऐन तखन आगूमे रखैमे कोन लाज। अनेरे ‘साँइक नाओं सभ जानए आ हए-हए करए!’ जुगोक तँ धर्म होइ छइ। के भँगखौका शराब नै पीबैए। ओ सभ तँ निशोकेँ पानि उताइर देने अछि। भाय जखन एकटा प्रेमी अछि तखन तँ जिनगी भरि प्रेम

करू नइ तँ पुरुखक आँखिसँ गिरब ओते महत नै रखै छै जेते मौगीक आँखिसँ।

..मुदा अपनाकेँ सम्हारि विचारि लेब जरूरी बुझि बाजल-

“काका, आइक जुगमे दूध बेचने गुजर चलत, तखन तँ..?”

मनोहरक बात नित्यानन्द काकाकेँ ठहकलैन। मुदा तेयौ मन नै मानलकैन बजला-

“केते गोरे गाममे दूधबेच्चा छह?”

गर पाबि मनोहर बाजल-

“काका, आब कि कोनो गाइए-महींसिक दूध बिकाइए! आब तँ गाछसँ लऽ कऽ लोहा धरिक दूध बिकाइए। केतेक नाओं कहब। जेम्हरे देखै छी, तेम्हरे सएह।”

‘सएह’क सह पाबि नित्यानन्द काका हूँहकारी भरलैन-

“से सएह।”



शब्द संख्या- 275

टाइपिस्ट

पच्चीस बर्ख पूर्व मैट्रिक सेकेण्ड डिवीजनसँ पास केलौं। ने नोकरी भेल आ ने लोकक पीहकारी दुआरे खेती केलौं। शत-प्रतिशत अपनाकेँ भारत सरकारक बेरोजगारक बोहीमे नाओं लिखा लेलौं।

भरि दिन गप-लड़ौनाइसँ लऽ कऽ ताश जोतै धरिक रूटिंग बना लेलौं। किछु दिनक पछाइत बुझि पड़ल जे भरिसक हमरा सबहक फाइल लाल-फीताक तरमे पड़ि गेल। ओना पाँच बर्ख रेगुलर बेरोजगार रहलौं, मुदा एक दिन तामस उठल नवीकरण करौनाइ छोड़ि देलौं। तेकर पछाइत कोन बेरोजगार भेलौं तेकर अर्थ नहियेँ तहिया लागल आ ने आइए बुझै छी। जेकर खरच लाख रूपैआ, उपजे सबा सेर..!

दइबला भगवान छैथ लगौता कोनो फेर। सवुर तँ भेल मुदा मन नै मानलक। तखन भेल जे किछु करक चाही। ओना मन तँ छह-पाँच केलक, मुदा टाइप-राइटिंग मशीन वेसाहैक विचार भेल। वेसाहलौं। टाइपिस्ट बनि अपनाकेँ ठाढ़ देखलौं। ओना बजारक भाउए ठीके छी।

आब कहू जे एहनो होइ जे जेते कागत-पत्तर टाइप करब से गणेशजी जकाँ बुझबो अनिवार्य अछि। आकि टाइप करैक पाइ लइ छिऐ, टाइप कऽ देबइ। जँ केतौ छुटो-छाट हेतै आकि शब्दो गलती हेतै, से दोख मशीनक हेतै आकि हमर हएत? कहू जे केहेन बुड़िपना सोहनक भेलै जे पुछलैन-

“कागतमे कि सभ छेलै?”

सोहन इंजीनियरिंग पढ़ि बंगलोरमे काजरत छैथ। बिआही पत्नी शिक्षिका छथिन। कनीए तरपट ई छैन जे एक गोरे बंगलोरमे छैथ दोसर गाममे। ओना सोहनोक सोचब गलती नै भेलैन। कमेता बंगलोरमे रहता बंगलोरमे आ घरवाली रहथिन गामक घरमे से केहेन हएत। जिनगीक तँ स्तर होइ छइ।

शिक्षिका पत्नी थूक फेक अनठबैत एली जे अपने कि कोनो नै कमाइ छी जे एहेन छुतहरक कमाएल खाएब। मुदा संगी-तुरिया पीठपोहू भेलैन। दुनू बेकतीक भेद न्यायालय पहुँच गेल। ओही कागतक कच्चा नकलक बात सोहन पुछने छला।



शब्द संख्या- 263

समदाही

अनुप काकाकेँ दूटा पत्नी छैन। गृहस्ती जीविका रहने तीनू परानी अपन-अपन काजमे दिन-राति मगन रहै छैथ। दुपहरिये रातिसँ मालक तकतियान अनुप काका करए लगै छैथ। सभ दिनक संग रहितो जहिना दिन-राति बारहो मास घुसैक-घुसैक अपन काज करैत रहैए तहिना तीनू परानीक बीच सेहो होइते छैन। मुदा जहिना लोकक धियान दिन-रातिपर नै पड़ै छै तहिना अनुपो कक्काक धियान नै पड़ै छैन। हमरा खेलासँ काज तँ हमरा पीलासँ काज, बस एतबे।

समय केकरा संग छोड़ै छै जे अनुप काकाकेँ छोड़तैन। जखने अधरतियामे उठता आकि मुँह-हाथ धोइते पहिने चाह पीता। जहिना केतौ चलैसँ पहिने माए अपन बच्चाकेँ खुअबैए तहिना अनुपो काकाकेँ दुनू सौतिन करिते छैन। ओना नियमित काज दुनू सौतिनमे बाँटल नहियेँ छैन, नजैरेसँ बाँटि-बाँटि काज करै छैथ, तँए ने कहियो उपरौंज होइ छैन आ ने बैसारी बुझि पड़ै छैन।

दू बजे रातिमे चाह पियाएब, तोहूमे जाड़क मासमे, से अबूह तँ दुनू सौतिनकेँ लगबे करैन। केतबो पति-सुख लोककेँ भेटौ मुदा जाड़ोक तँ अपन सुख छइ। मुदा थर्मसमे चाह बना पति-सेवा दुनू कऽ लइ छैथ। काजो असान भऽ जाइ छैन। एतबे ने जे थर्मससँ गिलासमे ढारि दिअ पड़ै छैन। काजक बँटबारा नै रहने कहियो बिआही तँ कहियो समदाही पिअबैत रहै छैन। काज करैक ढंग दुनूकेँ अपन-अपन छैन। बिआही, गिलास धो औन्ह कऽ रखै छैथ, जखन कि धोइ दुआरे समदाही गिलासेमे पानि रखि दइ छथिन।

चाहक सुआद पबिते अनुप काका बुझि जाइ छैथ जे केकर किरदानी छी, मुदा कहबो केकरा करथिन। कोनो आँगुर कटने अपने घाव! तहूमे सौतिनियाँ डाह, घरेसँ सरेरा उठत। तहूमे खेती-पथारी-ले नहि, खाइ-पीऐ-ले..! भरि दिन अनेरे मगजमारीमे ओझरा जाएब। तइसँ नीक चुपे रहब।

करसीक लहलहाइत घूर लग बैसते बिआही चाह नेने एलखिन। चुस्की लइते अनुप काकाकेँ बजा गेलैन-

“हँ, औझुका चाह चाह जकाँ लगैए!”

बजला तँ अनुप काका फुसफुसाइए कऽ, मुदा समदाही सुनि गेलखिन। सुनिते फरिक्कैसँ जुमा कऽ फेकली-

“बड़ काग भाषा सुनिनिहारि भेल छैथ।”



शब्द संख्या- 295

बुढ़िया दादी

नहि जानि दादीकेँ एहेन क्रोध किए भऽ गेलैन। एक तँ औहुना बैशाख-जेठक सुखाएल जारैन चरचराइत रहैए, खढ़क छाड़ल-छार पटपटाइत रहैए, तइ हिसाबे दादियोक खटखटाएब अनुकूले भेल। दादी माने तीन पीढ़ी ऊपर नहि, गामक बनौआ दादी। नवो-नौतारि बनौआ दादी होइते छैथ, उचितो छइ।

आठ-दस बर्खक पोता अपन कुत्ताकेँ अनठियासँ लड़ा देलक जइसँ कोनचरक सजमैनक गाछ टुटि गेलैन, तेकरे तामस दादीकेँ पोतापर रहैन। जखन टुटलैन तखन बाधमे रहैथ तँए नै देखलखिन। तखन ततबे, कुत्तेक झगड़ा भरि। बारह बजे बाधसँ अबिते, जहिना हजारो चेहराक बीच प्रेमीक नजैर प्रेमिकापर जा अँटैक जाइत, तहिना दादीक नजैर सजमैनक गाछपर पहुँच गेलैन। लटुआएल-पटुआएल पड़ल देखलखिन। नरसिंह तेज भेलैन, मुदा परिवारक सभ गबदी मारि देलक। तँए अधडरेड़ेपर तामस अँटैक गेलैन। जँ अकासक पानिकेँ धरती नै रोकए तँ पताल जाइमे देरी लगतै? दोसर साँझ जखन बाधसँ घुमि कऽ दादी एली तँ नीक जकाँ भाँज लगि गेलैन जे पोताक किरदानीसँ गाछ नोकसान भेल। तामस लहरए लगलैन। छौड़ाकेँ सोर पाड़लखिन-

“अगतिया छैँ रौ, रौ अगतिया?”

नाओं बदलल बुझि गोविन्दोकेँ अवसर भेटलै। अन्हारे गरे चौकी-दोगमे नुका रहल। अपने फुरने दादी भटभटाए लगली-

“भरि दिन छौड़ा एमहर-सँ-ओमहर ढहनाइत रहैए आ कुत्ता-विलाइ तकने घुड़ैए!”

मुदा लगले मन ठमैक गेलैन। भरिसक अँगनामे नै अछि, खाइ-बेर भेल जाइ छै, केतए छिछियाइ-ले गेल जे अखन धरि अँगनामे नै अछि। पुतोहुकेँ पुछलखिन-

“कनियाँ, बौआ कहाँ अछि।”

बेटाकेँ अपन जान सुरक्षित बुझि पुतोहु कहलकैन-

“बड़ी-काल सँ नै देखलिऐ।”

पोताकेँ तकैले बुढ़िया दादी विदा भेली।

सुतै बेर गोविन्दा अलिसाएल आबि दादीकेँ कहलक-

“दादी बिछान बीछा दे।”

गोविन्दक बात सुनि दादी पिघैल गेली। ओछाइन ओछा कऽ सुता देलखिन। सेन्धपर पकड़ल चोर जकाँ, तामस फेर करुआ गेलैन। मुदा निनियाँ देवीक कोरामे गोविन्दाकेँ देख क्रोध घोंटए लगली। मनमे उठलैन- अखन छोड़ि दइ छिऐ, भोरहरबामे पेशाब करैले उठेबे करत, बुझतै केहेन होइ छै सजमैनक गाछ तोड़नाइ। जाबे सभ करम नै कराएब ताबे चालि नै छुटतै।

भोरहरबामे गोविन्द दादीकेँ उठबैत बाजल-

“दादी-दादी।”

दादी गबदी मारैक विचार केलैन। मुदा तीन बेरक पछाइत तँ गरियेबे करत, तइसँ नीक जे तेसर हाकमे अपने बाजि दिऐ। की हेतै, एकटा सजमनियेँक गाछ ने टुटल। फेर रोपि लेब।



शब्द संख्या- 332

परिचय



नाओं : जगदीश प्रसाद मण्डल
जन्म : 5 जुलाई 1947 ई.,
माता : स्व. मकोबती देवी।
पिता : स्व. दल्लू मण्डल।
पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।
पता : गाम- बेरमा, भाया- तमुरिया,
प्रखण्ड- लखनौर, अनुमण्डल- झंझारपुर,
जिला- मधुबनी, (बिहार) पिन : 847410, **मो.** 9931654742

मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा। **जीविकोपार्जन :** कृषि (मुख्यत: तरकारी खेती) **शिक्षा :** एम.ए. द्वय (हिन्दी, राजनीति शास्त्र) **साहित्य लेखन :** 2001 ईस्वीक पछाइतसँ...। **सम्मान/पुरस्कार :** 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड', 'वैदेह सम्मान', 'यात्री सम्मान', 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार' तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सम्मानित/पुरस्कृत।

मौलिक रचना संसार- 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर- नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन- उपन्यास। 26. कल्याणी, 27. सतमाए, -28. समझौता, 29. तामक तमघैल, 30. बीरांगना- एकांकी। 31. तरेगन, 32. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 33. शंभुदास, 34. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 35. गामक जिनगी, 36. अर्द्धांगिनी, 37. सतभैंया पोखैर, 38. गामक शकल-सूरत, 39. अपन मन अपन धन, 40. समरथाइक भूत, 41. अप्पन-बीरान, 42. बाल गोपाल, 43. भकमोड़, 44. उलबा चाउर, 45. पतझाड़, 46. लजबिजी, 47. उकड़ू समय, 48. मधुमाछी, 49. पसेनाक धरम, 50. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 51. फलहार, 52. खसैत गाछ, 53. एगच्छा आमक गाछ, 54. शुभचिन्तक, 55. गाछपर सँ खसला, 56. डभियाएल गाम, 57. गुलेती दास, 58. मुड़ियाएल घर, 59. बीरांगना, 60. स्मृति शेष, 61. बेटीक पैरुख, 62. क्रान्तियोग, 63. त्रिकालदर्शी, 64. पैंतीस साल पछुआ गेलौं- लघु कथा संग्रह। ○ ○ ○



पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड न. 06,
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

₹ 251

ISBN : 978-93-87675-20-9

उपन्यास

बड़की बहिन



जगदीश प्रसाद मण्डल

बड़की बहिन

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन

निर्मली

समर्पण भाव

समर्पण भाव

घरे-घरे ज्योति दीप

गाम अन्हार पड़ल छै

घरे-घर समाज कहि-कहि

अध-मरल गाम पड़ल छै

इतिहास मिथिला कहि-सुनि

पुर जनक धाम बनल छै

वक्र आठ गीत गबिते

ज्योतिरमान जगल छै

बनि-कनियाँ-पुतरा-पुतरी

मूक नाच नचैत रहै छै

राति-दिन एकबट बरहबट बनि

नाचि नाच नचैत रहै छै

घरे-घरे ज्योति दीप

गाम अन्हार पड़ल छइ।



ISBN : 978-93-87675-31-5

दाम : ₹ 250/-

तेसर संस्करण : 2017

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल, बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : दी साहु प्रिन्टिग प्रेस. निर्मली (सुपौल) पिन : 847452

BARKI BAHIN
A Maithili Novel by Sh. Jagdish Prasad Mandal.

अनुक्रम

अंक

1.

चारि भाए-बहिनक बीच सुलोचना पहिल रहने बड़की बहिनक नाओंसँ गाम भरिमे जानल जाइ छैथ। दू-अढ़ाइ बीघा जमीनबला परिवार।

छियासी बर्खक अवस्थामे जिनगीक ढलानक आखिरी सीढ़ीपर पहुँचल सुलोचना भातीजक संग मध्य-प्रदेशक बिलासपुरसँ अपने गाड़ीसँ गाम पहुँचली। पहुँचते गाममे हलचल भऽ गेल-

'सुलोचना बहिन एली, बड़की बहिन एली..!'

ओना पैछला पीढ़ीक अनुकरण करैत ऐगलो पीढ़ीक सभ सुलोचनाकेँ 'बहिने' कहै छैन। एक्के-दुइए टोलक धियो-पुतो आ जनि-जातियो पहुँचए लगली। डेढ़ियापर गाड़ी रोकि रघुनाथ उतैर एका-एकी सभकेँ उतारए लगल। दू बर्खक पोताकेँ सुलोचना कोरामे नेने गाड़ीसँ उतरली।

हिष्ट-पुष्ट शरीर, चानीक बल्ला दुनू हाथमे, महीन-सादा साड़ी पहिरने। थुल-थुल देह। उतैरते चारू दिस आँखि उठा तकली तँ बुझि पड़लैन जे जेबा कालसँ विपरीत सभ किछु गामक भऽ गेल। जिनगीक आशा तोड़ि घरो-दुआर आ गामोकेँ गोड़ लागि कहने रहिऐन जे अन्तिम दर्शन केनहि जाइ छी। ई कहाँ आशा छल जे गामक मुँह फेर

देखब। तैबीच जेठ भौजाइपर नजैर पड़लैन। नजैर-सँ-नजैर मिलिते दुनूकेँ बघजर लगि गेलैन। मुँहक बोल बन्ने रहलैन। तैबीच झुनकुट चेहरा, ठेंगा हाथे बसमतिया दीदी सेहो पहुँचली। जहिना सुलोचना गामक बेटी तहिना बसमतियो दीदी। एक उमरिये दुनू गोरे, मुदा सुलोचना बहिन तीन मास जेठ छैथ। बसमतिया दीदीकेँ देखते सुलोचना पुछलखिन-

“साले भरिमे एते लटैक गेलेँ?”

दुनूक जिनगी बच्चेसँ एकठाम बितने बजैमे कोनो कमी रहबे ने करैन। निधोक भऽ बसमतिया दीदी बजली-

“तूँ ने भाए-भातिजक कमेलहा खा कऽ गेंड़ा बनि गेलँह, हमरा के देत?”

निआरले जकाँ सुलोचना बजली-

“किए, भगवान तोरा थोड़े बेपाट छथुन जे नइ देनिहार छौ?”

बसमतिया-

“हँ से तँ ऐछे, मुदा जएह कमाएत तेहीमे ने देत। अच्छा, कह जे टुटलाहा लग कज्जी ने तँ रहलौं, नीक जकाँ हाड़ जुटि गेलौं किने?”

“हँ। आब तँ बाल्टिनो उठबै छी आ पोतोकेँ कोरा-काँखमे लऽ कऽ खेलबै छिऐ। अपने गाड़ियो छी, आब गामेमे रहब।”

“ऐ उमेरमे असगरे रहि हेतौ?”

“मुनेसरो आब एतै रहत किने? काल्हि ओहो औत। ताबे कहुना अही टुटलाहा घरमे रहि पजेबाक घरो बनौत। हम सभ केते जीबे करब। मुदा जाबे आँखि तकै छी ताबे तकक ओरियान तँ करए पड़त।”

चौदह बर्खक अवस्थामे सुलोचनाक बिआह भेलैन। जेहने पिताक साधारण किसान परिवार तेहने परिवारमे बिआहो भेलैन। समाजमे अखन धरि धन नहि कुले-मूलक महत अधिक रहल मुदा लेनो-देन तँ चलिते छल। नीक-मूलक कन्याक मांगो बेसी। ओना अपन-पिताक कुल-मूलसँ दब परिवारमे बिआह भेलैन, मुदा कोनो हिनके-टा नहि, समाजमे एना केतेको गोरेकेँ भेल छैन आ होइतो अछि। तँए कोनो प्रश्ने नहि उठल।

मिथिलांचलक ओइ गाममे सुलोचनाक जन्म भेल छेलैन जइ गाम होइत एकटा धारो अछि आ पूबसँ कोसीक पानि आ पच्छिमसँ कमलाक पानि सेहो बरसातक मौसममे बाढ़ि बनि अबिते अछि। ओना कोसी-कमलाक बान्ह नै रहने अबैत-अबैत बाढ़ि पतरा जाइए मुदा बरखो-बुन्नीक तँ कोनो निसचित ठेकान नहियेँ छइ। जइ साल बरखा बेसी भेल तइ साल बाढ़ियो नमहर-नमहर आएल आ जइ साल कम बरखा भेल ओइ साल बाढ़ियो छोट अबैत। गाममे खेती-ले बरखा छोड़ि दोसर कोनो साधन नहि। लकड़ीक करीनसँ किछु खेती होइ छल मुदा ओ तँ पोखैरसँ होइ छल जे बैशाख-जेठमे अपने सुखि जाइत। जे पोखैर गहींर रहैत ओइ पोखैरक पानि ऊपर अनैमे तीन-चारि गाँड़ करीन लगि जाइत। तँए गहुमक खेती नहियेँक बरबैर होइ छल, कियो-कियो दू-चारि कट्ठा कऽ लइ छला। सेहो बिनु पटौलहा।

छह गोरेक परिवार चलबैमे सुलोचनाक पिता-हरिहरकेँ कठिनाइ तँ रहबे करैन मुदा गाममे मात्र हरिहरे एहेन नहि, बहुतो एहेन छला जे हुनकोसँ भारी जिनगी जीबैत रहैथ।

एक तँ महिला शिक्षाक चलैन नहि, तैपर गाममे साधनोक अभाव। ओना बाहरसँ कम सम्पर्क रहने गाममे शिक्षाक ओते जरूरतो नहियेँ छल, खाली बेवहारिक ज्ञानक जरूरत छल जे सभमे थोड़-बहुत

रहबे करइ, अखनो छइ...। स्कूलक मुँह सुलोचना नै देखली। बिआहक तीन सालक पछाइत सुलोचनाक दुरागमन भेल, सासुर गेली। बरख-पाँचे-छबेक पछाइत सासुरसँ सुलाचनाकेँ भगा देलकैन। भगबैक कारण रहै जे सन्तान नै भेलैन। ओना, ने कहियो डाक्टरी जाँच करौल गेलैन आ ने सन्तान नै हेबाक दोष किनकामे छैन, से फरिछौल गेल।

समाजमे एहेन धरल्लेसँ होइत जे कोनो महिलाकेँ 'कुरुप' कहि सासुरसँ ठोंठिया कऽ भगौल जाइत तँ कोनोकेँ सौतीन तर बसा भगौल जाइत, इत्यादि-इत्यादि। जैठाम वैदिक पद्धति एक-पुरुष एक नारीक सम्बन्धकेँ पहिल श्रेणीक विचार समाज मानने अछि, तैठाम रंग-रंगक बाधा बना नारीकेँ अगुआइसँ रोकल गेल। रंग-रंगक सगुन-अपसगुन कहि तँ उढ़री-ढढ़री बना दबौल गेल। एहेन स्थितिकेँ जँ रोगक जड़ि बिना तकने आ ओइठामसँ वैचारिक बाट बनौने बिना आइ एक्कैसम शताब्दीमे पहुँचल छी। ई बिलकुल सत् जे कियो शेर होइ आकि सियार, सभकेँ अपन कालखण्डक लेखा-जोखा होइ छइ। तँए ओ ऐगला-पैछला दोखक भागी भेला, ई बुझब नेनमैत भेल। हँ, जँ कियो अपना हाथे किछु केलैन तेकर जवाबदेह तँ भेबे केला।

हरिहर समाजक ओहन बेकती जे आँखिक सोझहामे कियो गाछक आम तोड़ि लैन वा खेतक धान नोचि लैन तँ एतबे चेतावनी दैत बजै छला जे 'जाइ छियौ बापकेँ कहए जे ई छौड़ा धान नोचलक, आम तोड़लक। बुझयहैन जे जखन तोरा कनैठी पड़तौ।'

समाजमे सहयोगक विचार छल। अपन गार्जन अपने बच्चाकेँ सिखबै छला। मुदा हरिहरक परिवारमे एकटा जबरदस गुण छेलैन जे महिनाक चारि-पाँच रवि, चारि-पाँच सोमक सोमवारीक संग केतेको पावैनक उपाससँ सालो छोट कऽ नेने छला। सरस्वतीक आगमन

परिवारमे भऽ गेल छेलैन। सिरिफ अपने हरिहरेटा नै पढ़ने छला। कारणो छल समंगर परिवारमे एक समांग गिरहस्तियो करै छला। तँए शुरुहेसँ पढ़ाइ दिस नै लगौल गेलैन। ओना, काल-क्रमे ओहन-ओहन भैयारी पछुआएल। ई दीगर भेल। ओना किछु समाज एहनो छल जे एहेन-एहेन अवस्था (सुलोचनाक संग जेहेन भेल तेहेन) कें बाहुबलसँ रोकलक मुदा समाजोक कटनियाँ तँ बड़का मूस बनि-बनि लोक कटिते छल। आ कटितो अछि जे जाति-जातिकेँ बाँटि सभ रोगसँ रोगाएल छी। कियो कम कियो बेसी। मुदा एहेन-एहेन अपराध समाजक मुद्दा नै बनि बनि, जातीय मुद्दा बनि कमजोर पड़ैत गेल। काल-क्रमे जातियोसँ परिवारमे पहुँच गेल। एक जातिकेँ नीच देखाएब वा जातिक भीतरो अगुआएलक निच्चाँ पछुआएल मनोरंजनक साधन बनि गेल अछि।

सरस्वतीक आगमनसँ हरिहरक परिवारक विचारमे किछु नवीनता तँ आबिए गेल अछि। सासुरसँ भगौल सुलोचनाकेँ परिवार सहर्ष अपना लेलैन। अपनबैक कारण भेल जे परिवारक सभ अपने गलती मानि लेलैन जे ओहन कुल-मूलमे डेगे नै उठबैक चाही। ओहनसँ मुहों लगाएब नीक नहि हएत। ..बापक दुलरूआ बेटा दोसर बिआह कऽ लेलैन। मुदा सुलोचना अपनाकेँ वैधव्य नइ बुझली। हाथक चुड़ी रखनहि रहली...।

समए आगू बढ़ल। लक्ष्मी जहिना दरबज्जापर हँसी-खुशीसँ आबि जाइ छथिन आ तखन जहिना केतबो ताड़ी-दारूक खर्चा हेराएले रहैए तहिना ने सरस्वतियो रगड़ी-झगड़ी छैथ। सुलोचना जकाँ नहि ने छैथ जे मने-मन संकल्पक संग जीबैक बाट पकड़ती, ओ तँ तेहेन रगड़ी छैथ जे एकटा सौतिनक कोन गप जे हजारो सौतीनकेँ झोंटिया-पिटिया कऽ अपन हिस्सा लाइए कऽ छोड़ती। पुरुखक कहने

भऽ जेतै जे जेठकीक जेठुआ जोश कमा देतइ।

सरस्वतीक रूप परिवारमे बदलल। संस्कृत पद्धतिक जगह नव-नव पद्धति शुरू भेल। थोड़-थाड़ संस्कृतोक पद्धति रहबे कएल। मुदा शिक्षाकेँ बुनियादी पद्धतिसँ उछालि देलक। सुलोचनाक पीठ परहक जेठ भाय जुगेसर तमुरिया स्कूलसँ मैट्रिक पास केलैन। गरीबी-बेकारीसँ त्रस्त परिवार। ..नोकरीक तलासमे जुगेसर कलकत्ता गेला। दू साल रहला। भाषाक दूरी, शहर-गामक दूरी तँ स्पष्टे रहइ। दू सालक पछाइत जुगेसर टीचर्स ट्रेनिंग कऽ लोअर प्राइमरीक शिक्षक बनला।

जुगेसरसँ छोट मुनेसर सेहो तमुरिये स्कूलसँ मैट्रिक पास केलैन। जनता कौलेजमे साइंसक पढ़ाइ नइ होइत। ..गर लगबैत खगड़ियाक गर लगौलैन। ओइ ठामक संस्कृत विद्यालय विद्यार्थीकेँ भोजन-डेराक बेवस्था सेहो करैए। कोसी कौलेज सेहो छइहे। साइंसक विद्यार्थी मुनेसर नीक जकाँ बी.एस-सी केलैन, तैबीच बिआहो अफसरक परिवारमे भऽ गेलैन। ..चारि भाँइक भैयारी हरिहरक छेलैन, तइमे बँटबारा भऽ गेलैन। दुनू परानी हरिहरो मरि गेला जइसँ आब दुनू भाँइक परिवार रहलैन।

साल भरिक पछाइत मुनेसरक दुरागमन भेल। दुरागमन भेला पछाइत साधना सासुर एली। सासुरक रहन-सहन, घर-दुआर देख मनमे जबरदस धक्का लगलैन। जे सोभाविको छेलइ। केतए अफसरक परिवार आ केतए एकटा छोट-छीन गामक किसान परिवार। मुदा एहेन खाली साधनेकेँ भेलैन से नहि, धनेरोकेँ भेलो छैन आ होइतो अछि। ओना साधनाक अपनो (नैहर) परिवार गामेक छेलैन। मुदा नोकरी भेने परिवारकेँ संगे राँचीमे रखै छला। राँचीए-मे जमीन कीनि मकानो बना नेने छैथ।

अफसर–एस.डी.ओ.–रहने दोसो-महिम आ सरो-सम्बन्धी सभ

अगुआएल तँ छैन्हे। ओना परिवारमे तीन भाए-बहिनक बीच साधना सभसँ जेठ। पहिल सन्तान रहने दोसर-तेसर-ले अभिभावके सदृश रहथिन। मुदा बेटी तँ बेटी होइत, बिआह-दुरागमन धरि माए-बापक घरकेँ अपन घर बुझैत। ..अपना गामसँ श्यामानन्द (साधनाक पिता) सम्बन्ध तोड़िए जकाँ लेलैन। कहैले तँ घर-घराड़ी छैन्हे मुदा रहैक घर नहि। साधारण घर छेलैन जे किछु दिनक पछाइत गिर पड़लैन, दोहरा कऽ बनबैक खगता नहियेँ बुझलैन।

दुरागमनसँ पूर्व धरि मुनेसर परिवारक भारक बीच नै पड़ल छला, मुदा पत्नी एने किछु जवाबदेही तँ भाइए गेलैन। अपना ओते खेत-पथार नहि जे गिरहस्तीसँ जीविकोपार्जन कऽ सकै छला, तैसंग समाजमे पढ़ल-लिखल बेकतीक संग हँसैक ई जबरदस समस्या तँ जन्म लइए नेने छल जे जँ पढ़ल-लिखलकेँ नोकरी नै भेलैन तँ समाजमे पीहकारीक पात्र बनियेँ जाइ छैथ। गाम-घरमे प्रचलित अछि 'पढ़ए फारसी बेचए तेल देखू भाइ करम-के खेल' बिनु खेतबला जँ गिरहस्त बनि गिरहस्ती अपनबए चाहत सेहो बात नहियेँ अछि। जीविकोपार्जन-ले केहेन गिरहस्ती चाही ओ तँ सबहक लेल सम्भव नहि। खेतक खरीद-बिक्री होइ छै; सम्पैत छिऐ। ओना जेठ भाय जुगेसर नोकरी करै छेलखिन। लोअर प्राइमरीक शिक्षक छला, मुदा अखुनका जकाँ ने सरकारी छल आ ने तेहेन वेतन। ..दुनू भाँइ मिला परिवार नमहर छेलैन्हे। जहिना सभ पढ़ल-लिखल वेरोजगारकेँ होइ छै तहिना मुनेसरोकेँ होइ छेलैन जे एतए नोकरीक आवेदन करू, ओतए नोकरीक इन्टरभ्यू दिऔक' इत्यादि...। ओना ग्रामीण समाजमे पढ़ल-लिखल बेकतीक गनल-गूथल संख्या, मुदा जेतबो छल ओकरो नोकरीक आशा तँ नहियेँ छेलइ। आ ने अखुनका जकाँ सरकारी कार्यालय छेलइ। ओना अखनो कम अछि। तहिया नमहर-नमहर पंचायत छल, चालीस-चालीस, पचास-पचास पंचायतक बीच ब्लौक

थाना छेलइ। तैसंग सरकारी कामो-काज कम छल, जइसँ सरकारी काजमे प्रवेश करब कठिन तँ छेलैहे। ब्लौकमे अफसरक नाओंपर मात्र एकटा बी.डी.ओ. रहै छला। काजो कम, अन्नक अभाव रहने खैरातक बँटबारा आ कोटाक माध्यमसँ अमेरिकन गहुमक बिक्री...। चीनीक कोटा नै बनल छल, तेकर कारण ईहो छल जे एक तँ चीनीक उत्पादन नीक, दोसर खेनिहार कम। तहिना स्कूलो-कौलेजक संस्था सएह, 'गनल कुटिया नापल झोर' सद्दृश छल। जे शिक्षक काज करै छला ओ सेवा-निवृत्त हेता तेकर पछाइते नव चेहराक प्रवेश हेतैन। लोक बैंकक नाउँए-टा सुनै छल जे ओइमे रूपैआक लेन-देन होइ छइ।

दुरागमनक किछुए-दिनक पछाइत साधना नैहर गेली। अरवन धरि पिता-श्यामानन्द बेटी-जमाइक घर-दुआर नै देखने। बी.एस-सी लड़का, शरीरसँ स्वस्थ सुनि बेटीक बिआह केलैन। तइ समए बेटियो (साधना) मैट्रीक पास केनहि रहैन। बिआहो समैसँ भेल छेलैन। ..नैहर आपसीक पछाइत साधना जखन सासुरक सभ हाल माता-पिताकेँ कहलखिन तखन श्यामानन्दक मनमे जमाइक नोकरीक प्रश्न उठलैन। मुनेसरकेँ राँचीए बजा लेलैन। जमाइक नोकरीक चर्च श्यामानन्द अपन संगियो-साथी आ सरो-सम्बन्धीक बीच गप-सप्पक क्रममे करए लगला। राँची विश्वविद्यालयक केमेस्ट्री विषयक हेडक सोझहा सेहो चर्च केलैन। दुनूक बीच घनिष्ठ दोस्ती। डेरो अगले-बगलमे रहैन। हुनकर ससुर हाइ स्कूल पलामूमे बनौने छैथ। ओना जंगल-झाड़क इलाका पलामू, मुदा छोट-मोट कसबा जकाँ तँ छेलैहे। हुनका बुझल छेलैन जे स्कूलमे जे साइंस-टीचर छला, ओ छोड़ि कऽ दोसर नोकरी करए चलि गेला जइसँ साइंस टीचरक अभाव छइ। ..ओ फोन कऽ ससुरकेँ पुछलखिन। विद्यालयमे शिक्षकक अभाव रहबे करै, मुनेसरकेँ नोकरी भऽ गेलैन। दिनांक १-१०-१९६७ ईस्वीकेँ नियुक्ति भेलैन। विद्यालयो सरकारी नहियेँ भेल छल, मुदा कोठारी

कमीशनक मंजूरी तँ भाइए गेल छेलइ। एक साए पाँच रूपैआ महिनाक नोकरी मुनेसरकेँ भऽ गेलैन। ..नोकरीक समए पत्नी कौलेजमे पढ़ैत रहथिन तँए पिते ऐठाम रहितो छेलखिन। अपने असगरे पलामूमे रहै छला आ छुट्टीमे राँची अबै-जाइ छला। ओना साइंस शिक्षककेँ सभठाम ट्यूशन चलिते अछि जे मौका मुनेसरोकेँ भेटलैन। एक तँ ग्रामीण जिनगीक जीवन स्तर, तैपर अविकसित इलाकाक नोकरी, बचत नीक होइ छेलैन। किछुए दिनक पछाइत मुनेसर राँचीए-मे जमीन कीनि अपन घर सेहो बना लेलैन। मकानसँ किछु भड़ो आबए लगलैन। अपन पैतृक गाम मुनेसर छोड़िए जकाँ देलैन। कहियो काल बहिन-सुलोचनाकेँ कपड़ो आ रूपैओ पठा दइ छेलखिन मुदा आबा-जाही नहियेँ जकाँ छेलैन।

हाइ स्कूलक शिक्षक-ले ट्रेनिंग करब जरूरी छल। ट्रेण्ड-आ-अनट्रेण्ड शिक्षकक बीच वेतनोक अन्तर छेलै आ बिना ट्रेण्ड शिक्षककेँ स्थायी हेबामे सेहो बाधा छेलइ। मुनेसरक नियुक्तिक दू सालक पछाइत माड़वाड़ी कौलेज दरभंगामे ट्रेनिंगक पढ़ाइ शुरू भेल। दसे मासक कोर्स। डोनेशनपर एडमीशन होइत। जे पढ़ाइक समए (सेशन शुरू भेला बादो छह मास धरि एडमीशन होइते रहल।) चारि मासक पछाइत मुनेसरो एडमीशन लेलैन। छबे मासमे ट्रेण्ड भऽ पुनः पलामू ज्वाइन कऽ लेलैन।

ओना, ओइ समए झारखण्ड लगा कऽ बिहार छल। राज्योक स्थिति दू भागमे विभाजित रहइ। 'उत्तर बिहार' आ 'दच्छिन बिहार'क स्पष्ट अन्तर रहइ। 'दच्छिन बिहार'मे खेती-पथारी कम होइत। खेती-जोकर माटियो कम छइ। कम क्षेत्र उपजाऊ अछि। पहाड़ी-जंगलक इलाका छी। ओना खनिज सम्पदा प्रचूर मात्रामे अछि। कोयलासँ लऽ कऽ अबरख धरिक खान अछि। जखन कि 'उत्तर बिहार' गंगा-

ब्रह्मपुत्रक तलहटी मैदान छी। पहाड़-जंगल नहियेँ जकाँ अछि। ओना गाछी-बिरछी पर्याप्त अछि मुदा पहाड़ी लकड़ी नहि।

खनिज सम्पदा रहने 'दच्छिन बिहार'मे देशी-विदेशी पूजीपति आ सरकारियो कारोबार पर्याप्त मात्रामे अछि। रंग-रंगक खनिज-सम्पदा अछि, तँए विस्तृत रूपमे कारोबार चलैए। देशी-विदेशी पूजीपति आ सार्वजनिक (सरकारी) कारोबार रहने रोजगारो बहुतायत अछि। मुदा जंगली-पहाड़ी इलाका रहने स्थानीय मूलवासीक बीच शिक्षाक प्रचार-प्रसार कम भेल अछि। साधारण-सँ-कुशल श्रमिकक सृजन नहियेँ जकाँ अछि। साधारण मजदूरक रूपमे रहल अछि। ..मुदा 'उत्तर बिहार' पढ़ै-लिखैमे अगुआएल। जइसँ कुशल श्रमिकोक संख्या बेसी अछि, तँए 'उत्तर बिहार'क पढ़ल-लिखल लोक दच्छिन बिहार जा नोकरी करए लगला आ घरो-दुआर बना बसि गेल छैथ। ऐगलो पीढ़ी-ले जीविकोपार्जनक उपय बनियेँ गेल छैन।

उत्तर बिहारक अर्थात् मिथिलांचलक ईहो दुर्भाग्य रहल जे कृषि प्रधान क्षेत्र होइतो पहाड़ी नदी तेतेक अछि जे क्षेत्रकेँ नष्ट कऽ देने अछि। ओना तीन रूपमे धार प्रवाहित अछि। किछु धार एहेन अछि जे मात्र बरसातक मौसममे प्रवाहित होइए आ पछाइत सूखि जाइए। प्रवाहित होइत किछु धार एहेन अछि जे असथिरसँ बहैए, काट-छाँट नहियेँ जकाँ करैए, ओ हजारो बर्खसँ एके स्थानपर बहैए। आ किछु धार एहनो अछि जे काटो-छाँट बेसी करैए आ उपजाऊ माटिकेँ बालुसँ भरि नष्टो करैए। जइसँ गाम-गामक खेतियो नष्ट होइ छै आ घरो-दुआर नष्ट होइ छइ। ..जीवन-यापनक मूल आवश्यकता, उत्पादित पूजी नष्ट भेने पड़ाइन लगल, आ लगलो रहत।

ओना मिथिलांचलक माटि-पानि-हवाकेँ अनुकूल रहने उर्वर शक्ति तँ छइहे। जइसँ केतबो लोक गामसँ पड़ा देश-विदेशक कोण-

कोणमे बसला मुदा अखनो गाम-घरक आवादी सघन तँ अछिए।

गामसँ तीन कोस हटि जुगेसरो नोकरी करै छला आ डेरो बाहरे रखने छला। कारणो छल जे ने अखुनका जकाँ गाड़ी-सवारी छेलै आ ने बान्ह-सड़कक दशा नीक रहइ। शहर-बजार छोड़ि ने पीच (पक्की सड़क) गाम दिस बढ़ल छल आ ने बिजली। मुदा तैयो १९४७ ईस्वीक अंग्रेज भगा अपन स्वतंत्र देश बनेबाक विचार तँ जन-जनक मनमे छेलैन्हे। गुलामीक शोषणसँ देशक स्थिति बिगैड़ गेल, जइसँ देशक विकास अवरूद्ध भऽ गेल। स्वतंत्र भेला पछाइत विकासक रास्ता देश जरूर पकड़लक। मुदा तेते असथिरसँ जे अजादीक साठि-पैंसैठ बर्खक पछाइतो जनकेक हरसँ खेतियो होइए आ करीने-ढोसिसँ खेतक पटौनी। जइसँ कृषि-प्रधान देश (जइ देशमे अस्सी प्रतिशतसँ ऊपर आवादी कृषि आधारित अछि) रहितो पाछू पड़ि गेल। किछु पूजीपति सत्ता हथिया शहरे-बजारक विकास धरि देशक अर्थ-बेवस्थाकेँ समैट लेलक। तैसंग ईहो नै नकारल जा सकैए जे जे मिथिलांचलवासी आन-आन देशक उन्नतिमे अपन शक्ति बेच सेवा करै छैथ ओ मिथिलांचलसँ, अपन मातृभूमिसँ आँखि सेहो मूनि लेलैन। ..देशक सत्ता किसानक समस्यासँ हटि जाति-धर्मक एहेन वातावरण बना देने अछि जे वास्तविक विकासकेँ अवरूद्ध कऽ देने अछि। मिथिलांचलक पानि-माटि आ मौसममे एहेन अनुकूलता अछि जे साइयो रंगक अन-पानि, फल-फलहरी आ तीमन-तरकारीक संग साइयो रंगक चिड़ै-चुनमुनी आ पशु-ले सेहो अनुकूल अछि। मुदा सभ किछु रहितो की अछि, केहेन अछि ओ सबहक सोझहेमे अछि..!

ओना अठबारे (शनि-रवि) जुगेसर गाम अबिते छला तैसंग पावैनक छुट्टी आ अनदिनोक छुट्टीमे सेहो गाम आबि जाइ छला। स्थिति सेहो एहेन नै छेलैन जे साइकिलो कीनि सकितैथ। ओना

परिवारो तेहेन नमहर नहियेँ छेलैन। तहूमे अपने अन्तइ रहै छला। जैठाम डेरा रखने छला ओइ परिवारक बच्चा सभकेँ पढ़बै छला। बदलामे भोजन आ रहैक बेवस्था छेलैन। ने बाइली ट्यूशन छेलैन आ ने दरमाहा छोड़ि दोसर कोनो आमदनी। शनिचरा प्रथा समाप्त भऽ गेल छल।

जुगेसरक सासुर मुंगेर जिला। गंगा दियाराक गाम। तीन भाँइक भैयारीमे ससुर जेठ रहथिन। संयोग एहेन जे छोट दुनू भाएकेँ बेटो भेलैन, हिनका (जुगेसरक ससुरकेँ) दूटा बेटीए-टा भेलैन। बहुत बेसी जमीनबला परिवार तँ नहियेँ छेलैन मुदा पच्चीस-तीस बीघा तँ छेलैन्हे। ..भैयारीक सम्पैतक प्रश्न तीनू भाँइमे टकराएल। दुनू छोट भाइक कहब छेलैन- सभ दिन अबैत-जाइत रहती। मुदा से जेठ भाय रमानन्दकेँ मान्य नइ रहैन। रमानन्दक विचार छेलैन जे हम अपन हिस्सा बेटीए-केँ देबइ। ..भैयारीमे जमीन लऽ कऽ विवाद ठाढ़ भेल। छोट दुनू भाँइ विचार केलैन जे किछु हौउ, जमीन तँ गामेमे रहत, ओ तँ ससैर कऽ आनठाम नै जाएत। तखन गामक लोक कीनि लेत आ रूपैया उठा कऽ दऽ औथिन। ..गामे-गाम तँ तीनतसियो चालिक लोक अपन चालि चलैबते अछि। मुदा किछु होशियारी भेल। दुनू भाँइ सौंसे गामक लोककेँ, खास कऽ तीन-तसियाबलाक बैसार केलैन। बैसारमे अपन प्रस्ताव देलखिन जे जखन भैयाकेँ बेटा नहि छैन तखन बुड़हारीक सेवा अछि से भातीजे सभ करतैन, जइसँ कुलो-खनदानक इज्जत बँचल रहत आ सेवो हेतैन। किए अनेरे बुड़हारीमे ऐ-गाम-सँ-ओइ-गाम वौएता। ..समाजोकेँ जँचल। मुदा रमानन्द सेहो अपने मनक लोक। परिवारसँ समाज धरिक किनको बात सुनैले तैयारे नहि। अकैछ कऽ समाजक सभ दुनू भाँइकेँ कहि देलकैन जे भैयारीक झंझट छी, समाज ऐमे नइ पड़त। मौका पाबि दुनू भाँइ पुछि देलखिन-

"जँ कियो चोरनुकबा जमीन लिखा लथि, तखन?"

जेते गोरे बैसल रहैथ पंच-परमेश्वरक रूपमे रहैथ, अनुकूल विचार देख अनुकूलतामे भँसि हरे-हरे एक्के शब्दमे बाजि उठला-

"जे समाजसँ बाहर हएत ओ बेटी चोद हएत!"

बजैकाल तँ सभ बाजि गेला मुदा पछाइत अपनेपर तामस उठए लगलैन जे सस्त चीज हाथसँ निकैल जाएत...। जहिना आगिक ताउपर लोहियाक जिलेबी-कचरी पेनीसँ उठि ऊपर अलैग जाइत तहिना रमानन्द गामसँ अलगए लगला। गंगाकातक गाम जकाँ गामक लोक सोझहे-सोझही रमानन्दकेँ दुतकारए लगलैन। अखन धरि समाजमे अहाँकेँ लोक कोन नजरिये देखैत रहल आ अहाँ की करैपर उताहुल छी? ..मुदा तेकर कोनो असैर रमानन्दकेँ नै भेलैन।

१९४० ईस्वीक लगाइतमे रमानन्द मैट्रिक पास केने छला। जइ समए हजारो विद्यार्थी स्कूल-कौलेज छोड़ि अजादीक आन्दोलनमे कुदि अपन सर्वस्व तियाग केलैन। ओही समैक उत्पादित मनुख रमानन्द सेहो छैथ, अंग्रेजी धुर-झार बजै छला। रेल-तार आदि सरकारी सेवाक केतेको गोरे नोकरी छोड़ि अपन आहुत देलैन।

मध्यम किसान परिवारक रमानन्द। पिताक देख-रेखमे परिवार चलैत, तँए घरक छुट्टा आदमी। एतए-ओतए घुमनाइ आ गुलछर्ड़ा छोड़नाइ जिनगीक काज छेलैन। मुदा जहिना शरीरमे रोगक आगमसँ धीरे-धीरे शरीरक शक्ति गरसित हुअ लगैत तहिना रमानन्दकेँ परिवारसँ समाज धरिमे हुअ लगलैन। जे भातीज 'बड़का बाबू' कहै छेलैन ओ मुँहपर गारि पढ़ए लगलैन। मनुखोक तँ अजीव सोभाव होइत। घनिष्ठ-सँ-घनिष्ठ मित्र जँ कोनो अधला वृत्तिमे फँसि जाइए तखन जे स्थिति पैदा लैत सएह रमानन्दोकेँ भेलैन। समाजक लोक ने कियो दरबज्जापर बैसए कहैन आ ने गप-सप्प करैले तैयार। जहिना

खुला जहल होइत तहिना रमानन्दकेँ भेलैन।

भैयारीमे विवाद उठने परिवारमे मोकदमाबाजी सेहो उठल। समांगसँ पातर रहने रमानन्द कमजोर पड़ए लगला। सोझहेमे भाए सभ खेतक जजाति, गाछ-बाँस उजाड़ए-काटए लगलैन।

दुनू भाँइ अबधारि लेलैन जे जेते मोकदमा करता करौथ। थनो-पुलिस आमदनी बुझलक, तँए हिसाब मिला कऽ चलए। दुनू बेटी-जमाए-केँ बजा रमानन्द अपन सभ दुखरा सुनबैत कहलखिन-

“जहिना, हम अपन सभ सम्पैत अहाँ सभकेँ दिअ चाहै छी तहिना तँ अहूँ सभकेँ चाही जे ओकरा बँचा कऽ लऽ जाइ।”

दुनू बेटी-जमाइक बल जहिना रमानन्दकेँ भेटलैन तहिना ओहू दुनू भाँइकेँ समाजक लोक मोकदमामे संग दिअ लगलैन। धीरे-धीरे रमानन्दक मन टुटए लगलैन। एक तँ साठि बर्खक उमेर टपि गेला तैपर कोट-कचहरीक दौड़-धूपसँ लऽ कऽ बेटी-जमाए ओइठामक दौड़-बरहा तेते बढ़ि गेलैन जे गामसँ बेसी अन्तइ गुजरए लगलैन। ..असगरे पत्नी घरमे सकपंज भेल रहैथ आ रमानन्द अपने वौआइत-वौआइत फिरिसान।

किछु दिनक पछाइत पत्नी अस्सक पड़लखिन। ने दियादवाद आ ने गामक कियो एको बेर पुछाइर करए आबैन दुनू बेटियो-जमाए लगमे नहि, मधुबनी जिलाक गाममे। ने उचित समैपर डाक्टरी देख-भाल होनि आ ने दवाइ-दारू। किछु दिनक पछाइत मरि गेलखिन। ..पत्नीक मुइला पछाइत रमानन्दक जिनगी आरो जटिल भऽ गेलैन। गाममे जखन रहैथ तखन भानसो-भातक ओरियान अपने करए पड़ैन। आमदनी सेहो भाए सभ रोकि देलकैन। अन्ना-गाँहिस देख, पछाइत दुनू जमाइयो अपन-अपन हाथ-मुट्ठी सक्कत केलैन। फटो-फनमे रमानन्द पड़ि गेला। जिनगीक कोनो सोझराएल बाट देखबे ने करैथ।

जिनगीक अन्तिम पाँच बरख रमानन्दक एहेन बितलैन जेकरा लोक नरकक बास कहै छइ। हारि-थाकि कऽ किछु दिनक पछाइत मरि गेला। जमाइयो सभ आवाजाहीक संग केसो-मोकदमा देखब छोड़ि देलकैन। अन्त-अन्त एकतरफा केस भऽ गेल।

जुगेसरक गाममे दियादीक दोसर परिवारमे वेमात्रेय भैयारीक बीच विवाद उठल। एक माएकेँ एक बेटा आ दोसरकेँ चारिटा। चारू भैयारी मिलि पाँचम भाएकेँ (वेमात्रेय) उपद्रव कऽ गामसँ भगा देलकैन। किछु दिन तँ ओ (पाँचम भाए) सर-सम्बन्धीसँ लऽ कऽ समाजक बीच चक्कर लगौलैन, मुदा किछु हाथ नै लगलैन। अन्तमे खिसिया कऽ पिताक सम्पैतक कागत-पत्र कलक्ट्रीएटसँ निकालि कहि देलखिन जे अपन हिस्सा घराड़ी तक बेच लेब। बीघाक लगभग हिस्सा पड़ैत रहैन। मुफ्तक माल खाइबला सभ समाजमे रहिते अछि। तीन-चारिटा परिवार खेत लिखबैक विचार कऽ लेलक। मुदा विवाद तँ बीचमे छेलैहे। लेबालक बीच प्रश्न उठल जे जमीन-जयदादक विवाद छी, मारियो-पीट हेबे करत आ थाना-फौदारी सेहो हेबे करत। ने मारिक ठेकान अछि आ ने केते दिन झंझट रहत तेकर ठेकान। तँए दुनूकेँ नजैरमे रखि लेन-देन करब। ..तहिना जमीनबलाक (पाँचम भाय) बीच प्रश्न उठल जे जँ सस्तमे लिखि देबै, तइसँ लाभ की हएत? तखन तँ नीक अछि जे अपने भैयारी सभ खाथि। कम-सँ-कम एक परिवारक तँ छैथ। मुदा चाइलो देनिहारक तँ कमी नहियेँ अछि। ..उनटा-सीधा मंत्रक तेते डाकैन पड़ल जे बैहरा कड़कड़ेतक बीख जकाँ निच्चाँ मुहेँ ससरल।

अन्तमे फरियाएल जे अधिया दाममे खेत लिखबैले तैयार भेला। बेचनिहारकेँ (पाँचम भाएकेँ) तेते चारू भाँइ गंजन केने जे तामस कमबे ने करैत। होइत-हबाइत अधिया दाममे जमीनक लेन-देन भऽ

गेल। ओही लेबालमे एकटा जुगेसरो। मुदा संयोग नीक रहलैन जे जुगेसर अपने स्कूलक नौकरी दुआरे बाहरे रहैथ तही बीचमे गाममे दोसर लेबालक संग मारि उठल। जबरदस मारि भेल। दुनू दिस कपार फुटल, बाँहि टुटल। सौंसे गाम सना-सनी पसैर गेल। अनेको भागमे समाज विभाजित भऽ गेला। किछु गोरे खुलि कऽ दुनू पार्टीकेँ केसमे गवाही दइले तैयार भऽ गेला। किछु गोरे मारियोमे संग देलकैन। किछु गोरे बेकतीगत पूजी देख अपनाकेँ दुनूसँ अलग रखलैन। मुदा समाजोक लत्ती तँ एहेन सकबेधने अछि जे नहियोँ विचार भेने परिस्थितिवश मजबूरीमे 'हँ' कहए पड़ै छइ। सेहो भेल। तेतबे नहि, लत्तीक सोरो एहेन अछि जे गामोमे लोक सासुर-मातृक ठाढ़ कऽ लइए।

ओही झंझटमे जुगेसर आठ कट्ठा जमीन किनैक विचार केलैन। ओना दुनू परानीक विचार भेलैन जे मुनेसरकेँ ऐ जमीनमे संग नै करब। मुदा परिवारक तँ विधिवत बँटबारा भेल नै अछि तखन जेठ भाय छिऐ, छोट भाइक हिस्सा तँ भाइए जाएत। तँए कहि देब जरूरी अछि। जँ अदहा खर्च देत तँ ठीके छै, नइ तँ अपन दोख तँ मेटा लेब।

ओना एहेन विचारक पाछू पेटमे ईहो रहैन जे मुनेसरक आमदनी तेतबे छै जे कहुना कऽ परिवार चलै छइ। तखन रूपैया केतए सँ आनत। तैबीच मनमे ईहो जे गुप-चुप दाम भेल अछि किने, बढ़ा देबइ। कहुना (अधिया दाम भेने) चारि कट्ठा तेफैसला[1] खेतक भैलू कम नइ भेल। पोस्ट कार्डक माध्यमसँ जुगेसर मुनेसरकेँ जनतब देलखिन। स्कूलक दरमाहा तँ जुगेसरकेँ बुझल, मुदा ट्यूशनक आमदनी तँ नै बुझल। तैसंग मुनेसरकेँ पत्नियो विचार देलकैन जे नैहरमे देल बरतन-बासन जे अछि ओ अनेरे घरमे ढनमनाइत रहैए,

---

[1] तीन-फसिला

ओकरा बेच कऽ जमीन कीनि लिअ...। अखन धरि दुनू भाँइक बीच पहिलुके सम्बन्ध जीवित छल। मुनेसर अदहा खर्च दइले तैयार भऽ गेलखिन। जमीनक रजिष्ट्री जुगेसर दुनू भाँइक नाओंसँ करा लेता।

अपन कमजोर पाशा देख जुगेसर दुनू परानी विचार केलैन जे नीक हएत बेटा नाओंसँ जमीन लिखाएब।

मुनेसरकेँ कोनो पता नहि। तइ समए रजिष्ट्रियो ऑफिसमे अखुनका जकाँ नै छल जे लिखौनिहारोकेँ उपस्थित रहए पड़ैत। कियो केकरो नाओंसँ जमीन लिखा सकैए। तैसंग पान-सात बर्खक पछाइत दस्ताबेज भेटै छै, ताबे बातो पुरनाए जाइत। तहूमे कागतक खोज जखन हएत तखन ने आ जँ नै हएत तँ के बुझत...। ने भिनौज भेल अछि आ ने खेती-पथारी बँटल अछि। तखन तँ गाममे रहै छी जेना-तेना जनक हाथे खेती कऽ लइ छी। बात खुजबे ने करत, तँ मुहाँ-ठुट्ठी आकि हल्ला-फसाद हएत किए। जहिया भीन हएब तहिया बुझल जेतइ।

अनुकूल विचार बुझि जुगेसर अपना बेटाक नाओंसँ आठो कट्ठा जमीन लिखा लेलैन। जे पछाइत दुनू भाँइक बीच विस्फोटक भऽ गेल।

किछु सालक पछाइत रजिष्ट्रीक भेद खुजल। भेद खुजिते दुनू परिवारमे, माने दुनू भाँइमे अनोन-विसनोन शुरू भेल। दू तरहक अनोन-विसनोन उठल। एक तरहक भेल मुनेसर दुनू बेकतीक बीच आ दोसर तरहक भेल जुगेसरक बीच। ..जुगेसरक पत्नी पिताक सम्पैतक खेल देख चुकल छेली जे अछैते हिस्से हिस्सा नै भेलैन। तँए पतिपर दवाब बनौने जे जे भेल से नीक भेल, माने बेटा नामे रजिष्ट्री नीक भेल। मुदा जुगेसरकेँ सद्य: भाइक संग बेइमानी आ समाजक बीच दोखी हेबाक डर मनमे नाचए लगलैन। मुदा बेटो जुआन भऽ गेल

रहैन। अपन खास हिस्सा बुझि ओहो माइयेक पीठपोहू बनल। तहिना दोसर दिस मुनेसर अपन आमदनी देख सबुर करैत। आमदनियो नीक बनि गेल रहैन। स्कूलकेँ सरकारीकरण भेने नीक दरमाहा, तैसंग ट्यूशनो फीस बढ़ने अधिक आमदनी आ तैपर सँ राँचीक मकानक भाड़ा सेहो जोर दैत रहैन। मुदा साधनाक भूख[2] आरो उग्र भऽ गेलैन। तहूमे अपन बाप-माइक देल बरतन-बासन बिकाएल रहैन।

..दुनू परानीक बीच खुलि कऽ मतभेद शुरू भऽ गेल। गप-सप्पक क्रम एना भेलैन। मुनेसर पत्नीकेँ बुझबैत कहलखिन-

"देखियौ, राँची सन शहरमे अपन मकान भऽ गेल, गाममे रहैक कोनो प्रश्ने ने अछि। तखन तँ वएह[3] खेतियो करै छैथ, खेबो करता।"

मुनेसरक विचारकेँ कटैत साधना अपन अर्थशास्त्रीय तर्क देलखिन-

"जखन गाममे नइ रहब तखन गामक पूजीकेँ मार पूजी किए बनौने रहब। ओकरा बेच कऽ बैंकमे जमा कऽ लेब तैयो सूदि औत। नइ जँ घरे आरो बना लेब तैयो भाड़ा एबे करत।"

पाशा बदलैत मुनेसर तर्क देलखिन-

"बाप-पुरखाक जँ घराड़ीए बेच लेब तखन कोन मुँह लऽ कऽ जिनगी जीब, कोनो कि पेट जरैए जे बेचब।"

होइत-हबाइत ई भेल जे गामक खेत भरना लगा बैंकमे जमा कऽ लेब। मुदा विवाद तँ बीचमे भैयारीक रहबे करैन।

किछु दिनक पछाइत दुनू परानी गाम आबि अपन डीह-डावरसँ लऽ कऽ बाध धरिक बँटबारा करैक विचार जुगेसरक सोझहामे

---

[2] सम्पैतक भूख

[3] भैया

रखलैन।

..जुगेसरो विवादी जमीन, जे रजिष्ट्री भेल रहए छोड़ि सभ किछु बँटैले तैयार भऽ गेला। नइ मामासँ कनहा मामा नीक। विवादी जमीन छोड़ि मुनेसर बाँकी बाँटि लेलैन।

हरिहरक भैयारीमे अढ़ाइ कट्ठा घराड़ी। जे बँटाइत सबा छह धूरपर आबि गेल।

जइ समए सुलोचना सासुरसँ नैहर आएल छेली ओ समए देशक आन्दोलनक तूफानी दौड़ छल। सन् १९४२ ईस्वीक दमनचक्र प्रारम्भ भऽ गेल छल। परोपट्टाक[4] लोक अंग्रेजी हुकुमतक खिलाफ सड़कपर उतैर गेल छल। गोरा-पलटनक अड्डा झंझारपुर बनल छल। केतेको गामगे आगि लगौल गेल। केतेको गोरे भूमिगत काज करै छला। केतेको गोरे मारि खा-खा जहलमे बन्न छला। मुदा लाजिमी बात ईहो रहल जे ऐठामक केतेको परिवार गोरा सरकारक संग देलक! रहै-खाइक बेवस्थाक संग-संग सम्पैतक लूट सेहो केलक!

ओना गाममे सुलोचना बहिन सन केतेको गोरे छैथ जे सासुरसँ भगौल छैथ। अपन माए-बाप, भाए-भौजाइक संग सेहो रहै छैथ आ असगरो बोनि-बुत्ता कऽ जीवन-यापन सेहो करै छैथ! किछु गोरेकेँ सन्तानो छैन आ किछु गोरेकेँ नहियोँ छैन।

अदौसँ एक पुरुष आ एक नारीक सम्बन्धक विधानो आ बेवहारो तँ बनल रहल मुदा परिवारकेँ आगू बढ़ैले किछु कमियोँ तँ रहबे कएल। ओ कमी अछि- मनुखक शरीरक बनाबट। सभ सरीरक बनाबट समान नइ होइए। बहुलांशमे सन्तानोत्पत्तिक शक्ति समान रहैत आएल अछि तँ तैसंग कमी-बेसी सेहो रहल अछि। केतौ कोनो

---

[4] झंझारपुर इलाकाक

पुरुखमे शक्तिक कमी तँ केतौ कोनो महिलामे। तहिना केतौ कोनो पुरुखमे बेसी रहल अछि तँ केतौ कोनो महिलामे। ओना, शक्तिहीन पुरुख रहने क्षेत्रज सन्तानक चलैन सेहो रहल अछि। मुदा शक्तिहीन नारी भेने तँ परिवारकेँ आगू बढ़ैमे बाधा उपस्थित भाइए जाइए। तैठाम दोसर नारीक सहारा जरूरी भऽ जाइ छइ। जँ से नै हएत तँ परिवारक अन्त हएत। अन्ते नइ हएत बुड़हारी आ बेमारीक अवस्था सेहो कष्टकर हएत। मुदा आवश्यक आवश्यकता तरवन अराम आ विलास दिस बढ़ैए जखन भोग-विलासक मनोवृत्ति जोर मारै छइ। जइक चलैत समाज-परिवारमे विकृतताक रूप पकड़ैए। से भेल। समाजक अगुआएल (खास कऽ आर्थिक रूपे) आ मध्य वर्गीए परिवारमे सेहो एक-सँ-अधिक बिआह करब नीके जकाँ चलैनमे छल। जइसँ एक पुरुख एक नारीक प्रथापर जबरदस चोट पड़ल। मुदा केतबो जबरदस चोट किए ने पड़ल, तैयो सोलहन्नी नष्ट नइ भेल। ओना निम्न वर्गमे सेहो बेमारी पैसल मुदा दोसर रूपमे। ओना राजशाही बेवस्थामे ऊपर-सँ-निच्चाँ धरिक किछु परिवार जोड़ाएल छल, तइ परिवारक बीच भोगी-विलासी मनोवृत्तिक परिणाम छल, जखन कि गरीबमे पेटक दरद कारण भेल। एहेन पुरुखोक संख्या कम नहि जे ‘कामचोर’, ‘आलसी’, ‘नशाखोर’ इत्यादिक कारणे पत्नीकेँ नै रखि पबै छल। नइ रखैक माने ई जे पत्नीक भरण-पोषण नै कऽ पबै छल। मुदा सेहो सोलहनी नइ भेल। एहेन बहुतो महिला छेली जे पुरुखे जकाँ श्रम करै छेली। जिनका मनमे पतिक प्रति असीम श्रद्धा आ मजगूत संकल्प छेलैन, जे अपन जिनगीक सभ सुख पतिमे अरोपि नेने छेली।

एकसँ अधिक बिआह करैक रूप दिनानुदिन बदतर होइत गेल। अनेको रंगक कुत्सित रोगक जन्म होइत गेल। पुरुखोक विचार एते घिनौना रूप पकैड़ लेलक जे दर्जनक-दर्जन बिआह करए लगला। तैसंग ईहो भेल जे पुरुखक उमेरोक ठेकान नै रहल। जे उमेर बिआहक

नहियोँ छल तहू उमेरमे बिआह करए लगला। जइसँ अपने किछुए दिनक पछाइत मरि जाइ छला आ जुआनीए-सँ महिला वैधव्य रूपमे बदैल जाइ छेली। विधवा जिनगीक बीच एहेन परिस्थिति पैदा लऽ लइ छल जे समाजक रोग बनि गेल।

ओना नारीक प्रति पुरुख सोल्होअना अन्याये केलैन सेहो नहि। पुरुख-नारीक बीच दुनू तरहेँ रोगक प्रवेश भेल। केतौ बलक प्रयोग भेल तँ केतौ पुरुख-नारीक बीचक आंगिक सम्बन्ध सेहो भेल।

प्रश्न उठैत जे अदौक परम्परा (वैदिक परम्परा) पर एते भारी चोट पड़ल आ सभ पुरुख-महिला मुँह देखैत रहि गेला! ऐठाम ईहो बात देखए पड़त जे ने सभ गामक एक रंग चालि-ढालि, खान-पान, बात-विचार अछि आ ने समाजिक विकासक प्रक्रिया एक रंग अछि। एक रंग नइ होइक अनेको कारण अछि। एक तँ समाज छोट-छोट राज्यमे विभाजित छल। जइ तरहक राज्य छल ओइ तरहक रजो छला। ओना मिथिलांचल सेहो केतेको जमीन्दारीक संग राज्योमे विभाजित छल। सभकेँ अपन-अपन शासनक संग समाजिक बेवस्थो संचालित करैक अलग-अलग ढर्ड़ा छेलैन। ओना क्षेत्रक हिसाबसँ सेहो अन्तर छेलैहे। खान-पानक संग उपारजन करैक सिस्टमोमे अन्तर पहिनौं छल आ अखनो अछि। अखनो एहेन क्षेत्र अछि जैठाम ने बाढ़ि कोनो काट-छाँट केलक आ ने बलुऔलक, जइसँ ओइठामक खेत-पथार आकि बास भूमि प्रभावित भेल। मुदा एहनो क्षेत्रक कमी नहि, जैठाम उपजाऊ भूमि धारो बनि गेल आ बाउलोसँ भरि गेल अछि। ..जे कहियो सुन्दर गाम (बासक हिसाबे) छल ओ उजैड़ गेल। बिनु अन-पानिसँ मनुख जीब केना सकैए? ई तँ प्रश्न तहियो छल आ अखनो अछिए।

एकटा आरो भेल। ओ ई जे जैठाम पुरुख-नारीक बीच

परिवार ठाढ़ भेल ओइठाम पुरुख प्रधान बेवस्था रहने अनेको तरहक अबलट लगा नारीकेँ घरसँ भगौल गेल। केकरो ‘सन्तानोत्पत्ति शक्तिक अभाव, तँ केकरो ‘चरित्रहीन’ कहि इत्यादि-इत्यादि, अबलट जोड़ि घरसँ अलग कऽ देल जाइ छल आ अखनो कऽ देल जाइए।

गामक समस्या (भाइक बेवहार) दुनू परानी मुनेसरक सम्बन्धमे खाधि बनबैत गेल। दुनू भाँइक भिनौजी सुलोचनाकेँ सेहो बाँटि देलकैन। एते दिन सुलोचना दुनू भाँइक बीच छेली मुदा भीन भेने जुगेसरसँ हटि मुनेसरक संग भेली। जुगेसर मुनेसरक खेती छोड़ि देलकैन।

भाइक खेती छोड़ने खेतीक समस्या मुनेसरकेँ उठलैन। कारणो स्पष्टे अछि। अपने दुनू परानी बाहरे रहितो छला आ गामक आवाजाही सेहो नहियेँ जकाँ छेलैन। गाममे नइ रहने माले-जाल केना पोसि सकितैथ, जइसँ खेती करितैथ। ओना बाहरोमे दुनू बेकती मुनेसर एकठाम नहियेँ रहै छला। बाल-बच्चाक संग साधना राँचीमे रहितो छेली आ हाइ-स्कूलमे नोकरियो करै छेली आ मुनेसर असगरे पलामूमे रहै छला। एक तँ दुनूक दूरी अधिक अछि दोसर जँ स्कूलमे छुट्टियो होइ छेलैन तैयो ट्यूशन रहिये जाइ छेलैन, तँए राँचियोक आबाजाही कमे-सम्म रहै छेलैन। जिनगीक दूरी विचारोक दूरी बनौने रहलैन। जैठाम साधनाकेँ अपन परिवारक चिन-पहचिनमे कमी छेलैन तैठाम मुनेसर भैयाक आगू जमीनकेँ गौण बुझै छला।

स्पष्ट रूपे दुनू परानीक बीच मुनेसरकेँ मतभेद होइत गेलैन। अपन हक-हिस्सापर साधना अड़ली तँ मुनेसर आगू बढ़ैसँ हिचकिचाइ छला। होइत-हबाइत भेल ई जे दुनू गोरे एक दिन निर्णए-ले तैयार भेला। दुनूक बीच प्रश्न-उत्तर एना भेलैन।

साधना-

“जखन खेत किनैमे अदहा खर्च भैयाकेँ देलिऐन तखन ओ किए अपना बेटा नामे जमीन लिखा बेइमानी केलैन?”

साधनाक मजगूत तर्कसँ मुनेसर सहैम गेला। मुदा अपनाकेँ उदार बनबैत उत्तर देलखिन-

“भैया जँ बेइमानीए केलैन तइसँ हमर की बिगड़ल?”

◌

शब्द संख्या : 4940

2.

जुगेसर आ मुनेसरक बीच मरौसी जमीनक बँटबारा भऽ गेलैन। मुदा हालमे किनलाहाक नइ भेल। दुनू भाँइक बँटबारा सुलोचना बहिनकेँ सेहो बाँटि देलकैन। सुलोचना बहिन मुनेसरक संग भेली।

जमीन बँटेलासँ खेतीक समस्या उठल। जुगेसर एकटा बरद रखि भजैती हर बना अपन खेती करए लगला आ मुनेसरकेँ खेत तँ भेलैन मुदा खेतीक कोनो समचा नहि। अपनो आ परिवारो बाहरे रहैत।

'खेतक बँटबारा' एकटा नमहर समस्या ठाढ़ कऽ देलकैन। समस्या ई जे मध्यम परिवारमे खेतक बँटबारा दू ढंगसँ होइए। पहिल जे खेते-खेते आड़ि नहि दऽ खेते-खेत बाँटि लेलौं। तइ बँटैमे गोटे-आधे खेतमे आड़ि पड़ैत नहि तँ खेते-खेत बँटा जाइत। दोसर ई जे छोट-खेत रहह आकि नमहर खेते-खेत बँटाएल। ओना दुनू बँटबारा रोगाएले अछि। एक रोगाएल अछि जमीनक उर्वराशक्ति आ जमीनक किस्मसँ, जेना- एके गामक एक बाधमे नीच, मध्यम आ ऊँच खेत होइए। नीचरस खेतमे पानि बसने माने अधिक दिन तक पानि रहने एकेटा उपजा भेल। तेकरो कोनो निसचित बिसवास नहि। किएक तँ जँ अगते नमहर बरखा भऽ गेल तँ खेते नहि अवाद हएत, दोसर अवाद भेलो पछाइत पानिक कोनो ठेकान नइ होइ छै जँ अगते डुम्मा बरखा

भेल तँ रोपलोहो डुमि गेल। जइमे लगतो डुमि गेल, उपजाक कोनो चरचे नहि। मुदा मध्यम खेतमे गिनती हिसाबसँ उपजो बेसी आ नीक फसिलो (जेना धानेमे हल्लुक धान, सतरिया-तुलसीफूल) होइत...। एहेन ठाम समस्या उठबे करत। तैसंग ऊँच जमीनमे गाछियो-कलम लगैत आ बरसाती तरकारी सेहो होइत, जे मध्यम आ नीच खेत-ले सम्भव नहि। तहिना दोसर तरहक बँटबारामे ई समस्या उठैत जे एक बीघा खेतक टुकड़ा तीन पीढ़ी जाइत-जाइत बीघासँ कट्ठामे उतरैत धूरमे पहुँच जाइए। जेना पहिल पीढ़ी जँ चारि भाँइक भैयारीक रहल तँ बीघा पाँच कट्ठामे बँटाएल, दोसर पीढ़ी जँ चारि भैयारीक रहल तँ एक-कट्ठा पाँच धूरमे बँटाएल आ तेसर जँ दूओ भाँइक भैयारी रहल तँ साढ़े-बारह धूर भेल। खाएर जे हौउ, मुदा समाज दुनूक संग न्याय केने अछि। दुनू प्रथाक गाम-गाममे चलैनो अछि आ सभ मानितो अछि।

जुगेसर मुनेसर झगैड़ कऽ बँटबारा केलैन, खेते-खेत आड़ि पड़ल जेइसँ खेतक नक्शा तेहेन बनि गेल जे हरक जोत कोदारिपर चलि आएल। जँ एक दिस नमहर-नमहर ट्रेक्टर खेत जोतए आबि रहल अछि तँ दोसर दिस खेत खँताइत-खँताइत तेते छोट भऽ गेल जे ट्रेक्टर अँटबे ने करत तँ जोतत कथी। बेल पकने कौआकेँ कोन लाभ। ओना समाजमे दू रंगक बँटेदारो अछि। एक ओ जे अपन हर-बरद रखि अपने हरबाहि कऽ बँटाइ खेत जोतैए, जेकरा थोड़-थाड़ खेत अपनो रहल आ दोसरो भेल। किए तँ, आजुक ओहन खेती बनि रहल अछि जे एक-फसिला नहि बहु-फसिला बनने खेतक जोतो बढ़ि जाइए। बरहमसिया खेती सेहो भऽ रहल अछि। बरहमसीए खेती कृषिक उन्नतिक चोटीक सीढ़ी भेल। बारहो मास खेती भेने, पर्यावरणविद् सभकेँ अनेरे ऑक्सीजनक साँस भेटतैन। ..दोसर तरहक बँटेदार ओ भेल जे अपने बोइन करैए आ किछु खेतियो करैए। मोटा-मोटी ओ सभ कोदारिसँ खेती करैए।

दुनू भाँइक बीच बँटबारा भेला पछाइत मुनेसरक मनमे रहैन जे खेतक देखभाल बहिन करती आ भैया खेती करता, उपजाक हिस्सा बहिनकेँ देथिन। मनमे रहैन जे बहिन तँ दुनू भाँइक छी, जँ ओहू लाथे अपन सहयोग बुझि सोल्होअना उपजा दऽ देथिन तँ हुनको गूजरमे सुविधा हेतैन। मुदा झगड़ाक बीआ पहिनहि सुलोचना बहिन रोपि लेलैन। रोपि ई लेलैन जे खेत किनला पछाइत मुनेसर दिससँ बाजि गेली जे 'जखन दुनू भाँइ अदहा-अदहा खर्च दऽ खेत कीनलक तखन हिस्सा किए ने हेतइ।' ..अपना मुहेँ वेचारी एक भाँइसँ दूर आ दोसरसँ लग चलि एली। जुगेसरोकेँ सरकारी मान्यता भेटने दरमहो बढ़लैन जइसँ घराड़ी कीनि पजेबाक घरो नीक जकाँ बना लेलैन। सुलोचना बहिन सबूर केली जे जखन सीता महरानी जाबे जनकपुरमे रहली ताबे बेटीए रहली (बेटीक महत परिवारमे कम होइत) आ जखन राजगद्दी बेर एलैन तखन बोने गेली आ बोनोमे पति-दिअरसँ बिछुड़ि लंका गेली। तँए की ओ रावणक राजधानीमे रहली? नहि, पुष्पवाटिकामे रहली! ..तहिना हमहूँ रहब।

खेत बँटाइ करैसँ जुगेसर पाछू हटि गेला। तेहेन-तेहेन बँटेदार भेलैन जे समैपर खेतीए ने कऽ पबै छल। जइसँ उपजा बेठेकान भऽ गेल। मुदा सुलोचना बहिन अपन बाप-दादाक डीह धेने रहली।

डिफिसिट ग्राण्ट स्कूलकेँ भेटने मुनेसरोक दरमाहामे बढ़ोतरी भेलैन। तैसंग नीक शिक्षक भेने (पढ़बैमे नीक) ट्यूशन सेहो बेसिया गेलैन। जइसँ आमदनीमे नीक बढ़ोतरी भऽ गेलैन। राँचीमे अपन घरो बना नेने रहैथ। गाममे भैयारीक विवाद ठमकल रहल। मुदा दुनू बेकतीक बीचक मुनेसरक दूरी बढ़ैत गेलैन। सोभावसँ दुनू दू तरहक। एकक सोभाव अपन कर्ममे एते विश्वस्त भऽ गेल जे मनमे उठैत, कोन सम्पैत अछि मास दिनक कमाइ भेल बुझब जे मास दिन नहियेँ

कमेलौं। तइसँ ई तँ हएत जे समाजोक नजैरमे जीवित रहब आ परिवारक बीच मलिनतो कमत। भैयारीक जे सम्बन्ध अछि ओ बरकरारे रहत। घराड़ी छोड़ने की होइ छइ। हमहूँ तँ गामक के कहए जे आने राजमे घर बनौने छी। मुदा भैयारियो तँ भैयारीए छी।

दू भाँइक बीच दू माए-बापक बेटी सेहो छैथ। दुनू भाँइ ऐ रोगसँ गरसित। कारणो भेल। कारण भेल जे जुगेसरकेँ सासुरक सम्पैतक लोभ पत्नीक मातहतीमे आ मुनेसर ऐ दुआरे जे एक साधारण किसान परिवारक बेटाक बिआह प्रशासनिक अफसरक बेटीसँ भेल छेलैन। केतबो हाइ-तौबा किएक ने हुअए मुदा एकरा केना नकारि देब जे मिथिलांचलक अधिकांश परिवारमे महिलाक मुँहपुरखी नइ अछि। ई दीगर जे की अछि, केते अछि, केहेन अछि, मुदा परिवारक जुइत महिला हाथमे नै अछि सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। ओना मुनेसर चरित्रकेँ बहुत हद तक संयमित रखला। बेटोकेँ नीक स्कूलमे पढौलैन। अपन कमाइसँ एहेन सबूर भेल मन मानि गेलैन जे जिनगी बड़ भारी नइ होइ छइ। मुदा तैयो गामक सम्पैत-ले दुनू बेकतीक बीच मतभेद भुमहुरक आगि जकाँ सुनैगते रहल। जे से, मुदा सुलोचनो बहिनक देख-रेख तँ करबे करैत रहला। जमीनो तँ जाल छी। जुगेसरकेँ पहिल चारि कट्ठा हाथ लगले छैन, दोसर सासुरक हूसलैन। फेर तेसर दस कट्ठाक जालमे पड़ला। जाल ई जे पाहीपट्टीबला दू भाँइक घराड़ी-वाड़ी मिला दस कट्ठा एकठाम। दुनू भाँइसँ किनैक दाम जुगेसर केलैन। दामो तँइ भऽ गेल। एक भाँइ रूपैआ लऽ रजिष्ट्री कऽ देलकैन। दोसर भाँइ टौहकी लगौलक।

दोसर लेबाल पहुँचल। भैयारीक एके जमीनक दाम एक भाँइसँ डेढ़िया दोसर भाँइकेँ भेल। दोसर रामकिसुन अदहाकेँ के कहए जे सोल्होअना खेत दफाइन लेलक। बल प्रयोगमे जुगेसर कमजोर

पड़ला। पाछू हटि कोर्ट पहुँचला। केसा-केसी शुरू भेल मुदा जमीन रहल दफनिहारेक हाथमे।

किछु दिनक पछाइत जुगेसरक बेटा जे मैट्रिक पास अछि, ओ एकटा पोस्टकार्डमे बिखैन-बिखैन कऽ गारि लिखि रामकिसुनकेँ पठा देलक। ..पोस्ट ऑफिससँ चिट्ठी भेटते रामकिसुन लोक सभकेँ चिट्ठी देखबए लगल। झाँपल बात, तँए के लिखलक नै लिखलक से प्रश्न उठल। जेकरा गारिक चिट्ठी भेटल ओ शंका केलक जे दोसर किए लिखत। केकरोसँ झगड़ा नहि। तखन तँ खेत लऽ कऽ झगड़ा जुगेसरसँ अछि ओकरे बेटा लिखलक। जुगेसरक बेटा राधा सेहो गाममे। दुनू गोरेक घरो एकेठाम। तँए सदिकाल एक-दोसरकेँ देखबे करैत। राधाकेँ पकैड़ रामकिसुन खूब मारि मारलक।

गाममे जमीन्दारक जमीनपर अगिलग्गी केस भऽ गेल। अट्ठाइस गोरे केसक मुद्दालह भेला। ओही जमीन्दारक जमीनपर जुगेसरकेँ विवाद फँसलैन। थानाक लहकी गाममे रहबे करइ। घटना भेबो कएल। जमीन्दारो अपन हाथ ससारलक। जुगेसरकेँ अगुआ गौंआँ सभकेँ सेहो फँसौलक। खूब नमहर मोकदमाबाजी भेल। हाइ कोर्ट तक विवाद पहुँचल। मुदा जमीनपर कब्जा जुगेसरकेँ नहियेँ भेलैन।

मुनेसर दुनू परानीक बीच मतभेद कमलैन नहि बढ़िते गेलैन। एक दिन पत्नी डपटैत मुनेसरकेँ कहलखिन-

“अहाँ बुते खेत कब्जा कएल नै हएत तँ हम जा कऽ करब।”

साधनाक उग्र रूप देख मुनेसर चुप रहला। बजला किछु ने मुदा विवादकेँ आगूमे मर्ड़ाइत देखबे केलैन। तत्कालक गुम्मी तँ किछु दिन विवादकेँ रोकलक मुदा रूकि नै सकल।

फगुआक दिन। मुनेसर सेहो सभतूर पत्नी-बेटा सहित एकठाम भेला। ओना बेटा आवासीय स्कूल, पत्नी राँची हाइ स्कूल, अपने

मुनेसर पलामूमे रहैत तँए चिट्ठीए-पतरीसँ भेँट-घाँट होइत। राँचीक होली, आदिवासी इलाका ढोल-ढालक गनगनी इलाकाकेँ गनगनबैए। मलपूआ खेलहा मुनेसरक परिवार, बैसारीक दिन रहबे करै, साधना-मुनेसरक बीच गप-सप्प उठल। दुनू बेटो लगेमे रहैन। गप-सप्प उठल गामक चारि कट्ठा जमीनक हिस्सा..?

साधना बजली-

"जहिना ओ हमरा नैहरक सम्पैतक भोग नइ हुअ देलैन, तहिना हमहूँ नै भोग हुअ देबैन।"

पत्नीक प्रहार सुनि मुनेसर तिलमिला गेला। सचमुच वेचारीक नैहरक गहनो आ बरतनो-जात बोहा गेलइ। ..युधिष्ठिर जकाँ मुनेसर पत्नीक प्रहारो सुनैथ आ मने-मन विचारबो करैथ जे भैयारीमे एहेन नहि हेबा चाही। जेठ भाय पिते तुल्य नहि पितृगुरु तुल्य होइ छैथ। जँ सहोदर भाएमे एहेन होइ तँ राम-लक्ष्मणक सम्बन्ध केना बनत? ई तँ सद्य: रावण-विभीषणक भेल..!

एक तँ फगुआक रमकी तैपर मलपूआक सहयोग रमैक कऽ साधना दोहरबैत बजली-

"जँ हमहूँ बापक बेटी हएब तँ सिखा देबैन।"

दुनू बेटा चुपचाप। पितोक दुर्दशा आ माइक रूप देख अनेरे वौआइत। बड़का बाबू (जुगेसर) हमरा सबहक गरदैन कटलैन आ बाबू किछु किए ने बजै छैथ। ..मुदा मुनेसरक मन जेठ भायक किरदानीपर, पत्नी रणचण्डी भेल छैथ, हमरा रोकने रूकती। परिवारक हिसाबसँ दुनूक (पत्नियो आ भैयो) दूरी अबस्स रहलैन। खान-पान आचार-विचार समाजक रीति-रिवाज, मुदा हम तँ से नै छी। पिता मन पड़लैन। एके बाप-माइक बेटा दुनू भाँइ छी। आइ जँ नै पढ़ल-लिखल रहितैथ तँ बुझितौं जे अज्ञान-सज्ञानक बीचक बात भेल, कोन रूपे

निराकरण हुअए ओ सज्ञानक काज भेल। मुदा जैठाम जहिना शिक्षक अपने छी तहिना भैयो छैथ। वृत्तिए दुनू गोरे एके छी तखन एहेन विचार किए मनमे एलैन..? मुदा जेठ भायकेँ केना कहबैन जे भैया अहाँ बेइमानी करै छी। हुनका बेइमान बनने तँ अपने अनेरे बेइमान कहबए लगब। ओ गाममे रहै छैथ, समाजक बीच रहिते छैथ, दरमाहा बढ़ने सुदियो-सबाइक कारोबार करिते छैथ, मुदा हम तँ से नै छी। एहेन जगहपर की कएल जाए। कोट-कचहरीक आँखि कहियो देखलौं नहि। तहूमे छुटनगर नै छी। नोकरी करै छी, गनल छुट्टी अछि। पावैन-तिहारक छुट्टीमे कोटो-कचहरीमे छुट्टीए रहै छइ। लगमे नोकरी करैत रहितौं तँ दुनू काज मेल-पाँच करि कऽ सम्हारि लैतौं, सेहो नइ अछि। चौबीस घन्टाक दूरी अछि। एक दिनक काजमे तीन दिन लगत। तहूमे झड़े-झमेल छी, केते समए लगत तेकर कोनो ठीक छइ। बेवस्थित जिनगी टुटि जाएत।

मुनेसरक मनमे मोड़ आएल- मात्र चारि कट्ठा ओहन खेत अछि जेकरा अपने हाथे नै करब। सम्पैतकेँ प्रतिष्ठा बनाएब नेनमति हएत। मुदा पत्नी थोड़े मानती। तैबीच फेर साधना टपैक गेलखिन-

“समए बनाउ, दुनू गोरे चलू। मरि जाएब संगे, जीबैत रहब संगे।”

बेवस भऽ मुनेसर गाम अबैक समए बना लेलैन। स्कूलमे छुट्टीक दरखास दऽ दुनू बेकती गाम चलला। सकरीमे मुनेसर पत्नीकेँ कहलखिन-

“हम मधुबनी-बहिन ऐठाम होइत परसू आएब अहाँ आगू बढ़ू।”

सएह भेल। साधना गाम एली आ मुनेसर मधुबनी गेला।

गाम अबिते साधना चौहद्दी बन्हलैन। तीन-तसिया लोकक कमी

नहि। चढ़ा-उतरीक विचार दऽ फील्डपर साधनाकेँ उताइर देलकैन। दोसर दिन भोरे, करीब सात बजे साधना जुगेसरक दरबज्जापर पहुँच गेली।

जुगेसरो दरबज्जेपर रहैथ आ पत्नी-धिया-पुता आँगनमे रहैन। साधनाकेँ देख जुगेसरकेँ भेलैन जे गाम एली तँए भेँट-घाँट करए एली अछि। आँगन जा सभकेँ भेँट करती। चौकीपर बैसल जुगेसर आँखि खसा लेलैन। साधना दरबज्जाक आगूमे अड़ि कऽ ठाढ़ होइत बजली-

“अहींसँ काज अछि?”

चौंकैत जुगेसर बजला-

“की?”

“हमर हिस्सा जे जमीन रखने छी, से बाँटि दिअ।”

जुगेसर बजला-

“कोन जमीन! जइ जमीनमे हिस्सा छेलए से तँ बाँटिए देलौं!”

“जे जमीन कीनने छी, से।”

“ओ तँ राधाक नाओंसँ छै ओइमे अहाँक हिस्सा केना हएत?”

“किनैमे हमर रूपैआ नइ लगल अछि?”

दुआर परहक हल्ला अँगनोमे पहुँचल। अँगनासँ सभ दरबज्जापर पहुँचल। साधनाक प्रश्नक उत्तर सोमनी दिअ लगली-

“अहाँक रूपैआ रहैत तँ अहीं नाओंसँ ने रहितए?”

साधना-

“हम किआँने गेलिऐ जे एहेन गरदैन-कट भैया छैथ जे गरदैन काटि लेता।”

सोमनी-

“अहूँक घरवलासँ बेसी गरदैन कट छैथ?”

“की गरदैन कटने छैन?”

बाता-बातीमे गरमी आबि गेल। चारू गोरे जुगेसर साधनाकेँ मार-मार करैत चारू भागसँ घेर लेलकैन। साधनाक मन मानि गेलैन जे मारि खेबे करब। तइसँ नीक जे पाछू हटि जाइ। पाछू हटैत बजली-

“अखन हम जाइ छी, बारह बजे आबि कऽ फरिछेनहि जाएब।”

जहिना साधना विदा भेली तहिना जुगेसरो सभतूर ठमैक गेला। घुरती बरियाती जकाँ सधनो बजैत आ जुगेसरो सभ परिवार।

दियादी परिवारक जे पुरुष पात्र रहैथ ओ तँ मुँह दाबि लेलैन मुदा स्त्रीगण सभकेँ जेना अगहन आबि गेलैन तहिना गाम-गामक खिस्सा–पिहानी सधनोकेँ सुनबए लगली आ सोमनियोकेँ।

सभ परानी जुगेसरकेँ बुझि पड़लैन जे दरबज्जापर आबि साधना बेइज्जत केलक! मुदा मनसँ हेरा गेलैन जे जइ साधनाक नैहरक सभ किछु- गहना-बरतन आदि बीकि गेल ओ केना सुपते मने मानि जाएत! अपनो दुनू परानी जुगेसरकेँ सासुरक अनुभव रहबे करैन जे उचित ससुरक हिस्सा चलि गेलैन। कोट-कचहरीमे खर्चो भेल आ भेल किछु नहि, तहिना हेतइ। रधो बुफगर छेलै। पिताकेँ विचार देलक जे जानेसँ मारि देबइ। जिनगी भरि शिक्षक रहितो जुगेसर बेटाक विचारसँ राजी भऽ गेला।

बारह बजे साधना उग्र रूपमे पहुँचली। पहिनेसँ दुनू बापूतक विचार रहबे करैन, अबिते साधनाकेँ पकैड़ लेलैन। हत्याक नीक परियास केलैन मुदा भेल नहि।

हल्ला करैत साधना थाना जा जुगेसरकेँ एरेष्ट करौलैन। मुदा

विवादक किछु ने भेल। मुनेसरकेँ मधुबनीए-मे जानकारी भेलैन जे गाममे जबरदस घटना घटि गेल। एहेन परिस्थितिमे सोझहे गाम जाएब नीक नइ हएत। मुदा नहियोँ जाएब तँ उचित नहियेँ हएत।

..असमनजसमे मुनेसर पड़ि गेला।

गाममे नव घटना भेल। ओना गामक लोक कोट-कचहरी आ जहलक अभ्यस्त जकाँ भऽ गेल छैथ तँए बेसी हल-चल नहियेँ जकाँ भेल। मुदा स्त्रीगणक संग एहेन घटना भेल तँ ई चर्चक विषय बनबे कएल।

साधनाक एक अंगीत अन्धरा ब्लौकमे अफसर। मुनेसर मधुबनीसँ गाम नै आबि अन्धरा पहुँचला। दुनू गोरे विचार केलैन जे गाम जाएब ओते नीक नै हएत जेते साधनाकेँ एतै बजबा ली। आ ऐठामसँ सोझहे राँची चलि जाएब। सएह भेल। चारिम दिन मुनेसर दुनू परानी राँची रवाना भऽ गेला।

दुनू भाँइ- जुगेसर-मुनेसरक बीच चारि कट्ठा जमीनक झंझट बढ़ि कऽ झमटगर भऽ गेल। एक संग मुनेसरक मन चारूकातक ओझरीक बीच एते ओझरा गेलैन जे मनपर भार पड़ि गेलैन। देहमे एकाएकी रोग सबहक आगमन हुअ लगलैन। ब्लड-प्रेसर डायबीटीज एते जोर मारि देलकैन जे इलाजमे जाए पड़लैन। चारूकातक भार ई पड़लैन जे एक दिस जेठका बेटा-रघुनाथकेँ बैंकमे नोकरी आ स्कूलकेँ सरकारी भेने जहिना खुशी भेलैन तहिना पत्नियो आ भाइयोक मतभेद मनकेँ मरोड़ि देलकैन। खुल्लम-खुल्ला पत्नीक विरोध सोझहामे आबए लगलैन। चारि गोरेक परिवार (मुनेसर-साधना आ दुनू बेटा) मे दू पार्टी (विचारधाराक पार्टी) बनि गेलैन। रघुनाथ मुनेसरक बेटे नहि, पढ़ाएल विद्यार्थियो। तैपर बैंकक नोकरी भेने संस्कारोमे बदलाउ चलिये एलइ। संस्कारमे बदलाउ ई जे सामंती संस्कारमे जमीन-जयदादकेँ इज्जत-

प्रतिष्ठा बुझि लोक जान गमबैले तैयार भऽ जाइए, मुदा पूजीवादी सोच बनने जमीन-जयदादकेँ पूजी बुझल जाइए। जखन कि प्रतिष्ठा जिनगीक कर्तव्यसँ जुड़ल अछि जइमे माने जेकरा पूर्ति करैमे धनक सहयोग होइ छइ। तँए रघुनाथ चारि कट्ठाकेँ मात्र चालीस हजारक पूजी बुझैत, जे दुनू बापूतक पनरहो दिनक कमाइ नइ भेल। तइले भावो भऽ माए बड़काबाबूकेँ मुँहपर गरियौलक, ई नीक नै केलक। अपनो बाप-दादाकेँ नजैरमे रखक चाही छेलइ, से नइ रखलक! एहेन पढ़ल-लिखल परिवार तखन एहेन काज। ई नीक नै केलक। तैसंग अपन पिताक परिवार (अपन खनदानक) सेहो जनैत। पिताजी दुनू भाँइ शिक्षक छैथ, तइसँ पहिने (पैछला पीढ़ीमे) सेहो दू भाँइ शिक्षके छला। एक गोरे वेदक शिक्षक संस्कृत महाविद्यालयमे दोसर मिड्ल स्कूलमे। खनदानी पढ़ल-लिखल दुनू परिवार (नैहर-सासुर) तैबीच औरत भऽ कऽ एहेन कदम नै उठेबाक चाही। मरदा-मरदी हम सभ बुझितौं। ओहुना तँ मिथिलामे जेठ भायकेँ जेठौंस सम्पैत देबाक चलैनो तँ अछिए। चारि कट्ठा जमीन भेबे केते कएल! हुनके भातीज भऽ कऽ हम जेते महिना कमाइ छी तेतबो हुनकर कमाइ नै छैन। बेटो सहजे नेते बनि कोट-कचहरी टहैल-टहैल फुकिते छैन, ईहो तँ उचित नहि जे दुनू भाँइमे एक भाँइ तालेबर बनि जाए आ दोसर भाँइ दरिद्र! तखन परिवारक गाड़ी कोन मुहेँ चलत- दरिद्रा मुहेँ आकि तालेबरी मुहेँ? बाल मन रघुनाथक (ओहन मन जेहेन पोखैरक वा पहाड़ी धारक पानि स्वच्छ होइत) बालु छानल पानि जकाँ पिता दिस बेसी झूकि गेल। मुनेसरकेँ परिवारिक बौधिक संस्कार रहने चारि कट्ठा जमीन-ले भैयारीक बीच मलिनता आबए नै दइक विचार। जइक चलैत पत्नीसँ मतभेद चलिते रहैन। रघुनाथ मुनेसरक पीठपोहू भेल। दोसरो बेटाकेँ नोकरी बैंकेमे रहैन। तीनू बापूत एक विचारक तँए मिलान बेसी। मुदा रहैक दूरियो तँ किनकोसँ किनको कम नहि। साए किलो मीटरपर दुनू

बेटो आ पत्नियो अपन-अपन डेरामे रहैत। पुश्तैनी घराड़ीक जे सुगन्ध होइत से दुनू भाँइमे केकरो नहि। जेकरा दू-दूटा घराड़ीपर घर रहतै ओ भाड़ाक घरमे जिनगी बितौत ओकरा-ले घराड़ीक कोन मोल। ओना मुनेसरो नोकरीसँ पहिने धरि गामेक घर-घराड़ीमे रहला तँए बेसी झुकाउ, राँचीमे जे घरो बनेलैन रहबे केते दिन करै छैथ, तँए गामक झुकाउ राँचीसँ बेसी रहैन।

जहिना नादिमे बान्हल गाए दोसर गाएकेँ थुथुनबैत-थुथुनबैत ठोकरबौ लगैए तहिना परिवारमे साधनाकेँ भेल। कोनो परिवारक घटनाक बात परिवारक गार्जन अपन बाले-बच्चा लग ने राखत, एक तँ छल-प्रपंच विहीन बोध तैपर एके घटनामे माता-पिताक दू विचार!

..साधनाक मन मानि गेलैन जे जहिना पति तहिना बेटो विचारसँ बाहर अछि। ओना बच्चेसँ राँचीमे रहने साधनाक आकर्षण राँचीसँ बेसी रहैन। तहूमे पतिक कमाइक गार्जनी हाथमे, हाथमे ई जे अपने साधना नव स्कूलक नोकरी करै छेली, जइमे अखन दरमाहा नहि रहैन, ऐगला आशामे नोकरी करैथ। जेहने दरमाहा तेहने ने काजो हएत, तँए काजक कोनो भारे नहि। राँचीमे जमीन किनैक जखन समए आएल छल तखन मुनेसरक खाली रूपैआक सहयोग रहैन, बाँकी जमीनक दाम-दीगरसँ लऽ कऽ जगह पसिन करब इत्यादि सभ काज साधनाक हाथे भेल। जमीन भाँजपर एला पछाइत नमहर प्रश्न उठल छल। नमहर ई जे एकबेर जे भऽ जाइ छै से भऽ जाइ छइ। नै जँ आगू जमीन लिऔ चाहब तँ एक तँ महगो हएत आ दोसर जमीनो हटि-हटि कऽ हएत, एकठाम नइ हएत। तइसँ नीक जे घर किछु दिनक पछाइतो बनाएब पहिने जमीने नीक जकाँ लऽ ली...। लभगर विचार मानैमे देरी किए लगतैन। दस कट्ठा जमीन

कीनि लेलैन।

जमीन किनला पछाइत दस कट्ठामे घर बनाएब धिया-पुताक खेल नहि। पत्नीक दबाबमे मुनेसर दिन-राति मेहनत करए लगला। ओना मुनेसरक चरित्रक गुण रहलैन जे ओहन खगल समैमे बोर्ड परीछाक काँपी जाँचक चार्जमे रहला। पाइक मोटरीक लोभ देल जानि मुदा कुल-खनदानक टेक पकैड़ अपनाकेँ थीर रखला। दिन-रातिक मेहनत मुनेसरकेँ रोगक घर बना देलकैन। ओना साधना नीके स्थितिमे रहली। दुनू बेटाक बैंकक आमदनी तँ हाथ अबिते छेलैन।

एक दिन एकाएक मुनेसरकेँ पेटमे दरद उठलैन। डाक्टर ओइठाम पता चललैन जे पैन्क्रियाजक ऑपरेशन करबए पड़त। तैसंग महिनो बेड-रेष्ट लिअ पड़त। मुदा दरदो तेहेन जे ऑपरेशन नइ करौने जीब नहि सकै छी। खाएर हैदरावादमे ऑपरेशन भेलैन। खर्च नीक भेने प्रगतिमे किछु बाधा तँ पड़बे केलैन। तैसंग आ उमेर बेसी भऽ गेलैन जइसँ रंग-रंगक रोग शरीरकेँ पकैड़िए नेने छैन।

दुनू भाँइ-जुगेसर-मुनेसरक विवाद समाजक मंचपर आएल। जुगेसरक जे बेटा मारिमे केस केने ओ घटना-कर्ताक संग समाजोक लोककेँ फँसा देलैन। केसकेँ ओइ गतिए बढ़ौलैन जे घटनाक परात भने चारि थाना गाममे आबि गेल। हरबिर्ड़ो गाममे भऽ गेल। दौड़ा-दौड़ी खेहारा-खेहारी जमि कऽ भेल। दू गोरे जहलो गेल। लगले बाँकी मुद्दालहक जब्ती-कुर्की भऽ गेल। जेकर प्रतिक्रिया समाजमे जमि कऽ भेल। मुँहपर जुगेसरकेँ गारि पड़ए लगलैन। मुँह गोड़ैत-गोड़ैत एते गोड़ा गेलैन जे मन मानि गेलैन। जहिना लोक कहै छै अपना गामक गाछी डरौन, आन गामक पोखैर डरौन तहिना तँ हमरोले गाम डरौन भऽ गेल! दिनक के कहए जे रातियो-बिराति निधोख भऽ कऽ गाम अबै छेलौं, मुदा से आब हएत? जेना-जेना जुगेसरक मनमे डर मड़ाइत गेलैन तेना-तेना परिवार प्रभावित होइत गेलैन। तैसंग ईहो भेलैन जे

पहिने जे विवादित जमीन चारि गोरे मिलि कीनने रहैथ ओइ जमीनकेँ दरखल करैमे मारि फँसि गेल। बाँकी गोरे मारियो खेलैन, मारबो केलैन आ केसोमे फँसला। तइमे जुगेसर बँचि गेला। स्कूलेक समैमे मारि भेल छल। तइमे सेहो फुट-फुटौवैल भऽ गेलैन। ओना जमीन कब्जा भाइए गेलैन। ..फुट-फुटौवैलक कारण ई भेल जे जिनका सभपर केस भेल छल ओ केसक हिस्सा मंगलकैन, जे नहि देने फुटौवैल भेल।

मुनेसरक ऑपरेशन तँ सफल भेलैन, मुदा छह मास अराम करैले डाक्टर सलाह देलकैन। जीवन-मुत्युक बीच पड़ल मुनेसरक मन छँहोछित भऽ गेलैन। एक अपन कमाइक संग दुनू बेटाक कमाइ देख ऐगला जिनगी हरिअर बुझि पड़ैन तँ दोसर दिस अपन स्थिति देख मन कहैन- 'अपन सेवा केना हएत?' पत्नियो पत्नीए छैथ। अकास उड़ैत चिड़ै जकाँ! कमा कऽ हाथमे दियौन आ हुकुम पुरबैत रहियौन तँ बड़बढ़ियाँ नहि तँ अपनाकेँ कपरजरूआक पत्नी कहि डाकैन दैत रहती! ..एक मनुख होइक नाते लाजिमी विचार भेल? ई तँ अपन शक्तिकेँ क्षीण बनाएब भेल। सावित्री-सत्यवान सोझहेमे छैथ। खाएर.., अपन शेष नोकरी आ पेंशनक आशा पत्नीकेँ देखैथ, तँ बेटाकेँ कमासुत बुझि संतोष होनि, मुदा बड़की बहिनक की हएत? वेचारीकेँ अछैते भाइये ने भाए रहलैन आ ने अछैते पतिये ने पति रहलैन! घरपर ओते सम्पैत नहि, तहूमे जँ बेचैयोक अधिकार रहितैन तँ किछु बेसियो दिनक आशा होइतैन सेहो नहि। समए रौदियाहे अछि। अपने ओछाइन धेने छी, पाइक कोनो आमदनी नहि। बेटासँ मांगि केना सकै छी, ओकरा की बहिनक खर्च नइ बुझल छै, मुदा तैयो जँ मंगबै आ ओ माएकेँ कहत तँ जेहो किछु दिन जीबैक आशा अछि सेहो चलि जाएत। आइने-अवगरानिसँ लोक जहर-माहूर खाइए।

अपन विचारकेँ अपने मनमे दाबि मुनेसर बहिनकेँ बिसरए

लगला।

महिना-दू महिना तँ सुलोचना आशा धेने रहली मुदा पेटक आगि तँ ओहन आगि होइ छै जेकरा मिझबैले लोक आचार-विचार-कुल-खनदान सभ किछु बिसैर जाइए। सुलोचना ओहन परिवारमे जन्म नेने छैथ जइ परिवारक औरतकेँ भूमि-छेदनसँ बर्जित कएल गेल, तँए ओ अपन श्रम बेच केना सकै छैथ। अपन ओहन वाड़ी-झाड़ी खेत नहि जे अपनो-जोकर सागो उपजा सकितैथ। बाधक खेत। ..बेवस सुलोचना गामक टुटली मरैआमे बैस गाबए लगली-

"हे भोलादानी कहिया हरब दुख मोर..!"

चारू दिसक अपन बन्न रस्ता देख सुलोचना बहिन आगू तकली तँ एकटा घर लगमे बुझि पड़लैन। ओ घर अपन दीदी-पीसाक। पीसाक देहान्त भऽ गेल छेलैन मुदा दीदी ओछाइन पकड़ैपर छेलखिन। गामसँ सटले, करीब कोस भरिपर दीदीक घर। ..बेरू पहरमे सुलोचना बहिन दीदी ऐठामक रस्ता पकड़लैन। सुलोचना बहिनकेँ देख दीदीक परिवारे नहि, टोल-पड़ोसक स्त्रीगण सभ सेहो लगमे एलखिन। चुपचाप कान लग कनियेँ जोरसँ सुलोचना दीदीकेँ कहलखिन-

"दीदी, भूख लगल अछि।"

सुलोचना बहिनक बात सुनि दीदी बुझि गेलखिन जे रस्तेक भूखल नहि भुखले घरसँ आएल अछि।

..सुलोचनाक सुन्दर चेहरा टुटल फूल जकाँ मलिन भेल देख दीदी पुतोहुकेँ कहलखिन-

"कनियाँ, सुलोचना रस्ताक भूखल हएत, पहिने किछु पानि पीबैले दियौ।"

ओहुना गाम-समाजक चलैन अछि जे कियो दरबज्जापर आएल अभ्यागतकेँ पहिने पानियेँ आगूमे दैत अछि। जहिना अपन तहिना मात्रिकक संग मौसी आ दीदीक घर लोक बुझिते नइ अछि ऐछो। जैठाम महिनो दिन रहने कियो नहि चर्च करैत जे बहुत दिन भऽ गेल। तहूमे सुलोचना बहिनकेँ बुढ़ दीदी हाथ लगलैन, सुलोचनेटाकेँ किए दिदियोकेँ तँ एकटा टहलनीक जरूरत भाइए गेल छैन। तैसंग परिवारोक भार कम भेने घरोक लोक खुशीए छैथ। सुभ्यस्त परिवार ऐछे खेबा-पीबाक समस्ये नहि। दस गोरेक खोराकीसँ बेसी मूसे खाइ छैन।

सुलोचनाक पिसियौत भाए, हाइ स्कूलमे शिक्षक छैथ। प्रतिष्ठित शिक्षक। जिनगीमे डेरापर कहियो कोनो विद्यार्थीकेँ ट्यूशनक फीस नइ लेलखिन। लगमे सुलोचना बहिनकेँ रहने नजैर पड़लैन। नैहर परिवारक सभ बात सुलोचना-मुहेँ सुनलैन। सासुरक बात किछु बुझलो रहैन। मनमे छगुन्ता भेलैन जे अछैते पतिये वेचारी वैधव्य जिनगी जीब रहली अछि! प्रश्नक जड़ि पकैड़ काज बढ़ौलैन। सुलोचनाक पति दोसर बिआह कऽ नेने रहैथ जइमे चारिटा सन्तानो भऽ गेल रहैन। मुदा सभ किछु होइतो समस्याक समाधान भऽ सकै छइ। मास्सैब[5] गामक दियाद-वादक भाँज सेहो लगौलैन। भाँज लगबैक कारण रहैन जे जँ सासुरसँ समझौता नै हएत तखन तँ दोसर विकल्पक जरूरत अछिए। ऐठाम (अपना ऐठाम) छह मास बरख दिन रहत सएह ने, जिनगी भरि तँ नै रखल जा सकैए। रंग-बिरंगक गप, गप-सप्प क्रममे उठबे करत। दियादवादक भाँज पौलैन जे स्त्रीगण सभ तेहेन छैथ जे सुलोचना बहिनक गोड़ा नै बैसए देती। अपन जे छैन तहीपर रहि सकै छैथ।

---

[5] पिसियौत भाए

मास्सैबक परियाससँ सुलोचना बहिन सासुर गेली। दोहरा कऽ साठि बर्खक उमेरक पछाइत जहिना जिनगी हारल-थाकल तहिना अपन जिनगी पाँच कौर अन्न आ पाँच हाथ वस्त्रपर अँटका लेलैन। दू बरख सासुरमे रहली। जहिना उमेर बढ़ने विचारोमे बदलाउ अबै छै, से सुलोचनो बहिनकेँ एलैन। मुदा सासुरक जे सिनेह स्त्रीगणकेँ अपन बाल-बच्चाक संग, अपन लगौल वाड़ी-फुलवाड़ी आ घर-दुआर बनौला पछाइत होइ छै, से नै भेटलैन। केतबो सतौत बेटा-बेटी किए ने रहैन मुदा अपना जकाँ तँ नहियेँ मानैत रहैन। तहूमे चेष्टगर सभ भऽ गेल, जे सत्-माए बुझैत। तहिना पतियोक संग रहैन। खाएर जे रहैन.., मुदा दस बीघाक किसान परिवार भेटने सुलोचना बहिन खुशी तँ भेबे केली। परिवारोक सभ बुझैत जे कियो आन थोड़े एली।

सुलोचना बहिनक मन मानि गेलैन जे आब जिनगी असानीसँ कटि सकैए। मरैकाल जे तिरोटो हएत तँ काटि लेब। काटि की लेब जे ओ तँ एहेन कष्टे होइ छै जे लोक मरिये जाइए। मुदा से अखन बहुत दूर अछि। अखन तँ तेहेन थेहगर छी जे पचीस-तीस बरख जीबे करब। एक दिनक जिनगी तँ लोककेँ पहाड़ होइ छइ...। सासुर एला पछाइत सुलोचना बहिनकेँ सभसँ खुशी ई भेलैन जे अछैत पति जे जिनगी बनि गेल छल ओइमे एकाएक बदलाउ आएल। ओना वैधव्यक सीमा नै अछि। मुदा थोड़-दिन आकि बेसी-दिन बारह-सँ-चौदहअना महिलाकेँ ऐ जिनगीसँ गुजरए पड़ै छैन। मुदा सबहक जिनगी की एक समान थोड़े होइ छइ। समाजो तँ समाजे छी, एक दिस वैधव्यक मुँह देख केतौ जाएबकेँ अशुभ बुझैए तँ केतौ शुभ बुझैए। विधवाक जिनगियो तँ तहिना होइ छइ।

पति विहीन पत्नीक, पुरुष बिनु नारीक, दू रूप समाजक बीच अछि। एक पतिक मृत्यु भेला पछाइत आ दोसर जीवितोमे छोड़ला

पछाइत। ओना उमेरो आ विकासोक (परिवर्तनोक) हिसाबसँ वैधव्य जीवन अनेको रंगक अछि, मुदा से नहि, मोटा-मोटी जिक्र अछि।

आजुक नजरिये बीस बरख वा ओइसँ ऊपरक हिसाबमे बिआह हुअ लगल अछि। ओना ई विषमता तँ अखनो ऐछे जे सभ परिवारक कन्यादानक एके उम्र नइ अछि। पढ़ल-लिखल अगुआएल परिवारमे जैठाम डाक्टर, इंजीनियर वा अन्य एहेन डिग्री प्राप्त केला पछाइत बिआह होइए तँ ओतै नोकरीकेँ अधार बना नोकरीक पछाइत बिआह सेहो होइए जे समैनुकूल सेहो अछि। बिआहक साल भरिक एहेन प्रक्रिया बनि गेल अछि जे बेर-बेर आवाजाही आ बेर-बेर बिआहक प्रक्रियाक काज होइते रहैए। मधुश्रावनी, कोजगरा इत्यादि नजैरपर अछिए।

अध्ययनक बीच बेवधान उपस्थिति होइते अछि। जइसँ गनल कुटिया नापल झोड़ जकाँ कोर्सक (पढ़ाइक सिलेबस) तैयारीमे कमी अबिते अछि। तेतबे नहि, ई जिनगीक ओहन मोड़ छी जैठाम आबि वैचारिक रूप वौद्धिक रूपमे बदलए लगैत। रंग-रंगक किस्सा-पिहानीक संग जिनगीक ओहन मनोहर रूप दृष्टिगोचर होइत अछि, जइसँ किछु-ने-किछु धक्का लगिते छइ। एक दिस जिनगीक ओहन मोड़पर जैठाम पहिल सीढ़ीक टपान अछि, जे ऐगला पिछड़ाह सीढ़ीमे ठाढ़े-ठाढ़ टपि जाएत आकि पिछैड़-पिछैड़ खसैत-पड़ैत टपत आकि पिछैड़ कऽ तेना खसत जे उठिए ने हेतइ।

दोसर तरहक परिवारमे जइमे हायर एजुकेशन नै छै बेटा-बेटीक बिआहकेँ परिवारिक संस्कार मानि निमाहब अनिवार्यक संग समैयोपर आ समैसँ पहिनौं करए चाहैए। कारणो छै जे अबैत परम्परामे बिआह चाहे जइ उमेरमे होइ (बच्चासँ सियान धरि) मुदा सन्तान समैएपर होइए। समैपर आकि समैसँ पहिने करब सकारात्मक विचार भेल।

एहेन परिवार आकि ऐसँ पछुआएल परिवारमे बाल-बिआहसँ लऽ कऽ पनरह-सोलह बरख धरि बेटीक बिआह अछिए। बच्चामे बिआह नीक नहियेँ अछि। मुदा नीक किए ने अछि? ई बात सत् जे पानिमे कोनो चीजक (अन्न आकि तरकारी) बीआ देब पानिमे फेकब भेल। मुदा की पानिमे उपजैबला (मखान, सिंगहार) कें फेकब कहबै?

बेटा-बेटीक बिआह माता-पिताक अनिवार्य काजक रूपमे समाजमे अखनो ठाढ़ अछि, जे उचितो अछि। गरीबीक चलैत जइ परिवारक जिनगीक कोनो भरोस नै छइ। राजरोग[6] की गरीब घरमे नइ होइ छै, जँ से हेतै तँ इलाज करा पौत? तेतबे किए, किसान प्रधान गाममे, की गामेक किसानक सभटा खेत गामक छैन आकि आनो गामक किसानक छैन जे अधिक खेतबला किसान सभ छैथ। खेतीक उचित खर्च केलो पछाइत उपजौनिहारक (गौंआँक) हिस्सा केते होइ छैन? जइमे चाहे माल-जाल पोसब हुअए आकि अन्नक खेती, उपजाक अदहासँ बेसी लागत लगै छै तैठाम अदहा आकि अदहोसँ कम उपजौनिहारकें भेटने की लाभ हेतैन?

एहेन जइ समाजक स्थिति अछि तइ समाजमे जिनगीक भरोस मात्र सीताराम करब छोड़ि आरो की हएत! ..एहेन परिस्थितिमे जँ माए-बाप अपन पान सालक बेटा-बेटीक भारकें उताइर लइ छैथ तँ की अधला भेल?

ओना विधवा विधानकें समाजिक विधान नै मानल जा सकैए मुदा समाजक बीच बेवहारमे नै अछि एकरो नकारल नै जा सकैए। किछु खास परिवारक बीचक ओहन समस्या ऐछे जेकरा एक्कैसमी सदीमे अंगीकार करब नामर्दगीक अतिरिक्त आरो किछु ने छी, खाएर जे छी से छी मुदा समाजिक समस्या तँ छीहे। बारह-चौदह बर्खक

---

[6] भारी बेमारी

कन्या जँ वैधव्य होइ छैथ तँ हुनक जिनगी केहेन हौउ ई तँ प्रश्न अछिए। ओ उमेर ओहन उमेर होइ छै जेकरा बसन्ती हवासँ भेँट भेल नै रहै छइ। जे विधवा भेला पछाइत अबै छइ। ओ ओहन उमेर होइ छै, जेकरा दिशा देब असाध अछि। एक दिस परिवार-समाजसँ निकालि देल जाइ छै तँ दोसर दिस जिनगीक बसन्तक लहकी लहकै छै, एहेन स्थितिमे की हएत? जइ संगी-बहिनपाक संग अखन धरि हँसी-चौल होइ छल ओहो या तँ विधवाक सोझहामे बाजब बन्न कऽ दैत अछि वा ओइठामसँ हटा देल जाइत अछि। ..की पति हेरेने (वैवाहिक बन्धनक पति) परिवारो हेरा जाइ? समाजक संग जिनगियो हेरा जाइ? मुदा हेराइ छइ!

ओइ दूधमुँह बच्चाक कोन दोख भेल जेकरा लोक मुँहपर कहतै जे 'तोरे मुँह देख जुआ खेलए गेलौं तँ घरो-घराड़ी हारि गेलौं!'

जाधैर समाज समायानुकूल समाजिक बन्धन बना नै चलत, ताधैर समाजक कोनो अस्तित्व नै रहत। गाछसँ पाकल कटहर खसि जहिना धरतीपर छिड़िया जाइत, आँठी उड़ि केतौ, कोआ उड़ि केतौ, कमरी केतौ आ नेरहा केतौ चलि जाइए, तहिना समाजोक होइ छइ। जखन एहेन स्थिति बनै छै तखने रंग-बिरंगक व्यभिचार समाजमे पनपै छइ...। समाज तँ समाजे छी, एहनो विधवा तँ छैथे जे दू-चारिगो सन्तान भेला पछाइतो सासु-ससुरक संग पतिसँ सेहो बिछुड़ै छैथ! की ओ अपनाकेँ आन परिवारक पुरुखसँ कम मानै छैथ, किए मानती। अपन परिवारक खेती-वाड़ीसँ लऽ कऽ बाल-बच्चाकेँ पढ़ौनाइ-लिखौनाइ सभ करै छैथ तखन ओ पुरुखसँ कम केना भेली। जँ पुरुखसँ कम नै भेली तँ कियो मुँहपर कहि दनु जे 'फल्लींक मुँह देख यात्रा केलौं, यत्रे भंगैठ गेल।' जिनगी, जिनगी भरै छइ।

तँए कि सभ अधले तँ नहियेँ अछि, ओहनो विधवा तँ छैथे जे

बेटाकेँ मनोनुकूल सेवा केलैन। नाति-नातिन, पोता-पोतीसँ घर-अँगना अवाद छैन। जँ कियो घरसँ बहराएत आ दादीकेँ गोड़ लगि असिरवाद नै लेत तँ की माए-बाप फज्झैत नै करथिन, जे घरक गोसाँइकेँ लोक पहिने गोड़ लागि निकलैए!

जहिना भिन्न-भिन्न रूपक बीच विधवा जीब रहली अछि तहिना ओहनो तँ छैथे जे पतिकेँ बौड़ गेने वा कोनो तेहेन रोगसँ गरसित पतिक बीच सेहो छैथ। जिनकर पति बौड़ गेल छैन ओ विधवा ताधैर नै मानल जाइ छैथ जाधैर निसचित भाँज नै लागि जाइत। ओना, जँ भाँज नै लगि सकत तँ बारह बर्खक पछाइत मृत्यु मानल जाएत...।

प्रश्न अछि पुरुख विहीन नारीकेँ जीबैक उपय। एक मनुख होइक नाते समाज हुनका कोन नजरिये देख रहला अछि। समाजो तँ समाजे छी, मुँह केमहर छै आ नाङैर केमहर तेकर कोनो भाँजे ने अछि। ताड़ी-दारू पीनिहार पीब कऽ मस्तीमे दोसराक माए-बहिनकेँ गारिये-मारिटा नहि, इज्जत-आबरू सेहो लूटैए मुदा अपन माए-बहिनक बीच आदर्श बनि परिवारमे रहैए। एहेन जे सोचक रूप बनि गेल अछि एकरा केना मेटौल जाएत, ई मूल बात भेल।

मुदा एहेन समस्याक सोर देख, बाजब वा मेटाएब धिया-पुताक खेल कहाँ छी। के रोगी, के भोगी, के जोगी से चिन्हब कठिन अछि। कठिने नै अछि जएह रोगी सएह जोगी बनि निश्चिर बनि भरैम रहल अछि। सुलोचना बहिन, अछैते पतिये विधवा नै रहितो विधवाक जिनगी जीब रहली अछि। बारह-तेरह बर्खक अवस्थामे बिआह भेलैन उन्नैस-बीस बर्खक अवस्थामे सासुरसँ भगा देल गेली। ओना समाजमे विकल्प रहितो सबहक लेल से नै अछि। समाजक बहुलांशक बीच विकल्प खुजल अछि जे दोसर बिआह करैए। मुदा सुलोचना बहिन ओहन परिवारमे जन्म नेने छैथ जइ परिवारमे पुरुख-ले तँ कोनो बान्ह

नै छै मुदा नारीक लेल छइ। सासुरसँ सन्तान नै हेबाक अबलट जोड़ि भगा तँ देने छैन मुदा वैवाहक सम्बन्ध भंग करैक जवाब तँ नै देने छैन। जवाबो तँ ओतए ने देल जा सकैए जैठाम विकल्प होइ। जैठाम विकल्प नै छै तैठाम जवाबो देनाइ असान नहियेँ अछि।

लगभग बीस-बाइस बर्खसँ साठि-बासैठ बर्ख धरि सुलोचना बहिन अछैते सासुरे नैहरमे रहली। मुदा नैहर-सासुरक बीच सम्बन्धोक तँ दोहरी रूप अछि। जैठाम सासुरमे दिअर-भैजाइ, सासु-ससुर वा आन-आन सम्बन्ध अछि तैठाम नैहरमे भाए-बहिनक, माए-बापक सम्बन्ध अछि। जइक चलैत सुलोचना समाजक बहीने बनल रहली।

आने मिथिलानी जकाँ सुलोचनो बहिनक अपन मन मानि गेल छेलैन जे हमरा सन्तान नै हएत। ओना सन्तान हएब नै हएब जानब थोड़े कठिन ऐछे जे सुलोचना बहिन नै बुझि पेली।

तैसंग ईहो भेलैन जे जखन स्वामी दोसर बिआह कऽ लेलैन तँ सौतीन तरक बाससँ नीक नैहरेक बास। समाजमे ओहन दीक्षा बँटनिहारक कमी नहियेँ अछि जे अबिसबासू जिनगीकेँ बिसबासू बना साठि बर्खक उमेरमे पाँचम बिआहक दीक्षा दैत दछिना पाबि एक रंगीन दुनियाँ ठाढ़ कऽ दैत अछि।

नैहरक बास तँ सुलोचना बहिन मनमे अरोपि लेली मुदा जीबैक जोगार नै कऽ पौली। श्रमक सहारासँ जँ जिनगी ठाढ़ करितैथ तँ दोसर जिनगी भेट जैतैन से नै ताकि पौली। नै तकैक कारण परिवारक बेवहार रहैन। परिवारक एहेन बेवहार जइमे घरक अतिरिक्त उद्यम करैक अधिकार नहि। ओ अधिकार सिरिफ पुरुखकेँ छैन। ओना परिवारोक दोख मानल जा सकैए। जे परिवार सज्ञानी रहल ओइ परिवारमे एहेन-एहेन समस्या-ले कोनो विचार नै भेल, तँए एकरा दोख कहले जाएत। अनेको मिथिलानी मिथिलाक धरतीपर जन्म नेने छैथ

जे अविवाहित वा पति विहीन रहि शिखर छुबि बैसल छैथ।

देखते-देखते सुलोचना बहिन साठि-पैंसैठ बरख पार कऽ गेली। नमहर कद, गोर वर्ण, गोल मुँह सुलोचना बहिनक। मुदा नैहरमे रहि परिवारेक नहि, समाजक बहिन बनि गेली। केकरो बेटा-बेटीक बिआह होइ, सुलोचना बहिन पाँच दिन पहिनहि जा अदौरी खोंटबे करै छैथ, भोज-भातक तरकारी बनेबे (कटबे) करै छैथ। बर-बरी छनबे करै छैथ। गामक देव स्थानमे मुड़नक गीत, बिआहक गीत इत्यादि-इत्यादि गेबे करै छैथ।

विद्यालयसँ जुगेसर सेवा-निवृत्ति भऽ गेला। ओना सरकारी विद्यालय भेने जुगेसरक अन्तिम दस बरख नीक बनलैन। सरकारी वेतनक संग आरो-आरो सुविधाक आशा तँ बनबे केलैन। ओना सेवा-निवृत्तिसँ पहिने पुरना घराड़ी (पिताक देल) छोड़ि दोसर ठाम घराड़ी कीनि पजेबाक नीक घर बना नेने छैथ। पाँचटा सन्तान छैन, दू बेटा आ तीन बेटी। विद्यालयमे नीक वेतन भेटने बेटियोक बिआह नीके घरमे केने छैथ। मुदा शिक्षाक जे दुरगुन छै ओइसँ परिवार प्रभावित भाइए गेल छैन। दुरगुन ई जे बच्चेसँ लोक जिनगी-ले नहि, नोकरी-ले पढ़ैए। जखने प्राइमरी शिक्षासँ आगू विद्यार्थी बढ़ैत अछि तखनेसँ ओकरा मनमे नीक-नोकरी नाचए लगै छइ। नीक मेहनत करब नीक रिजल्ट हएत। नीक रिजल्ट हएत नीक नोकरी भेटत!

अभिभावकोक धारणा सएह बनि गेल अछि। उर्वर भूमि मिथिलाक ऐछे, जइसँ वौधिक रूपमे सेहो उर्वर अछिए। नीक शिक्षा-ले नीक जगह चाही से तँ अछि नहि। तखन? तखन यएह ने हएत जे राज्यसँ आन-राज्य आ नगरसँ महानगर होइत आन-आन देशक रस्ता पकड़ू।

एहने परिवार जुगेसरोक बनि गेलैन। हाइ स्कूल पार केला

पछाइत दुनू बेटा गाम छोड़ि परदेशक बाट पकैड़ लेलकैन। परदेशोक आब पहिलुका रूप नहियेँ रहल जे देहा-देही कियो नोकरी करै छला आ परिवारकेँ गाममे रखै छला, जइसँ समाजिक सम्बन्धमे कोनो बेवधान नै छल। मुदा आजुक परिवेशमे घरसँ निकैलते, अपन पत्नी-बच्चा सहितकेँ अगुआ चलि जाइ छैथ। भाड़ा-भुड़ीक घर (एक तँ ओहुना कम कमेनिहार-ले जहिना भोजनक समस्या छै तहिना रहैयोक) एकटा कोठरीक जिनगी केहेन हएत? भानससँ लऽ कऽ सूतब धरि।

दुनू बेटाकेँ परदेश गेने, जुगेसरो आने-आन जकाँ बुड़हारीमे दुनू बेकती गाम धेने छैथ। जइ अवस्थामे दोसराक सेवाक जरूरत होइ छै तइमे सेवा केनिहारे नै रहलैन। अनेको प्रश्न एक संग ठाढ़ भेलैन।

मुनेसर सेहो सेवा निवृत्ति भऽ गेला। पलामूसँ राँची चल एला। मुदा जहिना नोकरीक अदहा दरमाहा गमौलैन तहिना ट्यूशनक अगहन सेहो। ओना ट्यूशनक अभाव राँचियोमे नहियेँ, तहूमे मुनेसर एक तँ सांइसक शिक्षक छैथ दोसर पढ़बैमे इमानदारीए नै विषय बुझबैक अद्भुत गुण सेहो छैन्हे। मुदा सभ किछु रहितो शरीर तेहेन रोगा गेलैन जे जलखै-कलौ दबाइए होइ छैन। अपन कीनल राँचीक जमीन, तैपर अपन कमाइक बनौल नीक घर छैन्हे, तँए रहैक सुविधा छैन्हे। मुदा समए जहिना नव-नव जिनगी ठाढ़ करैए तहिना आने-आन जकाँ मुनेसरो तँ छैथे। सन्तानक नाओंपर मात्र दूटा बेटा छैन। दुनू बेटा नीक शिक्षा पाबि, एकटा मध्य प्रदेशक विलासपुरमे आ दोसर हरियाणामे नोकरी करै छैन। नोकरी की करै छैन जे अपन-अपन पत्नीक आ धियो-पुता लऽ लऽ छैन। ऐठाम प्रश्न उठैत जे जइ परिवारक एक समांग हरियाणा समाजक बीच रहि, ओतुक्का वातावरणमे पालल-पोसल जाएत, दोसर मध्य प्रदेशक वातावरणमे

पालल-पोसल जाएत, तेसर राँची आ चारिम गाममे। तैठाम केना समावेश हएत? तहूसँ विकृत तँ ई भऽ जाइए जे एके परिवारक दू भैयारीमे एककेँ कमाइ बेसी आ दोसरकेँ कम भेने परिवारक स्तरो (खान-पान, पढ़ाइ-लिखाइ) मे दूरी बनिते अछि। तेतबे किए? गंभीर रोगसँ गरसित एक भाँइ इलाजक खर्च दुआरे मरि जाइ छैथ, जखन कि दोसर भाँइ बैंकमे रूपैआ रखने रहै छैथ! प्रश्न उठैत अछि, की यएह मिथिलांचलक भैयारी आकि परिवार आकि समाजक धरोहर छी जेकरा लऽ लऽ नाचब?

मिथिलांचलकेँ ऊपरे-झापड़े देखब भेल। मिथिलांचलक योगदान दुनियाँक दर्शनमे ओ अछि जे श्रेष्ठ मनुखक संग नीक समाजक निर्माणक बाट देखबैए।

दुनू बेटा तँ मुनेसरक हटले-हटल छैन, जे पत्नियो डेढ़ साए किलोमिटर हटि नोकरी करै छथिन। ओना मुनेसरोकेँ कोनो तरहक अभाव नहियेँ छैन, किएक तँ पेंशन भेटते छैन, बैंकक सूदि अबिते छैन, तैसंग घरोक भाड़ा-किराया अबिते छैन। मुदा सभ किछु रहितो बुझि पड़ै छैन जे कियो ने अछि। रोगी-ले परिचारिकाक की जरूरत होइ छै ओ आन बुझि केना सकैए। जे अनुभव करैए ओ जिनगीक चुकल बेवस अछि। जेकरा एकटा पएर नै छै, पेटमे जखन भूख-पियास जोर मारै छै तखन ओकरा छोड़ि दोसर बुझि के सकैए। ई ओहने भेल जे कियो केकरो एक मुट्ठी खुआ सेवा करैत आ कियो ओकरा जिनगी दऽ एक मुट्ठीक जरूरते नै रहए दइत।

अस्सी बरख पार केला पछाइत पुरना घराड़ीपर सात हाथ नमती घर बना सुलोचना बहिन रहै छैथ। धानक नारसँ छाड़ल। बाँसक कोरो-बत्तीसँ ठाठल, बीचला तीनू खुटा लकड़ीक आ कतका छबो बाँसक घर, जइमे कड़ची-खरहीक टाटक बीच तख्ताक केवाड़ी

शीशोक चौकैठ लगौल, घरमे बैस सुलोचना बहिन हिया कऽ तकै छैथ तँ सभसँ नीक अपनाकेँ बुझि मने-मन गुनगुनाइ छैथ-

"साग खोंटि खेबै, मिथिलेमे रहबै।"

हिया कऽ अपन परिवार देखै छैथ। पिताक चारू भैयारीक भाए अपन-अपन पक्का मकान बना अँगना फुटा अपन-अपन अबै-जाइक रस्ता बना लेलैन, मुदा हम तँ वएह पुरना रस्ता होइत अखनो जाइ-अबै छी, जे पिताक देल चारू भैयारीक सझिया रस्ता छेलैन। ने तहीए बँटबारा भेल आ ने अखने कियो बँटलैन। सबहक सझिया रहितो, (सभ भाँइ बुझै छैथ) सोलहन्नी सुख तँ हमरे होइए।

तेतबे किए, साले-साल घरक मरम्मत करै छी, पुरनाकेँ नव करै छी। खुटा-खुटी सोझ करै छी। नवका नारसँ छाड़ै छी, टाट-फड़कक पुरना लेबा झाड़ि नवका लेबा लेबै छी, घर-ओसराक मुँह-कान बनबै छी। सीढ़ीकेँ सेरियबै छी। सभ दिन नवके घरमे रहै छी। नव घर उठे पुरान घर खसे से हम किए बुझब। साल भरिक पछाइत ने घर पुरनाइ छै, जखन बर्खामे छाड़-बन्हन सड़ै छै तखन ने पुरान होइए। जहिना तीनू भैयारी अपन-अपन अँगनामे कल गड़ौने अछि तहिना ने मुनेसर अपनो गड़ाइए देने अछि। बाप-दादाक खुनौल इनार छेलैन, सभ कियो पानि पीनाइ छोड़ि देलैन तँ हमहीं किए सड़ल-पाकल पानि पीब। तँए कि हमरा कल जकाँ अनको छैन। देखै छी जे भरि ठेहुन की-कहाँ कलपर लगौने रहैए, केना ओहेन कलक पानि पीबैमे परपन होइ छै से नै जाइन। दतमैन कऽ कले लग फेक देलौं। बरतन माँजि फेकि देलौं..! एकरा की कहबै। अपचिष्ट नै कहबै तँ की कहबै। जँ कमे जगह अछि तँ ओहीमे खाधि खुनि देबै आ तइमे फेकब। जखन बेसी भऽ जेतै तखन रौदमे सुखा आगि लगा जरा देबइ। से करबे ने करब आ भरि ठेहुना गन्दगी लगौने रहब। मन घुमलैन, तीनू भाँइ पक्का

घर-अँगनाक तीनू दिस बनौने अछि तइसँ की हमरा गरफेदा अछि, ने अँगनामे साले-साले टाट लगबए पड़ैए आ ने साँप-छुछुनैरक बील-बाल बनैए। तीनू भाँइक घरेक देवाल ने अँगनाक टाट बनल अछि। रातियो-बिराति तँ यएह बुझि पड़ैए जे चारू दिससँ जेरक-जेर ओगरबाह बैसल अछि आ बीचमे अपने चेनसँ भानसो करै छी, खेबो करै छी आ सुतबो करै छी। 'चारूकात लत्ती बीचमे भगवती' जकाँ रहै छी। राति-बिराति जे चोरो-चहार औत तँ कोठाबला ऐठाम जाएत आकि खढ़क घरमे औत।

जेना कियो सुलोचना बहिनकेँ ठोंठ पकैड़ आगू मुहेँ ठेल देलकैन तहिना घुसैक पिताक भैयारीसँ अपन चारू भाए-बहिनपर चलि एली। अपन बात केकरो किए कहबै, जेकरा कहबै तेकरे केलहा छी। हम जमाहिर लाल थोड़े छी जे मेननक विचार एकेबेरमे बुझि जेबइ।

अपनासँ घुसैक मन आगू बढ़ि माझिल भाएपर गेलैन। कहू जे सात बेटा रामकेँ एको ने कामकेँ। जेकरा दू-दूटा धाकर सन-सन पुतोहु रहतै से अपनेसँ बरतन माँजत! भानस करत..! आब कि जुगेसरोक ओ उमेर रहलै जे साइकिलसँ झंझारपुर हाटसँ समान कीनि कऽ लौत। जखन नोकरी छेलइ, तखन परिवार चलिते छेलइ, धियो-पुतोकेँ पढ़ेबे-लिखेबे केलक, बेटीक बिआह अपनासँ बीसेमे केलक, घरो तेहेन बान्हि लेलक जे तीस-चालीस बरख ताकौ ने पड़तै। तैपर पीलसीनो तेते भेटै छै जे केतेकेँ दरमहो ने ओते छइ। तखन जे वौऐनी लगल छै से कोइ रोकि देतइ। जइ बेटा-ले बाप ओते करि कऽ रखि देने छै जे तेकरे बेटा नचबै तँ पेट नै भरतै आ जिनगी नै चलतै। हमहीं की करबै? ओकरोसँ बेसी उमेर अछि। 'अपने मुइने जग मुअए।' दुनियाँमे तँ सदैतकाल केतौ भुमकम अबै छै, केतौ झाँट-पानि होइ छै, केतौ समुद्री जुआरि उठै छै, केतौ ठनका खसै छै, केतौ हवा-जहाज खसै

छै, केतौ रेलगाड़ी उनटै छै तँ केतौ धारक नाहे उनैट जाइ छै, ई केकरो रोकने रोकाएत! तखन तँ भेल जे लोक अपन रक्षा करैत दोसरोक करए।

भाइक जिनगीमे डुमल सुलोचनाकेँ जेना भक्क खुगलैन। अपनो जुगेसरक चालि-परकित नीक नै छइ। जिनगी भरि रग्गरघस करैत रहि गेल! कहू जे अनकर झगड़ा किए मोल लेलक जे हमरो आ मुनेसरोसँ मुँह फुला–फुली छइ! सासुरमे बेटा नै रहने जमीनक लोभ किए केलक! एतबो किए ने बुझलक जे सासुर उपैट जाएत! तहूमे मुंगेर-घाट लगक सासुर, साले-साल बाबा धाम लोक जाइते अछि। एकोरत्ती मनमे विचार रहलै जे जँ कहीं गौंआँ-घरुआ हेराइत-भोंथियाइत ओइ गाम पहुँचत आ राति-बीच रहए चाहत तँ ओ गौंआँ गारि पढ़ि भगा देतै आकि रहए देतइ! भाइये छी, ओकर काज फुट छै, हमर काज फुट अछि, तैठाम कहबे ने करबै आकि कएलो हएत। ने एको कौड़ी हाथ लगलै आ ने अपेछा रहलै। हमहीं जेठ बहिन छिऐ, हमरा लिए जेहने जुगेसर अछि तेहने ने मुनेसरो अछि। मुदा ओ कहियो बुझलक जे बहिन केहेन गड़ूमे जीबैए? बड़ लीलसा रहए जे समाज ने समाजसँ ठेल देलक मुदा भगवान थोड़े बेपाट भऽ गेला, भाइयक बेटीक कन्यादान नै कऽ सकै छेलौं? ..मुनेसरक आशा ऐछो तँ भगवान ओकरा बेटीए ने देलखिन, जेकरा देलखिन से तेहेन अछि जे बेटा-बेटीक बिआह केलक आ एक कौर खाइयो-ले ने देलक। कहू जे एहेन कि ओकरे बेटा छै जे रामकिसुनकेँ किए गारि लिखि चिट्ठी पठौलकै। खेत-पथारक हक-हिस्साक बात छेलै तँ ओ समाजे आकि कोटे-कचहरीसँ ने फरिछाइत। तइले एते भारी हंगामा किए भेल! अनेरे समाजक लोककेँ किए जहलो कटौलकै आ घरक चौकैठो-केबाड़ उखड़बौलकै!

मुदा हमहीं की कहबै, भगवान अपन सासुर हइर लेलैन तँए ने, नहि तँ हमरा कोन मतलब ऐ गाम-समाजसँ रहितए। अपन भरल-पूरल परिवार रहैत, बाल-बच्चा रहैत, मनुखक बोनमे हेराएल रहितौं...।

मुदा लगले सुलोचना बहिनक मन घुमलैन। आँगुरपर हिसाब जोड़ए लगली जे माएसँ कम दिन जीलौं, आकि बेसी दिन। बाबू तँ कहबे करैथ जे नब्बे बरख टपि गेलौं मुदा माए तँ से नै बजल। ओ तँ एतबे कहलक जे रौदी-साल दुरागमन भेल रहए। तइ हिसाबसँ तँ भरिसक ओहो नब्बेक धत्-पत् जीबे कएल। ओहुना बाबू कहला पछाइत दू-तीन बरख पाछू मुइला। तहू हिसाबसँ नब्बे भाइए जाइए। मुदा अपन केते भेल, से केना बुझब?

..कोनो कि लिखल-पढ़ल छी जे कुण्डली देखब। तहूमे घरक चुबाटमे सभटा पैछला कागज-पतर सड़ि गेल, तखन? ..बड़की बहिन मन दौगबए लगली तँ मन पड़लैन जुगेसरक जन्म। बिआहसँ तीन-चारि बरख पहिलुका छी। मुदा दुनू तँ अन्हे-गाहिंस अछि। एकटा उपय अछि, नअ-दस बरख नोकरी छुटना भेल हेतै, साठि बर्खमे नोकरी छुटै छै, तइ हिसाबसँ सत्तैरक धत्-पत् भेल हएत। ओकरा जन्मक समए ढेरबा रही। तखन तँ अस्सीसँ ऊपर भेल। 'अस्सी' मनमे अबिते सुलोचनाक हँसैत मुहसँ फुटलैन-

"यएह छी जिनगी..!"



शब्द संख्या : 6692

3.

माझिल भाए-जुगेसरपर सँ साझिल भाए मुनेसरपर सुलोचना बहिनक नजैर बढ़लैन। दुनू भाँइमे मुनेसरे सहोदर बहिनो बुझैए आ जेतए तक वेचाराकेँ भऽ पबै छै मदैतो करैए। मुदा ओही वेचाराकेँ की दोख देबइ। गाममे रहैत आ लग-पासमे नोकरी करैत तखन ने से तेते दूरमे अछि जे मदैते की हएत। तहूमे तेहेन घरवाली भगवान देलखिन जे सदिखन अपने परिवारक पाछू तबाह रहैए। एक तँ दुनू बेकतीक बात, दोसर पढ़ल-लिखल परिवार, केतौ जे किछु बाजत आकि केकरो कहत सेहो केहेन हएत। खाएर जे हौउ, एते तँ वएह वेचारा करैए जे एते दिन कहियो काल किछु पठा दइ छेलए जइसँ दिके-कि-सिके कहुना कऽ गुजर करै छेलौं मुदा आब तँ से नहि, एकेबेर तेते रूपैआ बैंकमे जमा कऽ दइए जे साल-मालमे कोनो दिक्कत नहियेँ होइए।

छोट बहिन जे अछि तेकरा अपने तेहेन परिवार छै जे नैहरो बिसैर गेल। जँ कहियो भेँटो करए चाहै छी सेहो नइ होइए। केना कऽ छोट-बहिनक सासुर जाएब। लोक की कहत जेठ बहिन माए दाखिल होइ छइ।

घर-आँगन बहारि, चुल्हि-चिनमार नीपि, बरतन-बासन माँजि, जारैन-काठी ओरिया सुलोचना बहिन कलपर पानि आनए गेली। बाल्टीन भरि उठा जखन विदा भेली आकि बाल्टीन नेनहि

चबुतरापर खसि पड़ली। गुण रहलैन जे गरदैनसँ ऊपर चबुतरासँ बाहर रहलैन, नहि तँ तेहेन खसान खसलैथ जे मरिये जइतैथ। ओना माथक भाग बँचलैन मुदा डाँड़सँ निच्चाँ थौआ भऽ गेलैन। एक तँ सिमटीक चबुतरा तैपर भरल बाल्टीन पानि। खसिते एकबेर पितियौत भाइक नाओं लऽ कऽ जोरसँ बजली-

“मनोहर, हौ मनोहर, कलपर खसि पड़लौं!”

अवाज तीनू भैयारीक आँगन तक पहुँचलैन। मुदा पहिल अवाज सुनि जहिना कियो कान ठाढ़ कऽ दोसर अवाज अकानए लगैए तहिना सभ (भैयारी परिवार) दोसर अवाजक आशा-बाट देखए लगला। मुदा दोसर अवाज दइसँ पहिनहि सुलोचना बहिन अचेत भऽ गेली। डाँड़क जोड़क हड्डी टुटि गेलैन। तैपर भरल बाल्टीनक चोट सेहो लगल रहैन।

दोसर अवाज नै उठने मनोहरकेँ शंका भेलैन जे दोहरा कऽ अवाज किए ने आएल। से नहि तँ केतौ अनतुका बात थोड़े छी। अँगनेसँ घरक पैछला खिड़की खोलि देखलैन जे सुलोचना बहिन कलपर चारूनाल चीत खसल अछि। घरेसँ हल्ला करैत मनोहर निकलला जे ‘सुलोचना बहिन कलपर खसल अछि।’

मनोहरक अवाज सुनि तीनू भैयारीक आँगनसँ धियो-पुता आ स्त्रीगणो दौड़ कऽ सुलोचना बहिन लग पहुँचली। मरदा-मरदी मनोहरेटा। स्त्रीगणो तँ स्त्रीगणे छी। काजक भीड़-भाड़ तँ नै मुदा विचारक तँ समुद्रे छी। रंग-रंगक विचार चलए लगल। विचारक तीर तेते तेज जे मनोहरक अपन बुधिये हेरा गेलैन, विचारे थकथका गेलैन। तँइए ने कऽ पबैथ जे बहिन जीवित अछि आकि मुइल। देहो-हाथ ने एकोबेर सुगबुगाइन। जहिना बिना ब्रेकक साइकिल वा गाड़ीक ठेकान नै रहै छै जे केमहर जाएत तहिना मनोहर भऽ गेला। तहूमे अपन पत्नी

कहलकैन-

“पहिने नाकक साँस देखियौ!”

मुदा तइ बीचमे पितियौत भाइक पत्नी, भावो बाजि देलखिन-

“छातीपर हाथ दऽ कऽ देखथुन!”

दुनू गोरेक दुनू विचार सुनि मनोहर अकबका गेला। मुदा भावोक विचारक आदर करैत मनोहर छातीपर हाथ देलखिन तँ धक-धकी बुझि पड़लैन। मुदा तैबीच पत्नी गुम्हरैत बजली-

“कहलौं जे नाकक सोंसा देखियौ तँ डाक्टर जकाँ छातीमे आला लगबए लगलौं!”

पत्नीक बातकेँ मनोहर नै ठेकानि सकला। किएक तँ काल्हि साँझमे जखन पत्नी आ भावोक बीच झगड़ा भेल रहैन तखन गामपर नै छला, तँए नै बुझल रहैन। दुनू गोरेमे सँ कियो कहबो ने केने रहैन। नै कहैक, कारण छेलै जे दुनू गोरे अपने फरिछबैक विचार केने छेली। ..छातीक धुकधुकी देख मनोहर नाक लग हाथ देलखिन तँ बुझि पड़लैन जे साँस रूकि-रूकि चलै छैन मुदा अखन उपाइये की अछि? मरदा-मरदीमे असगरे छी, केना उठा कऽ ओसारोपर लऽ जाएब? गारि-गरौवैल आ मारि-मरौवैल करैकाल ने भैंसूर-भावोक सम्बन्ध नै रहैए मुदा बेर-बेगरतामे तँ रहिते अछि। असगरे पत्नीए-टा छैथ जे संग भीड़ि काज करती बाँकी सभ भावोए छैथ! देहमे केना भीरती। तहूमे अधमड़ू जकाँ छैथ। देहो-हाथ लरे-ताँगर हेतैन। जँ होशगर रहितैथ तँ घुघुओपर उठा लितौं। एक गोरे तँ दुनू डेने सम्हारैमे रहि जेती। अपने जँ धड़ पकड़ब तँ दुनू टाँगकेँ की हएत। तहूमे जँ टुटल हेतैन तँ आरो टुटि कऽ निच्चे खसि पड़तैन! डाक्टरो ऐठाम केना जाएब। जँ डाक्टर बजबए जाएब तैबीच की हएत, तेकर कोन ठेकान।

..जहिना बाल-बोध बच्चाक बुधिक पौती बन्न रहैए तहिना

मनोहरक बुधिक नीचला खप्पी बन्न भऽ गेलैन। कलपर पड़ल सुलोचना बहिन फक-फक करैत। मनोहरकेँ सुमति एलैन। कलपर सभकेँ छोड़ि अपन कोठरी आबि मोबाइल निकालि चिन्हरबा डाक्टरकेँ फोन केलैन। पछाइत पितियौत भाएकेँ केलखिन। मुदा जहिना फोन केलखिन तहिना एक्के-दुइए सभ पहुँचला। पहुँचते डाक्टर डाँड़ फुलब देख बजला-

"डाँड़ भरिसक टुटि गेल छैन, चाहे डाँड़क जोड़ छिटैक गेल छैन। हमर साधसँ बाहरक काज अछि। ओना तत्काल इन्जेक्शन दऽ दइ छिऐन मुदा हिनका नीक डाक्टर ऐठाम लऽ जैयनु।"

तीनू-चारू भैंयो आ डाक्टरो मिलि हाथे-पाथे उठा ओसारक बिछानपर सुलोचना बहिनकेँ पाड़ि देलकैन।

इन्जेक्शन पड़ला पछाइत सुलोचना बहिनकेँ कुहरब शुरू भेल। मुदा बोली नै फुटैन। हाथोक इशारा नै देल होइन। लगले मनोहर जुगेसरकेँ समाद पठौलखिन। ई सोचि जे किछु छिऐन तँ सहोदर बहिन हुनके छिऐन। हुनका पीठेपर ने हम सभ रहब। नै किछु करथिन तेकर पछाइतो ने दियाद-बाद आकि सर-समाज। समाज तँ सहजे समुद्र छी, आइ नै अदौसँ होइत आएल अछि जे कियो असाध रोगक शिकार हुअए आकि पढ़ए-लिखए चाहैत हुअए आकि बेटा-बेटीक बिआह करए चाहैत हुअए तँ समाज चन्दा दऽ ओइ काजक सम्पादन करैत आएल अछि। ..समदियाक समाद सुनिते सोमनी स्वामीकेँ सुसकारी देलखिन-

"अखन किए ने बहिन हेतैन!"

पत्नीक बात सुनि जुगेसर फटो-फनमे पड़ि गेला। जिनगीक हारल जुगेसर जे परिवारमे मात्र दुइए परानी रहि गेल छैथ। ..समदियाकेँ कहलखिन-

"दुखमे सुमिरन सभ करे...। अखन किए ने बहिन हएत। बजले तँ रहए जे चारि कट्ठा जमीन बेइमानी कऽ लेलिऐ। तैकालमे मुनेसरा भाए रहै आ अखन हम भऽ गेलिऐ।"

पतिक सह पाबि सोमनी गोटी चलली-

"जेहेन जे करत से तेहेन पौत!"

दुनू परानी जुगेसरक बात सुनि समदिया आबि मनोहरकेँ कहलकैन। सहोदर भाइक बात सुनि मनोहर चौंक उठला। सहोदरसँ कनियेँ हटि पितियौत भेल किने। एकर आगू ने समाज भेल। ओना पितियौत चारि भाँइ अखनो छीहे। सेवे[7] भरि ने करबै। भगवान नहि ने छी जे प्राण दऽ देबइ। मुदा नीक हएत जे मुनेसरोकेँ कहि दिऐ। जुगेसर भैया संगे ने खट-पट छैन मुदा सोल्होअना मुनेसर तँ सेवा करिते छैन।

मुनेसरकेँ फोन लगा मनोहर कहलखिन-

"मुनेसर, बड़की बहिन कलपर खसि पड़ली, चोट बहुत छैन। अखनो अचेते छैथ से जल्दी आउ?"

समाचार सुनिते मुनेसरक मनमे अनेको प्रश्न उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेलैन। हँ-हूँ किछु उत्तर नै दऽ सकला। अखन हम हजारो किलो मीटर हटल छिऐ, जरूरत छै डाक्टर ऐठाम लऽ जाइक, तखन तँ मनोहरेपर किए ने छोड़ि दिऐ जे जाबे पहुँचब ताबे तक ओ सम्हारत। मुदा हाथ-पर- हाथो दऽ बैसब नीक नहियेँ हएत। समाजमे केकरो जँ कहबो करबै से मुहेँ ने अछि। एतेटा जिनगीमे समाजक कोन उपकार केलिऐ। ..लगले मनोहरकेँ फोनपर मुनेसर कहलखिन।

"मनोहर, अबैक तैयारीमे जुटि गेलौं। जेते जल्दी भऽ सकत

---

[7] जेते कएल हएत

पहुँच रहल छी। तखन तँ गाड़ी-सवारीक रस्ता छी तँए स्पष्ट किछु नै कहल जा सकैए। तैबीच खर्चक दुआरे कोनो काज बाधित नइ होइन।"

मनोहरपर भार दइते मुनेसरक नमहर साँस छुटलैन। साँस छुटिते मन भेलैन जे एकबेर फेर मनोहरकेँ कहिऐ जे कनी बड़की बहिनसँ गप करा दिअ। मुदा लगले भेलैन जे काजक दौड़मे गपो-सप्प बाधक होइ छइ। छुच्छे गप्पो केने तँ कोनो लाभो नहियेँ अछि। फोन लगा मुनेसर छोटकी बहिनकेँ कहलखिन-

"बुच्ची, बड़की बहिन कलपर खसि पड़लखुन से जहिना हुअ तहिना जल्दी गाम पहुँचह।"

मुनेसरक बात सुनि कविता उत्तर देलखिन-

"भैया, कियो घरमे नै अछि। असगरे छी। जखने घर छोड़ि जाएब तखने घर विरहा जाएत।"

छोटकी बहिनक बात सुनि मुनेसर सकदम भऽ गेला। हम हटले छी, जेहो सभ लगमे अछि सेहो सभ हटिए रहल अछि। कहू जे ई की भेल। 'घर विरहा जाएत!' घरक चीजे-वौस ने लोक चोरा लेत सभ समांग कमाइते अछि फेर कीनि लेत। मुदा सहोदर बहिन...।

मने-मन मुनेसर गामक गर अँटबए लगला। राँची-जयनगरक गाड़ीक काल्हि नहि अछि। आइ पकैड़ नै हएत। सोझहे विदा भऽ जाएब सेहो नै हएत। सोझहे तँ लोक ओइठाम ने चलि दइए जैठाम काजक आशा रहै छै, मुदा जैठाम काजक आशा नै रहै छै तैठाम तँ तैयारे भऽ कऽ जाए पड़ै छइ। बसक जे रूट अछि ओहो गाड़ीसँ पहिने नै पहुँचा सकैए, तखन? परसूका गाड़ी निसचित पकैड़ लेब। नीक हएत जे दुनू बेकती जाइ। महिला रोगीक संग महिला नीक। बीचमे

काल्हि बैंकोक काज कऽ लेब। ओना अबैले नै कहबै मुदा दुनू भैंयोकेँ[8] जानकारी तँ दइए दइक अछि। अबैले तखन कहब ने नीक हएत जखन असगर-दुसगर रहैत।

..परिवारक संग बिना रिजवेशनक चलब तँ कठिन अछि। ईहो तँ नीक नहियेँ हएत जे रस्तेमे समानो (चीज-वौस) चोरि भऽ जाइ आकि बच्चे सभकेँ किछु भऽ जाइ। नीक हएत जे दुनू भाँइकेँ जनतब दऽ दिऐ।

मोबाइल उठा रघुनाथकेँ कहलखिन-

“बौआ, दीदी कलपर खसि पड़लखुन, से सुनैमे आएल अछि जे डाँड़े कज्जी भऽ गेलैन अछि।”

दीदीक नाओं सुनि रघुनाथक मन चौंकल, बाजल-

“बड़का बाबूकेँ ताबे नै कहि देलिऐन जे आबि रहल छी। तैबीचक भार अहाँक। आगू भऽ कऽ अहाँ जाउ, पाइ-कौड़ीक चिन्ता नै करब। अखन ऑफिसमे छी, बेसी बात नै हएत, डेरापर गेला पछाइत फोन करब।”

रघुनाथक विचार सुनि मुनेसर छोटका बेटाकेँ मोबाइलपर कहलखिन-

“बौआ, बड़की दीदी कलपर खसि पड़लखुन। मनोहर अखने फोनपर कहलक हेन!”

बाल-बोध रमाकान्त बाजल-

“आर, की सभ भेलैन?”

मुनेसर-

---

[8] दुनू बेटोकेँ

“एतबे जानकारी भेटल अछि। आरो जानकारी होइए तखन फेर कहबह।”

“बाबू, केकरो कियो परान नै दऽ सकैए, मुदा परान बँचबैक तँ परियास कइए सकै छइ। तइले आगू बढ़ि कऽ जाउ, पछाइत जँ हएत तँ हमहूँ आएब। ओना रघुनाथ-भैयासँ ऑफिसक पछाइत गप करब। गाम-घरमे इलाजक असुविधा छै तँए जरूरतकेँ देखैत कहब। ऐठाम तँ इलाजक नीक बेवस्था छइहे।”

“अखन जानकारीए बुझह। जाबे अपना नजरिये नै देख लेब ताबे किछु कहब नीक नहियेँ हएत। सुनल बात गँड़ि-मुड़ाह होइ छै, हल्लुको बात भारी आ भारियो बातकेँ हल्लुक बना लोक बजैए।”

दुनू बेटाक बात मुनेसरकेँ बल भरलकैन। मनमे मजगूती एलैन। परसूका गाड़ी कोनो हालतमे छोड़क नै अछि। रहली पत्नी, हुनको कहब उचित अछि, मुदा नाकर-नुकर तँ करबे करती। खाएर, नाकर-नुकर किछु करैथ, हमरो निर्णयक दौड़सँ चलए पड़त। जँ नाकर-नुकर करती तँ मुँह फोड़ि कहबैन, माए दाखिल बहिन छी, जँ दुनियाँमे कियो माए-बापक सेवाकेँ नीक बुझैत हेतै तँ हमहूँ बुझै छिऐ। पत्नीक मतलब ई नहि जे पथभ्रष्ट करए...।

मुनेसरक मन निर्णए केलक- 'नीक हएत जे अखने हुनको (पत्नी) सँ गप-सप्प कइए ली। मोबाइल लगा मुनेसर साधनाकेँ कहलखिन-

“परसू गाम जाएब जरूरी अछि, तँए स्कूलमे छुट्टीक आवेदन दऽ काल्हि राँची चलि आउ?”

पतिक बात सुनि साधना बजली-

“एहेन कोन हलतलबी भऽ गेल जे एकाएक गाम जाइक विचार कऽ लेलिऐ?”

सुलोचना बहिनक सभ समाचार सुना मुनेसर बजला-

“ओइठाम जा हम नै सेवा करबै तँ दुनियाँमे वेचारीकेँ रहलै के, जे करतै। सुनैमे आएल अछि जे भैयो दुनू परानी खुशीए मनबै छैथ जे भने नीक भेल। तैठाम अपन दायित्व नै बुझिऐ, से मन गवाही नै दइए। खाएर जे हौउ, अखन एतबे जे काल्हि चलि आउ।”

पतिक विचारमे साधनाकेँ दबाब बुझि पड़लैन। ओ अपन दायित्वक विचार नै करैत बजली-

“अखन स्कूलमे छुट्टी नै देत।”

मुनेसर-

“हमरो जिनगी स्कूलेमे बीतल, किए ने छुट्टी देत, जँ नै देत तँ ओहिना चलि आउ।”

साधना-

“ओहिना केना चलि आउ!”

मुनेसर-

“रिजाइन दऽ कऽ। मुदा गाम चलैक अछि?”

जहिना दबाबमे साधना बजै छेली तहिना दबाबमे मुनेसर सेहो आबि गेला। दुनूक दू दबाब, एककेँ कर्तव्यक दबाब आ दोसरकेँ सत्ताक दबाब। दुनू दू दिशामे बहैत जाइत।

..तुरैछ कऽ साधना बजली-

“बहिन अहाँक छैथ, अहाँ जा कऽ देखियौन। हम अखन नै जाएब!”

साधनाक उत्तर सुनि मुनेसर अमबसियाक अन्हारमे पड़ि गेला। दुनियाँक अन्हेरमे सभ किछु सबहक अन्हरा रहल छै, अन्हरा कि रहल छै जे सभ अपने अन्हराइ पाछू पड़ल अछि। एकक पति आ दोसराक

भाए तँ हमहीं छी। ई बात सत् जे जे नगीची बहिनक संग अपन अछि ओ पत्नीक नै छैन। मुदा की हुनका (पत्नी) आन बुझल जाए..?

जिनगीक संगिनी। संग मिलि जिनगीक दुर्गकेँ टपैक व्रती। मुदा काल्हि एकर विपरीतो तँ भऽ सकैए...।

मुनेसर सकदम भऽ गेला, मुदा थोड़ेकालक पछाइत फुरलैन- 'अनेरे मनकेँ वौअबै छी।' कियो अपन मन, अपन भाव आ अपन विचारक अनुकूल अपन दुनियाँ गढ़ैए आ ओइमे बास करैए। जेते करैक शक्ति अछि, ओते करैक अधिकारी छी। परसू निसचित गाड़ी पकड़ब चाहे बीचमे जेते विध्न–बाधा उपस्थित किए ने हुअए...।

राँचीसँ जयनगरक गाड़ी खुजैक समए पौने छह बजे साँझमे छइ। तीन बजिते मुनेसर बेर-बेर घड़ी देखैथ जे कहीं गाड़ी ने छुटि जाए। पनरह मिनट स्टेशनक रस्ता अछि। चारि बजिते भाड़ादारकेँ कहि मुनेसर बैगक संग घरमे ताला लगा निकैल गेला। ओना अखन पौने दू घन्टा समए अछि मुदा तैयो मनमे होनि जे हो-ने-हो जँ समैक हिसाबसँ जाएब आ बीचमे कोनो बाधा उपस्थित भऽ जाए आ गाड़ी छुटि जाए तखन तँ सभ विचारल चौपट भऽ जाएत। तइसँ नीक जे जखन डेरोपर गाड़ीए-क प्रतिक्षा कऽ रहल छी तखन किए ने स्टेशनेपर जा कऽ टिकटो कटा लेब आ प्लेटफार्मेपर बैसब जे गाड़ी पकड़ैक पूरा बिसवास बनल रहत।

स्टेशन पहुँच पूछ-ताछ ऑफिस दिस मुनेसर बढ़ला। ओना एकेटा ट्रेन राँची-जयनगरक जे सप्ताहमे तीन दिन चलैत तँए समए तँ अपनो बुझले मुदा मनमे रंग-रंगक विचार उठने मुनेसरकेँ अपनोपर शंका होइत रहैन जे हो-ने-हो गाड़ीक समए-सारणीमे किछु फेर-बदल बीचमे ने भऽ गेल होइ। ओना दिन-रातिक हिसाबसँ अप्रील अक्टूबरमे समैक बदलाब होइ छै मुदा से आब कोनो ठेकान अछि।

कहियो समए बदैल देल जाइ छइ। तेकर कारणो अछि जे जाबे दुरगामी ट्रेन कम छल ताबे दिन-रातिक सुविधा बुझल जाइत छल मुदा आब तँ से नहियेँ रहल। दिन-राति दौड़ैबला ट्रेनक बीच केतेको जक्शन आ केतेको साधारण स्टेशन पड़िते अछि, तैबीच समैक की सुविधा हएत। पूछ-ताछमे बुझले बात दोहरा कऽ बुझि मुनेसर प्लेटफार्मक सिमटीक बैसकीपर बैस गाम दिस नजैर देलैन, ने अन्हारे आ ने इजोते बुझि पड़लैन, झल अन्हार जकाँ सभ किछु देखैथ।

देखए लगला चारि भाए-बहिनक बीच हमहूँ छी आ सुलोचनो बहिन छैथ मुदा अखन तकक जे जानकारी अछि तइमे की छी। चारि छी आकि दू छी? आइ जँ दुनू परानी भैयो बड़की बहिनकेँ अप्पन बुझि आगू इलाज करबए बढ़ि गेल रहितैथ तँ अखन जे परिस्थिति बनि गेल अछि से थोड़े बनैत। कोनो अस्पताल आकि डाक्टरक देख-रेखमे रहितैथ, मुदा से...। तत्खनात जँ कियो कर्जो हाथे अखन धरिक प्रतिकार केने रहितैथ तँ जेते चिन्ता अछि से थोड़े रहैत। बेमारीक अन्तिम सीमा जँ घेरा कऽ पाछू दिस ससरैत रहैत सेहो नहियेँ भेल। प्रतिकार नइ भेने रोगेकेँ ने अवसर भेटल। जे बिससँ बिसम बनैत गेल हएत। मुदा विचार तँ मात्र विचार छी। विचार केना काजक रूप पकैड़ चलत ई नान्हिटा थोड़े अछि! खाएर जे हौउ, अपन नाप-जोख तँ अपने जिनगीक कसौटीपर ने हएत। भावलोक (भवलोक) आकि विचारलोक कर्मेपर ने निर्भर करै छइ...।

'कसौटी' मनमे अबिते मुनेसरक आगू एक मजगूत प्रश्न आबि गेलैन- जैठाम छी तैठामक कसौटी आ जैठाम नै छी तैठामक कसौटी एके थोड़े हएत?

प्लेटफार्मक हजारोक भीड़मे मुनेसर अपनाकेँ असगरे देखैथ, के केकरा देखत, सभकेँ अपने भवसागर पार करैक छइ। सभकेँ

अपन-अपन बाट छै, अपन-अपन घाट छै, अपन-अपन घट छै आ अपन-अपन घटबारि छइ। लाखोक भीड़मे प्रेम जहिना केतौ दोसरठाम नै अँटैक प्रेमीक हृदैमे सटि जाइए तहिना मुनेसरक हृदए सुलोचना बहिनक हृदैमे सटल। एहनो तँ भऽ सकैए जे पहुँचैसँ पहिने मरि जाए। जँ सएह हएत तँ रोकियो तँ कियो नहियेँ सकैए। जँ रोकनिहार रहैत तँ रोकलो जा सकै छल सेहो तँ नहियेँ अछि! तखन यएह ने हएत जे जे समए आ श्रम जिनगीमे लगैबतौं से दोसर दिस लागत।

प्लेटफार्मपर हल्ला भेल जे गाड़ी नहि जाएत। इंजन खराप भऽ गेलइ। हल्ला होइते जहपटार यात्री एक दोसरसँ पूछ-ताछ करए लगल। पूछ-ताछ कॉन्टरक आगू पुछनिहारक भीड़ लगि गेल। सबहक एके प्रश्न जे की भेल किए ने गाड़ी औत? ..बिनु बुझल जवाब देनिहार बिगैड़-बिगैड़ एतबे जवाब करैत जे कोनो जानकारी नै अछि। मुदा यात्रियो तँ यात्रीए छी, सभकेँ अपन-अपन काज छइ। केकरो कम जरूरी तँ केकरो बेसी। जेकरा कम जरूरी काज छै ओ तँ धीरे-धीरे अस्थिर भेल मुदा जेकरा कोट-कचहरी आकि डाक्टर-अस्पतालक काज छै, ओ केना अस्थिर हएत। समैपर कचहरी नै पहुँच हाजिरी नै देने वारंट हेतइ तहिना अस्पतालोक। समैपर जँ मरीज आकि मरीजाकेँ दबाइ नै भेटतै तँ मरत। मुदा पनरहे मिनटक पछाइत हल्लाक रूप बदलल। प्लेटफार्मक रूप-रंग बदैल बेदरंग हुअ लगल। केतौ चर्च होइत जे गाड़ी नै चलने भारी नोकसान भेल, तँ केतौ चर्च होइत जे तीन दिन काज पछुआ गेल! मुदा गाड़ी चलैक समाचार सेहो एके-दुइए पसरैत-पसरैत सौंसे प्लेटफार्म पहुँच गेल।

पनरह मिनटक पछाइत ट्रेन स्टेशनमे लगि जाएत। यात्री सभ अपन-अपन छुटल काज पुरबैमे लगि गेला। कियो पानिक बोतल

कीनए लगला तँ कियो बटखर्चा। तैबीच मुनेसर बेर-बेर घड़ी देखैथ जे केते समए बँचल अछि। आब केम्हरो उठि कऽ नै जाएब। रिजवेशन टिकट रहैत तँ जगहक बिसवासो रहितए, सेहो ने अछि। जेनरल बोगीमे अगुआ कऽ नै चढ़ब तँ रेड़ामे पड़ि जाएब। जुआन-जहान तँ रेड़ा-रेड़ी बरदासो कऽ सकैए मुदा सेहो ने हएत। ओना, खलासी-कुली सभ पहिनहिसँ माने पाछूए-सँ सीट अजबारने रहैए आ पाइ लऽ लऽ एक्सट्रा सीट बेचैए। अन्तमे बुझल जेतइ। समए तँ समए छी, अधलो काज तेहेन सिरचढ़ भऽ जाइ छै जे बेवस कऽ दइ छइ।

गाड़ी अबैक मात्र दस मिनट समए शेष रहल। बेर-बेर मुनेसर मुड़ी उठा-उठा पाछू दिस तकैथ जे गाड़ी अबैए आकि नहि। तैबीच जेबीमे मोबाइलिक घन्टी टुनटुनाएल। ..जेबीसँ मोबाइल निकालि मुनेसर देखलैन तँ पत्नीक नम्बर रहैन। नम्बर देख ने रिसिभ करैथ आ ने रिजेक्ट।

..जहिना मोबाइलिक घन्टी टनटन करैत मुदा मुनेसरक मन पत्नीक सिंहावलोकन करैत। एहेन पत्नीकेँ की बुझल जाए? मुदा गाड़ी अबैक समए अछि, अखन की कहल जाए। किछु ने। तरे-तरे मन तड़ियाइत-तड़ियाइत मुनेसरक मन तुरैछ गेलैन। तुरैछते स्वीच दाबि झंझट कात केलैन। मुदा लगले दोसर घन्टी बाजि उठल। नम्बर देख जहिना रेती चढ़िते घार पनिया जाइत तहिना मुनेसरक मन अनायासे पनिया गेलैन। मन चहकलैन, रघुनाथक नम्बर छी। रिसिभ करिते रघुनाथ कहलकैन-

“बाबू, गाड़ी पकैड़ रहल छी किने?”

बेटाक प्रश्न सुनि मुनेसर पसीज गेला। विचारए लगला जे एकरा की बुझल जाए। की बेटा आदेश दऽ रहल अछि आकि काजपर सिरचढ़ अछि?

मुदा समैक कमी विचारकेँ रोकि देलकैन। उत्तर दैत बजला-

“बच्चा, स्टेशनपर गाड़ी पकड़ए आएल छी। गाड़ी अबैएपर अछि।”

रघुनाथ-

“बाबू, अखन बेसी बात करैक समए अहाँकेँ नै अछि। मुदा हम डेरेपर छी। पोतो अछि आ पुतोहुओ लगेमे अछि।”

‘पोता-पुतोहु’ सुनि मुनेसरक मन मेमिया उठलैन-

“ईहो तँ रघुनाथ बाजि सकै छल जे दुनू बेटो आ पत्नियो लगेमे छैथ। से किए ने बाजि बाजल जे पोतो आ पुतोहुओ अछि। अपन रहितो अपन किए ने कहलक।”

पतालक पानि जकाँ जेहने सुन्नर तेहने शीतल मनसँ मुनेसर बजला-

“बौआ, बेसी गप करैक समए नै अछि मुदा धियानमे रखिहह...।”

रघुनाथ-

“धियानमे रखब आकि धियानमे छैथे। अहाँ बुलन्दीसँ जाउ। बोकारो, जसीडीह, बरौनी, दरभंगा पहुँच जरूर जानकारी देब। काज करैएबला ने हम-अहाँ भेलिऐ तइमे जानि कऽ एक्को-रत्ती तिरोट ने होइन। अनजानमे भैयो सकै छै, तँए तेकर चिन्ता नै करब। रखि दियौ मोबाइल।”

‘रखि दियौ’ सुनि मुनेसरक मनमे समुद्रक बाढ़ि जकाँ हिलकोर मारलकैन। बजला-

“बौआ, अखन पाँच मिनट गाड़ीमे देरी अछि ताबे एकटा गप आरो कऽ लेब।”

‘एकटा गप’ सुनि रघुनाथक मनमे उठल, भुखाएलकेँ जहिना ई थाह नै रहै छै जे केते खाएब, पियासलकेँ पानिक अन्दाज नै रहै छै तहिना भऽ रहल छैन। जरूरत छैन संगीक। मुदा हम तँ बेटा भेलिऐन, पाछू रहि संग दऽ सकै छिऐन, बराबरीमे केना देबैन। ओ दइवाली तँ माइए छथिन, से की केलखिन। मुदा पुछबो केना करबैन जे माइयो संग छैथ आकि नहि।

..बाजल-

“बाबूजी, गाम पहुँचते, से जखन पहुँची राति होइ आकि दिन, सुलोचना दीदीक सभ किछु बुझि जानकारी देब। हमहूँ ऐठाम डाक्टरक सम्पर्कमे रहब। जेना जे जरूरत हेतैन से तहिना हेतइ। जँ गाममे अँटाबेश नइ हुअए तँ हुनका लाइए कऽ ऐठाम चलि आएब। जेते काल ऑफिसक काज रहत तेतबे काल ने, तैबीच पुतोहु लगमे रहतैन; बाँकी समैक काज तँ अपनो कऽ सकै छी। अखन निचेन से गाड़ीमे जाउ।”

रघुनाथक बात सुनि मुनेसर बजला-

“बौआ, अखन तीन मिनट समए बाँकी अछि, अखनसँ की करब। कियो दोसराइतो रहैत तँ गपो करितौं, सेहो ने... ।”

पिताक भरभराइत अवाजमे चनैक कऽ खापैड़क तीसी जकाँ एकटा बात कुदि निच्चाँ खसल। ओ अछि दोसराइत। जखन कोनो प्रश्नपर रघुनाथ दुनू बेकती माए-बाबूसँ गप करैत तँ स्पष्ट आभास भऽ जाइ जे दुनूक विचारक दूरी अछि। मुदा दूरियो तँ दूरी छी आगूक दूरी आकि पाछूक दूरी। एक रास्ताक दूरीसँ विपरीत दूरी दोबर होइत। मुदा दुनियाँक अजीव खेल अछि। विषुवत रेखासँ जेते दूरी दच्छिनक रहत ओते दूरी उत्तर भेने मौसम मिलि जाइए। ओना दुनू बेकती बी.ए; बी.एस-सी छी तँए वैचारिक दृष्टिसँ कम-बेसी आँकब उचित नहि,

तेकर दोसरो कारण अछि जे उमरोक हिसाबसँ एकरंगाहे छैथ। तँए ईहो प्रश्न उठत जे 'हम बेसी दुनियाँ देखलिऐ आकि अहाँ?' मुदा एकटा नमहर प्रश्न तँ ऐछे जे एके काजक दू विचारक बाट परिवारमे उठि कऽ ठाढ़ भऽ जाइए। ओना, परिवारोक तँ दिशा छै जे आगू मुहेँ बढ़त आकि ठमकल रहत आकि पाछू मुहेँ ढुलकत? ..रघुनाथक मन ठमकए लगल। हाथक कोनो आँगुर काटू घा अपने हएत। मुदा विचारो तँ विचार छी। कियो बन्दूकक गोलियोक आगू अपन विचार भंग नै करए चाहैत तँ कियो बुधिक खेल बुझि गेन जकाँ गुड़कबैए! खाएर जे हौउ, जानए जअ आ जानए जत्ता। मुदा ऐठाम तँ एक परिवारक प्रश्न अछि जइमे बाबू-माए छैथ, दू भाँइ दू दियादिनी आ तीनटा बच्चा अछि। ओना, बच्चा तँ अखन दुधमुहेँ अछि मुदा चारि गोरे तैयो बँचलौं, ई चारि विचार जाबे एकठाम नै हएत ताबे समुचित ढंगसँ परिवार चलत केना? जँ परिवारकेँ दू पहिया गाड़ी बुझि विचारब तँ आगूमे माइए-बाबू भेला, तइमे दुनू दिसिया छैथ! केना परिवार आगू मुहेँ ससरत! तहूमे ढलानपर नै चढ़ाइपर? ..कोनो काजक सोलहन्नी बिसवास ताबे तक नहि कएल जा सकैए जाबे तक मनक सोच-विचार वाणी होइत कर्म दिस नइ बढ़त। जखने हाथ रहत घाटपर आ मन रहत सीकपर, तखने तेकर कोन ठीक...।

..हाथमे रघुनाथोक मोबाइल आ मुनेसरोक मोबाइल टनटनाइत बोलक आशा करैत। मुदा बोल कोनो मुँहमे नहि। मुदा विरामक पछाइत ने विश्राम हएत, बीचमे केना विश्राम हएत। तैबीच ट्रेनक अवाज धमकल। कानमे धमक लगिते मुनेसर बजला-

"बौआ, गाड़ी आबि गेल जाइ छिअ।"

पिताक बात सुनि रघुनाथ, खापैड़क खराएल अन्न जकाँ बाजल-

“बाबू, अहाँ आगू बढ़ि जानकारी दिअ, जरूरत देख विचारब। जुआन-जहान छी, अखन नै ट्रेनक धक्का-धुक्की बरदास करब तँ कहिया करब। जेहेन स्थिति रहत तइ हिसाबसँ काज करब। कोनो जरूरी अछि जे परिवारकेँ संगे लऽ चली। अपन डेरा अछि, अपना घरमे रहत। काजोक तँ लहैर होइ छै जे दुइए-चारि दिन ने समुद्र जुआरि जकाँ रहैए, रसे-रसे रसाइए जाएत... ।”

बाजि रघुनाथ मोबाइलक स्वीच दाबि आगूमे रखलक। लगमे ठाढ़ पत्नी पुछलखिन-

“बाबूजी असगरे गाम जाइ छथिन! एक तँ अपने देहमे सभ रोग रखने छैथ, तैपर ऑपरेशन कएल पेट छैन?”

कहि सुनीता चुप भऽ गेली। ..गुम भेल रघुनाथ एक दिस नजैर पितापर दैत तँ दोसर दिस पत्नी-बच्चा आगूमे। सभ तँ अपने भेल, तैठाम डेग उठाएब असान नहि। मुदा जहिना भुमकम-बाढ़ि जेते काल रहैए ओते काल तँ दुनियासँ पकैड़ अनबे करैए। भलेँ चलि गेला पछाइत जे हौउ। ..पत्नीकेँ हाथक इशारासँ बैसबैत रघुनाथ बाजल-

“माएसँ अहीं गप करू, हम सुनब।”

सुनीता-

“माए, सुनलयैन हेन जे गाममे दीदीक डाँड़ टुटि गेलैन से बाबूजी गेला हेन?”

पतिक आगूक छुटल मुँह पुतोहुक आगू तँ छुटले-छुटले, साधनाक मुँह बाजल-

“बहिन छिऐन तँ जेता नै?”

सुनीता-

“अपनो तँ बिमरयाहे छैथ, तखन जँ अपनो बेमार पड़ि जाथि

तखन?”

पुतोहुक प्रश्न सुनि साधना मोबाइल रखि देलैन। बेर-बेर सुनीता ‘हेलौ-हेलौ’ करैत रहली मुदा कोनो उत्तर नहि!

मुनेसर हजारो यात्रीक बीच ट्रेनक एकटा कोणक सीटपर बैसला। जहिना चौड़ी खेतमे आनो-धान झड़े भऽ जाइए तहिना मुनेसरक कानमे लोकक बात झड़ाहे बुझाइत रहैन। मन टाँगल रहैन अपन यात्रापर। चारि भाए-बहिनक बीच जहिना सुलोचना बहिन छैथ तहिना ने हमहूँ भेलौं आ तहिना ने ओहो[9] दुनू भाए-बहिन भेलखिन। मुदा चारिमे दुइए किए? ..फेर अपना दिस मन घुमलैन अपनो तँ सएह छी। जखन बेर-बेगरतामे पत्नियो संग नै एली तखन अनका की कहबै। कियो अपन मनक राजा छी, भिखारी छी। पोथीमे छापल फोटो जकाँ दुनियाँ नहि ने अछि। कर्ता बनि सभ जन्म नेने अछि, दिन-राति कर्मो करिते अछि। मंशो सबहक एके छै मुदा भऽ की जाइ छै, से केकर के देखत। मुदा अपना संग परिवार आ समाजक जे दायित्व ऊपरमे रहै छै, सेहो तँ अपने केने हेतइ।

◌

शब्द संख्या : 3769

[9] जुगेसर-कविता

4.

बचकानी मन जेहने रघुनाथक तेहने सुनीताक। बचकानी ऐ मानेमे जे ने रघुनाथ बेकती-परिवारसँ आगूक दुनियाँ देखने आ ने सुनीता। तीस बर्खक रघुनाथ स्कूल-कौलेजसँ बैंक धरि जहिना देखने तहिना सुनीतो स्कूल-कौलेजसँ परिवारे धरि समटाएल। ओना सुनीताक अपन प्रवल इच्छा जे जखन ग्रेजुएशन केने छी तखन केतौ नोकरी करब जइ कमाइसँ परिवारक भरण-पोषण हएत। बेकतीगत तौरपर तँ समान्य विचार भेल, सभकेँ अपन कर्मपर ठाढ़ भऽ जिनगीक यात्रा करक्के चाही मुदा मनुख तँ मनुख छी जेकरा मनुख पैदा करैक क्षमता छइ। तँए स्त्री–पुरुखक सम्मिलित रूप परिवार छी। जइमे पति-पत्नीक बीच विचारक समावेश केला पछाइते ने रस्ता धेने टघरत। ओना जँ दुनू बेकतीक तलब एकठाम जोड़ल जाएत तँ एको काज भेने एक रंग नहि, कमी-बेसी किछु हेबे करत। कारणो अछि दू रंगक ढंग। ..जहिया रघुनाथ सुनीताक बीच सम्बन्धक नाओं लेल गेल तहिया दुनूक विचार अपन-अपन रहैन। कारणो छल जे ने रघुनाथ नोकरी करै छला आ ने सुनीते, जइसँ विचारमे बान्ह-छेक पड़ैत। जहिना सुनीता टटके कौलेज छोड़ने तहिना रघुनाथो। ओना रघुनाथ दू-तीन साल सुनीतासँ बेसी उमेरक। सुनीता कौलेजसँ मात्र बी.ए. ऑनर्स केने जखन कि रघुनाथ बी.एस-सी ऑनर्सक संग एम.बी.ए.

सेहो केने। जहिना रघुनाथक पिता-मुनेसरक धारणा रहैन जे नोकरी दू-चारि साल आगूओ-पाछू होइ छै मुदा बिआहोक तँ अपन समए अछि। अपनो तँ बिआहक पछाइते नोकरी भेल, तँए हाथक चूड़ी-ले ऐनाक कोन प्रयोजन। तहिना सुनीताक पिता–मदन मोहन–क धारणा छेलैन। अपनो जिनगीमे तहिना भेल जे प्रशासनिक परीछा पास केला पछाइत ट्रेनिंग पछुआएले छल, जे नोकरीक पूर्ब अवस्था भेल। मुदा दुनूक अपन-अपन परिवारिक स्थितिक कारण रहैन। मुनेसरक परिवारिक स्थिति रहैन जे बिआहक तीन-चारि सालक पछाइत दुरागमन होइ छइ। तैबीच नोकरीक परियास करब। मुदा मदन मोहनक परिवारक विचार-धाराक संग बेवहारिक-धारा सेहो फुटकौर छेलैन। अखन धरि मदन मोहन सोल्होअना माता-पिताक आदेशमे छला। जइसँ दू धारणा परिवारमे नहि जन्म नेने छेलैन जे नोकरी होइते बेटा-पुतोहुकेँ अगुआ नोकरी-ले घर छोड़त। जहिना पतिक अधिकार पत्नीपर आ पत्नीक पतिपर तहिना सासु-ससुरक सेहो ने पुतोहुपर। समैनुकूल खेनाइयो-पीनाइक आ भानसो-भात एते असान तँ भाइए गेल जे घन्टो भरिक काज नै रहल।

दुरागमनसँ पहिनहि रघुनाथकेँ बैंकमे नोकरी भऽ गेलैन। सुनीता सासुरेक ताकमे। बिआहक पछाइत नैहर-सासुरक बीच संक्रमण होइते अछि। मदन मोहन दुनू परानीक स्पष्ट सोच रहैन जे बिआहसँ पहिने धरि सुनीतापर जेते अधिकार छल तइमे आब कम करए पड़त। जँ अपना सभ नोकरीक पक्षमे छी आ ओइठामक (सासुर) विपक्षमे होथि तखन एहेन काज औगता कऽ करबो नीक नहि...।

दुरागमनक पछाइत रघुनाथकेँ एक संग तीन घर सोझमे पड़लैन। पहिल अपन विलासपुरक डेरा, जइमे सभ तरहक सुविधाक अछि। दोसर- राँचीक डेरा मुदा पिता पलामूमे भाड़ाक घरमे रहै छैथ।

तेसर पूर्वजक गाम जे समैक धक्कामे से डोलि-डोलि उखैड़ रहल अछि। केना नै उखड़त? बिआहेमे विदागरी आ विदागरियो केतए तँ जैठाम नोकरी करै छी तैठाम! सासुर तँ पहिनहि छुटल जे रसे-रसे नैहरो छुटिए जाइए, तैसंग कोजगराक मखान आ तिलासराँतिक जड़ौउ-वस्त्र इत्यादि, आ मधु-श्रावणीक हिसाबे केतए।

पत्नीक बेवहारसँ परिचित मुनेसर अपन भार हटबैत रघुनाथकेँ दुरागमनसँ पहिने कहि देने रहथिन- 'बौआ नीक हेतह जे दुरागमनक पछाइत विलासेपुर चलि जइहह। ऐगला छुट्टीमे हमहूँ एबह।'

विलासपुरक तीन कोठरीक डेरा, अतिरिक्त-अतिरिक्त। बैंकसँ वेतन उठा रघुनाथ डेरा आबि पलंगपर रूपैआ रखि वाथरूम विदा होइत सुनीताकेँ कहलखिन-

"जलखै करैक मन नै अछि, केन्टिनेमे कऽ लेलौं। मुदा चाह पीब। जाबे बाथरूमसँ निकलै छी ताबे अहूँ चाहक जोगार करू।"

जैठाम चाह-चीनीक समस्या रहैत तैठाम ने एहेन आदेश पाबि पत्नी अँगैठी-मड़ौर करितैथ, मुदा जैठाम से नहि तैठाम तँ काजे उत्तर होइ छइ। सएह भेल। रघुनाथ अपन कमाइपर अपन जिनगी ठाढ़ करैक प्रश्न उठबैत बजला-

"अहाँक एलापर ई पहिल दरमाहा छी, हम तँ बाहरसँ कमा हाथमे दऽ देलौं, आब अहाँ बाजू जे केना घर चलाएब?"

जिनगीक नक्शा नै बना सुनीता अपन मनक बात उगैल देलैन-

"हमहूँ केतौ नोकरी करितौं।"

पत्नीक विचार सुनि रघुनाथ गुम भऽ गेला। मुदा ऐठाम तेसर अछि के जे गुमी छजतैन। ऐठाम तँ प्रश्नक उत्तर दिअ पड़ितैन। एक संग अनेको प्रश्न रघुनाथक मनमे तड़कैत मेघ जकाँ उठलैन। मरदा-

मरदी डेरासँ निकैलते डरए लगै छी जे बैंकक स्टाफ बुझि कियो आक्रमण ने कऽ दिअए, तहिना ऑफिस आबि थरथराइत रहै छी जे फेड़-फाड़ ने भऽ जाए। खाएर.., ई तँ घरक बाहर भेल मुदा डेरोकेँ सुरक्षित कहाँ देखै छी। सभ किछु रहितो डरौन जकाँ लगैए। तैठाम महिलाकेँ असगरे घरसँ निकलब..?

दोसर, रघुनाथक मनमे ईहो बात उठलैन जे परिवारक स्तर बना ने घरक खर्च निर्धारित हएत मुदा सेहो तँ घरक काजेपर निर्भर करैए। घरक काज यएह ने जे समुचित भोजनक संग वस्त्र, घर आ बाल-बच्चाकेँ पढ़ैसँ लऽ कऽ बिआह-दान आ मौका-मोसीबत (बर-बेमारीसँ लऽ कऽ समाजिक काज) सम्हारै धरि। अपन मनक दौड़मे रघुनाथ परेशान होइत गुम्मी लधने...।

मुदा तँए कि सुनीताकेँ प्रश्न दोहरबैक मन रहलैन। मन वौआइत माता-पितापर चलि गेलैन। पिताजी जिला- स्तरक प्रशासनिक अफसर रहितो पाँच गोरेक परिवारमे आठ दिनपर साए ग्राम खस्सीक कलेजी चाहे तीनटा अण्डा अनै छला आ सभ मिलि खाइ छेलौं। टुकड़ी-टुकड़ी बना-बना हिस्सा पुरबै छेलौं। बच्चेसँ कहियो झूठ नइ बजलौं। कहियो केकरो कोनो चीज नइ छुलिऐ। ओहने आदैत ने अपनो परिवारमे बाल-बच्चाकेँ लगबैक अछि। रघुनाथ कहलकैन-

“अपन की विचार, स्पष्ट करू?”

‘विचार स्पष्ट’ सुनि सुनीता ठमकली। ठमकैक कारण भेलैन जे जेते दरमाहा उठा पिताजी पाँच गोरेक परिवारकेँ नीक जकाँ चलबै छला तेते तँ पतियो कमाइ छैथ, माइयो नोकरी नै करै छली, तखन नोकरीक की प्रयोजन! परिवारो तँ परिवारे छी। जहिना कोनो देशक किरिया-कलाप छै तहिना ने परिवारोक अछि। जे केला पछाइते पूर्ति हएत। जँ पाइयेक पाछू दुनू बेकतीक समए चलि जाएत तँ बाल-बच्चा

आकि परिवार-समाजक बीच सम्बन्ध केना बनत? जखन कि अपना ऐठामक चिन्तनधारामे[10] माए-बापकेँ सिरिफ जन्मदते नहि गुरु सेहो मानल गेल अछि। प्रश्न अछि जे पति-पत्नी मिलि बच्चाकेँ जन्मसँ तीन साल धरि पोसि-पालि कोनो विद्यालयमे दऽ दइ छिऐ, माए-बापसँ कोसो दूर। तैठाम माए-बापक आकर्षण बच्चाक प्रति केते दिन टिकत? तहूमे जे नोकरीक रूप[11] बनि गेल अछि ओ घन्टाक समए किताबक पन्नेमे नुकाएल जाइए। एक तँ ओहुना सभकेँ अपन जिनगीक बेकतीगत काज–शौच क्रियासँ सुतै धरि–ऐछे तैपर काजक वृहत भार सेहो पड़िए रहल अछि। समए गमौने आमदनी तँ बढ़िए जाइए। आमदनीक अनुरूप जिनगी बनबैक इच्छा तँ मनमे अछिए। प्रश्न चौबीस घन्टाक दिन-रातिमे अपन आकि परिवारक फड़ै-फुलैक केते समए बँचैए आ केते दुनियाँक दौड़मे जा रहल अछि। चाहे बेकतीगत जिनगी हुअए आकि परिवारिक, समैनुकूल रस्ता तँ बनबैए पड़त, नहि तँ धारासँ कटि किनछैर लागि जाएब।

बेकतीक निर्माण लेल माने मनुख बनैले बेकतीगत कर्मक आवश्यकता पड़बे करै छै जँ से नै हएत तँ मानवीय संवेदनापर चोट पड़बे करत। तहिना परिवारो-समाजोक अछिए। सुनीतासँ स्पष्ट पुछैक कारण रघुनाथक मनमे अपन परिवार (माए-बापक) आबि गेलैन। परिवार तँ परिवारक लोककेँ बिसवासमे लइए कऽ चलत। तखने परिवारक असल रूप सोझमे पड़त, जइमे बेकतीक समुचित विकास होइ छइ। पत्नीक मनक बात बुझै दुआरे प्रश्न उठौलैन। मुदा जइ परिवारमे वौधिक अनुशासन अछि तइ परिवारक सुनीता, तँए प्रश्नपर ठमैक गेली। दुनूक बकार बन्न। ने रघुनाथ आगू बढ़ि किछु बाजि

[10] अध्यात्मिक सोचमे

[11] काजक रूप

पबैथ आ ने सुनीता। मुदा चिड़ै जकाँ बोलक बदला लोलोसँ तँ काज नहियेँ चलत। लोलो तँ सुग्गा-मेनाक छी। एकटा पाकल तिलकोर-लताम खाइबला दोसर काँचोसँ काँच खाइबला। मुदा यक्ष प्रश्न जेहने रघुनाथक संग तेहने सुनीताक संग सेहो। ..एक पलंगपर बैसल रहितौ जोगिनी जकाँ साए जोजनपर दुनूक मन वौआइत रहलैन। केना नै वौऐतैन? आखिर परिवारक नीब गाड़ैक प्रश्न अछि ने।

अपन गतिए गाड़ी (ट्रेन) चलि रहल अछि, कोणक सीटपर बैसल मुनेसर बिसैर गेला, बेटाक फोनपर जानकारी देनाइ। ईहो थाह नै रहलैन जे कएकटा टीशन पार केलौं। मनमे सुलोचना बहिनक जिनगी नचैत रहैन। आइ जँ आने बहिन जकाँ सुलोचनो बहिन सासुरमे रहितैथ, बेटा-पुतोहु, पोता-पोती रहितैन तँ हमरा रातिकेँ किए चलए पड़ैत। मुदा जँ से नै छैन तँ की हमहूँ बीरान भऽ जइऐन। एक तँ ओहिना भैया-भौजी लगमे रहितो हटल छथिन। तैसंग छोट बहिनो हटले सन अछि तैठाम के देखत वेचारीकेँ? तीनमे एक हम भेलिऐ, मुदा जँ तीनू थोड़बो-थोड़बो कऽ भार उठा लितैथ तँ मोटा तँ हल्लुक भाइए जाइत। भने तँ बेटा कहबे केलक जे केकरो कियो परान नै दइ छै मात्र सेवा धरि करै छइ। तइमे जानि कऽ कोनो खोंट नइ होइ। बिनु बुझल भाइयो सकैए। नजैर पत्नीपर गेलैन-जिनगीक संगिनीक संकल्प लेनिहारि पत्नी सेहो बिछुड़ले जकाँ छैथ, जकाँ की छैथ जे जइ काजक नीविते जा रहल छी आ ओ संग नै छैथ तँ की भेल? मुदा बेटा तँ पीठपोहू अछिए। ..बेटापर नजैर पड़िते मुनेसर हाँइ-हाँइ कऽ जेबीसँ मोबाइल निकालि धरेलैन-

“बौआ, तेज गतिए जा रहल छी, कोठरीमे तँ इजोत अछि मुदा कोठरीक बाहर तेते अन्हार छै जे किछु देख नै पड़ैए जे केतए गेलौं। स्टेशनक ठेकान नै रहल।”

पिताक बात सुनि रघुनाथ कहलकैन-

“कोनो चिन्ता मनमे नै राखू। हमहूँ जगले छी, समए-समैपर जानकारी दैत रहब। अखन कोनो डाक्टर सभसँ सम्पर्क करब उचित नै बुझि रहल छी, तँए किनकोसँ सम्पर्क नै केलौं हेन।”

“ठीक छै, मोबाइल रखि दहक।”

मोबाइल रखिते सुनीता बजली-

“एक तँ अपनो बाबूजी केतेको रोगसँ रोगाएल छैथ तैपर बहिनक ई दशा छैन! केना कऽ सम्हारि पौता?”

सुनीताक बात सुनि रघुनाथ बाजल-

“दोसर उपय?”

रघुनाथक प्रश्नक उत्तर सुनीताकेँ नै फुरलैन। असमनजसमे पड़ल सुनीताकेँ देख रघुनाथ बजला-

“पिताजी धैनवादक पात्र छैथ जे अपन रोगाएल वृद्ध शरीर रहितो सेवा करैले तैयार छैथ। जँ थोड़ो-थाड़ सभ कियो संग देबैन तँ की ओ पाछू हटता। किनौं ने पाछू हटता। ..ओना, जँ पाछूओ हटता मुदा जँ पीठपर रहबैन आ काजक महत देखब तँ हुनका हटनहि की हेतैन। जैठाम तक ओ अगुआ कऽ पहुँचल रहता तैठाम तकक अपनो आ परिवारोक तँ बनले रस्ता भेटत, मात्र ओइ दिशामे आगू बढ़ैक अछि।”

रघुनाथक विचार सुनीताक मनकेँ तेना हौंरलकैन जे विचारक पशे बदैल गेलैन। ..जहिना अखड़ाहापर हारैत खलीफा वा रंगमंचपर पछड़ैत नर्तक, कुश्ती वा मंचक मंचन बदैल दोसर दाओ वा चालि पकैड़ नव दृश्य सृजन करैए तहिना सुनीता पाशा बदलैत बजली-

“बाबूजीक जे दशा छैन ओ माए किए ने बुझि पौलैन?”

जहिना निरुत्तर होइत सुनीता पाशा बदैल लेलैन तहिना सुनीताक प्रश्न रघुनाथकेँ पाशा बदलैले बाध्य कऽ देलकैन। मुदा प्रश्न तँ एहेन सघन भऽ गेल जे बिहिया कऽ जड़ि पकड़ब कठिन अछि। बिना जड़ि भेटने केतबो चिक्कन शब्द किए ने प्रयोग होइ मुदा वस्तु–स्थिति तँ हेराएले रहत! ..एक संग अनेको प्रश्न रघुनाथक मनमे उठि एलैन। माइक खिधांस जाँघ तरक पत्नीकेँ कहब उचित हएत? जँ नै कहबैन सेहो तँ उचित नहियेँ हएत, एक तँ ओहुना पढ़ल-लिखल बुझनुक पत्नी छैथ आन जकाँ जँ चौबन्नियो-अठन्नी अबुझ रहितैथ तँ अँटाबेशो भऽ सकै छल, सेहो नै अछि। दोसर पति-पत्नीक बीच नव सम्बन्ध संगीक रूपमे ठाढ़ भेबे कएल अछि! ..जहिना कोनो छोट गाछक पहिल डारि सुखने-टुटने वा कटने जिनगी भरिक दाग बना दइ छै, तेना जँ भेल तँ कहियो सीना तानि सकब। जखने सीना तानि किछु बाजए लगब आ जँ ओही बातक गोलासँ गोलियौल जाएब तखन छाती छोड़ि लगत केतए! जखने सीनामे गोला भीरत तखने दलदला कऽ करेजमे भूर करबे करत..!

विचित्र स्थितिमे रघुनाथ उलैझ गेला। मनमे उठलैन- जिनगीमे जखन आन संकट अबै छै तखन धर्म ओकरा बँचबैए, मुदा जखन धर्मेपर संकट औत तखन के बँचौत? ..जेना-जेना रघुनाथ प्रश्नक जड़ि तकैथ तेना-तेना संकट बढ़ल चलि जाइत रहैन। अखन धरि माइक देख-रेखमे रहलौं, जेकरा नकारब अनुचित हएत मुदा कोन रूपमे रहलौं ई तँ नकारल नै जा सकैए। ..विचारक गंभीरता रघुनाथक चेहराकेँ तेतेक मलिन कऽ देलक जे लगले पत्नीक प्रति बिसवास रोपब कठिन भऽ गेलैन। एना होइतो छैहे जे पोसल बच्चा कनियोँ सेवा पाबि कलशाए लगैए मुदा रोगाएल आकि दूधकट्टू बच्चाकेँ तँ से नइ होइत, ओकरा कलशबैले जड़िमे मालीकेँ तेलक माली लऽ कऽ बैसला पछाइते आशा जगै छइ। मुदा रघुनाथकेँ से नै भेल, भेल ई जे जहिना

पाँच बर्खक पछाइत भेटल संगी वा परिवार-जनकेँ बिछुड़ैक अन्तिम दिनक मिलाप पहिल दिनसँ मिला आगू बढ़ैए। मनमे अबिते रघुनाथ बजला-

"भने दुनू परानी अपनो सभ छी आ पितोजी गाड़ीमे असगरे हेता, एक तँ दूरक सफर तहूमे असगर आरो गड़ूगर होइ छइ, तँए नीक हएत जे अहीं हुनकासँ गप करू।"

ससुरसँ मुहाँ-मुहीं गप करब सुनीताकेँ अनुचित बुझि पड़लैन। अनुचित ई जे ससुर-पुतोहुक बीच पति होइ छैथ। भऽ सकैए किछु एहेन बात बजा जाए जे उपयुक्त नइ होइ। कारणो अछि। कारण ई अछि जे ऐठाम हम दुनू परानी छी, भरल-पूरल परिवारक बीच छी, मुदा ओ तँ गाड़ीमे असगरे छैथ तहूमे रातिक रस्ता। एक तँ ओहुना बोनो-झाड़मे मूससँ बेसी छुछुनैरे फड़ि गेल अछि, गाड़ी तँ सहजे गाड़ीए छी। जँ कहीं कियो बैगे पार कऽ नेने होनि, जइसँ ने किछु खाइक बँचल होनि आ ने बेमारीक गोटी-दबाइ। ओ तँ बिषमो स्थितिमे भऽ सकै छैथ मुदा पुरुष-नारीक बीच एकटा ओहनो सम्बन्ध सूत्र अछि जे मरदा-मरदी भावहीन अछि, बेटा तँ बेटा भेलखिन। ..विचार मनमे अबिते सुनीता बजली-

"नीक हएत जे अहीं मोबाइलक सम्पर्क करू हमहूँ सुनब?"

सुनीताक बात सुनि रघुनाथक मनमे उठलैन- केकर मन कोन रूपमे कोनो चीज बुझैए ई तँ बजनहि बुझब। जँ हमहीं दुनू बापूत गप करब तँ अपने ढंगसँ ने करब। काजक दौड़मे जेतए धरि आबि चुकल छी तइसँ आगूएक गप ने करब, तइसँ हिनका की भेटतैन। मुदा प्रश्न तँ अछि परिवारिक विचारक। ..बजला-

"देखियौ, जहिना कोनो गाछ बीजसँ होइ छइ जे एक दिस ओ अकास दिसन बढ़ै छै आ दोसर दिस सिर निकैल मुसराइत पताल

दिसन बढ़ै छइ। पतालो दिस ने सिरगर सिर मुसरासँ आरो-आरो सिर सभ निकलै छै आ सिरोसँ सिर निकलै छै, आ तहिना धरतीक ऊपरोक भागमे डारि सभ निकलै छइ। ..जहिना सिरगर डारि गाछेक रूपमे बढ़ैत निकलैए आ माटिक तरक मुसरा शील बनि गाछक ऊपर आबि रूपमे बढ़ैए आ तइसँ दोसर-तेसर डारि सेहो निकलैत रहै छै, तहिना जइ परिवारमे अपना सभ छिऐ ओइ परिवारक पैछला पीढ़ीक सभसँ ऊपर (आगू) हम भेलिऐ आ हमरा पछाइत (पाछू) एक दिस अहाँ भेलिऐ आ दोसर दिस भाए। अहाँ ऐ मानेमे जे हमरा कान्हीक भेलिऐ। अहाँसँ उमेरो भाइक कम छइ। अहाँ पहिने स्कूल धेलिऐ, आगू भऽ दुनियाँक मंचपर एलिऐ, भाए पाछू आएल। तँए देहा-देही सम्बन्ध देखए पड़त।

जहिना हमरा संग पति-पत्नीक सम्बन्ध अछि तहिना भाइक संग दिअर-भौजाइक। तहिना दुनू दियादिनी भेलौं। जहिना छोट दियादिनी बेटी तुल्य होइ छै तहिना ने छोट भाए बेटे जकाँ होइ छइ। यएह ने परिवारिक सम्बन्ध अछि। तँए अखन पिताजी जइ स्थितिमे हेता तइसँ हटि आन बात पुछब हमरा-ले उचित नइ भेल। जँ कहीं काल्हि हमरो जाइक जरूरत भऽ गेल तँ भाए (छोट भाए) ऐठाम अहूँ चलि जाएब। जाबे धरि बहराएल रहब ताबे तक अहूँ रमाकान्त ऐठाम रहब। जखन-जखन गप करैक समए भेटत तखन-तखन अपनो दुनू दियादिनीक परिवारक आ अपने परिवारक गप-सप्प करब। गप-सप्प की करब जे सभ मिलि विचार करब जे पिताजी केतए धरि हमरा सभकेँ पहुँचा देलैन आ आगू हम सभ केना बढ़ब।”

एक संग रघुनाथक मुहसँ केतेको प्रश्न उठि गेल। मिथिलांगना सुनीता एके धारक अनेको घाट देख वौआए लगली जे कोन घाट पहिल स्नान कएल जाए। तैबीच मोबाइलक घन्टी बजल। घन्टी

बजिते रघुनाथ उठौलैन।

मोबाइल उठैबते रघुनाथकेँ असिरवाद दैत मुनेसर पुछलखिन-

"बौआ, जगले छी?"

'जागल' सुनि रघुनाथकेँ किछु जवाब नै भेट सकलैन। खखास केलैन। खखास सुनि पिता बजला-

"बौआ, करीब जसीडीह आबि गेल छी। अखन धरि गाड़ीमे एको बेर उकासियो ने भेल हेन। ओना दबाइयो आ पानियोँ रखने छी, जखने खाहिंस हएत तखने खा लेब, मुदा किछु छिऐ तँ गाड़ीए छिऐ। भुमकमक समए धरती डोलने देह-हाथ तँ डोलबे करै छै तहिना ने गाड़ियो छी।"

पिताक बात सुनि तोष भरैत रघुनाथ कहलकैन-

"बाबूजी, भोर तँ भाइए गेल, फरिच जकाँ सेहो भऽ गेल, ओमहर केहेन बुझि पड़ैए।"

एक तँ खिड़की-केबाड़ बन्न तैपर बिजलीक इजोत तँए कोठरीक भीतर तँ दिने जकाँ बुझि पड़ैत मुदा गाड़ीक बाहर धुनि जकाँ रहने अन्हराएले। सर्द हवा अबै दुआरे मुनेसर खिड़की खोलि बाहर नै देखलैन। एक तँ तेज गतिए ट्रेन अछि तैपर जँ अहिना पुरबो-पछियाक गति होइ तखन तँ जाबे खिड़की खोलि देख बन्न करब ताबे खिड़की मुँहक हवा तँ सर्द कइए देत। बाहर देखब ओते खगतो नहियेँ अछि। अखन तँ अदहासँ कनियेँ आगू बढ़लौं हेन, कहुना-कहुना तँ पान-सात घन्टाक रस्ता बाँकीए अछि।

बजला-

"बौआ, दस बजे तक दरभंगा पहुँच जाएब।"

'दरभंगा' सुनि रघुनाथ पुछलकैन-

“दरभंगासँ केना जेबइ। सुनै छी सकरीमे गाड़ी नै रूकै छै, तखन तँ दरभंगे उतरए पड़त किने?”

“हँ, से तँ दरभंगे उतरए पड़त। मुदा दोसर उपैयो तँ नहियेँ देखै छी। जँ आगू बढ़ि जाएब तँ मधुबनीमे गाड़ी रूकत। मधुबनीसँ नीक दरभंगे उतरब हएत। एक तँ मधुबनीसँ सवारीक रस्ता नीक नै अछि, तेते जरकिन अछि जे देह-हाथ तोड़ि दइए। तैसंग सवारियोक मेल नीक नहियेँ छइ। मुदा दरभंगासँ से सभ नीक अछि। बड़ी लाइनिक गाड़ी जाइयोनगर जाइए आ बिरौलो जाइए। एक-आध घन्टाक पछाइतो जँ गाड़ी हएत तँ गाड़ीए-सँ सकरी चलि जाएब आ ओइठामसँ निर्मलीक गाड़ी पकैड़ लेब। किछु अछि तँ ट्रेन सभसँ नीक सवारी अछि। दरभंगेमे नहा-धो सेहो लेब आ किछु खाइयो लेब। जँ से नै हएत तँ दबाइक बेरे हूसि जाएत।”

पिताक आशा भरल बात सुनि रघुनाथ मने-मन खुशी भेला। खुशीक कारण ई जे कोनो काज करैले जखन कियो विदा होइए तखन काज पहिनहि कहि दइ छै जे जेते मनसँ करबह से तेते पेबह। ठढ़िया प्रणाम आ छठिक हाथी, पानिक किनछैरमे बैसल रहि जाइए। मुदा मुनेसरक काजक बीच कर्मठता झलकैत। जैठाम कर्मठता रहत तहीठाम ने सफलतो रहत...। बाजल-

“बाबूजी, आब हमहूँ ओछाइन छोड़िए दइ छी। फरिचो भाइए गेल। दरभंगा पहुँचते फोन करब।”

रघुनाथक बात सुनि मुनेसरक देहक थकान जेना मेटा गेलैन। मेटा ऐ दुआरे गेलैन जे मन दरभंगा स्टेशनक बाथरूमे सँ निकैल अपनाकेँ दोकानपर खाइत बुझि पड़लैन। मने-मन गोटीक मिलान करए लगला जे तीनू गोटी एकबेर खेने चौबीस घन्टा निचेन भऽ जाएब। ताबे गामो पहुँचिये जाएब। गाम तँ गाम छी, नै कियो सेवा

रूपमे औत तँ चारि गोरेकेँ भरि दिनक बोइने दऽ देबइ। तँए कि काज छोड़ि देब। बजला-

“बौआ, आइ बुझि पड़ैए जे सेवा-निवृति नै भेलौं हेन। भलेँ स्कूलसँ भऽ गेलौं मुदा परिवारो तँ छोट पाठशाला नहियेँ होइए। चारि भाए-बहिनक बीच ‘सुलोचना बहिन’ सभसँ जेठ छैथ जिनका परिवारसँ लऽ कऽ सासुर धरि ठोकरा जिनगीकेँ नीरस बना देलकैन, सोझहामे मृत्युक सिवा किछु शेष नै बँचलैन, तैठाम जँ अपनाकेँ पबै छी तँ ऐसँ बेसी जिनगीमे की करब। जिनगी जँ जिनगी पकैड़ चलत तँ जिनगी छोड़ि आरो भेटबे की करतै। जिनगी भेटल, सभ किछु भेटल।”

पिताक अह्लाद सुनि अह्लादित होइत बेटा कहलकैन-

“बाबूजी, मनमे करवनो ई नहि आनब जे खर्च-बर्च दुआरे काज नइ कऽ पाबि रहल छी। हमहूँ तैयार भऽ कऽ बैंको आ डाक्टरो सभसँ सम्पर्क बना लइ छी। अहूँ दरभंगा उतैरते जानकारी देब।”

“बड़बढ़ियाँ, मोबाइल रखि दहक।”

भोरक भौड़ाएल भौंरा जकाँ रघुनाथकेँ देख सुनीता अवसरकेँ हाथसँ नै गमा टिपली-

“वृन्दावनमे आगि लगल कोइ ने मिझाबै हौ..!”

सुनीताक प्रभात बेल सुनि रघुनाथ विस्मित भऽ गेल। जहिना चकेबा परिवार-समाजसँ भगौल बहिन लेल माए-बाप सभकेँ छोड़ि पीठपोहू भेला तहिना ने पितोजी भेल छैथ। की माएकेँ उचित भेल जे संगी नै भेलखिन। हो-ने-हो जँ कहीं रस्ते–पेरे हुनका किछु भऽ जाइ छैन तँ यएह भेल अर्द्धांगिनी, जिनगीक आधा। मुदा पिता-ले जे बनि सकत तइमे पाछू हटब बिसवासघात भेल। हो-ने-हो जँ दीदीक सेवा-ले माइयो बेपाट हेती तँ हुनका किनौं नै नीक कहबैन। जइ परिवारमे

जन्म भेलैन तइ परिवार दिस बेसी झूकल रहै छैथ, रहथु। तइसँ परिवारमे कोनो खास बधो तँ उपस्थित नहियेँ होइए। मुदा जखन सोझहा-सोझही दुनू परिवारक बीच जँ कोनो प्रश्न उठैत अछि आ माए सासुरसँ नैहर दिस झुकै छैथ तँ अनुचित भेल। दुनूक बीच कोनो तरहक अनोन-बिसनोन आकि मधनोने-मिठनोन नइ हौउ से नीक बात मुदा जैठाम परिवारक जड़िक प्रश्न रहत तैठाम तँ विचारए पड़त किने जे केकरा जड़िमे पानि ढारल जाए।

दिनक सबा दस बजे गाड़ी दरभंगा स्टेशनमे पहुँचल। निर्मली-सकरीक गाड़ी जकाँ नहि जे जहिना चढ़ैकाल धक्कम-धुक्का आ पॉकेटमारी तहिना उतरैकाल। ओना मुनेसरक मनमे उठलैन जे गाड़ीए-सँ रघुनाथकेँ फोन कऽ दिऐ मुदा फेर मन बदैल प्लेटफार्मेक भेलैन। गाड़ीसँ उतैरते रघुनाथकेँ कहलखिन-

“बौआ, दरभंगा पहुँच गेलौं। एके घन्टाक तरपटमे बिरौलक गाड़ी अछि तइसँ सकरी चलि जाएब। अखन बेसी बात नै करब। घन्टेक भीतर तैयारो होइक अछि।”

बैंक आ ऑफिसक काज रोकि रघुनाथ मने-मन पिताक रूप देखए लगला। एक तँ रोगसँ रोगाएल तैपर उमेरक रोग सेहो छैन्हे, मुदा काज केहेन करैक बाट धेने छैथ!

जितेन्द्रीक इन्द्री जहिना क्रियाशील होइत तहिना मुनेसरक सेहो रहैन। लगले बैग उठा शौचालय गेला। बैग रखि अपन क्रिया-कर्म करैत, कॉनटरपर दू-टकही दैत प्लेटफार्मसँ निकैल होटल पहुँचला। अधपेटा खा दबाइ खेलैन। हिसाब दैत, टिकट कटा पुन: प्लेटफार्मपर पहुँच गेला। गाड़ी लगले रहै, जा कऽ बैसला। बसिते साँस छोड़लैन। ओना सकरीसँ दुनू सुविधा अछि। गामो लगे अछि। जे जरूरी बुझि पड़त से पकैड़ लेब। भने दिन-देखार अछिए। घरपर जा वस्तु स्थिति

देखैत जेना-जे हएत से करब।

गाड़ी खुजैसँ पहिने गामेक राधाचरण सेहो धड़फड़ाएल ओही डिब्बामे पहुँचल। जगहक सिकेस देख मुनेसर राधाचरणकेँ कहलखिन-

"राधाचरण ऐठाम आबह।"

अपने मुनेसर कनी घुसैक राधाचरणकेँ बैसबैत पुछलैन-

"सुलोचना बहिनक की स्थिति छैन?"

राधाचरण-

"सात दिनपर दरभंगासँ जा रहल छी। नीक जकाँ नै बुझल अछि। उड़न्ती समाचार सुनलौं।"

मुनेसर-

"किए सात दिनपर जाइ छह?"

राधाचरण-

"छोटकी बहिनकेँ पेटक ऑपरेशन भेल हेन।"

आगू बात नै बढ़ा मुनेसर बजला-

"ऑपरेशन सफल भेल किने?"

"हँ-हँ, खर्चा तँ बहुत भेल। परसू टाँका कटत। किछु रूपैआ-पैसाक भाँजमे जाइ छी। फेर काल्हि घुमब।"

राधाचरणक काजमे मुनेसर अपनो काज देखलैन। काज ई देखलैन जे जखन बहिनक ऑपरेशन भेल तखन माइयो आएले हेतैन। तैसंग एकटा-दूटा आरो समांग हेबे करतै। अपने ने अनाड़ी रहब मुदा जखन राधाचरणो काल्हि घुमबे करत तखन अपने हिसाबसँ समए[12]

---

[12] बहिनकेँ दरभंगा लऽ जाइक समए

बना लेब। कम-सँ-कम एते तँ हेबे करत जे समांगे जकाँ राधाचरण गामेपर सँ जा रहल अछि, जँ कहीं समैपर पाइक भाँज नै हेतै तँ कौल्हुका बदला परसूओ घुमि सकैए। किएक तँ काजपर काज ठाढ़ अछि। टाँका परसू कटतै। परसू तक पहुँचबाक समए तँ छइहे। मुदा अपना तँ से नै अछि भऽ सकैए जे आइयो घुमए पड़ए। ..मने-मन मुनेसर हिसाब बैसबए लगला। गुन-धुन करैत मनमे उपकलैन, आब कि कोनो ओ जमाना रहल जे मास-मास, दू-दू मासपर पोस्ट ऑफिससँ पाइ भेटै छइ। आब तँ जेतए जाउ तेतए बक्सा-पेटी संगे रहत। तेहेन ने ए.टी.एम. भऽ गेल अछि जे जखने खगता तखने पूर्ति होइए। सामंजस्य करैत मुनेसर बजला-

"राधाचरण, अखन तँ तूँ सगरे अस्पताल घुमैत हेबह?"

अपन प्रशंसा सुनि राधाचरणक मनमे खुशी उपकल। खुशी उपैकते बड़बड़ए लगल-

"काका, साते दिनमे की सभ ने देखलौं। एकटा नवका दुनियाँ देखलौं।"

'नव दुनियाँ' सुनि मुनेसर बजला-

"की नव दुनियाँ देखलह? कोनो कि आइए अस्पताल बनल जे नव देखलह।"

जहिना चुल्हिपर चढ़ल बरतनमे निच्चासँ आँच लगला पछाइत बरतनक पानि उधियाए लगैत तहिना राधाचरणक मन उधियाइत। मुदा पाइक चिन्ता मनकेँ दबैत। मुँहक सुर्खीसँ मुनेसर बुझि गेला जे पाइक मारि वेचाराक मनकेँ मारि रहल छइ। गरजू अखन जेहेन ई अछि तेहने तँ अपनो छी! से नइ तँ किए ने अन्हरा-नेंगराक दोस्ती जकाँ हाथ बढ़ाबी...।

बजला-

“केते पाइक खगता छह, राधाचरण?”

ओना लोकक बीच एहेन धारणा बनि गेल अछि जे दुनियाँ-जहानक सभ बात बाजत मुदा लेन-देनक बात छिपा कऽ रखैए। मुदा खगता एहेन परिस्थिति पैदा करैए जे छिपारोकेँ देखार काइए दइ छइ। राधाचरण बाजल-

“काका, हम तँ संकोचे मुँह नै खोललौं। किएक तँ एक तँ अहाँ सेने ओहन सम्बन्ध नै अछि, दोसर अहूँ तँ अखन विपैतेमे पड़ल छी।”

राधाचरणक बात सुनि मुनेसर गुम भऽ गेला। हमरा परिस्थितिकेँ आँकि बाजि रहल अछि जे अहूँ विपैतेमे छी! बजला-

“जखन जिनगी अछि तखन किछु-ने-किछु आपैत-विपैत एबे करत, तइले लोक घबरा जाएत तँ काज चलतै। जानियेँ कऽ तँ अन्हार घर साँपे-साँप अछिए। मुदा ओहीमे ने सपहरिया अपन शिकारो खेलाइए।”

मुनेसरक बात सुनि राधाचरण थकथका गेल। बाजल-

“काका, अखन धरिक सभ काज सम्हारि नेने छी मौका-मोसीबत दुआरे माइयक हाथमे पान साए दइयो कऽ आएल छिऐ। सभ किछु मिला डेढ़ हजारक खर्च आगू अछि।”

‘डेरहे हजार’ सुनि मुनेसरकेँ हल्लुके बुझलैन। बजला-

“अच्छा पाइक चिन्ता मनसँ हटा लएह।”

पाइक चिन्ता हटिते जहिना फलकैत फूलसँ भौंरा फुड़फुड़ा कऽ निकैल उड़ैए तहिना राधाचरण बाजल-

“काका, कहए लगलौं जे नवका दुनियाँ देखलिऐ, से कहै छी। जहिना असमसान घाटक लीला अछि तहिना अस्पतालक लीला अछि। एक गोरेकेँ कनैत देखलिऐ, पुछलिऐ तँ कहलक जे खेत बेच

कऽ बेटाक इलाज करबए एलौं, डाक्टर ऐठाम पहुँचबो ने केलौं आकि तइ बिच्चेमे तीनटा बदमास आएल आ रूपैआ छीनि लेलक। मुँह तकैत रहि गेलौं। के हमर बात पतियाएत। लगमे थाना, जेरक-जेर लोक तैठाम एना भेल!”

मुनेसरक मन सुलोचना बहिनपर टँगल तँए दोसर बात कानमे झड़ जकाँ बुझि पड़ैन। बजला-

“अनेरे किए वौआइ छह राधाचरण। ठन्का ठनकै छै तँ कियो अपना माथापर हाथ दइए। ई कहह जे टुटल हड्डीक इलाज कोन-कोन डाक्टर करै छैथ?”

मुनेसरक बात सुनि राधाचरण गुम भऽ मने-मन विचारए लगल। इलाज तँ अस्पतालोमे होइ छै आ प्राइवेटोमे होइ छइ। मुदा जहिना ‘अनेर गाइक धरम रखबार’ होइ छै तहिना अस्पतालोक गति अछि। कियो फीसक दुआरे काजमे बेइमानी करैए तँ कियो दबाइए बेच लइए। कियो कमीशनक भाँजमे काज बिगाड़ैए तँ कियो खेनाइए बेच लइए। तइसँ नीक सुविधा प्राइवेटमे छइ। मुदा ओ तँ पाइबलाक छी एकक तीन लगै छइ। बाजल-

“काका, जेहेन पाइ तेहेन इलाज। की कहब!”

राधाचरणक बात सुनि मुनेसर तारतम करए लगला जे की नीक। मुदा जहिना बिनु हवोक कोनो आम गाछसँ धब-दे खसैए तहिना मनमे खसलैन। इलाजो तँ इलाज छी। ई तँ नहि जे साए बर्खक बुढ़क पाछू घर-घराड़ी बेच लगा देब। जँ से लगा देब तँ ऐगला पीढ़ीमे जँ ओहने रोग लगि जाए तखन की कएल जाएत मुदा अछैते सम्पैते इलाज नइ होइ, सेहो तँ नीक नहियेँ हएत। खाएर जे हौउ, जहाँ धरि सम्भव हएत तहाँ धरि मनसँ कसैर नै करब। बजला-

“राधाचरण, जँ आइए पाइक जोगार भऽ जेतह तँ आइए घुमि

जेबह?”

उत्सुक होइत राधाचरण बाजल-

“आइए किए कहै छी, अखने जँ भऽ जाए तँ ऐगला टीशनमे उतैर दोसर गाड़ी पकैड़ लेब। कहुना भेल तँ बेमारीक अवस्था भेल किने। कखन कि भऽ जेतइ तेकर कोनो ठेकान छै, से तँ रहनहि प्रतिकार हएत।”

राधाचरणक विचार सुनि मुनेसरक मनमे उठल, पकड़ाएल संगी छुटि जाएत। से नहि तँ गाम पहुँच कम-सँ-कम सुलोचना बहिनकेँ देख लेब उचित हएत। बजला-

“गाम गेलासँ परिवारोक हाल-चाल बुझि लेबह, नीक हेतह ने। कहै छह जे सात दिन गाम छोड़ना भऽ गेल।”

राधाचरणक दहलाएल मन आरो दहैल गेल। बाजल-

“हँ से नीक हएत। गामक आरो समाचार सभ बुझि लेब। एक लपकन खेतो-सभ देख लेब।”

अपन सुढ़ियाइत काज देख मुनेसर बजला-

“अच्छा, एकटा कहह जे गाममे गाड़ी-सवारी समैपर भेट जाएत किने?”

“गाड़ी-सवारीक कोन कमी छइ। तखन तँ समए-कुसमए कनी दब कि उनार भाइए जाइ छइ। जखन खगता हएत तखन गाड़ी भेटत। अहाँकेँ नहि ने बुझल अछि, हमरा तँ सभ गाड़ीबला सभसँ चिन्हारे अछि। घरेपर बैसल-बैसल सभ काज भऽ जेतइ।”

स्टेशनसँ संगे दुनू गोरे गाम पहुँचला। गाम आबि राधाचरण अपना ऐठाम गेल आ मुनेसर अपना ऐठाम। ..आँगन पहुँचते मुनेसर देखलैन जे ओसारक ओछाइनपर सुलोचना बहिन पड़ल कुहैर रहल

छैथ। सिरमा लग लोटामे पानि राखल अछि। सौंसे देह झाँपल, खाली मुँहटा उघार छैन। दोसराइत कियो ने। ..मुनेसरक मनमे उठलैन जे सम्बन्धो तँ दू रंगक होइए। ओना सम्बन्धक अनेको डारि-पात छै मुदा मोटा-मोटी दू रंगक तँ अछिए। एक ओ भेल जे कुल-खनदान, दियाद-वादक होइए आ दोसर उपकारक होइए। अखुनका समैमे केकरा एते छुट्टी छै जे अपन काज छोड़ि दोसरकेँ देखत। सभ अपने पाछू बेहाल अछि। ने बाप-माएकेँ बेटा-पुतोहु देखैए आ ने बेटा-पुतोहुकेँ बाप-माए। ओना पढ़ै-लिखैसँ लऽ कऽ बिआह-दान धरि बाप-माए बेटाकेँ देखते अछि भलेँ कमाइ-खटाइ बेरमे छुटि जाए मुदा से नहि। जखने बेटा-बेटीक जन्म होइए तखने सँ माए अपन सुन्दरता दुरि होइ दुआरे अपन दूध नै पीआ बजरूआ दूध पिआबऽ लगैए। तैसंग कनियेँ टेल्हुक भेला पछाइत आवासीय विद्यालयमे नाओं लिखा भर्ती करा दइ छइ। जइसँ मौके-कुमौके सोझहा-सोझही भेँटो-घाँट होइ छइ। जँ अहिना हएत तँ किए केकरो कियो चिन्हत। मुदा उपकारक सम्बन्ध से नइ होइ छइ। एक तँ ओहुना लोकक आँखिमे पानि रहिते छै जे फल्लाँ बेरपर पाइसँ आकि समांगसँ ठाढ़ भेल रहए तँए अपन कर्ज चुकाएब उचित अछि। ..मुनेसरक मन दुनू दिससँ ओझरा गेलैन। गाममे नै रहने समाजक बीच किछु कएल नै अछि। दियादो-वाद तेहेन जे भोज तँ खाइयो लइए मुदा छुतका-केश कटबैमे नाकर-नुकर करिते अछि।

सुलोचना बहिन लग मुनेसर बैस बजला-

“बहिन! बहिन! हम मुनेसर! एलौं!”

मुनेसरक अवाज सुनि सुलोचना बहिन आँखि खोलि उठए लगली। पेटसँ ऊपरक अंग तँ डोललैन मुदा डाँड़क निच्चाँ सगबगेबो ने केलैन। तहूमे फुलि सेहो गेल रहैन। उठैक प्रक्रिया देख मुनेसर बजला-

“नै उठि हएत, सुतले रहू।”

मनमे एलैन जे पहिने पितियौत समांग सभकेँ बजा पुछिऐन आकि पहिने बहिनेक बात सुनी। पहिने बहिनक बात सुनब उचित बुझि बजला-

“बहिन, की सभ भेबो कएल आ होइतो अछि?”

बाढ़िक लहैरमे जहिना कोनो चुट्टी वा आन जन्तु नान्हियोँ-टा सहारा पाबि खुशीसँ खुशीया जाइत तहिना सुलोचना बहिन अन्तिम सहारा पाबि खुशी भेली। खुशी एते भेली जे मने दहला गेलैन। बजली-

“बच्चा मुनेसर, जे भेल से तँ भेबे कएल आ जे होइए से होइते अछि मुदा तूँ गाड़ीक झमारल छह पहिने किछु खा लएह। चाहो बना कऽ दैतियह से तँ समांगे खसल अछि।”

सिनेहासिक्त बहिनक बोल सुनि मुनेसर विस्मित भऽ गेला। मुदा अपनो आगू-पाछूक बाट बन्न देख थकथका गेला। थकथकाइत मन हारैत जिनगी देख, अन्तिम साँस गनैत बजला-

“बहिन, जेते दिन सोझहा-सोझहीक दर्शन अछि से तँ नीके कि अधले रहबे करत, मुदा अपनो हूबा करू आ जेते पार लगत से करबो करब।”

दहलाइत मन सुलोचना बहिनक, मुनेसरक बात नीक जकाँ सुनबो ने केलैन, मुदा गपक विराम देख बजली-

“बच्चा, ने एको बेर दर-दियाद देखए अबैए आ ने एको परानी जुगेसर। बड़ आशा छल जे बेर-विपैतमे कविता[13] ठाढ़ हएत। मुदा ओहो एको बेर घुमि कऽ नै तकलक। तखन तँ दुनियाँमे रहल के जेकर मुँह देख जीबो करब, तइसँ नीक जे भगवान जगहे दैथ।”

---

[13] छोटकी बहिन

सुलोचना बहिनक टुटैत दुनियाँक सम्बन्ध देख मुनेसर बजला-

“दुनियाँमे अहिना सभ दिनसँ होइत एलैए, होइत रहतै। तहीले ने लोक नीक कि अधला कऽ लइए। अच्छा पितियौतो सभसँ कनी गप कऽ लइ छी आ अखने डाक्टर ऐठाम लऽ जाएब।”

कहि मुनेसर पितियौतक दरबज्जा दिस बढ़ला तँ मरदा-मरदी कियो भेँट नइ भेलैन। तही बीच राधाचरण पहुँचल। राधाचरणकेँ देखते मुनेसर कहलखिन-

“राधाचरण, कनी झंझारपुर चलू। अहूँक काज रस्तेमे कऽ देब। झंझारपुरमे बहिनकेँ देखा, जेना जे नीक बुझि पड़त तेना से करब।”

मुनेसरक बात सुनि राधाचरण बाजल-

“काका, गाड़ियोबलाकेँ कहि दइ छिऐ जाबे ओ औत ताबे गामपर सँ तैयारो भेल अबै छी।”

गाड़ी अबिते राधाचरण जनिजाति सभकेँ चरियबैत कहलकैन-

“चारि-पाँच गोरे उठा कऽ चढ़ा दियौन।”

मुदा बगलमे ठाढ़ मुनेसरक मनमे रंग-बिरंगक प्रश्न उठि गेलैन। जँ मुँह खोलि किनको संग चलैले कहबैन तँ पुरुखक नाओं लगा बहन्ना करबे करती, तखन? बजला-

“राधाचरण, परिचरजा करैमे जनिजातिक जरूरत हएत, से..?”

मुनेसरक बात सुनिते राधाचरण बाजल-

“काका, चिन्ता किए करै छी। अस्पतालमे नर्स सभ रहिते अछि। तइले काज रोकब नीक नहि।”

जहिना मुनेसर राँचीसँ आएल रहैथ तहिना बैग समटले रहैन। तैयार होइक प्रश्ने नहि, तैयारे रहैथ। हाथे-पाथे तीन-चारि गोरे पकैड़ सुलोचना बहिनकेँ गाड़ीमे चढ़ौलैन।

ओना झंझारपुरमे सरकारियो अस्पताल अछि आ प्राइवेटो इलाज चलिते अछि। सरकारी अस्पतालक कियो माए-बाप ऐछे नहि। भगवाने भरोसे चलैए। बाटमे मुनेसर राधाचरणकेँ पुछलखिन-

"सभसँ नीक डाक्टर के छैथ?"

नीक डाक्टर सुनि राधाचरण अकबका गेल। नीक-अधलाक विचार तँ ओइठाम होइए जैठाम एके-विभागक अनेको डाक्टर रहैए मुदा जैठाम सभ बेमारीक डाक्टरो फुटा-फुटा नै अछि तैठाम केना नीक-अधला बुझब। तहूमे हड्डी रोगक तँ लऽ दऽ कऽ एके गोरे छैथ तैठाम केना नीक-अधला बुझब। तखन तँ जएह छैथ सएह नीक। नइ मामासँ कनहे मामा नीक किने। बाजल-

"काका, ऐठाम जे राँची जकाँ आकि दरभंगा-पटना जकाँ तकबै तइसँ काज चलत। ऐठाम तँ टुट-फाटक एके गोरे इलाज करै छैथ, दोसर ठाम जइए कऽ की हएत?"

राधाचरणक बात सुनि मुनेसर मने-मन विचारलैन तँ दमगर बुझि पड़लैन। दोसर उपय की अछि। तहूमे कोनो जरूरी अछि जे जँ एको गोरे छैथ तँ अधले छैथ। नीको भऽ सकै छैथ। तखन तँ एकटा कमी डाक्टरोमे छैन्हे, जे जेहो रोग परेखमे नै आएल ओहू रोगीकेँ पकैड़ घिसिएबे करै छैथ। खाएर जे हौउ, अपनो तँ सोलहन्नी चौपट्टे नै छी, नीक कि अधला देखबे करब।

डाक्टर ऐठाम पहुँचैत-पहुँचैत गोसाँइ डुमि गेल। टहलैले डाक्टर रमेशो चलि गेल छला। मुदा गाड़ी पहुँचते पत्नी जानकारी देलखिन। डाक्टर रमेश लगले पहुँचला। पहुँचते सुलोचना बहिनकेँ देखलखिन। देखते बजला-

"मास्सैब, जेते ओजारक जरूरत पड़त तेते नै अछि। नीक हएत जे दरभंगा लऽ जइऐन।"

दरभंगा सुनि मुनेसर मने-मन तारतम करए लगला जे एक संग केतेको समस्या अछि! सोझहे होलो-लोलो करैत चलि जाएब आ ओइठाम सम्हारल नइ हुअए तखन की करब। दरभंगा गाम थोड़े छी जे लाजो-पछे लोक मदैत करत। अपने असगर छी, तहूमे नीक जकाँ बुझल गमल नै अछि। ई तँ धैनवाद राधाचरणेकेँ दी जे एतबो मदैत केलक। मुदा रोगीक जे दशा अछि ओहो राँची-पटना लऽ जाइबला नै अछि। गाड़ियो-सवारीक असुविधा अछि। एन-एच बनने पटनाक तँ भाइयो गेल मुदा राँचीक तँ नहियेँ भेल अछि। छोटकी गाड़ीबला एते दूर जाइयोसँ हिचकिचेबे करत। जँ पटना जाइले तैयारो हएत तँ जे समस्या (समांगक) दरभंगामे अछि से तँ पटनोमे हेबे करत। ..काज भरियाइत देख मुनेसर राधाचरणकेँ पुछलाखिन-

"राधाचरण, हमरा की असान हएत?"

मुनेसरक प्रश्न सुनि राधाचरण पेसो-पेसमे पड़ि गेल। जहाँ धरि बनि पड़ल संग देलिऐन। अपनो बहिनक ऑपरेशन भेल अछि, तेकरो छोड़ब उचित नहि। बेमारी बेमारी छी, कखन की भऽ जाएत तेकर कोन ठेकान। जँ हम भार लेबैन तँ पार लगाएब कठिन भऽ जाएत। एक संग केरा-दहीक भार कियो थोड़े उठा सकैए। जखन उठबे ने करत तखन चलत केना। एकटा भेल कसताराक दही दोसर भेल बागनरक घौर। ठढ़कानर जकाँ छीपक मुँह केतौ आ करीनक मुँह केतौ रहत! मुदा तइसँ की! मनुख तँ मनुख छी, नीक बात सभकेँ प्रिय लगै छइ। ओना नीकोक अनेक रूप छै मुदा से नहि काजक नीक, नीक भेल। ..काजकेँ ठेकनबैत राधाचरण बाजल-

"काका, ऐ देहक काजे की छै, जगरनाथ आ केदारनाथ नीक रहितो दुनू दू दिस अछि। एकटा पूब अछि आ दोसर पच्छिम। किम्हरो तँ एके दिस जाएब। एकर माने ई नहि ने भेल जे दोसर अधला भेल।

हमरो तँ अहाँ देखते छी।”

राधाचरणक बात सुनि मुनेसर मने-मन विचारए लगला जे जहिना बहिन हमर तहिना तँ अपनो छइ। तहूँमे दुनियाँक बोनमे अपन सम्बन्ध आ भूमि सेहो अछिए। तखन जहिना सुलोचना बहिनक भार हमरा ऊपर अछि तहिना तँ राधाचरणोकेँ छइ। तहूमे सुलोचना बहिन अस्सी बर्ख पार कऽ गेल छैथ जखन कि राधाचरणक बहिन कुमारिये अछि। जे दुनियाकेँ किछु ने अखन धरि देखलक हेन। उचित हएत जे राधाचरणकेँ अपन काज करैले छोड़ि दिऐ। अखन धरि वेचाराक जान भरियाएले छै तँए भऽ सकैए जे बेबस हुअए। से नहि तँ पहिने राधाचरणकेँ रूपैआ दऽ देब उचित हएत। जखन ओकरो काज सुढ़िया जेतै तखन देखैयोक अवसर भेटत जे आब ओ कि करैए। काज छोड़ि चलि जाइए आकि काज सुढ़िया कऽ जाइए। कहलो गेल छै दुखमे सुमिरन सभ करे...।

पैछला जेबीसँ पर्श निकालि मुनेसर डेढ़ हजार रूपैआ दैत राधाचरणकेँ पुछलखिन-

“काज सम्हैर जेतह आकि आरो खगता छह?”

ओना अखन धरिक हिसाब राधाचरणक डेरहे हजारक छल मुदा कोट-कचहरी आ अस्पतालक हिसाब अनठिया-ले कनी उकड़ू होइते अछि। आएल लक्ष्मीकेँ हाथसँ छोड़ब नीक नहि बुझि राधाचरण बाजल-

“काका पान साए जँ आगरे कऽ दऽ देब सेहो नीके हएत?”

राधाचरणक बात सुनि मुनेसरक मनमे उठलैन, खगल लोककेँ अहिना होइ छइ। मुदा जखन पुछि देलिऐ तखन नहियोँ देब नीक नहियेँ हएत। दू हजार रूपैआ पूरा कऽ दैत मुनेसर बजला-

“आब तँ कोनो उलझन नहि ने रहतह?”

कलियाएल फूल जकाँ मुस्की दैत राधाचरण बाजल-

“काका, आब तँ परसू अपन रोगीकेँ घर पहुँचा अहाँ जेतए रहब तेतए पहुँच जाएब। रस्तोक भाड़ा भाइए गेल।”

राधाचरणक बात सुनि मुनेसरकेँ ग्लानि भेलैन। ग्लानि ई भेलैन जे एक-सँ-अधिक वस्तु मिलौला पछाइत जहिना खिचड़ियो आ खीरो बनैए मुदा दुनू एक तँ नइ भेल।

◌

शब्द संख्या : 5554

5.

डाक्टर रमेशक बात सुनि मुनेसर मने-मन गर अँटबए लगला जे कोनो धरानी सुलोचना बहिनकेँ लऽ कऽ जे राँची पहुँच जाइ छैथ तँ सभसँ नीक हएत। राँचीक गाड़ी काल्हि आठ बजे रातिमे दरभंगासँ अछि। तैबीच भरि दिनक बात रहल। गाड़ीमे बुझल जेतइ...।

बजला-

“डाक्टर साहैब, राँची पहुँचै तकक ओरियान अहाँ कऽ दिअ।”

मुनसेरक बात सुनि डाक्टर अपन भार कम होइत देख बजला-

“इन्जेक्शन, दबाइ दऽ दइ छिऐन काल्हि चारि बजे तक एतै अँटैक जाउ। सभ बेवस्था अछिए। भरि दिनक घर भाड़ा आ दबाइक खर्च लागत। तीन दिन तक एक्के-उपे रहती, कोनो बेसी तरद्दुतक जरूरत नइ पड़त।”

मुनेसर-

“बड़बढ़ियाँ। राधाचरण कौल्हुके गाड़ी पकैड़ चलि जाएब।”

मुनेसरक बात सुनि राधाचरण बाजल-

“हमरा की कहै छी, हम की कहब?”

मुनेसर-

“डाक्टरो साहैबक विचार सुनियेँ लेलिऐन। तखन तँ कौल्हुका गाड़ी पकड़ै धरि तूँ संग दएह।”

राधाचरण-

“ओहुना काल्हि दरभंगा जाएबे अछि, तैबीच जँ दोसरो काज भऽ जाइए तँ हरजे की। मुदा भरि दिन जे झंझारपुरमे बैसल रहब तइसँ नीक दरभंगे हएत। किएक तँ अपनो रोगीकेँ देख लेब आ ईहो काज सम्हारि लेब।”

झंझारपुरमे सभ सुविधा देख मुनेसर बजला-

“ओना तोरो विचार कटैबला नहियेँ छह। मुदा जखन भरि दिनक घरक भाड़ा ऐठाम लागिए जाएत आ सभ सुविधो ऐछे तखन एना कऽ जेबाक प्रोग्राम बनाबह जे दरभंगामे रहैक जोगार नै करए पड़ए।”

दुनू काजकेँ अँटावेश करैत राधाचरण बाजल-

“काल्हि बारह बजे तक ऐठाम रहू तेकर पछाइत एतए-सँ चलि जाएब। हमहूँ अपन रोगी देख डाक्टर साहैबसँ राय-विचार कऽ लेब आ अहूँकेँ गाड़ीमे बैसा देब।”

राधाचरणक बात मुनेसरकेँ जँचलैन। मुड़ी डोलबैत स्वीकार करिते रहैथ आकि धक-दे बेटा-रघुनाथ मन पड़लैन। मन पड़िते मोबाइलसँ रघुनाथकेँ कहलखिन-

“रघुनाथ, झंझारपुरमे छी। ऐठाम दरभंगा-पटना आकि राँची जकाँ तँ सुविधा नहियेँ अछि, डाक्टरो साहैब कहलैन जे नीक हएत राँचीए लऽ जैयनु।”

मुनेसरक बात सुनि रघुनाथ बाजल-

“राँची बीचक भार जँ ओ लऽ लइ छैथ तँ नीक हएत जे राँचीए

चलि आबी।”

मुनेसर-

“हँ, से डाक्टरो साहैब कहै छैथ जे तीन दिनक बेवस्था कऽ दइ छी। जँ दरभंगा आकि पटना जेबो करब तँ असगरे फ्रीसान भऽ जाएब, तइसँ नीक राँचीए हएत।”

रघुनाथ-

“जे बेसी नीक हुअए से करू।”

प्रात-भने दोसर चरिपहिया गाड़ी भाड़ा कऽ बारह बजे तीनू गोरे दरभंगा विदा भेला।

दरभंगा पहुँच मुनसेर स्टेशनमे पता लगौलैन जे कोन प्लेटफार्मपर गाड़ी अबै छइ। भाँज लगा दूटा कुलीकेँ पकैड़ प्लेटफार्मपर सुलोचना बहिनकेँ लऽ जा सुता देलैन।

राधाचरण बाजल-

“काका, चारि-पाँच घन्टा अहाँ ओगैर कऽ रहू, तैबीच हम अपनो समांग सभसँ भेँट केने अबै छी।”

“बड़बढ़ियाँ।”

स्टेशनसँ विदा होइत राधाचरण मने-मन हिसाब बैसबए लगल जे साढ़े-सात बजे जयनगरसँ गाड़ी पहुँचैए। तैबीच एनौं कोनो काज नहियेँ हएत। मुदा अपन जे काज अछि, तहूमे काल्हि टाँका कटिते डेरो तोड़ब। तैबीच जेकर जे हिसाब-बाड़ी छै सेहो सभ फरिया लेब आ साढ़े-सात बजे गाड़ी छै, साते बजे पहुँच जाएब। सएह केलक।

राँचीक गाड़ीमे दुनू भाए-बहिनकेँ बैसा राधाचरण बाजल-

“काका, ओना राँचीमे अपन घरे अछि, जानो-पहचानोक लोक सभ छेबे करैथ, असुविधा नहियोँ हएत, मुदा तैयो कहि दइ छी जे जँ

जरूरत हुअए तँ कहब।"

राधाचरणक बात सुनि मुनेसर विस्मित भऽ गेला। मनमे उठलैन कोन जन्मक उपकार कएल छल जे राधाचरण एते केलक। जे पाइ देलिऐ से नइ लेब। अहू वेचाराकेँ पैंच-पालट नै हेतइ आ अपनो मन कहत जे बेमारीमे मदैत केलऐ। जिनगी भरि तँ कमेबे केलौं, मुदा एहेन उपकारो तँ नहियेँ केने छेलौं। ओना अखनो समाजमे एहेन फुसि-फटक खर्च सभ अछि जे जँ ओकरा बँचा कऽ माने रस्ता बदैल कऽ खर्च कएल जाए तँ समाजक जे पढ़ैबला अछि आकि बर-बेमारी अछि ओ शत-प्रतिशत समाधान भलेँ नै हौउ मुदा बहुत हद तक तँ हेबे करत। तेतबे किए, समाजो जे दिशा-विहीन चलि रहल अछि ओहो सुढ़िया कऽ रस्तापर चलि औत। जाबे समाज आकि बेकती अधला रस्ता छोड़ि नीक रस्ता पकैड़ नै चलत, ताबे कल्याण केना हएत। कल्याणक ढोल केतबो किए ने बजौल जाए मुदा ढोलेसँ काज थोड़े चलत। लगले मन घुमलैन। कोनो जरूरी अछि जे राधाचरणकेँ हमरासँ कोनो उपकारे भेले हेतइ। एहनो तँ भऽ सकैए जे ओकर अगुरबारे होइ। होइ किए भेबे कएल ने। जँ किछु उपकार कएल रहैत तँ मन नै रहितए? जिनगीमे सभ काज सभकेँ मन रहौ आकि नै रहौ मुदा उचित-उपकार तँ रहिते छइ। बजला-

"राधाचरण, तूँ भगवान बनि आगूमे ठाढ़ भेलह। जीवनमे कहियो नै बिसरब। तोहूँ मनमे रखि लएह जे जँ कहियो जरूरत हुअ तँ कहिहह। शरीर तँ देखते छह जे अपनो दबाइएपर चलै छी, एकर माने ई नहि ने जे अकाजक भऽ गेल छी।"

मुनेसरक बात सुनि राधाचरण बिसैर गेल जे तीन किलो मीटर असगरे जाइयोक अछि। बाजल किछु ने। मुनेसरक आँखि-पर-आँखि गाड़ि सोझहे देखैत रहल।

गाड़ीक समए होइते सीटी देलकै। सीटी सुनि राधाचरणक भक्क खुजल। गाड़ी ससरलै। राधाचरण प्लेटफार्मपर ठाढ़, मुनेसर राँचीक बाट पकड़लैन। पाछू उनैट मुनेसर आ आगू देखैत राधाचरण, धीरे-धीरे ओझल होइत गेल। राँची पहुँच मुनेसर अपना डेरापर एला। एक्के दुइए भाड़ादार सभ आबि-आबि सुलोचना बहिनकेँ देखए लगलैन। जेते मुँह तेते जुति-भाँति।

ओसारपर सुलोचना बहिनकेँ सुता अपने मुनेसर आगूले सोचए लगला। स्त्रीगण छी तँए स्त्रीगणक जरूरत अछिए। ओना भाड़ादार सभ छैथ मुदा अपनो तँ परिवार अछिए। ओना हुनका[14] मनमे अनोन-बिसनोन रहिते छैन मुदा की? परिवारो आ समाजोमे तँ ई गुण ऐछे जे समैपर चुनो-तमाकुल-ले झगड़ा होइ छै आ बेर-बेगरतामे सम्हारो होइ छइ। दिनक दोख कहि लोक टारि दइ छइ। नीक हएत जे इलाजमे जाइसँ पहिने परिवार जनसँ राय-विचार कऽ ली। ओना परिवारमे तीन बापूत आ तीन सासु-पुतोहु अछि, मुदा लगमे तँ पत्नीए-टा छैथ। साए किलो मीटर कोनो बेसी दूर नइ भेल। तैसंग ईहो हएत जे जँ पुतोहुकेँ कहबैन तँ बेटो बरदाएत। तइसँ नीक पत्नीए हेती।

मन तँ मानि गेलैन मुदा लगले प्रश्न अँकुर गेलैन जे जँ कहीं पत्नी सहयोग नै करैथ, तखन?

मुरछैत मुनेसरक मन तुरैछ उठलैन। एक गड़ूकेँ बहत्तैर आशा। पत्नीकेँ मोबाइल लगा मुनेसर बजला-

“सुलोचना बहिनकेँ एतै लऽ अनलयैन। आनठामक[15] असुविधा देख यएह नीक बुझि पड़ल, तँए अहाँ छुट्टी लऽ कऽ चलि आउ?”

मुनेसरक बात सुनिते जेना जीहेपर साधनाकेँ रहैन तहिना

---

[14] पत्नीक

[15] (दरभंगा-पटनाक)

बजली-

“अनलयैन तँ नीक केलौं। अस्पतालमे भर्ती करा दियौन। ओइठाम सभ बेवस्था छइहे, हमर कोन काज अछि। अपने डेरामे रहब, एक बेर-दू-बेर देख-सुनि एबैन।”

पत्नीक विचार सुनि मुनेसर सकदम भऽ गेला। आगू बजैक साहस नै भेलैन। मोबाइल रखि विचारए लगला जे की कएल जाए? अस्पतालक जेहेन बेबस्था अछि से केकरा ने बुझल छइ। कनी नीक आकि कनी अधला, सबहक एके गति अछि। तखन तँ दरभंगामे बेसी रद्दी अछि राँची-पटनामे कनी तहदर छइ। तँए नीक कहबै सेहो नहियेँ। वएह डाक्टरो आकि नर्सो ने अदैल-बदैल ऐठाम-ओइठाम करै छैथ। दोष की कोनो जगहक होइ छै, दोष होइ छै लोकक चालिक। जेहेन चालि-चलैनक लोक रहैए तेहने तेकर काजो होइ छइ। मुदा सेहो की ओहिना होइ छै, होइ छै बेवस्थाक अनुरूप। बेकती-विशेषक दोख तँ लोक खिसिया कऽ लगा दइ छै, मुदा से थोड़े अछि। निच्चाँ-ऊपर एके-रंग अछि। कनी कम आकि कनी बेसी, मुदा अछि सबतैर। ..दृढ़ होइत मुनेसरकेँ मनमे एलैन- हम सुलोचना बहिनक नीक इलाज करेबैन। मरण-जीअन अपना हाथमे नै अछि, मुदा नीक-अधलाक जोगार तँ अपना हाथमे अछिए। हम जे करब से की सुलोचना बहिन नै देखती, देखबे करती। खनो-पानि पीबैक मन हेतैन आ कियो दइबला नै रहतैन तखन ओ की बुझती जे नीक सेवा होइए? पत्नीक विचार सुनिए लेलौं, बेटोसँ पुछिए लिऐ। मुदा पुतोहुकेँ अबैले नै कहबैन। पत्नी जँ रहितैथ तँ उमेरदारो भेली आ ऐठामक सभ किछु बुझलो-सुझल छैन। से तँ पुतोहुकेँ नै छैन। ..रघुनाथकेँ मोबाइल लगा मुनेसर बजला-

“बौआ, बहिनकेँ राँचीए आनि लेलिऐन। ऐठाम सुविधो हएत।”

मुनेसरक बात सुनिते रघुनाथ बाजल-

“नीक केलौं। पहिने ई भाँज लगा लिअ जे सभसँ नीक बेवस्था कोन ठाम अछि। पाइ भलेँ किछु बेसियो खर्च हुअए मुदा इलाजमे कमी नइ होइन।”

रघुनाथक बात सुनि मुनेसरक मन भरि गेलैन।

बजला-

“बौआ, परिवारमे अहिना सभ एक-दोसरपर आश्रित रहैए, जँ से नै रहत तँ कुत्ता-बिलाइ आ मनुखमे अन्तरे कथी हएत। एक तँ ओहुना बिनु विवेकेक सभ अछि सिबा मनुखक। दोसर, मनुखेक योनि ने कर्म योनि छी, बाँकी तँ भोगे योनि छी किने। से जँ मनुखमे नै आएल तँ कर्म-योनि आ भोग-योनिमे दूरीए की रहल।”

पिताक बात रघुनाथ कान ठाढ़ कऽ सुनैत रहल, सुनैत रहल। बाजल किछु ने। मुदा लगमे सुनीता जे बजलैन से मुनेसरो सुनला। बाजल छेली-

“माए छथिन की नै से पुछि लिअनु?”

रघुनाथ-

“किए?”

सुनीता-

“लगमे रहने काज असान हेतैन। एहेन समैमे जनिजातिकेँ रहब जरूरी होइ छइ। सेवा-टहलसँ लऽ कऽ पानिक ओरियान धरिक जरूरत तँ होइते छै किने। मरदकेँ तँ क्लिनिकसँ दबाइ दोकान आ दबाइ दोकानसँ डाक्टर लग करैत-करैत समए चलि जाइ छइ।”

बहन्ना बनबैत रघुनाथ पिताकेँ कहलखिन-

“टाबर कटि रहल अछि। कनी कालमे फेर गप करै छी।”

मोबाइल रखि रघुनाथ पत्नीकेँ कहलखिन-

“अहाँ जे बात कहै छी, से उचित हएत। केना पुछबैन जे ओतए माए छैथ की नहि?”

जइ नजरिये रघुनाथक प्रश्न छल तइ नजरिये उत्तर नै दैत नजैर बदैल सुनीता बजली-

“नारीक सोभावक ठेकान नै अछि। नान्हिटा बात लऽ कऽ लोक मूसक दबाइ खा जिनगी मेटा लइए। जिनगी घिया-पुताक खेल नहि ने छी जे हाथेसँ बहारि गरदा-माटिक घर-अँगना बना खेला लेब आ जखने मन उचटत कि हाँइ-हाँइ कऽ मेटा चलि देब।”

रघुनाथ-

“हँ से तँ नहियेँ छी, मुदा...।”

सुनीता-

“मुदा-तुदा किछु ने, मुँह खोलि कऽ बाजू। कहियौन जे एकटा महिलाक जरूरत ऐछे, जँ माए नै अबै छैथ तँ पुतोहु अबैले तैयार छैथ। अहाँ बहिनकेँ इलाजमे लऽ चलियौन, गाड़ी पकैड़ आबि रहल छी। काल्हि भरि दिन गाड़ीमे लगत, परसूका नाओं कहि दियौन जे पहुँचब।”

पत्नीक बात सुनि रघुनाथ थकथका गेल। मुदा धर्म संकट तँ अछिए। पत्नियोक विचार अकाट्य अछि मुदा माइक सम्बन्धमे पितासँ पुछलो नहियेँ हएत। तखन? तखन किए ने हिनके संग मुहाँ-मुहीं बात होइन। ने ससुर आन भेलखिन आ ने पुतोहु। पिते-पुत्रीक सम्बन्ध भेलैन, किए ने दुनूक बिच्चे विचार जानि विनिमय भऽ जाइन।

मोबाइल उठा नम्बर मिला रघुनाथ सुनीताक हाथमे देलखिन। सुनीता बजली-

“बाबूजी, गोड़ लगै छिऐन।”

पुतोहुक बोल अकानि मुनेसर असिरवाद तँ दऽ देलखिन मुदा आगू किछु बजैसँ परहेज केलैन। परहेज ऐ दुआरे केलैन जे जे किछु कहैक हएत ओ बेटाकेँ कहबै, हिनका केना कहबैन।

ससुरक कोनो आगूक बात नै सुनि सुनीता बजली-

“जहिना सुलोचना बहिन हिनकर जेठ बहिन छिऐन जे माए दाखिल भेली, तहिना तँ हमरो जेठ दीदीए भेली? पिताक बहिन तुल्य।”

मुनसेर-

“भेली। जँ झगड़ा-दन भेने बेवहारिक पक्ष टुटियो जाइ छै तैयो पुश्तैनी पक्ष तँ रहबे करै छइ। एकरा हम केना नकारि देब।”

सुनीता-

“काल्हि गाड़ी पकैड़ आबि रहल छी।”

‘गाड़ी पकैड़ आबि रहल छी।’ सुनि मुनेसर थकथका गेला। पुतोहु औती सासुक किरदानी देखती। हो-ने-हो जँ कहीं पुछि दैथ जे माए किए ने छैथ, तखन की जवाब देबैन। मुदा काजक दौड़ तँ ओहन दौड़ होइए जे नीक-अधलाक भण्डाफोर करिते अछि। मन गरमेलैन।

..गरमाइते मन बाजि उठलैन। ‘सत्यपर पर्दा देब पाप छी।’ मनुखक बीच देहा-देहीक सम्बन्ध होइ छै, सभकेँ अपना-ले करैक अधिकार छइ, हुनको छैन। तँए रोकब नीक नहि।

ससुरक कोनो बात नै सुनि सुनीता बजली-

“एक तँ हिनको बेसी उमेर भऽ गेलैन तैपर केते रंगक रोगो छैन्हे। एहनो तँ भऽ सकैए जे एक्के बेर दुनू गोरेकेँ रोग जोर मारि दनि। तखन के केकरा देखथिन?”

निरुत्तर मुनेसर उत्साहित भऽ बजला-

“कनियाँ, केकरो अधिकारमे दखल देब उचित नै बुझि पड़ैए तँए हम किछु ने कहब, जे मन हुअए से करू। अहाँ स्वतंत्र छी।”

कहि मोबाइल रखि देलखिन। मोबाइल रखिते सुनीता रघुनाथकेँ कहली-

“काज-उदम बेर कोनो काजकेँ झाँपि-तोपि नै राखी। ऐसँ काज बाधित होइ छइ। जखन काजे बाधित भऽ जाएत तखन काज हएत केना।”

रघुनाथ-

“हँ, से तँ नहि हएत?”

सह पबैत सुनीता बजली-

“कौल्हुका गाड़ीसँ हमरा राँची पहुँचा कऽ अहाँ घुमि जाएब। अहाँ नोकरी करै छी तँए छुट्टी कटत, दरमाहा कटत। मुदा ओइठाम पहुँचला पछाइत तँ अपन चसमसँ सभ किछु देखबै। नै जरूरत पड़तैन जिगेसा भेल, जरूरत पड़तैन रहि कऽ सेवा करबैन।”

पुतोहुक बात मुनेसरक मनकेँ खोड़ि देलकैन। विचारए लगला जे केना कएल जाए। ओना अपन अंगीते[16] डाक्टर छैथ। ओहो जनै छैथ आ हमहूँ जनै छिऐन मुदा सोझहा-सोझही गप-सप्प नै भेने चेहरासँ ने ओ चिन्है छैथ आ ने हम चिन्है छिऐन। मुदा लगले मनमे द्वन्द्व ठाढ़ भऽ गेलैन। एक मन कहए लगलैन जे जखन समांग डाक्टर छैथ तखन नीक काज किए ने हएत। दोसर कहैन जे जखन पाइयेक खेल-तमाशा अछि तखन परिचए दऽ कऽ अपन प्रतिष्ठा किए गमाएब। प्रतिष्ठो तँ प्रतिष्ठा छी। सासु-ससुर जँ भीखो मांगि खेती आ

[16] पिसियौत जमाए

जँ बेटी-जमाइक दरबज्जापर हाथीए रहतैन तँ केना हाथ पसारती। मुदा सम्पैत सम्पैत छी जे भोज्य पदार्थ छी किन्तु प्रतिष्ठो सएह छी। खाएर जे हौउ, मुनेसर विचार केलैन जे एक शिक्षकक रूपमे अपन परिचए देबैन। गाम-घरक कोनो चर्च नै करब। मन ठमकलैन, उत्साह जगलैन, काल्हि निसचित डाक्टर ऐठाम जेबे करब। मुदा जाइसँ पहिने नीक हएत जे अस्पतालोक बेवस्था देख लिऐ आ प्राइवेटो सभकेँ देख ली।

आँखिक देखलकेँ मनो मानै छइ। बिनु देखलमे एहनो भऽ सकैए जे औगताइमे अधले भऽ जाए। पछाइत जँ बुझैमे एबो करत, ता काजे हूसि गेल रहत।

दोसर दिन सबेरे आठ बजे मुनेसर टेम्पू पकैड़ अस्पताल पहुँचला। रोगी-वार्ड सभमे जा-जा देखलैन तँ मन मानि गेलैन जे प्राइवेटेमे इलाज कराएब नीक। ओना हड्डियो रोगक केते डाक्टर छैथ, मुदा तइमे नीक के छैथ? भाँज लगबैत-लगबैत भाँज लगलैन जे डाक्टर शेखर नीक छैथ। मुदा छिया तँ अंगीत। पाइबला सबहक सोभावो बदैल जाइ छइ। केतबो लगक किए ने हुअए, पाँच प्रतिशत छोड़ि कऽ, मने-मन बाजिए देता जे जेते-हेराएल-भोथियाएल रहैए, धरमशाला बुझैए। तँए नीक जे जखन चेहराक चिन्हारए नै अछि तखन भषो तँ दूरी बनैबते छइ।

वार्ड सभ देख-सुनि मुनेसर ऑफिसक आगू पहुँचबे केला आकि डाक्टर शेखर गाड़ीसँ उतैर ऑफिसमे प्रवेश केलैन। संयोग नीक बुझि मुनेसरो कनियेँ अँटैक कऽ पाछूसँ ऑफिस पहुँचला। कुरसीपर बैसैत पुछलखिन-

“डाक्टर साहब, अस्पताल अच्छा होगा कि प्राइवेट?”

डाक्टर शेखर-

“अच्छा दोनो है। हमहीं लोग ने दोनो जगह हैं। रही बात देख-रेख की, यहाँ हम स्टाफ को कह सकते हैं, दवाब नहीं दे सकते हैं। लेकिन प्राइवेट की दूसरी बात है।”

दुनू गोरेक बीच गप-सप्प शुरूहे भेल छेलैन आकि मुनेसरक पिसियौत भातीज माने डाक्टर शेखरक सार, ऑफिस पहुँचला। मुनेसरकेँ देखते गोड़ लागि पुछलकैन-

“काका, केमहर-केमहर आएल छी?”

मुनेसर-

“कलपर बहिन खसि पड़ली से डाँड़मे कज्जी भऽ गेल छैन सएह एलौं जे नीक अस्पताल हएत आकि प्राइवेट।”

डाक्टर शेखरक सार-देवेन्द्रक संग मुनेसरक बीच सम्बन्धकेँ अँकैत डाक्टर शेखर मुँह खोललैन-

“अपने पलामूमे कार्यरत छिऐ?”

मुनेसर-

“छेलिऐ। आब सेवा-निवृत भऽ गेलौं।”

जहिना डाक्टर शेखर मुनेसरक सम्बन्धमे बहुत बात जनै छैथ तहिना मुनेसर सेहो डाक्टर शेखरक सम्बन्धमे जनिते छैथ। मुदा पनरह साल पहिने जे शेखरक बिआह भेलैन तइमे मुनेसरकेँ रहनौं चेहराक चिन-पहचिन नै भेल रहैन।

..जहिना कोनो पोथी पढ़ैक जिज्ञासुकेँ अनायास कोनो समांगक माध्यमसँ एने मनक पोटरी अपने खुजि जाइत तहिना डाक्टर शेखरोकेँ भेल छेलैन। होइक कारण भेलैन जे बिआहक पद्धति मन पड़ि गेलैन। मन पड़ि गेलैन पत्नीक पिताक मात्रिक नीक कुल-मूल। अपनसँ पैघ। ओना पैघ-छोटक बीच वैवाहिक सम्बन्ध पुरान अछि मुदा ऐठाम

दोसर भेल। ऐठाम भेल अर्थक कारण। उदार पिता बेटीक सुख-सुविधा (आर्थिक) देख अपन विचार सुधार केने रहैथ। मन पड़लैन सुलोचना दीदीक जिनगी। केना नैहर-सासुरमे ठोकरौल गेल छैथ। एहेन जगहपर जँ मानवीय विचार प्रतिपादित नै करब तँ हमरा विचारक कोनो मोल नहि।

मनमे विचार फुटिते डाक्टर शेखर, देवेन्द्रकेँ कहलखिन-

“चाचाजी एला अछि आ अहाँ बैसल गप-सप्प करै छी।”

डाक्टर शेखरक मनमे एलैन जे किए ने घरे सुमझा दिऐन। नहि तँ अनेरे फज्झैतमे पड़ब। जखने पत्नी बुझती जे चाचाजी केँ चिन्हबो ने केलिऐन तखन आन काल जे हुअए मुदा खेनाइ तँ गड़गट भाइए जाएत। तइसँ नीक ने जे अखन सभ बुझै छैथ जे नोकरीक ड्यूटीमे छी। यएह ने हएत जे अपन ऑफिसे सुमझा दिऐन, खेता-पीता अराम करता। काज तँ काजक पछाइते हएत किने। तहूमे जाबे चाह-पान करता ताबे जे अराधल काज अछि ओकरा हमहूँ पूरा कऽ ऐगला काजक योजना बना लेब।

डाक्टर शेखरक इशारा देवेन्द्र बुझि गेल। बुझि गेल ई जे जँ जेठ रहितिऐन (पत्नीक जेठ भाय) तखन जँ कहितैथ, तँ विचारो करितौं। मुदा से नै अछि। जे मन फुरत से करब। खर्चा तँ दिअ पड़तैन। बाजल-

“काकाजी, अहाँ ताबे अराम करू। ई तँ घर नहि ने छिऐ, सरकारी अस्पताल छिऐ किने, ऐठाम की खाएब, की नै खाएब आ की पीअब से तँ विचारए पड़त किने।”

भार उतरैत देख डाक्टर शेखर बजला-

“एकटा ऑपरेशन अछि, ओ सम्पन्न कऽ हमहूँ निचेन भऽ जाइ छी। तखन ऐगला काजमे भीर जाएब।”

अस्पतालक ऑफिसकेँ घर जकाँ देख मुनेसरक मनमे बिसवास जगलैन जे ठौर परहक काज भेल। जँ पत्नी लगमे नहियोँ रहती तैयो भतीजी[17] तँ रहबे करत। बच्चेसँ देखल अछि जे केहेन बचिया अछि।

टेबुलपर सँ उठैत शेखर देवेन्द्रकेँ कहलखिन-

“डेरोपर चाची जीक जानकारी दऽ दियौन। कहि दियौन जे दू घन्टा पछाइत आबि रहल छी।”

दू घन्टा आगत-भागतक पछाइत तीनू गोरेक डाक्टर शेखर, मुनेसर आ देवेन्द्रक बीच काजक गप-सप्प उठल। ने डाक्टर शेखर सोझ मुहेँ मुनेसरकेँ किछु कहथिन आ ने मुनेसर डाक्टर शेखरकेँ। दुनूक बीच देवेन्द्र, तँए दुनू गोरे देवेन्द्रेकेँ मानि बजैथ।

विचार करैत मुनेसर बजला-

“जखन डेरेक विचार भेल तखन नीक हएत जे पहिने हुनका (बड़की बहिनकेँ) लऽ अबिऐन।”

डाक्टर शेखर चुप-चाप सुनैत रहैथ, देवेन्द्र बाजल-

“काकीक संग दिदियोकेँ डेरेपर पहिने पहुँचा लिअ। अखनसँ डाक्टरो साहैब छुट्टीए-मे रहता। अपन क्लिनिक छैन, बीच-बीचमे देख औता।”

देवेन्द्रक बात सुनि मुनेसर सकपका गेला। सकपका गेला ई जे ‘काकियोकेँ संगे नेने एबैन।’ मुदा डुमैत मनुखक धैर्य थरथरेबे करै छै, मुदा बिच्चेमे युक्ति फुरलैन।

बजला-

“बौआ, एहनो बात लोक बजैए जे काकियोकेँ संगे नेने एबैन। अहिना कुल-खनदानकेँ बुझै छहक।”

---

[17] डाक्टर शेखरक पत्नी

जमाइक सोझ अपनाकेँ छिपबैत मुनेसर बाजि तँ गेला मुदा मन धिक्कारए लगलैन। अपनापर ग्लानि भेलैन जे पढ़ल-लिखल (पति-पत्नी) परिवारमे जँ एना हुअए तँ आनक की गति हएत। मुदा, जहिना एक झूठ हजारो झूठकेँ हजम कऽ जाइए तहिना एक सतोक तँ गुण छइहे। से नइ तँ जमाए-केँ परोछ होइते देवेन्द्रकेँ कहि देबै जे बौआ पत्नीक सहयोग नै अछि।

टेम्पू अबिते मुनेसर देवेन्द्रकेँ कहलखिन-

“बौआ, तोरासँ लाथ कोन। भानस अपने करै छी। जखन काज नै रहैए तखन तँ गैसक बेवस्था अछि, भीड़ नै बुझि पड़ैए, मुदा, जेना आइए देखहक जे भानस करब आकि बहिनकेँ डाक्टर ऐठाम लऽ जाएब।”

मुनेसरक बात सुनि देवेन्द्र बाजल-

“ओहो घर की आन भेल। कहि देने छिऐ, सभ ओतै भोजन करब।”

टेम्पूसँ तीनू गोरे डाक्टर शेखरक डेरापर पहुँचला। डेरापर पहुँचते यमुनाकेँ नैहर मन पड़ि गेलैन। मन पड़ि गेलैन जे जहिया सुलोचना बहिन अपना ओतए रहैथ। केते सामोक गीत आ आनो-आन सिखा देने छेली। यएह ने सुलोचना दीदी छैथ। मुदा बजली किछु ने।

डाक्टर शेखर सुलोचना बहिनकेँ डाक्टरी नजरिये देख विचारलैन। विचारलैन ई जे देहक काट-खोंट छी, हो-ने-हो अपनत्वमे मन पघिल जाए। मुदा डाक्टर होइक नाते बाजियो तँ नै सकै छी। बात बदैल यमुनाकेँ कहलखिन-

“काज गड़ूगर तँ ऐछे, मुदा असाध नै अछि। तैयो नीक हएत जे दोसरो सहयोगीकेँ बजा लिऐन।”

डाक्टर शेखरक भक्की यमुना नै बुझि सकली। मुदा नीक होनि से तँ मनमे रहबे करैन। बजली-

"एकटा किए जेतेक जरूरत हुअए आकि राँचीक सबहक (हड्डी रोगक डाक्टर) जरूरत हुअए तँ सभकेँ बजा लिअ, मुदा दीदी ऐठामसँ अपना पएरे जाथि से तँ देखबए पड़त।"

साढ़े छह बजे साँझमे तीनटा डाक्टर बीच सुलोचना बहिनक ऑपरेशन भेलैन। नीक ऑपरेशन।

तेसरा दिन हहाएल-फुहाएल रघुनाथ पहुँचला। डेरा बन्न देख मोबाइलसँ सम्पर्क केलैन। मुदा चीज-वौस तँ रहबे करइ। भाड़ादारक डेरामे सभ समान रखि रघुनाथ दुनू परानी शेखरक ऐठाम विदा भेल।

डाक्टर शेखरक डेराक बाहर ओसारपर राखल कुरसीपर बैसल मुनेसर विचार करैत रहैथ जे एक दिस बेटा-पुतोहु-भतीजी-जमाइक बीच छी तँ दोसर दिस अर्द्धांगिनीसँ दूर। यएह छी जिनगी।

सड़कपर बेटा-पुतोहुकेँ गाड़ीसँ उतरैत देख मुनेसर आगू बढ़ला। मुदा बिना गोड़ लगने रघुनाथ केना किछु पुछितैन आकि बिनु असिरवाद देने मुनेसरे किछु बजितैथ।

दुनू दिससँ दुनू आगू बढ़ैत गेला। लग अबिते रघुनाथसँ पहिने सुनीता गोड़ लगलकैन। गोड़ लगिते मुनेसर असिरवाद दैत बजला-

"कनियाँ, अपने भतीजीक परिवार छी।"

सड़कपर गाड़ीक अवाज सुनि यमुना सेहो बहरा गेल छेली। मुदा परिचित अनठिया देख ठमैक गेली।

लग अबिते मुनेसर बजला-

"रघुनाथ दुनू बेकती छी। बौआ, यमुना बहिन छथुन।"

सौंझुका समए। रघुनाथ डाक्टर शेखरसँ पुछलकैन-

“डाक्टर साहैब, ऐठाम थोड़े असुविधा अछि। असुविधा ई अछि जे मध्य प्रदेशक विलासपुरमे कार्यरत छी। एक तँ नोकरी तहूमे बैंकक, ऐठामसँ ओइठाम नै लऽ जा सकै छी।”

डाक्टर शेखर-

“सात दिन एतै रहए दियौन, तहीमे एते भऽ जेतैन जे दोसर डाक्टर ऐठाम नै लऽ जाए पड़त। दबाइ-दारू चलतैन।”

सएह भेल। सात दिनक पछाइत सभ कियो–सुलोचना बहिन, मुनेसर आ बच्चाक संग दुनू बेकती रघुनाथ–विलासपुर रबाना भेला।

छह मासक पछाइत विलासपुर सँ सभ कियो गाम एला।



शब्द संख्या : 3250

परिचय



नाओं : जगदीश प्रसाद मण्डल
जन्म : 5 जुलाई 1947 ई.,
माता : स्व. मकोबती देवी।
पिता : स्व. दल्लू मण्डल।
पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।
पता : गाम- बेरमा, भाया- तमुरिया,
प्रखण्ड- लखनौर, अनुमण्डल- झंझारपुर,
जिला- मधुबनी, (बिहार) पिन : 847410, **मो.** 9931654742

मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा। **जीविकोपार्जन :** कृषि (मुख्यत: तरकारी खेती) **शिक्षा :** एम.ए. द्वय (हिन्दी, राजनीति शास्त्र) **साहित्य लेखन :** 2001 ईस्वीक पछाइतसँ...। **सम्मान/पुरस्कार :** 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड', 'वैदेह सम्मान', 'यात्री सम्मान', 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार' तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सम्मानित/पुरस्कृत।

मौलिक रचना संसार- 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर- नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन- उपन्यास। 26. कल्याणी, 27. सतमाए, -28. समझौता, 29. तामक तमघैल, 30. बीरांगना- एकांकी। 31. तरेगन, 32. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 33. शंभुदास, 34. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 35. गामक जिनगी, 36. अर्द्धांगिनी, 37. सतभैंया पोखैर, 38. गामक शकल-सूरत, 39. अपन मन अपन धन, 40. समरथाइक भूत, 41. अप्पन-बीरान, 42. बाल गोपाल, 43. भकमोड़, 44. उलबा चाउर, 45. पतझाड़, 46. लजबिजी, 47. उकड़ू समय, 48. मधुमाछी, 49. पसेनाक धरम, 50. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 51. फलहार, 52. खसैत गाछ, 53. एगच्छा आमक गाछ, 54. शुभचिन्तक, 55. गाछपर सँ खसला, 56. डभियाएल गाम, 57. गुलेती दास, 58. मुड़ियाएल घर, 59. बीरांगना, 60. स्मृति शेष, 61. बेटीक पैरुख, 62. क्रान्तियोग, 63. त्रिकालदर्शी, 64. पैंतीस साल पछुआ गेलौं, 65. दोहरी हाक, 66.स्वाभिमानी जिनगी- लघु कथा संग्रह। ○ ○ ○



पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड न. 06,
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

₹ 250

ISBN : 978-93-87675-31-5

जगदीश प्रसाद मण्डल

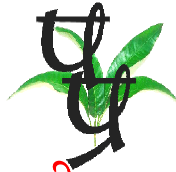
तरेगण



तरेगन

(बाल-किशोर प्रेरक बीहैन कथा संग्रह)

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन

निर्मली

समर्पण भाव

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक ढेरपर बैसल

फुलवाड़ी लगौनिहारकेँ

समरपित



ISBN : 978-93-87675-19-3

दाम : ₹ 200/-

चारिम संस्करण : 2017

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल, बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : दी साहु प्रिन्टिग प्रेस. निर्मली (सुपौल) पिन : 847452

TAREGAN
Collection of Children Seed Stories in Maithili Language by Sh. Jagdish Prasad Mandal.

कथाक सत्तैर

मनमनियाँ

अपने लोकनिक बीच बीहैन-कथाक छोट-छीन संग्रह उपस्थित अछि। प्रस्तुत संग्रह एक-लगाइत नहि, डेढ़-दू सालक बीच लिखल छी, जइमे मौलिक कथाक संग विश्व भरिक साहित्यक सार संक्षेप नेना आ बढ़ैत नेना सभ-ले जुटौल गेल अछि, सबहक प्रति आभार जइसँ रंग-बिरंगक विषय-वस्तुक ई जमघट भऽ गेल अछि।

आजुक भाग-दौड़क जिनगीमे दीर्घ कथा पढ़ैक पलखति नइ रहने लघु तथा बीहैन कथाक महत स्वत: बढ़ि गेल अछि।

कथा-लेखनमे श्रीनिवासजी (डॉ. शिवशंकर श्रीनिवास, लोहना)क सहयोगक चर्च करब केना बिसैर सकै छिऐन।

समय-समयपर गजेन्द्रजी (श्री गजेन्द्र ठाकुर, मेंहथ)क आग्रह आ सुझाव आ संगहि श्रुति प्रकाशनक श्री नागेन्द्र कुमार झा आ श्रीमती नीतू कुमारीक भरपुर सहयोग भेटलासँ लिखैक नव उत्साहो आ अशो मनकेँ सक्कत बना देने अछि।

ऐ पोथीक नाओं 'तरेगन' श्री धीरेन्द्र कुमारजी (निर्मली)क देल अछि।

अन्तमे, कथा-प्रेमी सभसँ आग्रह जे अपन अमूल्य सुझावसँ अवगैत करा आगू-ले उत्साहित करब।

-जगदीश प्रसाद मण्डल

बाल दिवस, 14 नवम्बर 2009

स्रष्टाक समग्र रचना

सृष्टि निर्माणक काज सम्पन्न भऽ गेल छल। प्राणी सभकेँ बजा ब्रह्मा अपन-अपन कमीक पूर्ति करा लइले कहलखिन। सभ प्राणी अपन-अपन कमीक चरचा करए लगल। मुदा एक्के बेर जे सभ बाजए लगैत तँ हल्लामे कियो केकरो बात सुनबे ने करैत। तखन सभकेँ शान्त करैत ब्रह्मा बेरा-बेरी बजैले कहलखिन। सबहक बात सुनि ब्रह्मा केकरो अठन्नी, केकरो चौबन्नी, केकरो दस-पैसी सुधार कऽ देलखिन।

अखन धरि मनुख पछुआएले छल। पहिने ब्रह्मा नारीकेँ पुछलखिन-

“अहाँमे की कमी रहि गेल अछि, बाजू?”

तमतमाइत नारी कहलकैन-

“हमरा तँ बड़ सुन्नर बनेलौं मुदा अपना सन दोसर नारीकेँ देख मनमे जलन हुअ लगैए। तँए एक रंग दूटा नारी नै बनबियौ।”

मुस्कियाइत ब्रह्माजी एकटा ऐना आनि नारीक हाथमे दैत कहलखिन-

“बस, एक्केटा सहेली अहाँ सन बनेलौं। जखैन मन हुअए तखैन आगूमे ऐना रखि देख लेब। जौं सेहो देखैक मन नै हुअए तँ ऐना देखबे ने करब।”



प्रतिभा

डाक्टर राममनोहर लोहिया जेहने विद्वान तेहने देशभक्त रहैथ। देश-प्रेमक विचार पितासँ विरासतमे भेटल रहैन। तेतबे नहि, ओहने मस्त-मौला सेहो रहैथ। सदिखन चिन्तन आ आनन्दमे जिनगी बितबैत रहैथ। विदेशसँ अबैकाल मद्रास बन्दरगाहपर जहाजसँ उतरला। कलकत्ता जेबाक छेलैन। मुदा संगमे टिकटोक पाइ नइ रहैन। बिना भाड़ा देने केना जइतैथ?

बन्दरगाहसँ उतैर सोझे हिन्दू अखबारक कार्यालयमे जा सम्पादककेँ राम मनोहर लोहिया कहलखिन-

"अहाँक पत्रिका-ले हम दूटा लेख देब।"

सम्पादक कहलकैन-

"लाउ कहाँ अछि।"

लेख तँ लिखल छेलैन नहि, कहलखिन-

"कागत-कलम दिअ अखने लिखि कऽ दइ छी।"

लोहिया जीक जवाब सुनि सम्पादक टकर-टकर मुँह देखए लगलैन।

तखन डाक्टर लोहिया अपन वास्तविक कारण बता देलखिन। कारण बुझला पछातइ सम्पादकजी बैसबोक आ लिखबोक ओरियान कऽ देलकैन। किछु घन्टा पछातइ दुनू लेख तैयार कऽ लोहियाजी दऽ देलखिन।

दुनू लेख पढ़ि सम्पादक गुम्म भऽ मने-मन हुनक प्रतिभाक प्रशंसा करए लगला।

ज्ञानक महत्ता सर्वोपरि अछि। ई बुझि एक्को क्षण व्यर्थ गमेबाक चेष्टा नै करक चाही। सदिखन अपनाकेँ नीक काजमे लगौने रहक चाही।



मर्म

एकटा स्कूल छल जइमे हेलब सिखौल जाइ छेलइ। नव-नव विद्यार्थी प्रवेश लइ छल आ हेलैक कला सीख-सीख बाहर निकलै छल। स्कूलेक आगूमे खूब नमगर-चौड़गर पोखैर छेलइ। जेकरा कातमे तँ कम पानि मुदा बीचमे अगम पानि छल।

शिक्षक घाटपर ठाढ़ भऽ देखए लगला। विद्यार्थी सभ पानिमे धँसल। विद्यार्थी सभकेँ आगू मुहेँ माने अगम पानि दिस बढ़ल जाइत देख शिक्षक कहलखिन-

“बाउ, अखैन अहाँ सभ अनजान छी। हेलब नै जनै छी। तँए अखैन अधिक गहींर दिस नै जाउ। नहि तँ डुमि जाइ जाएब। जखैन हेलब सीख लेब तखैन पानिक ऊपरमे रहैक ढंग भऽ जाएत। जखैन पानिक ऊपरमे रहैक ढंग सीख लेब तखैन ओकर लाभ अपनो हएत आ दोसरोकेँ डुमैसँ बँचा सकब। अहिना संसारमे वैभवोक अछि। अनाड़ी ओइमे डुमि जाइए, मुदा विवेकबान ओइपर शासन करैए। जइसँ अपनो आ दोसरोक भलाइ होइ छइ।”

वैभवक स्थितिमे बेकती अपने कुसंस्कारसँ गहींर खाइ खुनि स्वयं डुमि जाइत अछि।



अधरवरूआ

दूटा चेला संग गुरु घुमैले विदा भेला। गामसँ निकैल पाँतरमे प्रवेश करिते बाध दिस नजैर पड़लैन। सगरे बाधक खेत सभमे माटिक ढिमका बनौल छल। तीनू गोरे रस्तेपर सँ हियासि-हियासि देखए लगला जे एना किए छइ। कनीकाल गुनधुन कऽ दुनू चेला गुरुकेँ कहलकैन-

“अपने एतै छाहैरमे बैसियौ, हम दुनू भाँइ देखने अबै छी।”

‘बड़बढ़ियाँ’ कहि गुरु ओतै बैस रहला। दुनू चेला विदा भेल। कातेक खेतसँ ढिमका देखैत दुनू गोरे सौंसे बाधक ढिमका देख, घुमि आएल। सभ ढिमकाक बगलमे कूप खूनल छेलइ। मुदा कोनो कूपमे पानि नै छेलइ। खाली एक्केटा कूपमे पानियोँ छेलै आ ढेकुलो गाड़ल छेलइ। ओना तँ सौंसे बाधे खीड़ाक खेती भेल छल मुदा सभ खेतक लत्ती पानिक दुआरे जरि गेल रहए। खाली एक्केटा खेतमे झमटगर लत्तियो रहै आ सोहरी लगल फड़लो छेलइ।

गुरु लग आबि चेला कहलकैन-

“सभ ढिमका कातमे कूप खुनल छै मुदा पानि नै छै खाली एक्केटा कूपमे पानियोँ छै, ढेकुलो गाड़ल छै आ खेतमे सोहरी लगल खीड़ो फड़ल छइ।”

चेलाक बात धियान सँ सुनि गुरु पुछलखिन-

“एना किए छइ?”

दुनू चेला चुप्पे रहल। चेलाकेँ चुप देख गुरु कहए लगलखिन-

“एहेन लोक गामो-घरमे ढेरियाएल अछि जे चट मंगनी पट बिआह करए चाहैए। जेते उथ्थर कूप छै जइमे पानि नै छै, ओ खुननिहारो सभ ओहने उथ्थर अछि।

कोनो काजकेँ -चाहे आर्थिक होइ आकि वौद्धिक आकि समाजिक- अगर ढंगसँ नै कएल जेतै तँ ओहने हेतइ। बीचमे जे एकटा कूप देखलिऐ ओ खुननिहार किसान मेहनती छैथ। अपन धैर्य आ श्रमसँ माटिक तरक पानि निकालि खीड़ा उपजौने छैथ। तँए हुनका मेहनैतक फल भेट रहल छैन। बाँकी सभ कामचोर अछि तँए आशपर पानि फेरा गेलइ।”



समैयक बेरबादी

एकटा बेवसायी खिस्सा सुनलक जे राजा परिक्षित एक्के सप्ताह भागवत सुनि ज्ञानवान भऽ गेल छला। तँए हमहूँ किए ने भऽ सकै छी। अहिना सोचि ओ कथावाचक भँजियबए लगला। कथावाचक भेटलैन। दुनू गोरे माने कथोवाचक आ बेवसायियो अपन-अपन लाभक फेरमे रहैथ। कथावाचक सोचैथ जे मालदार सुनिनिहार भेटल आ बेवसायी सोचैथ जे जिनगी भरि बइमानी कऽ बहुत धन अरजलौं, से नहि तँ आबो– मरै बेर किछु ज्ञान अरजि ली जइसँ मुक्ति हएत।

कथा शुरू भेल। सप्ताह भरि कथा चलल। सप्ताह बितलापर बेवसायी कथावाचकेँ माने व्यासकेँ कहलकैन-

“अहाँ नीक-नहाँति कथा नै सुनेलौं हमरा ज्ञान कहाँ भेल? दछिना नै देब।”

बेवसायीक बात सुनि व्यासजी कहलखिन-

“अहाँक धियान सदिखन पाइ कमाइ दिस रहैए तँ ज्ञान केना हएत?”

दुनू एक-दोसरकेँ दोख लगबए लगला। कियो अपन गलती मानैले तैयारे ने। दुनूक बीच पकड़ा-पकड़ी होइत-होइत पटका-पटकी हुअ लगल। तखने एकटा विचारवान बेकती रस्तासँ गुजरै छला। ओ देखलखिन। लगमे जा दुनू गोरेकेँ झगड़ा छोड़बैत पुछलखिन। दुनू गोरे अपन-अपन बात ओइ बेकतीकेँ कहलकैन। दुनूक बात सुनि ओ बेकती दुनूक हाथ-पएर बान्हि कहलखिन-

“आब अहाँ दुनू गोरे एक-दोसरक बान्ह खोलू।”

बान्हल हाथसँ केना खुलितै, बन्हन नै खुलल। तखन ओ निर्णय दैत कहलखिन-

“दुनू गोरेक मन केतौ और छल तँए सफल नै भेलौं। सप्ताह भरिक समय दुनूक गेल तँए अपन-अपन घाटा उठा घर जाउ। एकात्म भेने बिना आध्यात्मिक उदेसक पूर्ति नै होइ छइ।”



पहिने तप तखन ढलिहें

एक दिन एकटा कुम्हार माटिक ढेरी लग बैस, माटिसँ लऽ कऽ पकौल बरतन धरिक विचार मने-मन करै छल। कुम्हारकेँ चिन्तामग्न देख माटि कहलकै-

“भाय, तोँ हमर एहेन बरतन बनाबह जइमे शीतल पानि भरि कऽ राखी आ प्रियतमक हृदए जुड़ा सकी।”

माटिक सबाल सुनि, कनीकाल गुम्म भऽ कुम्हार माटिकेँ कहलक-

“तोहर विचार तखने सम्भव भऽ सकै छौ जखैन तोरा कोदारिक चोट, मुंगरीक मारि खाइक आ गदहापर चढ़ैक, पएरक गंजन सहैक तथा आगिमे पकैक साहस हेतौ। ऐसँ कम गंजन भेने पवित्र पात्र नै बनि सकमेँ।”



खलीफा उमरक सिनेह

खलीफा उमर गुलामक संग बुलैले देहात दिस जाइत रहैथ। किछु दूर गेलापर देखलखिन जे एकटा बुढ़िया जोर-जोरसँ आँगनमे बैस कानि रहल अछि। रस्तासँ ससैर ओ डेढ़ियापर जा ओइ बुढ़ियासँ कनैक कारण पुछलखिन।

हुचकैत बुढ़िया कहए लगलैन-

“हमर जुआन बेटा लड़ाइमे मारल गेल। हम भूखे मरै छी मुदा एक्को दिन खलीफा उमर खोजो-खबैर लइले नै आएल।”

बुढ़ियाक बात सुनि उमर चोट्टे घुमि घरपर आबि एक बोरी गहुम अपने माथपर लऽ बुढ़िया ओइठाम विदा भेला।

माथपर गहुमक बोरी देख गुलाम कहलकैन-

“अपने बोरी नै उठबियो। हमरा दिअ नेने चलै छी।”

गुलामकेँ उमर जवाब देलखिन-

“हम अपन पापक बोझ लऽ खुदा घर नै जाएब तँ पाप केना कटत? अहाँ तँ हमरा पापक भागी नै हएब।”

गहुमक बोरी बुढ़ियाक घर उमर पहुँचा देलखिन। गहुम देख बुढ़िया नाओं पुछलकैन। मुस्कियाइत उमर जवाब देलखिन-

“हमरे नाओं उमर छी।”

असिरवाद दैत बुढ़िया कहलकैन-

“अपन प्रजाक दुख-दरदकेँ अपन परिवारक दुख-दरद जकाँ

बुझि कऽ चलब तखने आदर्श बनि सकब। जखैन आदर्श बनब तखने हजारो-लाखो लोकक दुआ भेटत आ अमर हएब।”



जखने जागी तखने परात

प्रसिद्ध उपन्यासकार डाक्टर क्रोनिन बड़ गरीब रहैथ। मुदा जखन पी-एच.डी. केलैन आ किताब सभ बिकए लगलैन तखन धीरे-धीरे सुभ्यस्त हुअ लगला। धनकेँ अबैत देख मनो बढ़ए लगलैन। क्रिया-कलाप सेहो बदलए लगलैन। क्रिया-कलापकेँ बदलैत देख पत्नी कहलकैन-

"जखैन हम सभ गरीब छेलौं तखने नीक छेलौं जे कम-सँ-कम हृदैमे दयो तँ छेलए। मुदा आब दया समापत भेल जा रहल अछि।"

पत्नीक बात सुनि क्रोनिन महसूस करैत कहलखिन-

"ठीके कहलौं। धनीक धनसँ नै होइए बल्कि मन आ हृदैसँ होइए। हम अपन रस्तासँ भटैक गेल छी। जौं अहाँ नै चेतैबतौं तँ हम आरो आगू बढ़ि ओइ जगहपर पहुँच जैतौं जेतए एक्कोटा मनुखक बास नै होइ छइ।"



अस्तित्वक समाप्ति

एकठाम कनी हटि-हटि कऽ तीनटा पहाड़ छेलइ। पहाड़क पजरेमे नमगर आ गहींर खाधियो छेलइ। जइसँ लोकक आबाजाही नै भऽ पबै। एक दिन एकटा देवता ओइ दिशासँ होइत गुजरै छला। तीनू पहाड़केँ देख पुछलखिन-

“ऐ क्षेत्रक नामकरण करबाक अछि से केकरा नाओंसँ करी? संगहि अपन कल्याण-ले अहाँ सभ की चाहै छी?”

पहिल पहाड़ कहलकैन-

“हम सभसँ ऊँच भऽ जाइ जइसँ दूर-दूर देख पड़िऐ।”

दोसर बाजल-

“हमरा खूब हरिअर-हरिअर प्राकृतिक सम्पदासँ भरि दिअ। जइसँ लोक हमरा दिस आकर्षित हुअए।”

तेसर कहलक-

“हमर उँचाइकेँ छील ऐ खादिकेँ भरि दियौ जइसँ ई सौंसे क्षेत्र उपजाउ बनि जाए जइसँ लोकोक आबाजाही भऽ जेतइ।”

तीनूक जोगार लगा देवता विदा भऽ गेला। एक बर्ख पछातइ तीनूक परिणाम देखैले पुनः एला। पहिल पहाड़ खूब ऊँचगर भऽ गेल छल। मुदा कियो ओमहर जेबे ने करैत। पानि-पाथर, बिहाड़ि, रौद आ जाड़क मारि सभसँ बेसी ओकरे सहए पड़इ। दोसर तेते प्राकृतिक सम्पदासँ भरि गेल जे बोनाह भऽ गेल। बोनैया जानवरक डरे कियो ओमहर जेबे ने करैत। तेसर पहाड़सँ खाधियो भरि गेलै आ अपनो

समतल भऽ गेल। खाधिसँ लऽ कऽ पहाड़ धरिक जगह उपजाउ बनि गेलइ। खेती-वाड़ी करैले लोकक आबाजाही दिन-राति भऽ गेलइ।

तेसर पहाड़क नाओंपर क्षेत्रक नामकरण करैत देवता कहलखिन-

“यएह पहाड़ अपन अस्तित्व समाप्त कऽ खाधियोकेँ अपना हृदैमे लगौलक। जइसँ ई क्षेत्र उपजाउ बनि गेल। तँए अहींक नाओंपर ऐ क्षेत्रक नाओं राखब उचित।”



खजाना

एकटा इलाकामे रौदी भऽ गेलइ। सभ तरहक परिवारकेँ सभ तरहक जीबैक रस्ता छेलइ। मुदा एकटा दशे कट्ठाबला किसान मजदूर छल। जे अपने खेतमे मेहनैत कऽ गुजर करै छल। रौदी देख वेचारा सोचए लगल जे जाबे पानि नै हएत ताबे खेती केना करब? जौं खेती नै करब तँ खएब की? तँए अनतहि चलि जाइ जे काज लागत तँ गुजरो चलत। जब बर्खा हेतै तँ धुमि कऽ चलि आएब आ खेती करब। ई सोचि सभ तूर नुआ-वस्तु लऽ विदा भऽ गेल।

जाइत-जाइत दुपहर भऽ गेलइ। भूखे-पिआसे बच्चा सभ लटुआए लगलै। छोटका बच्चा ठोहि फाड़ि-फाड़ि कानए लगलै। रस्ता कातमे एकटा झमटगर गाछ देख सभकेँ छाहैरक आश भेलइ। सभ तूर गाछतर पड़ि रहल। छोटका बेटा माएकेँ कहलक-

“माए, भूखे परान निकलैए कुछो खाइले दे।”

बेटाक बात सुनि माएक करेज पघिलए लगलै मुदा करैत की, खाइले तँ किछु रहबे ने करइ। मुदा तैयो वेचारी कहलकै-

“बौआ, कनीकाल बरदास करू। खाइक जोगार करै छी।”

सभ तूर जोगारमे जुटि गेल। कियो माटिक गोलाक चूल्हि बनबए लगल, तँ कियो जारैन आनए गेल। कियो पानि आनए इनार दिस विदा भेल। सभकेँ सभ काजमे लगल देख गाछक ऊपरसँ एकटा चिड़ै पुछलकै-

“ऐ मूर्ख, पकबैक तँ सभ जोगार सभ करै छह मुदा पकेबह

कथी? जखैन पकबैक कोनो चीज छहे नहि तँ छुच्छे चूल्हि जरेबह।"

बड़का बेटा यएह सोचै छल जे केतौसँ किछु कन्द-मूल आनि उसनि कऽ खाएब। मुदा तही बीच चिड़ैक मजाक सुनि खिसिया कऽ कहलकै-"तोरे सभ परिवारकेँ पकैड़ आनि पका कऽ खेबौ।"

चिड़ैक मुखिया डरि गेल। मने-मन सोचए लगल जे परस्पर सहयोगक पुरुषार्थ किछु कऽ सकैए। तँए झगड़ब उचित नहि। मिलान स्वरमे बाजल-

"भाय, हमरा परिवारकेँ किए नाश करबह। तोरा गाड़ल खजाना देखा दइ छिअ। वएह लऽ आबह आ चैनसँ जिनगी बितबिहह।"

ओ चिड़ै खजाना देखा देलकै। सभ मिलि ओइ खजानाकेँ लऽ घर दिस घुमि गेल।

ओकरा घरक बगलेमे दोसरो ओहने परिवार छेलइ। जेकरा सभ बात ओ कहि देलकै। मुदा ओइ परिवारक सभ कोढ़ि आ झगड़ाउ रहए। खजानाक लोभे ऊहो सभ-तूर विदा भेल। जाइत-जाइत ओइ गाछ तर पहुँचल। पहुलके चिड़ै जकाँ ईहो सभ भानसक नाटक करए लगल। गारजन जेकरा जे अढ़बै से करैक बदला झगड़े करए लगइ। गाछपर सँ वएह चिड़ै कहलकै-

"भोजनक जोगारे करैमे तँ सभ कटौझ करै छह तखैन पकेबह कथी?"

पहुलके जकाँ परिवारक मुखिया कहलकै-

"तोरे पकैड़ कऽ पकेबह?"

हँसैत चिड़ै उत्तर देलकै- "हमरा पकड़ैबला कियो और छल जे सभ धन लऽ चलि गेल। तोरा बुत्ते किछु ने हेतह?"



उग्रधारा

द्वापर युगक सन्धयाकालीन कथा छी। महाभारतक लड़ाइ सम्पन्न भऽ गेल छल। एक दिन एकान्तमे बैस अर्जुन त्रेताक राम-रावणक लड़ाइ आ द्वापरक कौरव-पाण्डवक लड़ाइक तुलना मने-मन करै छला। अनासुरती मनमे उठलैन जे लंका जाइकाल रामक सेना एक-एक पाथरक टुकड़ाकेँ जोड़ि जे समुद्रमे पुल बनौलैन, ओ तँ एक तीरोमे बनि सकै छल। ऐ प्रश्नपर जेते सोचैथ तेते शंका बढ़ले जाइन। अन्तमे, यएह सोचलैन जे पम्पापुरमे हनुमान तपस्या कऽ रहल छैथ तँए हुनकेसँ किए ने पुछि-ले जाए।

हनुमानकेँ भँजियबैले अर्जुन विदा भेला। जाइत-जाइत हनुमानक कुटीपर पहुँचलैथ। हनुमान तपस्यामे लीन रहैथ। कुट्टीक आगूमे बैस अर्जुन हनुमानक धियान टुटैक प्रतीक्षा करए लगला। जखन हनुमानक धियान टुटलैन तँ अर्जुनकेँ देखलखिन। आसनसँ उठि अतिथि-सत्कार करैत हनुमान अर्जुनकेँ पुछलखिन-

“अहाँ के छी, कोन काजे ऐठाम एलौं हेन?”

अपन परिचए दैत अर्जुन कहए लगलखिन-

“अपने त्रेताक महावीर छी तँए एकटा शंकाक समाधान-ले एलौं हेन।”

“पुछू।”

“लंका जाइकाल जे समुद्रमे एक-एकटा पाथरक टुकड़ा जोड़ि जे पुल बनौल, ओ तँ एक तीरोमे बनि सकै छल?”

अर्जुनक बात सुनि किछु काल गुम्म भऽ हनुमान उत्तर देलखिन-

“हँ, मुदा ओ ओते मजगूत नै होइतै जेते एक-एक पाथरक टुकड़ा जोड़ि कऽ भेलइ।”

हनुमानक उत्तरसँ अर्जुन असहमत होइत कहलखिन-

“तीरोक बनल पुल तँ ओहने मजगूत भऽ सकै छेलै?”

ऐ प्रश्नपर दुनूक बीच मतभेद भऽ गेलैन। अन्तमे परीक्षाक नौबत आबि गेलइ। दुनू गोरे समुद्रक कात पहुँचला। तरकशसँ तीर निकालि अर्जुन धनुषपर चढ़ा समुद्रमे छोड़लैन। पुल बनलै। अपन विकराल रूप बना हनुमान पुलपर कुदबाक उपक्रम केलैन। अन्तर्यामी कृष्ण सभ देखैत रहैथ। मने-मन सोचलैन जे महाभारतक नायक अर्जुन हारि रहल छैथ। हुनक हारब हमर हारब हएत। संगहि महाभारतक लड़ाइ सेहो झूठ भऽ जेतइ। तँए प्रतिष्ठा बँचबैक घड़ी आबि गेल अछि। जइ सोझे हनुमान पुलपर खसितैथ तइ सोझे कृष्ण अपन कन्हा पुलक तरमे लगा देलखिन। हनुमान कुदला। पुल तँ टुटैसँ बँचि गेल मुदा कृष्णक करेज चहैक गेलैन। जइसँ पानिमे खून पसरए लगलै। खूनसँ रंगाइत पानि देख हनुमान धियान करए लगला जे एना किए भऽ रहल छइ। भँजियबैत ओ ओइ जगहपर पहुँच कृष्णकेँ देखलखिन।

अचेत कृष्णकेँ देख, दुनू हाथ जोड़ि हनुमान क्षमा मंगलखिन।



बेवहारिक

जीवनी आ अनाड़ी माने बेवहारिक आ अबेवहारिकक प्रश्न असान नहि। ऐ विशाल संसारमे लाखो-करोड़ो ढंगक जिनगी बना लोक जीबैए। एकक जिनगी दोसरसँ मिलबो करैत आ भिन्नो होइत। तँए एकक बेवहारिक ज्ञान दोसरा-ले नीको होइए आ अधलो।

चारि आदमी स्नातक महाविद्यालयसँ निकैल गाम जाइत रहैथ। चारूकेँ अपन-अपन ज्ञानपर गर्व रहैन। दुपहर भऽ गेल छल। सभकेँ भूख लगलैन।

रस्तामे रूकि खाइक ओरियानमे चारू गोरे जुटि गेला। तर्कशास्त्री चिक्कस आनए दोकान गेला। प्लोथिनक झोरामे चिक्कस कीनि अबै छला। मनमे फुरलैन जे झोरा मजगूत अछि कि नहि? तथ्य जनैले झोराकेँ हाथसँ दबलैन। झोरा फाटि गेल। चिक्कस छिड़िया कऽ माटिमे मिलि गेल। फेर घुमि कऽ चाउर कीनि ओरिया कऽ नेने एला।

कलाशास्त्री जारैन आनए गेल छला। हरिअर-हरिअर सुन्नर गाछ देख ओ मुग्ध भऽ गेला। गाछसँ सुखल जारैन नै तोड़ि काँचे झाड़ी काटि कऽ नेने एला।

कहुना-कहुना कऽ तेसर पाक-शास्त्री वएह कँचका जारैन पजारि बटलोही चढ़ौलैथ। अदहन जखन बजलै तँ चाउर लगौलैथ। थोड़बेकाल पछातइ बटलोहीमे चाउरो आ पानियोँ खुदबुदाए लगलै। बटलोहीमे खुदबुदाइत देख पाक-शास्त्री मग्न भऽ गेला। चारिम जे व्याकरण जननिहार छला बटलोहीक खुदबुदीक अवाज सुनि

व्याकरणक उच्चारणक हिसाबसँ गलत बुझि, तमसा कऽ ओकरा उल्टा देलखिन। सभटा भात चूल्हिमे चलि गेल।

बगलेमे ठाढ़ एक गोरे सभ तमाशा देखैत रहैथ। चारूकेँ भूखल देख हुनका दया लगलैन ओ अपन मोटरीसँ नून-सतुआ निकालि चारू गोरेकेँ खाइले दैत कहलखिन-

“किताबी ज्ञानसँ बेवहारिक अनुभवक मूल्य अधिक होइ छइ।”



समर्पण

समुद्रसँ मिलैले धार विदा भेल। रस्तामे बलुआही इलाका पड़ै छेलइ। जुआनीक जोशमे धार विदा तँ भेल मुदा रस्ताक बालु आगू बढ़ै ने दइ छेलइ। सभ पानि सोंखि लिअए। धारक सपना टुटए लगलै। मुदा तैयो साहस कऽ धार अपन उद्गम स्रोतसँ जल लऽ लऽ दौग कऽ आगू बढ़ए चाहै छल मुदा तैयो धारक सभ पानि बालु सोंखि लइ छेलइ। जइसँ धार आगू बढ़ैमे असफल भऽ जाइ छल। अन्तमे झुंझला कऽ निराश भऽ धार बालुकेँ पुछलकै-

“समुद्रमे मिलैक हमर सपना अहाँ नै पूर हुअए देब?”

बालु उत्तर देलकै-

“बलुआही इलाका होइत जाएब सम्भव नइए। अगर जौं अहाँ अपना प्रियतमसँ मिलए चाहै छी तँ पहिने अपन सम्पैत वादलकेँ सौंपि दियौ, तखने पहुँच पाएब।”

अपन अस्तित्वकेँ समाप्त करबाक अद्भुत समर्पणक साहस धारकेँ हेबे ने करइ। मुदा बालुक विचारमे गम्भीरता छेलइ। किछु काल विचारि धार समर्पण-ले तैयार भऽ गेल। तखन ओ पानिक बूनक रूपमे अपनाकेँ बदैल वादलक सवारीपर चढ़ि समुद्रमे जा मिलल।



उत्थान-पतन

एकटा शिष्य गुरुसँ पुछलकैन-

“मनुख शक्तिक भण्डार छी, फेर ओ किए डुमैए-गिड़ैए?”

शिष्यक प्रश्न सुनि गुरु कनीकाल सोचि अपन कमण्डल पानिमे फेक देलखिन। कमण्डल पानिमे तैरए लगल। कनीकालक बाद कमण्डल निकालि पेनमे भूर कऽ देलखिन। भूर केला पछातइ फेर कमण्डलकेँ पानिमे फेकलखिन। कमण्डल डुमि गेल। डुमल कमण्डलकेँ देखबैत गुरु कहलखिन-

“जहिना छेद भेल कमण्डल पानिमे डुमि गेल मुदा बिनु छेद भेल कमण्डल नै डुमल तहिना मनुखोक अछि। जइ मनुखमे संयम छै ओ ऐ संसार रूपी पोखैरमे नै डुमैए मुदा जे असंयमी अछि ओ ओइ छेद भेल कमण्डल जकाँति डुमि जाइत अछि। अहिना गाएकेँ अगर चालैनमे दुहल जाए तँ दूध धरतीपर गिरत मुदा जौं सौंस बरतनमे दुहल जाएत तँ बरतनमे रहत। तहिना इन्द्रिय शक्ति जौं मानसिक शक्तिकेँ कुमार्ग दिस लऽ जाएत तँ ओ ओही चालैन जकाँ भऽ जाएत। मुदा जौं सुमार्ग दिस बढ़त तँ ओ जरूर शक्तिशाली मनुख बनत।”



देवता

मनुखक रोम-रोममे ईश्वर-परब्रह्म समाएल छैथ। केकरो अहित करबाक इच्छा करब अपना-ले पापकेँ बजाएब छी। दधीचिक पुत्र पिप्लाद अपन माएक मुहेँ अपन पिताक हड्डी देवता द्वारा मांगब आ ओइसँ बनौल बज्रसँ अपन प्राण बँचाएब सुनलैन। सुनिते पिप्लादकेँ देवताक प्रति असीम घृणा मनमे उठलैन। मने-मन सोचए लगला जे अपन स्वार्थ साधैले दोसरक प्राण हरब, केते नीचता छी। मनमे क्रोध जगलैन। पिताक बदला लइले पिप्पलाद तप करैक विचार केलैन।

पिप्पलाद तप शुरू केलैन। तप शुरू करिते मनक ताप कमए लगलैन। बहुत दिनक पछातइ भगवान शिव प्रकट भऽ कहलखिन-

“वर मांगू?”

प्रणाम कऽ पिप्पलाद शिवकेँ कहलखिन-

“अपने अपन रुद्र रूप धारण कऽ ऐ देवता सभकेँ डाहि कऽ भष्म कऽ दियौ।”

पिप्पलादक बात सुनि शिव स्तब्ध भऽ गेला। मुदा अपन वचन तँ पुरबए पड़तैन। तँए देवताकेँ जरबैले तेसर आँखि खोलैक उपक्रम करए लगला। ऐ उपक्रमक आरम्भेमे पिप्पलादक रोम-रोम जरए लगल। अपन अंगकेँ जरैत देख जोरसँ हल्ला करैत शिवकेँ कहए लगलखिन-

“भगवान, ई की भऽ रहल अछि? देवताक बदला हम खुदे जरि रहल छी!”

मुस्की दैत शिव कहलखिन-

“देवता अहाँक देहमे सन्हियाएल छैथ। अवयवक शक्ति हुनके सामर्थ्य छिऐन। देवता जरता आ अहाँ बँचल रहब से केना हएत? आगि लगौनिहार स्वयं सेहो जरैए।”

पिप्पलाद अपन याचना घुमा लेलैन। तखन भगवान शिव कहलखिन-

“देवता सभ तियागक अवसर दऽ अहाँ पिताक काजकेँ गौरवान्वित केलैन। मरब तँ अनिवार्य अछि। ऐसँ ने अहाँक पिता बँचितैथ आ ने वृत्तासुर राक्षस।”

पिप्पलादक भ्रम टुटि गेलैन। ओ आत्म कल्याण दिस मूड़ि गेला।



पाप आ पुण्य

अपन पोथी-पतरा उनटबैत चित्रगुप्त आसनपर बैसल छला। तैबीच दू गोरेकेँ यमदूत हुनका लग पेश केलक। पहिल बेकतीक परिचए दैत यमदूत कहलकैन-

“ई नगरक सेठ छैथ। हिनका घनक कोनो कमी नै छैन। खूब कमेबो केलैन आ मन्दिर, धरमशाला सेहो बनौलैन।”

कहि यमराज सेठकेँ कातमे बैसा देलक।

दोसरकेँ पेश करैत बाजल-

“ई बड़ गरीब छैथ। भरि पेट खेनाइयो ने होइ छैन। एक दिन खाइत रहैथ आकि एकटा भूखल कुकुर लगमे आबि ठाढ़ भऽ गेलैन। भूखल कुकुरकेँ देख थारीमे जे रोटी बँचल छेलैन ओ ओकरा आगूमे दऽ देलखिन। अपने पानि पीब हाथ धोय लेलैन। आब अपने जे आज्ञा दिऐ।” यमदूतक ब्यान सुनि चित्रगुप्त पोथीओ देखैथ आ विचारबो करैथ। बड़ीकाल धरि सोचैत-विचारैत निर्णय देलखिन-

“सेठकेँ नरक आ गरीबकेँ स्वर्ग लऽ जाउ।”

चित्रगुप्तक निर्णय सुनि यमराजो आ दुनू बेकतियो अचम्भित भऽ गेल। तीनू गोरेकेँ अचम्भित देख अपन स्पष्टीकरणमे चित्रगुप्त कहए लगलखिन-

“गरीब आ निःसहाय लोकक शोषण सेठ केने अछि। ओइ निःसहाय लोकक विवशताक दुरूपयोग केने अछि। जइसँ अपनो ऐश-मौज केलक आ बँचल सम्पैतक नाओं मात्र लोकेषणक पूर्ति हेतु

व्यय केलक। तइमे लोकहितक कोन काज भेलै? ओइ मन्दिर आ धरमशल्ला बनबैक पाछू ई भावना काज करै छेलै जे लोक हमर प्रशंसा करए। मुदा पसेना चुबा कऽ जे गरीब कमेलक आ समय एलापर ऊहो कुत्तेकेँ खुआ देलक। जौं ओकरा आरो अधिक धन रहितै तँ नै जानि केते अभावग्रस्त लोकक सेवा करैत।”



परख

एकटा किसानकेँ चारिटा बेटा रहए। बेटा सबहक बुधि परखैले किसान सभकेँ बजा एक-एक आँजुर धान दऽ कहलक-

“तूँ सभ अपन-अपन विचारसँ एकरा उपयोग करह।”

धानकेँ कम बुझि जेठका बेटा आँगनमे छिड़िया देलक। चिड़ै सभ आबि बीछ-बीछ खा गेल...।

माझिल बेटा ओइ धानकेँ तरहत्थीपर लऽ-लऽ रगैड़-रगैड़, भुस्साकेँ मुहसँ फूकि, खा गेल।

बापक देल धानकेँ सम्पैत बुझि साझिल बेटा कोहीमे रखि लेलक, जे जौं कहियो बाबू मंगता तँ निकालि कऽ दऽ देबैन।

छोटका बेटा, ओइ धानकेँ खेतमे बाउग कऽ देलक। जइसँ कएक बर बेसी धान उपजलै।

किछु दिन पछातइ चारू बेटाकेँ बजा किसान पुछलक-

“धान की भेल?”

चारू बेटा अपन-अपन केलहा काज कहलकैन। चारू बेटाक काज देख-सुनि किसान छोटका बेटाकेँ बुधियार बुझि परिवारक भार दैत कहलक-

“परिवारमे एहने गुण अपनबए पड़ै छइ। एहने गुण अपनौलासँ परिवार सुसम्पन्न बनै छइ।”



आलसी

एकटा गाछपर टिकुली आ मधुमाछी रहै छल। दुनूक बीच घनिष्ठ दोस्ती छेलइ। भरि दिन दुनू अपन जिनगीक लीलामे लगल रहै छल। अकलबेरामे दुनू आबि अपन सुख-दुखक गप-सप्प करै छल।

बरसातक समय एलइ। सतैहिया लादि देलकै। मधुमाछी-ले तँ अगहन आबि गेल मुदा टिकुली-ले दुरकाल। भूखे-पिआसे टिकुली घरक मोख लग मन्हुआएल बैसल छल। मुँह सुखाएल आ चेहरा मुरुझाएल छेलइ। चरौर कए कऽ आबि मधुमाछी टिकुलीकेँ पुछलकै-

"बहिन, एहेन सुन्नर समैमे एते सोगाएल किए बैसल छी?"

मधुमाछीक बात सुनि करुआएल मोने टिकुली उत्तर देलकै-

"बहिन, मौसमक सुन्नरतासँ पेटक आगि थोड़े मिझाइ छइ। तीन दिनसँ केतौ निकलैक समैए ने भेटल, तँए भूखे तबाह छी।"

उपदेश दैत मधुमाछी कहलकै-

"कुसमय-ले किछु बँचा कऽ राखक चाही।"

मुड़ी डोलबैत टिकुली कहलकै-

"कहलौं तँ बहिन ठीके मुदा बँचा कऽ रखलासँ आलसियो भऽ जैतौं आ भूखल सबहक नजैरमे चोरो होइतौं।



प्रेम

जखन परिवारमे पति-पत्नी आ बच्चा सबहक बीच सिनेह रहै छै तखन परिवार स्वर्गोसँ सुन्नर बुझि पड़ै छइ। नमहर-सँ-नमहर विपैत परिवारमे किए ने आबए मुदा ढंगसँ चललापर ऊहो आसानीसँ निपैट जाइ छइ।

एकटा छोट-छीन गरीब परिवार छल। दुइए परानी घरमे। सभ साल दुनू परानी -सुनिता आ सुशील- अपन विवाहोत्सव मनबैत। गरीब रहने तँ बहुत ताम-झामसँ उत्सव नै मनबैत मुदा मनबैत सभ साल छल। छोट-मोट उपहार एक-दोसरकेँ, यादि स्वरूप दइ छल। साले-साल ऐ परम्पराकेँ निमाहैत आबि रहल छल।

अहू बर्ख ओ दिन एलइ। उत्सवक दिनसँ किछु पहिनेसँ उपहारक योजना दुनूक मनमे बनए लगलै। मुदा दुनूक हाथ खाली। भरि पेट खेनाइयो ने पूरै तखन जमा कए कऽ की रखैत। मने-मन सुशील योजना बनौने जे पत्नीक केशमे लगबैले किलीप नै छै तँए ऐ बेर किलीपे उपहार देबैन। तहिना सुनितो सोचैत जे पति हाथक घड़ीक चेन पुरान भऽ गेल छैन तँए ऐ बेर चेन कीनि कऽ देबैन। दुनू अपन-अपन जोगारमे। मुदा नाजाइज कमाइ नै रहने जोगारे ने बइसै। उत्सवक दिन अबैमे एक दिन बाँकी रहलै। अन्तिम समैमे सुशील सोचलक जे आइ साँझमे घड़ी बेचि किलीप कीनि लेब।

एमहर सुनितो सोचली जे अपन केश कटा कऽ बेचि लेब तइसँ

घड़ीक चेन भऽ जाएत। साँझू पहर दुनू गोरे- फूट-फूट बाजार गेल।

सुशील घड़ी बेचि किलीप कीनि लेलक आ सुनिता केश बेचि चेन वेसाहलक। खुशीसँ दुनू गोरे घर आबि अपन-अपन वस्तु–चेन आ किलीप ओरिया कऽ रखि लेलक।

सबेरे सूति उठि कऽ दुनू परानी हँसैत एक-दोसरकेँ उपहार दइले आगू बढ़ल। सुनिता टोपी पहिरने छेली। किलीप निकालि सुशील सुनिताक टोपी हटा किलीप लगबए चाहलक मुदा केशे नहि!

तहिना चेन निकालि सुनिता घड़ीमे लगबए चाहलैन तँ हाथमे घड़ीए नहि।

आमने-सामने दुनू ठाढ़। दुनूक मुहसँ तँ किछु नै निकलैत मुदा दुनूक हृदैमे हर्ष-विस्मयक बीच घमासान लड़ाइ बजैर गेलइ। अन्तमे हृदए बाजल-

“जे सिनेह दूधक समुद्रमे झिलहोरि खेलैए ओइले किलीप आ चेनक कोन महत छइ।”



हैरियट स्टो

अमर लेखिका हैरियट एलिजाबेथ स्टो विश्व-विख्यात पोथी, 'टाम काकाक कुटिया' लिखने छैथ। जइ समैमे ओ पोथी लिखै छला ओइ समय ओ कठिन परिस्थितिमे जिनगी बितबैत रहैथ। ओना अकसरहाँ लोक ऐ पोथीकेँ अमेरिकाक दास प्रथाक विरोधमे लिखल मानैए।

अपना परिस्थितिक सम्बन्धमे अपन भौजीकेँ कहलखिन-

"चूल्हि-चौकाक काज– नुआ-बस्तर धोनाइ, सिआइ केनाइ, जूता-चप्पलक पॉलिस आ मरम्मैत केनाइ जिनगीक मुख्य काज अछि। बच्चा आ परिवारक सेवामे भरि दिन सिपाही जकाँ खटै छी। छोटका बच्चा लगमे सुतैए तँए जाधैर ओ सूति नै रहैए ताधैर किछु ने सोचि सकै छी आ ने लिखि पबै छी। गरीबी आ पारिवारिक काज ऐ रूपे दबने अछि जइसँ समैए कम बँचैए। मुदा तैयो एक-दू घन्टा सुतैक समय काटि अपना सन लोक, जिनका परिवारक अंग बुझै छिऐन तिनका-ले किछु लिखि-पढ़ि लइ छी।"

हुनके लिखल पोथीसँ उत्तरी अमेरिका आ दछिनी अमेरिकामे दास प्रथाक खिलाप क्रान्ति भेल।



बुझैक ढंग

एकटा यात्री वृन्दावन विदा भेल। किछु दूर गेलापर रस्ताक बगलमे मीलक पत्थरपर नजैर पड़लै। ओइ मीलक पत्थरमे वृन्दावनक दूरी आ दिशा लिखल छेलइ। ओ यात्री ओतै अँटैक बैस रहल आ बाजए लगल-

“पाथरक अंकन तँ गलती नै भऽ सकैए किएक तँ बिसवासी लोकक लिखल छिऐ। वृन्दावन तँ आबिए गेल छी, आगू बढ़ैक की प्रयोजन?”

थोड़ेकाल पछातइ एकटा बुझनिहार आदमी ओइ रस्ते केतौ जाइत रहैथ तँ सुनलखिन। मने-मन खूब हँसलैथ। कनीकाल ठाढ़ भऽ हँसैत ओइ यात्रीकेँ कहलखिन-

“पाथरपर सिरिफ संकेत मात्र अछि। ऐठामसँ वृन्दावन बहुत दूर अछि। जौं अहाँ ओतए जाए चाहै छी तँ तुरन्ते सभ समान समेट विदा भऽ जाउ नहि तँ नइ पहुँचब।”

भोला-भला यात्री अपन भूल मानि विदा भेल...।

एहेन बहुतो लोक छैथ जे शास्त्रो पढ़ै छैथ, शास्त्रीय बातो सुनै छैथ मुदा धरम धारण करबाक रस्ता पकड़बे ने करै छैथ तखन ओ धरम केना बुझथिन जे धरम की छिऐ?



श्रमिकक इज्जत

अपन संगी-साथीक संग नेपोलियन टहलैले जाइत रहैथ। जेरगर रहने सौंसे रस्ता छेकाएल छेलइ। दोसर दिससँ एकटा घसबहिनी माथपर घासक बोझ नेने अबै छेली। ओइ घसबहिनीपर सभसँ पहिल नजैर नेपोलियनक पड़लैन। ओ पाछू घुमि कऽ देखलैन। सौंसे रस्ता घेराएल छेलइ। अपन पैछला संगीक हाथ पकैड़ घिंचैत कहलखिन-

“श्रमिकक सम्मान करू..! एक भाग रस्ता खाली कऽ दियौ। यएह देशक अमूल्य सम्पैत छी। एकरे बले कोनो देशक उन्नैत होइ छइ।”

घसबहिनी टपि गेल। थोड़े आगू बढ़लापर पुनः नेपोलियन संगी सभकेँ कहलखिन-

“सद्प्रवृत्तिकेँ बढ़ेबाक चाही। ओकरा जेते महत देबै ओते जन-उत्साह जगतै। जइसँ देशक कल्याण हेतइ।”



वंश

महान् विचारक सिसरोकेँ एकटा धनिक सरदारसँ कोनो बाते कहा-सुनी हुअ लगलैन। ने ओ धनिक पाछू हटैले तैयार आ ने सिसरो। दुनूक बीच पकड़ा-पकड़ीक नौबत आबए लगलै। खिसिया कऽ ओ धनिक सिसरोकेँ कहलकैन-

"तूँ नीच कुलक छेँ, तँए तोरा-हमरा कथीक वरावरी?"

ऐ बातसँ सिसरो विचलित नै भऽ साहससँ उत्तर देलखिन-

"हमरा कुलक कुलीनता हमरासँ शुरू हएत मुदा तोरा कुलक कुलीनता तोरासँ अन्त हेतौ।"

सभ्यता आ कुलीनता जनमसँ नै बल्कि चरित्र आ कर्तव्यसँ पैदा लइए।



तियाग

सत्संग, भागवत आ प्रवचनमे बेर-बेर तियागक महिमाक चर्चा होइत रहल अछि। तियागकेँ ईश्वर प्राप्तिक रस्ता बतौल जाइए। बेर-बेर जरायुध ऐ चर्चाकेँ सुनथि। तँए मनमे बिसवास भऽ गेलैन जे सत्ते तियागसँ ईश्वरक प्राप्ति होइ छइ। जरायुध अपन सभ सम्पैत दान कऽ देलखिन। मुदा दान केलो पछातइ हुनका ने मनमे शान्ति एलैन आ ने ईश्वर भेटलैन। निराश भऽ जरायुध महाज्ञानी शुकदेव लग पहुँच पुछलखिन-

“जनक तँ संग्रही छला मुदा तैयो हुनका ब्रह्मज्ञान प्राप्ति भऽ गेल छेलैन आ हम सभ किछु तियागिओ कऽ ने ब्रह्मज्ञान पाबि सकलौं आ नहियेँ शान्ति भेटल। एकर की कारण छइ?”

धियानसँ जरायुधक बात सुनि सुकदेव उत्तर देलखिन-

“आवश्यक वस्तुकेँ परमार्थमे लगा देब तँ नैतिक आ समाजिक कर्तव्य बुझल जाइत। आध्यात्मिक स्तरक तियागमे सभ वस्तुक ममत्व छोड़ि ओकरा ईश्वरक घरोहर बुझए पड़त। शरीर आ मन सेहो सम्पदा छी। ओकरा ईश्वरक अमानत मानि हुनके इच्छानुसार केलापर बुझबै जे सही तियाग भेल आ मोक्षक रस्ता भेटत।”



सद्विचार

एकटा न्यायप्रिय राजा साधुक भेषमे अपन प्रजाक कुशल-क्षेम बुझैले निकललैथ। जहिया कहियो ओ राजा साधुक भेषमे निकलैथ तहिया खाली एकटा मंत्रीकेँ चेला रूपमे संग कऽ लैथ। ने अंगरक्षक रहैन आ ने अमिला-फमिला आ ने केकरो जानकारी देथिन।

बहुतो गोरेसँ सम्पर्क करैत राजा एकटा बगीचामे पहुँचला। ओइ बगीचामे एकटा वृद्ध किसान नवका -बच्चा- गाछ रोपैत रहैथ। गाछ देख राजा किसानकेँ पुछलखिन-

“ई तँ अखरोटक गाछ बुझि पड़ैए?”

मुस्कियाइत किसान कहलकैन-

“हँ भैया, अहाँक अनुमान सोलहन्नी जाइज अछि।”

“बीस-पच्चीस बर्खक गाछ भेलापर अखरोट फड़ै छै, ताधैर अहाँ जीविते रहब?”

“ऐ बगीचाकेँ हमर बाप-दादा लगौने छैथ। खून-पसीना एकबट्ट कऽ एकरा पटौलैन, देखभाल केलैन। जेकर फड़ हम सभ खाइ छी। तँए आब हमरो कर्तव्य बनैए जे ओते हमहूँ रोपि दिऐ। अपनेटा-ले गाछ लगौनाइ तँ स्वार्थक बात भऽ जाइ छइ। हम ई नै सोचै छी जे आइ ऐ गाछक उपयोगिता कि छइ? भविसमे दोसरकेँ फल दइ बस यएह इच्छा अछि।”

किसानक विचार सुनि राजा मंत्रीकेँ कहलखिन-

“जौं अहिना सभ बुझए लगै जे हमरा लगबैसँ मतलब अछि तँ

समाजो आ परिवारोमे सद्-विचार पसैर जाएत। जाधैर समाजमे सद्-वृत्तिक प्रसार नै हएत ताधैर नीक समाज बनब मात्र कल्पना रहत।”



साहस

सोवियत संघक नेता लेनिन। हिनकापर एकटा सिरफिरा पेस्तौल चला देलकैन। गोली तँ निकैल गेलैन मुदा छर्रा गरदैनमे फँसले रहि गेलैन। तैबीच देशमे एकटा पुल टुटि गेल। पुल मुख्य मार्गमे छेलै, तँए जेते जल्दी भऽ सकैत ओते जल्दी पुल बनौनाइ जरूरी छेलइ। आपात् स्थिति घोषित कऽ ओइ पुलक मरम्मैत युद्धस्तरपर हुअ लगलै। देशप्रेमी जनता ओइ काजमे लागि गेल। लेनिन सेहो ओइ काजमे जुटला। श्रमिके जकाँ लेनिनो काज करैत रहथिन। गरदैनमे गोली रहनौं ओ बीस-बीस घन्टा काज करै छेलखिन। काज करैत देख एकटा श्रमिक पुछलकैन तखन ओ कहलखिन-

"अगुआ भऽ कऽ जखैन हमहीं काजमे पाछू रहब तखैन जन उत्साह केना बढ़तै? जेकर खगता देशमे अछि।"



बरदास

अब्राहम लिंकन अमेरिकाक राष्ट्रपैत रहैथ। हुनक पत्नी चिड़चिड़ा एवम् कठोर सोभावक छेलखिन। जइसँ लिंकनक पारिवारिक जीवन दुःखमय छेलैन। कएक दिन एहेन होइ छेलै जे जखन परिवारक सभ सूति रहै छेलैन तखन लिंकन चुपचाप पैछला दरबज्जासँ आबि सुइत रहै छला। आ सुरूज उगैसँ पहिने तैयार भऽ निकैल ऑफिस चलि जाइ छला। दिन भरि अपन काजमे मस्त भऽ बिता लइ छला। संगी-साथीक संग हँसी-मजाक कऽ मन बहला लइ छला।

एक दिन परिवारक एकटा नोकरकेँ हुनक पत्नी गारियो पढ़लखिन आ फटकारबो केलखिन। नोकरकेँ बड़ दुख भेलइ। ओ कोठीसँ निकैल सोझे लिंकनक ऑफिस जा सभ बात कहलकैन। नोकरक सभ बात सुनि लिंकन बुझबैत कहलखिन-

“ऐ भले आदमी, पनरह बरखसँ हम ऐ परिस्थितिसँ मुकाबला करैत शान्तिसँ रहैत एलौं आ अहाँ एक्के दिनक फटकारमे एते दुखी भऽ गेलौं। बरदास कऽ लिअ।”

अचताइत-पचताइत वेचारा नोकर लिंकनक बात मानि लेलक।



भूल

प्रख्यात दार्शनिक वरटेण्ड रसेल अपन जीवनीमे लिखने छैथ, जे हमर पहिल स्त्री सचमुच विचारवान छेली। जखन ओ मन पड़ै छैथ तखन हृदए दहैक जाइए। दुनू गोरेक बीच अगाध प्रेम छल। एक दिन कोनो बाते दुनू गोरेक बीच अनबन भऽ गेल। खिसिया कऽ हम बिनु खेनहि ऑफिस विदा भऽ गेलौं। रस्तामे एकाएक मनमे उपकल जे अपन क्रोधक बात पत्नीकेँ कहि दिऐन। रस्तेसँ घुमि गेलौं। घुमि कऽ घर एलापर पत्नी घुमैक कारण पुछलैन। हमर क्रोध आरो उग्र भऽ गेल। हम कहलयैन-

“आब अहाँले हमरा हृदैमे मिसियो भरि जगह नै अछि।”

पतिक बात सुनि पत्नी स्तब्ध भऽ गेल मुदा किछु बाजल नहि। वेचारीक हृदैमे ई बात जरूर पकैड़ लेलकैन जे हमरा ओ -पति- कपटी बुझै छैथ। आइ धरि हम भ्रममे छेलौं।

दुनूक बीच फाँक बढ़ैत गेल, बढ़ैत गेल। होइत-होइत पति पत्नीकेँ तलाक दऽ देलक। वेचारी रसेलक घरसँ सदा-सदाक-ले चलि गेली।



धैर्य

इंग्लैंडक प्रसिद्ध विद्वान टामस कूपर अंग्रेजीक शब्दकोष तैयार करैत रहैथ। काजमे कूपर तेना ने लीन भऽ गेल छला जे घरक कोनो सुधिये-बुधिये ने रहलैन। पत्नीकेँ घरक सरंजाम जुटबैमे परेशानी होनि, तँए ओ पतिपर खूब बिगड़ैथ। मुदा तेकर कोनो असैर कूपरकेँ नै होइन। एक दिन कूपर केतौ गेल रहैथ, तैबीच पत्नी खिसिया कऽ शब्दकोषक सभ कॉपी डाहि देलकैन। जखन ओ घुमि कऽ एला तँ देखलखिन जे वर्षोक मेहनैत जरि गेल। मुदा धैर्य एते प्रवल रहैन जे एक्को मिसिया तामस नै उठलैन। ने एक्कोरत्ती पत्नीपर बिगड़लखिन आ ने अपसोच केलैन। मुस्कियाइत खाली एतबे कहलखिन-

“आठ बर्खक काज अहाँ आरो बढ़ा देलौं।”



मनुखक मूल्य

एक दिन सिकन्दर आ अरस्तू केतौ जाइत रहैथ। रस्तामे एकटा नदी छल। जइ नदीमे नावपर पार हुअ पड़ै छेलइ। पहिने अरस्तू पार हुअ चाहै छला मुदा सिकन्दर हुनका रोकि अपने पार भेला। जखन सिकन्दर दोसर पार गेला तखन अरस्तूकेँ पार होइले कहलखिन। पार भेलापर अरस्तू सिकन्दरकेँ पुछलखिन-

"पहिने हमरा पार होइसँ किए मना केलौं?"

हँसैत सिकन्दर उत्तर देलखिन-

"अगर हम नदीमे डुमि जैतौं तैयो अहाँ हमरा सन-सन दसो सिकन्दर पैदा कऽ सकै छी मुदा जौं अहाँ डुमि जैतौं तँ हमरा सन-सन दशोटा सिकन्दर बुत्ते एकटा अरस्तू नै बनौल भऽ सकैए।"

सिकन्दरक विचार सुनि अरस्तू अपन जिनगीक मूल्य बुझलैन।



मदैत नै चाही

मिश्रमे एकटा किलेन्थिस नामक लड़का एथेंसक तत्ववेत्ता जीनोक पाठशालामे पढ़ै छल। किलेन्थिस बड़ गरीब छल। ने खाइक कोनो ठेकान आ ने देह झँपैले वस्त्रक। मुदा पाठशालामे सही समैपर फीस दऽ दइ छल। पढ़ैमे चन्सगर रहने सुभ्यस्त परिवार सभक विद्यार्थी ओकरासँ इर्ष्या करैत। किलेन्थिसकेँ दबबैले एकटा षड्यंत्र ओ सभ रचलक। षड्यंत्र यएह जे किलेन्थिस पाठशालामे जे फीस दइए ओ चोरा कऽ अनैए। चोरीक मोकदमा किलेन्थिसपर भेलइ। पुलिस पकैड़ कऽ जहल लऽ गेलइ। जखन ओकरा न्यायालयमे हाजिर कएल गेल तखन ओ जजकेँ कहलक-

“हम निरदोस छी। हमरा फँसौल गेल अछि। तँए हम अपन व्यान-ले दूटा गवाही न्यायालयमे देब।”

जजक आदेशसँ दुनू गवाही बजौल गेल। पहिल गवाही एकटा माली छल आ दोसर वृद्ध औरत। मालीसँ पुछल गेल।

माली कहलकै-

“सभ दिन ई लड़का हमरा बगीचामे आबि इनारसँ पानि भरि-भरि गाछ पटा दइए जेकरा बदलामे हम मजूरी दइ छिऐ।”

वृद्धासँ सेहो पुछल गेल ओ कहलकै-

“हम वृद्धा छी। हमरा परिवारमे कियो काज करैबला नै अछि। सभ दिन ई बच्चा आबि गहुम पीस दइए, जेकरा बदलामे मजूरी दइ छिऐ।”

गवाहीक व्यान सुनि जज मोकदमा समाप्त करैत सरकारी सहायतासँ पढ़ैले सेहो आदेश देलक। परन्तु किलेन्थिस सरकारी सहायता लइसँ इनकार करैत बाजल-

“हम स्वयं मेहनैत कऽ पढ़ब तँए हमरा दान नै चाही। हमरा माए-बाबू कहने छैथ जे मनुखकेँ स्वावलंबी बनि जीबाक चाही।”



मेहनैतक दरद

एकटा लोहार छल। मेहनैत आ लूरिसँ परिवार नीक-नहाँति चलबै छल। मुदा बेटा जेहने खर्चीला तेहने कामचोर छेलइ। बेटाक चालि-चलैन देख लोहारकेँ बड़ दुख होइ। सभ दिन दशटा गारि आ फज्झैत बेटाकेँ करै मुदा तैयो बेटा-ले धैनसन। कोनो गम नहि। लोहार सोचलक जे ई एना नै मानत। जाबे एकरा खर्च करैले पाइ देनाइ नै बन्न कऽ देबै ताबे अहिना करैत रहत। दोसर दिनसँ पाइ देब बन्न कऽ कहलकै-

“अपन मेहनैतसँ चाइरौटा चौबन्नी कमा कऽ ला तखन खर्चा देबौ। नहि तँ एक्को पाइ देखब सपना भऽ जेतौ।”

बापक बात सुनि बेटा कमाइक परियास करए लगल। मुदा लूरि नै रहने हेबे ने करइ। अपन पैछला रखल चारिटा चौबन्नी नेने पिता लग आबि कऽ देलक। पिता भाथी पजारि हँसुआ बनबै छल। चारू चौबन्नीकेँ आगिमे दऽ कहलकै-

“ई पाइ तोहर कमाएल नै छियौ।”

पिताक बात सुनि बेटा लजाइत ओतएसँ ससैर गेल।

दोसर दिन चुपचाप माएसँ चारिटा चौबन्नी मंगलक। माए देलकै। चारू चौबन्नी नेने बेटा बाप लग पहुँचल। बेटाक मुहेँ देख पिता बुझि गेल। चारू चौबन्नी बेटा बापकेँ देलक। भीतरसँ बापकेँ तामस रहबे करइ। ओ चारू चौबन्नी हाथमे लऽ पुनः आगिमे फेक देलक।

पिताक काज देख बेटा बुझलक जे बिना कमेने काज नै चलत।

तखन ओ मेहनैत करए लगल। तेसर दिन चारिटा चौबन्नी बापक हाथमे देलक। चारू चौबन्नीकेँ लोहार पहुलके जकाँ आगिमे फेकए लगलै आकि हल्ला करैत बेटा बापक हाथ पकैड़ बाजल-

“बाबू, ई हमर मेहनैतक पाइ छी। एकरा किए बेदरदी जकाँ नष्ट करै छिऐ?”

बाप बुझि गेल। मुस्कियाइत बेटाकेँ कहए लगल-

“बेटा, आब तूँ बुझलेँ जे मेहनैतक कमाइक दरद केहेन होइ छइ। जाधैर अन्ट-सन्टमे हमर कमेलहा खरच करै छेलेँ ताधैर हमरो एहने दरद होइ छेलए।”

पिताक बात बेटा बुझि गेल तखने सप्पत खेलक जे आइ दिनसँ एक्को पाइ फालतू खरच नै करब।



मैक्सिम गोर्की

बच्चेसँ मैक्सिम गोर्की निराश्रित भऽ गेल रहैथ। ओइ दशामे जीबैले झाड़ू लगौनाइसँ लऽ कऽ चौका-बरतन, चौकीदारी सभ काज केलैन। कएक दिन तँ कूड़ा-कचड़ाक ढेरीसँ काजक वस्तु ताकि-ताकि निकालि, बेचि कऽ अपनो आ बुढ़ नानीक पेटक आगि मुझबैथ। एहेन परिस्थितिमे पढ़ब-लिखब असाध्य कार्य छी। एहेन असाध्य परिस्थितिसँ मुकाबला कऽ अनुकूल बनौनिहार मैक्सिम गोर्कियो भेला।

रद्दी-रद्दी पत्रिका, फाटल-पुरान अखबार सभ एकत्रित कऽ पढ़नाइ सिखलैन। जखन पढ़ैक जिज्ञासा बढ़लैन तखन समय बँचा कऽ वाचनालय जाए लगला। रसे-रसे लिखैक अभ्यास सेहो करए लगला। कोनो-कोनो बहाना बना साहित्यकार सभसँ सम्बन्ध बनबए लगला। मैक्सिम गोर्की जे किछु लिखैथ ओकरा साहित्यकार सभसँ सुधार करबैथ।

वएह मैक्सिम गोर्की रूसक महान् साहित्यकार भेला। अन्यायी शासनक विरुद्ध जनताक अधिकार-ले खाली लिखबे टा नै करैथ बल्कि हुनका सबहक बीच जा संगठित आ संघर्षक नेतृत्व सेहो करैथ। जखन हुनकर लिखल पोथी तेजीसँ बिकए लगल तखन ओ अपन खर्चा निकालि बाँकी सभ पाइ संगठन चलबैले दऽ दिअए लगलखिन।



मूलधन

एकटा वृद्ध पिता तीन बरख-ले तीर्थाटन करए निकलए चाहैथ। निकलैसँ पहिने चारू बेटाकेँ बजा अपन सभ पूजी बरबैर कऽ बाँटि कहलखिन- “तीन साल-ले हम तीर्थाटन करए जा रहल छी। अगर जीबैत घुमलौं तँ अहाँ सभ पूजी घुमा देब नहि तँ कोनो बाते नहि।”

अपन हिस्सा रूपैआकेँ जेठका बेटा सुरक्षित रखि पिताक प्रतीक्षा करए लगल। मझिला बेटा सूदिपर लगा देलक। सझिला ऐश-मौजमे फूँकि देलक। छोटका ओकरा पूजी बुझि कारोबार करए लगल।

तीन साल पछातइ पिता एला। चारूसँ पूजी आपस मंगलखिन। घरसँ आनि जेठका ओहिना रूपैआ घुमा देलकैन। मझिला सूद सहित मूलधन घुमौलकैन। सझिला तँ खरच कऽ नेने छल तँए अगर-मगर करैत चुप भऽ गेल। छोटका बेवसायसँ खूब कमेने छल तँए चारि गुणा बेसी घुमौलकैन। छोटका बेटाकेँ प्रशंसा करैत पिता बजला-

“रूपैआ तँ व्याजोपर लगा बढ़ौल जा सकैए मुदा एहेन काज अधिक पूजीबलाक छिऐ। मुदा जे अपने पूजी दुआरे बेरोजगार अछि ओकरा-ले नहि। ओकरा तँ जएह पूजी छै ओइमे अपन श्रमक संग जोड़ि जिनगीकेँ ठाढ़ करए पड़तै। तहूमे परिवारक दायित्व बलाकेँ तँ आरो सोचि-विचारि इमनदारीसँ चलए पड़तै। तखने परिवार चैनसँ चलि सकतै।”



कपटी मित

एकटा सज्जन खढ़िया छल। ओ खढ़िया कतेकोसँ दोस्ती केलक। दोस्ती ऐ दुआरे करैत जे बेरपर हमहूँ मदैत करबै आ हमरो करत। एक दिन शिकारी कुकुर ओकरा पकड़ैले खिहारलक। खढ़िया भागल। भागल-भागल अपन मिता गाए लग पहुँच कऽ कहलकै-

“अहाँ हमर पुरान दोस छी। कुकुर हमरा रेबाड़ने अबैए। अहाँ ओकरा अपन सींगसँ मारि कऽ भगा दियौ जइसँ हमर जान बँचि जाएत।”

खढ़ियाक बात सुनि गाए कहलकै-

“हमरा घरपर जाइक समय भऽ गेल। बच्चा डिरिआइत हएत। आब एक्को क्षण ऐठाम नै अँटकब।”

गाएक बात सुनि खढ़िया निराश भऽ गेल। कुकुर सेहो पाछूसँ ऐबते रहए। खढ़िया गाए लगसँ पड़ाएल आ घोड़ा लग पहुँचल। घोड़ो पुरान मिता खढ़ियाक छेलइ। घोड़ा लग पहुँच खढ़िया कहलकै-

“दोस, अहाँ अपना पीठपर बैसा लिअ। जइसँ हमरा ओइ कुकुरसँ जान बँचि जाएत।”

घोड़ा कहलकै-

“हमरा पीट्ठीपर केना बैसब? हम तँ बैसनाइए बिसैर गेलौं।”

घोड़ाक बात सुनि खढ़िया निराश भऽ पड़ाएल। जाइत-जाइत गदहा लग पहुँच कहलकै-

“दोस, हम मुसीबतमे पड़ि गेल छी। अहाँ दुलकी चलनाइ जनै छी से कनी कुकुरकेँ मारि कऽ भगा दियौ, जइसँ हमर जान बँचि जाएत।”

खढ़ियाक बात सुनि गदहा कहलकै-

“घरपर जाइमे देरी हएत तँ मालिक मारत। तँए हम जाइ छी।”

फेर ओत्तौसँ खढ़िया भागल। जाइत-जाइत बकरी लग पहुँच कहलकै-

“दोस, हम मरि रहल छी। अहाँ जान बँचाउ।”

अपन ओकाइत देखैत बकरी उत्तर देलकै-

“दोस, झब दे ऐठामसँ दुनू गोरे भागू नहि तँ हमहूँ खतरामे पड़ि जाएब।”

बकरीक बात सुनि खढ़िया आरो निराश भऽ गेल। मनमे एलै जे अनका भरोसे जीअब बेकार छी। अपने बुत्ते अपन दुख मेटा सकै छी। भलेँ मन-मोताबिक जिनगी नै जीब सकी। तखन खढ़िया छाती मजगूत कऽ पड़ाएल। पड़ाएल-पड़ाएल एकटा झारीमे नुका रहल। कुकुर देखबे ने केलकै। दौगल-दौगल आगू बढ़ि गेल। खढ़ियाक जान बँचि गेलइ।



भीख

एकटा मच्छर मधुमाछी छत्ता लग पहुँचल। छत्तामे ढेरो मधुमाछी छेलइ। छत्ता लग बैस मच्छर मधुमाछीकेँ कहलकै-

“हम संगीत विद्यामे निपुण छी। अहूँ सभ संगीत सीखू। हम सिखा देब। बदलामे थोड़े-थोड़े मधु दैत रहब जइसँ हमरो जिनगी चलत।”

मधुमाछी सभ अपनामे विचार करए लगल। मुदा बिना रानी माछीक विचारसँ कियो किछु नै कऽ सकै छेलै तँए रानीसँ पुछब जरूरी छेलइ। सभ मधुमाछी विचारि कऽ एकटा मधुमाछीकेँ रानीमाछी लग पठौलक। रानीमाछी सभ बात सुनि कहलकै-

“जहिना संगीत-शास्त्रक ज्ञाता मच्छर, भीख मंगैले अपना ऐठाम आएल अछि तहिना जौं हमहूँ सभ मेहनैत छोड़ि देब तँ ओकरे जकाँ दशा हएत। तँए मेहनैतक संस्कार छोड़ि सस्ता संस्कार अपनौनाइ मुरुखपाना हएत। अगर अहूँ सभकेँ संगीतक सख होइए तँ मेहनैतो करू आ बैसारीमे संगीतो सीखू।”



भगवान

सिद्ध पुरुष भऽ कबीर प्रख्यात भऽ गेल छला। दूर-दूरसँ जिज्ञासु सभ आबि-आबि दर्शनो करैत आ उपदेशो सुनै छल। मुदा कबीर अपन बेवसाय -कपड़ा बीनब- नै छोड़लैन। कपड़ो बीनथि आ सत्संगो करैथ। एकटा जिज्ञासु कबीरक बेवसाय देख पुछलकैन-

“जाधैर अपने साधारण छेलौं ताधैर कपड़ा बीनब उचित छल मुदा आब तँ सिद्ध-पुरुष भऽ गेलिऐ तखन कपड़ा किए बीनै छी?”

जिज्ञासुक विचार सुनि मुस्कियाइत कबीर उत्तर देलखिन-

“पहिने पेट-ले कपड़ा बीनै छेलौं। मुदा आब जन-समाजमे समाएल भगवानक देह झँपैले आ अपन मनोयोगक साधना-ले बिनै छी।”

एक्के काज रहितो दृष्टिकोणक भिन्नतासँ उत्पन्न होइबला अन्तरकेँ बुझलासँ जिज्ञासुक समाधान भऽ गेलैन।



एकाग्रचित

इंग्लैडक इतिहासमे अल्फ्रेडक नाओं इज्जतक संग-ले जाइए। ओ अनेको साहसी काज प्रजा-ले केलैन। तँए हुनका महान् अल्फेड, अल्फ्रेड द ग्रेट नाओंसँ इतिहासमे चरचा अछि।

शुरूमे अल्फ्रेड साधारण राजा जकाँ क्रिया-कलाप करै छला। जहिना बाप-दादाक अमलदारीमे चलै छेलै तहिना। खेनाइ-पीनाइ, ऐश-मौज केनाइ यएह जिनगी छेलैन। जइसँ एक दिन एहेन भेलै जे हुनकर कोढ़िपना दुश्मन-ले बरदान भऽ गेलइ। दुश्मन आक्रमण कऽ अल्फ्रेडकेँ सत्तासँ भगा देलकै। नुका कऽ ओ एकटा किसानक ऐठाम नोकरी करए लगल। बरतन माँजब, पानि भरब आ चुल्हि-चौकाक काज अल्फ्रेड करए लगल। नमहर किसान रहने अल्फ्रेडक देख-रेख हुनकर पत्नी करै छेली।

एक दिन ओ कोनो काजे बाहर जाइ छेली। बटलोहीमे दालि चूल्हिपर चढ़ल छेलइ। औरत अल्फ्रेडकेँ कहि देलकै जे दालिपर धियान राखब। अल्फ्रेड चूल्हि लग बैस अपन जिनगीक सम्बन्धमे सोचए लगल। सोचैमे एते मग्न भऽ गेल जे बटलोहीक दालिपर धियाने ने रहलै। बटलोहिक दालि जरि गेलइ। जखन ओ औरत घुमि कऽ एली तँ देखालैन जे बटलोहिक सभ दालि जरि गेल अछि।

क्रोधसँ अल्फ्रेडकेँ कहलक-

“अरे मुर्ख युवक, बुझि पड़ैए जे तोरापर अल्फ्रेडक छाप पड़ल छौ। जहिना ओकर दशा भेलै तहिना तोरो हेतौ। जे काज करै छेँ

ओकरा एकाग्रचित भऽ कर।"

वेचारी औरतकेँ की पता जे जेकरा कहै छिऐ ओ वएह छी। औरतक बात सुनिते अल्फ्रेड चौंक गेल। अपन गलतीक भाँज लगबए लगल। मने-मन ओ संकल्प केलक जे आइसँ जे काज करब ओ एकाग्रचित भऽ करब। खाली कल्पने केलासँ नै हएत। अल्फ्रेड नोकरी छोड़ि देलक। पुनः आबि अपन सहयोगी सभसँ भेँट कऽ धनो आ आदमीओक संग्रह करए लगल। शक्ति बढ़लै। तरवन ओ दुश्मनपर चढ़ाइ केलक। दुश्मनकेँ हरौलक। पुनः सत्तासीन भेल। सत्तासीन भेलापर पैघ-पैघ काज कऽ महान भेल।



सीखैक जिज्ञासा

महादेव गोविन्द रानाडे दच्छिन भारतक रहैथ। ओ बंगला भाषा नै जनै छला। एक दिन रानाडे कलकत्ता गेला। कलकत्तामे अपन काज-सभ निपटा आपस होइले गाड़ी पकड़ए स्टेशन एला तँ एकटा बंगला अखबार कीनि लेलैन। बंगला अखबार देख आश्चर्यसँ पत्नी कहलकैन-

“अहाँ तँ बंगला नै जनै छी तखन अनेरे ई अखबार किए वेसाहलौं?”

मुस्कियाइत रानाडे जवाब देलखिन-

“दू दिनक गाड़ी यात्रा अछि। आसानीसँ बंगला सीख लेब।”

नीक-नहाँति रानाडे बंगला लिपि आ शब्दक गठनपर धियान दऽ सीखए लगला। पूना पहुँच पत्नीकेँ झूर-झार अखबार पढ़ि कऽ सुनबए लगलखिन।

एहेन छेलैन साठि वर्षीए रानाडेक मनोयोग। तँए अन्तिम समय धरि हर मनुखकेँ सीखैक जिज्ञासा रहक चाही।



अनुभव

बेकती अपन अनुभवसँ सीखबो करैए आ दोसरो-ले दिशा निर्धारित करैए।

एक दिन झमझमौआ बर्खा होइत रहै आ मेघो गरजै, बिजलोको चमकै तथा तेज हवो बहैत रहए। तखने रस्ता टपैत एक आदमीक मृत्यु भऽ गेलइ। बर्खा छुटलै। लग-पासक लोक जखन निकलल तँ रस्तापर ओइ आदमीकेँ मरल देखलक। चारू भरसँ लोक जमा भऽ कियो कहैत वादलक अवाजसँ मृत्यु भेलइ। तँ कियो किछु कहै आ कियो किछु।

तखने एक अनुभवी आदमी सेहो पहुँचलैथ। ओ कहलखिन-

“जौं अवाजसँ मृत्यु होइतै तँ बहुतो लोक अवाज सुनलक। सबहक होइतै। तँए मृत्यु अवाजसँ नै लगमे ठनका गिरलासँ भेलइ।”



असिरवादक विरोध

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर अभाव आ गरीबीक बीच पढ़ि-लिखि पचास टाकाक मासिक नोकरी शुरू केलैन। हुनक सफलता देख कुटुम-परिवार सभ असिरवाद देमए पहुँचए लगलैन। एकटा कुटुम कहलकैन-

“भगवानक दयासँ अहाँक दुख मेटा गेल। आब आरामसँ रहू आ चैनसँ जिनगी बिताउ।”

ई असिरवाद सुनिते विद्यासागरक आँखिसँ नोर खसए लगलैन। नोर पोछैत कहलखिन-

“जइ अध्यवसायिक बले हम ओहन भीषण परिस्थितिक मुकावला केलौं ओकरे छोड़ि दइले कहै छी? अहाँकेँ ई कहबाक चाही छल जे जइ गरीबीक कष्ट स्वयं अनुभव केलौं ओइ परिस्थितिकेँ बिसरू नहि। अपन असाध्य श्रमसँ ओइ अवरुद्ध रस्ताकेँ साफ करू।”



धर्मक असल रूप

श्रावस्तीक सम्राट चन्द्रचूड़कैं अनेक धरम आ ओकर प्रवक्ता सभसँ नीक लगाउ छेलैन। राज-काजसँ जे समय बँचैन ओकरा ओ धर्मेक अध्ययनो आ सत्संगेमे बितबैथ। ई क्रम बहुत दिनसँ चलि अबै छल। एक दिन ओ असमंजसमे पड़ि गेला। मनमे एलैन जे जखन धरम मनुखक कल्याण करैए तखन एतेक मतभेद एक-दोसर प्रवक्तामे किए अछि?

अपन समस्याक समाधान-ले चन्द्रचूड़ भगवान वुद्ध लग पहुँचला। ओइठाम ओ अपन बात वुद्धकैं कहलखिन। चन्द्रचूड़क बात सुनि वुद्धदेव हँसए लगला। सत्कारपूर्वक हुनका ठहरैले कहि दोसर दिन भिनसरे समाधानक वचन देलखिन। एकटा हाथी आ पाँचटा आन्हर ओ जुटौलैन।

दोसर दिन भिनसरे वुद्धदेव चन्द्रचूड़कैं संग केने ओइ हाथी आ अन्हरा लग पहुँचला। एकाएकी ओइ अन्हरा सभकैं हाथी छूबि ओकर स्वरूप बुझबैले कहलखिन। बेरा-बेरी ओ अन्हरा सभ हाथीकैं छूबि-छूबि देखए लगल। जे जे अंग हाथीक छूलक ओ ओहने स्वरूप हाथीक बतबए लगलैन। कियो खुट्टा जकाँ तँ कियो सूप जकाँ तँ कियो डोरी जकाँ तँ कियो टीला जकाँ कहलकैन।

सबहक बात सुनि वुद्धदेव चन्द्रचूड़कैं कहलखिन-

“राजन, सम्प्रदाय अपन सीमित क्षमताक अनुरूप धर्मक एकाकी व्याख्या करैए। अपन-अपन मान्यताक प्रति जिद्द धऽ अपनेमे

सभ लड़ै छैथ। जहिना एक्केटा हाथीक स्वरूप पाँचो अन्हरा पाँच रंगक कहलक, तहिना धरमोक व्याख्या करैबला सभ करै छैथ। धरम तँ समता, सहिष्णुता, उदारता आ सज्जनतामे सन्निहित अछि।”



सौन्दर्य

संगीतकार गाल्फर्ड लग पहुँच एकटा शिष्या अपन मनक बेथा कहए लगलैन-

“कुरूपताक कारणे संगीतक मञ्चपर पहुँचते मनमे आबए लगैए जे आन लड़कीक अपेक्षा दर्शक हमरा नापसिन कऽ हँसी उड़बैए। जइसँ सकपका जाइ छी। गेबाक जे तैयारी केने रहै छी ओ नीक जकाँ नै गाबि पबै छी। वएह गीत घरपर बढ़ियाँ जकाँ गबै छी मुदा मञ्चपर पहुँचते की भऽ जाइत अछि जे हक्का-बक्का भऽ जाइ छी।”

शिष्याक बात सुनि गाल्फर्ड एकटा नमगर-चौड़गर ऐना लऽ, आगूमे रखि, गबैक विचार दैत कहलखिन-

“अहाँ कुरूप नै छी, जेना मनमे होइए। गीत गौनिहारिकेँ स्वरक मिठास हेबाक चाही जेकरा कुरूपतासँ कोनो सम्बन्ध नै छइ। जखैन भाव-विभोर भऽ गाएब तखैन अहाँक आकर्षण बढ़ि जाएत। कियो सुनिनिहार कुरूपतापर धियान नै दऽ स्वरपर धियान देत। जइसँ मनक हीनता समाप्त भऽ जाएत आ आत्म-बिसवास बढ़ि जाएत।”

फ्रान्सक वएह गायिका मेरी वुडनाल्ड नाओंसँ प्रख्यात भेली।



स्तब्ध

दोसर विश्वयुद्ध समाप्त भऽ गेल छल। इंगोएशियन माने आंग्ल-रूसी संधिपर हस्ताक्षर करैले चर्चिल मास्को एला। संधिपर हस्ताक्षरो भऽ गेल। मास्को छोड़ैसँ एक दिन पहिने अनासुरती स्तालिन आ मोलोटोव चर्चिल लग पहुँच कहलकैन-

“लड़ाइ-उड़ाइ तँ बहुत भेल। नीक समझौतो भऽ गेल। काल्हि अहाँ जेबो करब तँए आइ थोड़े मौज-मस्ती कऽ लिअ। हमरा ऐठाम चलि भोजन करू।”

स्तालिनक आग्रह सुनि चर्चिल मने-मन सोचए लगला जे महान् तानाशाह स्तालिन नोत देबए एला, आइ जरूर किछु अद्भुत वस्तु देखैक मौका भेटत। चर्चिल नोत मानि स्तालिनक संग विदा भेला। रस्तामे सिपाही सभ अभिवादन करैन। थोड़े दूर गेलापर एकटा पीअर रंगक दु-महला मकानक आगूमे कार रूकल। सभ कियो उतरला। स्तालिनक संग चर्चिल मकानक भीतर गेला। भीतर जा चर्चिलकेँ बैसबैत स्तालिन कहलखिन-

“ऊपरका तल्लामे लेनिन रहै छला। ओ गुरु छैथ तँए ओइ तल्लाक उपयोग हम नै करै छी। ओ म्युजियम बनल अछि। निच्चाँमे तीनटा कोठरी अछि एकटामे दुनू परानी रहै छी। दोसरमे बेटी रहैए आ तेसरमे पार्टी सदस्य-ले बैसकी बनौने छी।”

स्तालिनक बात सुनि चर्चिल छगुन्तामे पड़ि गेला जे जइ तानाशाहक डरे पूजीवादी जगत थरथराइत अछि ओइ तानाशाहक

रहैक बेवस्था एहने छइ। मने-मन सोचैत चर्चिल गुम्म रहैथ आकि स्तालिन कहलकैन-

“थोड़ेकाल हमरा छुट्टी दिअ। भोजन बनबए जाइ छी।”

ई सुनि चर्चिल अचम्भित होइत पुछलखिन-

“अपने भानस करै छी, भनसिआ नै अछि?”

मुस्कियाइत स्तालिन उत्तर देलखिन-

“नहि। अपने दुनू परानी मिलि भानस करै छी।”

स्तालिनक बात सुनि चर्चिल हतप्रभ होइत कहलखिन-

“बड़ बढ़ियाँ, आइ घरेवालीकेँ भानस करए कहियनु। अहाँ गप-सप्प करू।”

“हम लाचार छी। पत्नी घरपर नै छैथ। ओ पाँच बजे कपड़ा मिलसँ औती।”

चर्चिल स्तब्ध भऽ गेला।



एकता

एकटा पैघ भवनक निर्माण होइ छेलइ। निर्माणस्थल लग एक भाग पजेबा, दोसर भाग बालु, तहिना लकड़ी, सिमटी, चून इत्यादि जमा छल। ढेरीसँ पजेबा बाजल-

"अकास ठेकल कोठा हमरेसँ बनत, तँए कोठाक श्रेय हमरे भेटक चाही।"

पजेबाक बात सुनि सिमटी आ बालु प्रतिवाद करैत कहलकै-

"तोँ झूठ बजै छेँ। तोरा ई नै बुझल छौ जे एकसँ दोसर पजेबाक बीच जौं हम नै रहबौ तँ तूँ ढनमनाइते रहमे। संगे तोरा ईहो नै बुझल छौ जे जेते दूर तक तोँ जेमे तेते दूर तक हमहूँ संगे जेबौ आ तोरोसँ ऊपर हमहीं सुइत कऽ रक्षो करबौ।"

बालु आ सिमटीक बात सुनि खिड़की आ केबाड़ीक लकड़ी तामसे थरथराइत कहलकै-

"तोरा तीनू बुत्ते बड़ हेतौ तँ देबाल बनि जेमे, मुदा बिना हमरे ने छत बनि सकमे आ ने मुँह-कान चिक्कन हेतौ। जाबे हम नै रहबौ ताबे कुकुर-बिलाइक घर रहमे।"

सभ समानक बीच कटौझ चलै छल। कारीगर चाह पीब बीड़ी सुनगेलक। बिड़ीओ पीऐ छल आ मने-मन हँसबो करै छल। जखन भरि मन बीड़ी पीलक, मूड साफ भेलै, तखन तीनूकेँ चुप करैत कहलक-

"अगर तूँ सभ मिलाने कऽ लेमे, तइसँ की हेतौ? जाबे हम नै

इलमसँ तोरा सभकेँ बनेबौ ताबे ओहिना माटिपर पड़ल रहमे आ कौआ-कुकुर आबि-आबि गंदा करैत रहतौ।"

सबहक विचार सुनि निर्णय करैत भवन कहलकै-

"अपना-अपना जगहपर सबहक महत छौ। मुदा जाबे एक-दोसरसँ मेल कए कऽ नै रहमे ताबे भवन नै कहेमे। ओहिना पजेबा, सिमटी, चून, लकड़ी रहमे। तँए अपन-अपन बड़प्पन छोड़ि मिलानक रस्ता पकड़ जइसँ कल्याण हेतौ।"



विधवा बिआह

राजस्थानक इतिहासमे हठी हम्मीरक विशेष स्थान अछि। ओ एहेन जिद्दी छल जे जे उचित बुझै छेलै, करै छल। भलेँ केतबो विरोध आ निन्दा किए ने होइ। जखन हम्मीर बिआह करै जोकर भऽ गेल तखन बिआहक चरचा शुरू भेल। विद्यार्थीए जीवनमे हम्मीर विधवाक दुर्दशाकेँ गहराइसँ अध्ययन केने छल। पढ़ैयेक समय संकल्प कऽ नेने छल जे हम विधवे औरतसँ बिआह करब। हम्मीरक बिआहक चरचा पसरलै।

मुदा हम्मीर एकदम संकल्पित छल जे विधवेसँ बिआह करब। कुटुम परिवार सभ हम्मीरपर बिगड़ै मुदा तेकर एक्को पाइ गम नहि। पण्डित सबहक माध्यमसँ परिवारबला कहबौलक जे विधवा अमंगल सूचक होइए तँए एहेन काज नै करक चाही।

मुदा हम्मीर केकरो बात सुनैले तैयारे नहि।

एकटा बाल-विधवाकेँ हम्मीर देखलक। विधवाकेँ देख हृदए पसीज गेलइ। तखने ओइ विधवाकेँ हम्मीर कहलक-

“हम अहाँसँ बिआह करब। भलेँ परिवारक केतबो विरोध हुअए।”

हम्मीरक बात सुनि विधवा खुशीसँ अह्लादित भऽ उठली। हम्मीर बिआहक दिन तँइ कऽ कुटुम-परिवार आ पुरहित-पण्डितकेँ छोड़ि अपन संगी-साथी आ सैनिक सभकेँ संग केने जा बिआह कऽ लेलक।

जखन हम्मीर मेबारक शासक बनल तखन सभ विरोधी सहयोगी बनि गेलइ। पण्डित सभ घोषणा केलक-

“विधवा नास्ति अमंगलम्।”



देश सेवाक व्रत

सुभाषचन्द्र बोस बच्चे रहैथ। एक दिन सुतली रातिमे माए लगसँ उठि निच्चाँमे सूतए लगला। बेटाकेँ निच्चाँमे सुतैत देख माए पुछलखिन जे एना किए करै छी?

सुभाष जवाब देलखिन-

“माए, आइ स्कूलमे मास्टर साहैब कहने छेलखिन जे हमर पूर्वज ऋृषि-मुनि जमीनेपर सूतबो करैथ आ कठिन मेहनैतो करै छला। हमहूँ ऋृषि बनब। तँए कठिन जिनगी जीबैक अभ्यास शुरू कऽ रहल छी।”

सुभाषचन्द्रक पिता जगले रहथिन। सभ बात सुनि सुभाषकेँ पिता कहलखिन-

“बेटा, जमीनेपर सुतनाइ पर्याप्त नै होइ छइ। एकरा संग-संग ज्ञानोक संचय आ मनुखोक सेवा आवश्यक अछि। आइ माइए लग सूति रहू, जखैन नमहर हएब तखैन तीनू काज संगे करब।”

खाली शिक्षकेक बात नै पितोक बातकेँ सुभाष गीरह बान्हि लेलैन। आई.सी.एस. केला पछातइ जखन नोकरीक बात सोझहामे एलैन तखन ओ कहलखिन-

“हम जिनगीक लक्ष्य तँइ कऽ नेने छी। नोकरी नै करब। मातृभूमिक सेवा करब।”



आत्मबल-1

फ्रान्सक कथा छी। रस्ताकातक पहाड़ीपर बैस एक गोरे अपन जुत्ता मरम्मैत करबैत रहैथ। एकटा ढेरबा बच्चा जुत्ता मरम्मैत करै छल। ओइ बच्चाक बगए-वानिसँ गरीबी झलकैत रहए। मुदा आत्मबल आ लगन मजगूत छेलइ। जुत्ता मरम्मैत करा ओ आदमी एक रूपैआ पारिश्रमिक दऽ चलए लगल। मुदा माएक विचार ओहिना ओइ बच्चाक हृदैमे जीबै छल। बच्चा अपन उचित पाइ काटि बाँकी घुमबए लगल। ओ महानुभाव -जूत्ता मरम्मैत करौनिहार- सभ पाइ रखि लइले कहलक। तैपर बच्चा बाजल-

“हमर जेतबे उचित मजूरी हएत, ओतबे लेब। माए कहने छैथ जे जेतबे श्रम करी ओतबे मजूरी ली।”

बच्चाक बात सुनि ओ गुम्म भऽ ओइ बच्चाकेँ ऊपरसँ निच्चाँ धरि निङहारए लगल। वएह बच्चा फ्रान्सक राष्ट्रपति दगाल भेला।



स्वाभिमान

सुभाष चन्द्र बोस स्कूलक पढ़ाइ समाप्त कऽ कौलेजमे नाओं लिखौला। ओइ कौलेजमे अंग्रेजीक शिक्षक अंग्रेज छल। नाओं छेलैन सी.एफ. ओटन। ओहुना सत्तामे रहनिहारक बोली जनताक बोलीसँ भिन्न होइ छइ। मुदा ओटनमे आरो बेसी रोब छेलइ। बात-बातमे ओ भारतीय जिनगीक मजाक उड़बैत रहै छला। भारतवासीक जिनगीक प्रति घृणा पैदा करब ओ अपन बहादुरी बुझै छला।

सुभाषबाबूकेँ ओटनक बेवहार पसिन नै होइन। मुदा विद्यार्थी रहने मन मसोसि कऽ रहि जाथि। एक दिन वर्गेमे सुभाष बैसल रहैथ। ओटन भारतवासीक प्रति व्यंग्य करए लगला। व्यंग्य सुनि सुभाषक हृदैमे आगि धधकए लगलैन। क्रोधे ओ बेकाबू भऽ गेला। अपन जगहसँ उठि आगू बाढ़ि ओटनक गालमे कसि कऽ दू थापर लगबैत कहलखिन-

“भारतवासीमे अखनो स्वाभिमान जीबै छइ। जौं कियो ऐ बातकेँ बिसैर चुनौती देत तँ अहिना मारि खाएत।”



कलंक

गामक कोन लेखा जे पँचकोसीक लोक किसुन भायकेँ इमानदार बुझै छैन। ओना ओ एकचलिया लोक छैथ मुदा गामो आ परोपट्टोक लोक बहुचलिया। तँए किसुन भायकेँ जेते प्रशंसा होइत ओतबे निन्दो। ओना ज्ञान-अज्ञानक बीच, सुख-दुखक बीच, धरम-पापक बीच, उत्थान-पतनक बीच, प्रशंसा-निन्दाक बीच तँ पहिनेसँ संघर्ष होइत आएल अछि। मुदा किसुन भाय अनकर प्रशंसा-निन्दाकेँ ओते महत नै दैत जेते अपन सैद्धान्ति जिनगीकेँ। अपन जिनगीक रस्तापर सदिखन सचेत रहै छैथ। कएक दिन एहेन होइत जे किसुन भायक विचारसँ अलग सौंसे गामक लोकक विचार भऽ जाइत। मुदा तेकर एक्को पाइ गम हुनका नहि। अपन रस्तापर ओ असगरो निर्भीकसँ ठाढ़ रहै छला। मुदा विचार बदलैले तैयार नै होइथ।

जिनगीक आरम्भे किसुन भाय खेतीसँ केलैन। खेत तँ बहुत नै छेलैन मुदा जेतबे छेलैन तइमे मेहनैतक बले परिवार चला लैथ। बाढ़ि, रौदी आ आरो-आरो प्राकृतिक आफत तथा उपद्रव जकाँ मानवीय आफतक मुकावला करबाक लूरि सीख नेने छैथ। तँए आन परिवार जकाँ परिवारमे चिन्तो नै होइन। खानदानी खेतीकेँ केतौ बदैल तँ केतौ सुधाइर कऽ करैथ। जइसँ गामोक खेतिहर अचता-पचता कऽ हुनके अनुकरण करै छल। तेसर साल टहलैले पंजाब गेल रहैथ। टहलैले की जइतैथ, खेती देखैले गेल रहैथ। पंजाबक खेती अगुआएल तँए देखब जरूरी बुझि पड़लैन। पंजाबमे झिमनिक खेती देखलखिन। मिथिला क्षेत्रमे जेते-जेते घेड़ा, होइत तेते-तेते झिंगुनी देखलखिन। फड़ो अटुट।

झिंगुनी देख किसुन भायक मनमे गड़ि गेलैन। मने-मन सोचलैन जे जइ पंजाबक माटि गोंग अछि तखन जब एहेन अछि तँ अपन माटि (मिथिलाक माटि) मे केहेन हएत! तत्काल ओ नै सोचि सकला। मुदा बीआ नेने एला। समैपर बीआ रोपलैन। ओइ चारि कट्ठा झिंगुनिक खेतीसँ किसुन भाय एकटा जरसी गाए वेसाहलैन। अपना-ले ओते बीआ शुरूहेक फड़ रखि लेलैन जे छह कट्ठा खेती ऐगला साल करब। झूर-झार जखन झिंगुनी बेचए लगला तखन गामोक लोक बीआ मंगलकैन। पचता फड़क बीआ लोक सभले रखि देलखिन अगता फड़क समय तँ निकैल गेल छल। ऐ बेर गाममे, झिंगुनिक अनधुन खेती भेल। किसुन भायक उपजा तँ पैछले साल जकाँ भेल मुदा गामक लोकक दब भऽ गेलइ। दब होइक कारण छेलै उपजबैक ढंग आ पचता बीआ। सौंसे गामक लोक हुनका ठक कहि कलंकित करए लगलैन। केतेक गोरे सोझहोमे कहलकैन। ठकक कलंकसँ किसुन भाय सोगाए लगला। जेना केते भारी कुकर्म कऽ नेने होइथ। मनमे सदिखन यएह नचैत रहैन जे एना भेलै किए?

ऐ प्रश्नक उत्तर मनमे जगबे ने करैन। अनासुरती एक दिन हृदैसँ अवाज उठलैन-

“किसुन, तोहर दोख एक्कोपाइ नै छह। अनेरे सोगाएल छह। तोहर कलंकक कारण बीआक मुरहन आ दौजी गुणे भेल छह।”

हृदैक अवाज सुनि किसुन भाय पुछलखिन-

“अगर हम ऐ बातकेँ मानि अपनाकेँ निरदोस बुझिए लेब तैयो आन केना बुझत?”

“हँ, तोरा ओइ दिन तक कलंकक मोटरी कपारपर राखए पड़तह जइ दिन तक ऊहो सभ मुरहन आ दौजीक भेद बुझि नै जाएत।”



बुलकी

एकटा खेत-बोनिहारक घरवाली नाकक बुलकी-ले रूसि रहल। बुलकी वेसाहैक उपय पतिकेँ नहि। हर जोति कऽ जखन ओ बोनिहार आएल तँ घरवालीकेँ रूसल देखलक। मुँह-तुँह फुलौने ओसारपर बैसलि। धिया-पुता खाइले कनैत। बोनिहार अपन तामसकेँ घोंटि घरवाली लग जा कऽ कहलकै-

"किए रूसल छी? भूखे बच्चो सभ लहालोट होइए। आबो भानस करू।"

अपन रोष झाड़ैत पत्नी बाजल-

"जाबे बुलकी नै आनि देब ताबे ने खाएब आ ने किछु करब।"

खुशामद करैत पति कहलकै-

"आइए साँझमे हाटसँ कीनि कऽ आनि देब। अखैन भानस करू गऽ।"

पतिक बात पत्नी मानि गेल। बोनिहार कर्ज रूपैआ अनैले विदा भेल। दस रूपैआ अना दर सूदपर आनि घरवालीक हाथमे दऽ देलक। भानस भेलइ। सभ खेलक। बेरू पहर दुनू परानी हाटसँ बुलकी कीनि अनलक।

दोसर साँझमे बुलकी पहिर सुगिया-दादीकेँ गोड़ लगैले बोनिहारिन गेल। सुगिया दादी ओसारपर बैस पोता-पोतीकेँ नल-दमयन्तीक खिस्सा सुनबैत रहैथ। दादीकेँ गोड़ लागि बोनिहारिन बुलकी देखैले कहलकैन। बुलकी देख दादी कहए लगलखिन-

“कनियाँ। सोन-चानी गरीब-गुरबा घरमे नै रहै छइ। जइ घरमे पेटेक भूख नै मेटाइ छै ओइ घरमे सिंगारक चीज केना रहतै। अनेरे एहेन सख करै छह। कहुना-कहुना बच्चा सभकेँ पालह जे कुल-खानदान जीबैत रहतह।”

दादीक बात सुनि बोनिहारिन आँगन आबि पतिकेँ कहलक-

“गलती भेल जे हम रूसि कऽ अहाँसँ बुलकी किनेलौं। अखैन रखि दइ छिऐ, काल्हि घुमा कऽ कर्जाबलाक रूपैआ दऽ एबै।”



भद्रपुरुष

एक दिन एकटा वृद्धा कोठीसँ निकलैत एकटा भद्र-पुरुषकेँ कहलखिन-

“अहाँ, ऐ कोठीक मालिकसँ कनी भेँट करा दिअ?”

ओ भद्र-पुरुष पुछलखिन-

“कोन काज अछि कहू?”

वृद्धा बजली-

“हमरा बेटीक बिआह छी। तीन साए रूपैआक खगता अछि। अगर रूपैआ नै हएत तँ बिआह रूकि जेतइ।”

मुड़ी डोलबैत कहलकैन-

“चलू।”

भद्र-पुरुष अपन कारमे वृद्धाकेँ बैसा लऽ गेलखिन। थोड़ेक दूर गेलापर कारसँ उतैर सामनेक मकानमे प्रवेश केलैन। वृद्धोकेँ संगे नेने गेलखिन। भीतर गेलापर वृद्धाकेँ ओसारपर बैसा अपने कोठरीमे गेला। कोठरीमे जा पाँच साए रूपैआ नोकरकेँ दऽ ओइ वृद्धाकेँ दऽ अबैले कहलखिन। पाँचो सौ रूपैआ नेने आबि नोकर वृद्धाकेँ दैत कहलक-

“दाइ, पाँच सौ रूपैआ अछि। तीन सएमे बेटीक बिआह सम्हारि लेब आ दू सएसँ कोनो धंधा शुरू कऽ लेब। जइसँ आगूक जिनगी आसानीसँ चलत।”

रूपैआ हाथमे लऽ वृद्धा ओइ नोकरक मुँह दिस देखैत कहलक-

“भाय, कोठीक मालिक कहाँ भेटलैथ?”

नोकर-

“जिनका संग अहाँ कारमे एलौं वएह ऐ कोठीक मालिक- बाबू चितरंजन दास छैथ।”

जइ आदमी-ले सौंसे समाज परिवार होइत, जे अनको दुखकेँ अपन दुख बुझि जीबैक प्रेरणा दैत वएह तँ भद्र-पुरुष होइत।



झूठ नै बाजब

बंगालक पूर्व मुख्यमंत्री डाक्टर विधानचन्द्र राय बच्चेसँ मानवीय गुणक अंगीकार करैत रहैथ। जे गुण हुनक पितासँ भेटैत रहैन। सत्यक प्रति निष्ठा आ साहस दिनानुदिन बढ़ैत गेलैन। जखन विधानचन्द्र डाक्टरी पढ़ैत रहैथ तखने अध्यापक मोटर एक्सिडेंटक सम्बन्धमे झूठ गबाही दइले कहलकैन। अध्यापकक इच्छा रहैन जे विधानचन्द्र छात्र छी तँए जे कहबै से करत। मुदा झूठ नै बाजैक संकल्प विधानचन्द्र केने रहैथ। अध्यापकक कहलापर विधानचन्द झूठ बजैसँ इनकार करैत कहलकैन-

"हम जे देखलिऐ सएह कहबै। मुदा झूठ नै बजब।"

जेकर परिणाम विधानचन्द्रकेँ भोगए पड़लैन। परीक्षामे फेल कऽ देल गेला। मुदा फेल होइसँ ओ ओते दुखी नै भेला जेते खुशी अपन संकल्प निमाहैसँ भेला।



आर्दश माए

आर्मेनियाक सर्वोच्च सेनापति सीरोज ग्रिथक बेकतीत्व हुनक माइयेक बनौल छेलैन। जखन ग्रिथ बच्चे रहैथ तखने पिता मरि गेलैन। विधवा नार्विन ग्रिड कपड़ा सीबि‍-सीबि गुजरो करैथ आ बेटोकेँ पढ़बैथ। गरीब परिवारक ग्रिथ अछि ई बात स्कूलोक शिक्षक सभ जनैत। फीस माफ होइले ग्रिथ आवेदन देलक। फीस माफो भऽ गेलइ। फीस माफक समाचार ग्रिथ माएकेँ कहलक। माए बिगैड़ कऽ बाजल-

“हम मेहनैत कए कऽ गुजर करै छी, तखैन फीस किए ने देबै। हम मेहनती छी नै कि गरीब। हमर अपन स्वाभिमान कहैए जे गरीब नै छी।”

स्वाभिमानी माए अपन बच्चाक एहेन चरित्र बनौलक जे देशक सर्वोच्च सेनापति भेल।



नारी सम्मान

नेपोलियन बोनापार्ट अपन टुइ-लेरिस नामक महलमे स्नान-घरक मरम्मैत करबैले सचिवकेँ कहलखिन। सचिव महलक अधिकारीकेँ फ्रान्सक कुशल कारीगरकेँ बजा मरम्मैत करैले कहलकै। कारीगर आबि मरम्मैत करए लगलै। जखन मरम्मैत भऽ गेलै तखन नारीक नग्न चित्र सभ सेहो बना देलकै।

नेपोलियन नहाइले गेला। नहाइसँ पहिने चित्र सभ देखलखिन। चित्र देख नेपोलियन चोट्टे घुमि कऽ आबि अधिकारीकेँ बजौलखिन। अधिकारी आएल। हृदैक क्रोधकेँ दबैत नेपोलियन अधिकारीकेँ कहलखिन-

“नारीकेँ प्रतिष्ठा देब सीखू। स्नान घरमे जे नारीक नग्न चित्र बनबौने छी ओ निन्दनीय अछि। जइ देशमे नारीकेँ विलासक साधन बनौल जाएत ओइ देशक विनाश निश्चित हेतइ।”

नेपोलियनक आदेश सुनि अधिकारी कारीगरकेँ बजा सभ चित्र मेटिबौलक।



अनुशासन

अंग्रेजी शासनक खिलाप आन्दोलन उग्र रूप धेने जा रहल छल। आन्दोलन चलबैले क्रान्तिकारी दलकेँ डकैतियो करए पड़इ। एक दिन राम प्रसाद विस्मिलक नेतृत्त्वक दल एकटा गाममे डकैती करैले पहुँचल। एकटा परिवारमे सभ घुसल।

जेतए जे किछु दलकेँ भेटलै लऽ कऽ निकलल। सभ एकत्रित हुअ लगल आकि अपन साथीक गिनती करए लगल। गिनतीमे एक गोरे कमैत रहए। घरेमे चन्द्रशेखर एकटा बुढ़ियाक कैदमे पड़ल छल। ओ बुढ़िया अपन जेबर आ नगदीबला बक्सापर बैस चन्द्रशेखरक गट्टा पकड़ने छेली। चन्द्रशेखर चुपचाप आगूमे ठाढ़। ने बाँहि झमारैत आ ने किछु बजैत।

सभ कियो घर पसि देखलक जे चन्द्रशेखर बुढ़ियाक पालामे पड़ल छैथ।

क्रान्तिकारी पार्टीक बीच अनुशासन छेलै जे ने महिलापर हाथ उठौल जाएत आ ने ओकर जेबर-ले जाएत। आजाद बुढ़ियाकेँ बुझबैत कहथिन-

“माता जी, अहाँ बक्सापर सँ हटि जाउ। हम खाली नगद लेब। जेबर नै लेब।”

आजादक विनम्र बातसँ बुढ़ियाक साहस बढ़ि गेल छेलइ। जखन चन्द्रशेखरसँ संगी सभ पुछलकैन तखन ओ सभ बात कहलखिन। आजादक बात सुनि सभ ठाहाका दऽ हँसए लगल। गट्टा

छोड़बैले एक गोरे बढ़ए लगला आकि चन्द्रशेखर कहलखिन-

“माताजीक सभ सम्पैत घुमा दिअनु।”

सम्पैतक नाओं सुनि भावुक बुढ़िया चन्द्रशेखरक गट्टा छोड़ि देलकैन। तखन ओ घरसँ संगी सबहक संगे निकलला।



सादा जिनगी

सन 1949 इस्वीक बात छी। ओइ समय स्वर्गीय लालबहादुर शास्त्री उत्तर प्रदेश सरकारमे गृहमंत्री रहैथ। एक दिन लोक निर्माण विभागक किछु कर्मचारी हुनका डेरामे कूलर लगबैले आएल। शास्त्रीजी डेरामे नै रहैथ। परिवारक बच्चो आ पत्नियोकेँ कूलर देख खुशी भेलैन।

साँझमे लालबहादुर शास्त्री डेरा एला। डेरा ऐबते देखलखिन जे कूलर लगबैले लोक निर्माणक कर्मचारी सभ छैथ। कूलरसँ शास्त्री जीकेँ खुशी नै भेलैन। ओ कूलर लगबैसँ मना कऽ देलखिन। परिवारक सभ स्तब्ध भऽ गेल। पत्नी कहलकैन-

“जे सुविधा सरकार दऽ रहल अछि ओकरा मना किए करै छी?”

गम्भीर स्वरमे शास्त्रीजी उत्तर देलखिन-

“ई जरूरी नै अछि जे हम सभ दिन मंत्रीए रहब। कूलरसँ सबहक आदैत बिगैड़ जाएत। परिवारमे बेटियो अछि जेकर बिआह हेतइ। दोसर घर जाएत। अगर जौं ओकरा ओइ परिवारमे एहेन सुविधा नै होइ तखैन तँ कष्ट हेतइ।”



विचारक उदय

गाँधीजी बच्चे रहैथ। हुनक बड़का भाय हुनका मारलकैन। गाँधीजी कनैत माए लग आबि कहलखिन। गाँधीक बात सुनि माए कहलखिन-

“तहूँ किए ने मारलह?”

माएक बात सुनि गाँधीजी कानब छोड़ि कहलखिन-

“जे गलती भैया केलैन सएह करैले हमरो कहै छी। आकि हुनका मनाही करबैन।”

बेटाक बात सुनि माए कहलखिन-

“बौआ, हम तोहर परीक्षा लेलियह। अगर तोरामे एहेन विचारक विकास हेतह तँ आगू चलि कऽ सौंसे दुनियाँक प्रति सिनेह आ प्रेम पौबह।”

बच्चाक समुचित विकासक आरम्भ परिवारेसँ शुरू होइत अछि।



पुष्ट इकाइसँ समर्थराष्ट बनैत

फ्रान्स हालैंडपर आक्रमण कऽ देलक। फ्रन्स नमहर देशो आ सम्पन्नो। मुदा होलैंड छोटो आ पछुआएलो। मुदा फ्रान्स हालैंडसँ जीत नै पबैत। ई देख, फ्रन्सक राजा लुइ-चौदहम बिगैड़ मंत्री कालवर्टकेँ बजा पुछलखिन-

"हमर देश एते पैघ आ सामरिक सम्पन्न रहितो पछड़ि किए रहल अछि?"

राजाक बात सुनि कालवर्ट नम्र भऽ उत्तर देलकैन-

"महत्ता आ समर्थता। कोनो देशक विस्तार आ वैभवपर निर्भर नै करैत। ओ निर्भर करैए ओइ देशक देश-भक्त आ बहादुर नागरिकपर। जे अपना देशक अपेक्षा हालैंडमे मजगूत अछि।"

मंत्रीक बात सुनि राजा अपन सेना आपस बजा लेलक। हालैंडमे बच्चा-बच्चाकेँ राष्ट्रक सशक्त इकाईक रूपमे ढालल जाइत। जइसँ ओ शक्तिशाली बनि ठाढ़ अछि।



डर नै करी

उगैत सुरूज जकाँ जिनगी अपन दिशामे अपना ढंगसँ बढ़ैत जा रहल छल। एक विरामपर जा जिनगी पाछू मुहेँ घुमि कऽ तकलक तँ चौंक गेल। चण्डालिनी सन कारी आ कुरूप छाया पाछू-पाछू अबै छल। छायाकेँ देख जिनगी ललकारि कऽ पुछलक-

“अभागिनी, तौँ के छेँ। हमरा पाछू-पाछू किए अबै छेँ? तोहर कारी आ कुरूप काया देख हमरा डर होइए। जो भाग। हमरासँ हटि कऽ रह।”

छाया छिप गेल। मुदा जिनगी घिंघयाइत बढ़ल। पुनः छाया आबि कहलकै-

“बहिन, हम तोहर सहचरी छियौ। तोरे संग हमहूँ चलि रहल छी। आ अन्तमे दुनू गोरे संगे रहब। तँए डरैक कोनो बात नहि। तौँ हमरा नै चिन्है छेँ, हमरे नाओं मृत्यु छी।”

मृत्युकेँ पाछू लगल अबैत देख जिनगी डरि गेल। सकपका कऽ गिर पड़ल।



असिरवाद उलैट गेल

एक गोरेकेँ दूटा बेटा छेलइ। दुनूक बीच तीन बर्खक जेठाइ-छोटाइ छेलइ। गामेक स्कूलमे दुनू भाँइ पढ़बो केलक। अपर प्राइमरी स्कूल रहने दुनू-भाँइ पँचमे तक पढ़लक। बाप-माए दुनू बेटाक बिआह कऽ देलक। जाबे धरि छोटका बेटाक दुरागमन नै भेल छेलै ताबे धरि तँ परिवार शान्त रहलै, मुदा छोटकाक दुरागमन होइते परिवारमे खटपट शुरू हुअ लगलै। एक्को दिन एहेन नै होइ जइ दिन दुनूक बीच झगड़ा नै होइत। सभ दिन दुनू दियादनीकेँ झगड़ा करैत देख बापकेँ बरदास नै भेलइ। दुनू बेटाकेँ बजा बाप कहलकै-

“बौआ, सभ दिन झगड़ा केने घरसँ लक्ष्मी पड़ा जेथुन तँए अखैन हमहूँ जीविते छी दुनू भाँइ भीन भऽ जाह। जे चीज छह दुनूकेँ बाँटि दइ छिअ।”

जेठका बेटाकेँ नगद आ जेवर-जात हिस्सा भेलै आ छोटकाकेँ दू बीघा खेत आ बड़द भेलइ। दुनू भाँइ खुशीसँ भीन भऽ गेल। नगद आ गहना-गुरिया पाबि जेठका खूब ऐश-मौज करए लगल। दुनू परानी छोटका दिन-राति मेहनैत करए। गामक लोक जेठकाकेँ करमगर आ छोटकाकेँ करमघट्टू कहए लगलै।

समय बितए लगलै। दुइए साल पछातइ पाशा पलटए लगलै। जेठका बेटाक रुपैओ आ गहनो सठि गेलै मुदा छोटकाक उन्नैत हुअ लगलै। नगद आ जेबर सठने जेठका चोरि करए लगल। एक दिन चोरि करए गेल तँ घरेमे पकड़ा गेल। जइसँ मारियो खूब खेलक आ

जहलो गेल। गामक लोकक असिरवाद उनटए लगल। जही मुहसँ जेठकाकेँ करमगर आ छोटकाकेँ करमघट्टू कहै छेलै ओही मुहसँ लोक जेठकाकेँ करमघट्टू आ छोटकाकेँ करमगर कहए लगलै।



रत्न गमेवाक दुख

एकटा गोंताखोर कएक दिनसँ असफल होइत आएल छल। भरि-भरि दिन परिश्रम करै छल मुदा किछु हाथ नै लगइ। जइसँ परिवार चलब कठिन भऽ गेलइ। आन काज करैक लूरि रहबे ने करै जे करैत। भोरे घरसँ निकैल नदीक महारपर जा बैस रत्नक आशमे टक-टक पानि दिस तकैत रहै छल।

निराश भऽ गोंताखोर मनमे विचारलक जे आइ ऐ काजक आखिरी दिन छी। जौं आइ किछु नै भेटत तँ काल्हिसँ छोड़ि देब। जाल लऽ नदीक महारपर बैस, मने-मन भगवानसँ कहए लगलैन- “अगर अहाँ मदैत नै करब तँ हम जीब केना?”

भगवानसँ प्रार्थना कऽ गोंताखोर पानिमे पसि डुमकी लगौलक। एकटा पोटरी भेटलै। पोटरी नेने ऊपर भेल। किनछैरमे बैस पोटरी खोललक। छोट-छोट पाथर ओइ पोटरीमे। पाथर देख गोंताखोर निराश भऽ गेल। मनमे क्रोधो उठलै। एकाएकी ओइ पाथरकेँ पानिमे फेकए लगल। पाथरो फेकैत आ मने-मन अपना भाग्योकेँ कोसैत। फेकैत-फेकैत एकटा पाथर बँचलै।

ओइ पाथरकेँ जखन फेकए लगल आकि ओइपर नजैर पड़लै। पाथर चमकैत रहए। ओ नीलम पाथर रहए। गोंताखोर चीन्हि गेल। मुदा ताघरि तँ सभटा फेक देने छल। अपसोच करए लगल मुदा सभ तँ पानिमे चलि गेल छेलै तँए अपसोच कैये कऽ की हेतइ। अपसोच करैत देख भगवान चिड़ै बनि आबि कहए लगलखिन-

“ऐ गोंताखोर, खाली तोँहींटा एहेन अभागल नै छेँ, ढेरो अछि जे जीवन रूपी रत्न-राशिकेँ अहिना गमबैए। जो, जएह बँचल छौ ओकरे बेचि कऽ गुजर कर गऽ। मुदा ज्ञान बढ़ा। जइसँ धनो पबैक लूरि भऽ जेतौ आ मनुखो बनि जीमे।”



निशाँ

एकटा वेपारी अफीम खाइ छल। ओ अपना नोकरोकेँ अफीमक चहैट लगा देलक। एक दिन दुनू गोरे बाजार जाइक विचार केलक। दोकानमे जे समान सभ सठल रहै ओकर पुरजी बनौलक। रूपैआ गनलक। दुरस्त बाजार रहने दुनू गोरे घरेपर भरि पेट खा लेलक। बाजार विदा भेल। किछु दूर गेलापर दुनू गोरे खेनाइ बिसैर गेल। रस्तामे होटल छेलै, दुनू गोरे घोड़ासँ उतैर खाइले गेल। घोड़ाकेँ छानि कऽ चरैले छोड़ि देलक। दोकानमे दुनू गोरे खा सोझे बजार विदा भेल। बजारक कात जखन पहुँचल तँ वेपारीकेँ मन पड़लै जे घोड़ा ओतै छुटि गेल। मनहूस भऽ दुनू गोरे माथपर हाथ दऽ बैस रहल। थोड़ेकाल गुनधुन करैत घोड़ा आनए दुनू गोरे घुमि गेल। घुमि कऽ दोकान लग आएल तँ घोड़ाकेँ चरैत देखलक। लगाम लगा दुनू गोरे चढ़ि बजार दिस विदा भेल। बाजार पहुँच दोकानमे सौदाबारी वेसाहलक। समान समेट, मोटरी बान्हि जखन रूपैआ देमए लगलै तँ रूपैआक झोरे नहि। दुनू गोरे मन पाड़ए लगल जे रूपैआक झोरा की भेल? किछु काल पछातइ मन पड़लै जे झोरा तँ ओतै छुटि गेल जेतए बैसल छेलौं। दुनू गोरे बपहारि काटए लगल। एकटा ग्रामीण महिला समान वेसाहै छेली, दुनूकेँ कनैत देख वेपारीकेँ कहलक-

“ई गति खाली अहीं दुनू गोरेकेँ मात्र नै बल्कि सभ नसेरीकेँ होइ छइ।”



सामना

वनमे अनेको सुगर परिवार छल आ एकटा सिंह सेहो रहै छेलइ। जखन कखनो सिंहकेँ भूख लगै आकि टहैल सुगरकेँ पकैड़ खा जाइत। दोसर-तेसर सुगर सिंहकेँ देखते पड़ा जाइत। एक दिन सभ सुगर मिलि बैसार केलक। बैसारमे तँइ केलक-

“जखैन एका-एकी मरिये रहल छी तखैन लड़ि कऽ किए ने मरब।”

ऐ विचारसँ सभ सुगरमे साहस जगलै। सभ मिलि लड़ैले विदा भेल। सभ हल्लो करै आ चिकैड़-चिकैड़ सिंहकेँ गरीएबो करइ। जेते जोरगर सुगर छल ओ आगू-आगू आ अबलाहा सभ पाछू-पाछू विदा भेल। सिंहकेँ देखते सभ जोरसँ हल्ला करैत दौगल। आइ धरि सिंहकेँ एहेन मुकाबलासँ भेँट नै भेल रहए। सिंह डरा गेल। अपन जान बँचबैले पड़ाएल। सिंहकेँ पड़ाइत देख सुगर पाछूसँ खिहारलक। सिंह वनसँ बाहर भऽ गेलइ। वन खाली भऽ गेलइ। सभ सुगर निचेनसँ रहए लगल।



शिष्टाचार

एकटा इनारपर चारिटा पनि-भरनी पानि भरैले आएल छेली। एक्केटा डोल छेलै तँए एक गोरे पानि भरै छेली आ तीन गोरे गप-सप्प करै छेली। सभ अपन-अपन बेटाक बड़ाइ करैत। पहिल औरत बाजल-

“हमर बेटाक अवाज एते मधुर अछि जे रजो-रजवारमे ओकरा सम्मान भेटतै।”

दोसर कहलकै-

“हमरा बेटाक शरीरमे एते तागैत अछि जे नमहर भेलापर बड़का-बड़का पहलमानकेँ पटकत।”

तेसर बाजल-

“हमर बेटा एहेन तेजगर अछि जे सभ साल इस्कूलमे फस्ट करैए।”

मुड़ी निच्चाँ केने चारिम बाजल-

“आने बच्चा जकाँ हमर बेटा साधारण अछि।”

पनिभरनी सभ इनारपर गप-सप्प करिते छल आकि स्कूलमे छुट्टी भेलइ। अबैत-अबैत चारूक बेटा इनार लग देने गुजरैत रहए। एकटा गीत गबैत दोसर कुदैत-फनैत, तेसर किताब खोलि किछु पढ़ैत आ चारिम पाछू-पाछू चुपचाप अबै छल। इनार लग ऐबते चारिम अपन माएक भरल घैल माथपर लऽ लेलक आ माएक हाथमे अपन बस्ता दऽ देलक। आगू-पाछू दुनू माए-बेटा आँगन विदा भेल।

इनारे लग बैसल एकटा बुढ़िया सभ बात सुनै छेली। ओ चारू पनिभरनीकेँ रोकि, बजली-

“ई चारिम लड़का जे अछि ओ सभसँ नीक अछि। एकर शिष्टाचार सभसँ नीक छइ।”



ठक

एकटा ठक लोमड़ी गाछक निच्चाँमे छल। गाछपर बैसल मुर्गाकेँ पट्टी दऽ रहल छेलै जे भाय तूँ नै सुनलहक जे सभ पशु-पक्षी आ जानवरक बीच सभा भेल। जइमे सर्वसम्मतिसँ निर्णय भेलै जे अपनामे कियो केकरो अधला नै करत, तौँ किए गाछपर छह निच्चाँ आबह आ दुनू गोरे अपन जिनगीक दुख-सुखक गप-सप्प करह। लोमड़ीक चलाकी मुर्गा बुझै छल तँए गाछेपर सँ हूँह-कारी दैत रहै मुदा निच्चाँ नै उतरै। ताबे दूटा अबारा कुकुरकेँ दौगल अबैत लोमड़ी देखलक। कुकुरकेँ देखते पड़ाएल। लोमड़ीकेँ पड़ाइत देख गाछेपर सँ मुर्गा कहलकै-

"भाय, भगै किए छह? जखैन सबहक बीच समझौता भऽ गेलै तखैन तोरा किए डर होइ छह?"

लोमड़ी भगबो करैत आ उत्तरो दइत-

"भऽ सकैए जे तोरे जकाँ ओकरो नै बुझल होइ।"



पत्नीक अधिकार

गृहस्ताश्रम ओहन आश्रम होइत जइमे आत्मसंयम, पारस्परिक सद्भाव आ सद्प्रवृत्तिक अभ्यास आसानीसँ कएल जा सकैए। एक दिन हजरत उमरसँ भेँट करए एक आदमी आएल। थोड़े काल बैसल तँ उमरक पत्नीकेँ जोर-जोरसँ उमरपर बजैत सुनलक। उमर चुपचाप सुनैत रहए। किछु उत्तर नै दइत। ओइ आदमीकेँ बड़ छगुन्ता लगलै जे पत्नी यत्र-कुत्र कहि रहल छैन मुदा किछु उत्तर उमर नै दइ छथिन। ओइ आदमीकेँ नै रहल गेलइ। ओ उमरकेँ पुछलकैन-

“अपनेक पत्नी यत्र-कुत्र कहि रहल छैथ मुदा अहाँ मुड़ियो उठा कऽ ओमहर नै तकै छी?”

गम्भीर स्वरमे उमर जवाब देलखिन-

“भाय, ओ हमर मैल-कुचैल कपड़ा खिंचै छैथ, खेनाइ बनबै छैथ, सेवा करै छैथ आ सभसँ पैघ बात जे हमरा पाप करैसँ सेहो बँचबै छैथ। तखैन जौं ओ बिगैड़ कऽ दू-चारिटा बाते कहै छैथ तँ की हुनका एतबो अधिकार नै छैन।”



शिनीची सिनेह

तीन दिनसँ चूल्हि नै पजरने, दुनू परानी सियान तँ बरदास केने रहैथ मुदा बच्चा सभ भूखे ओसारपर ओंघरनियोँ दैत आ हुचैक-हुचैक कनबो करैत। अनेको परियास सियान केलक मुदा खेनाइक कोनो गर नै लगलै। अन्तमे निराश भऽ सियान अपन जिनगीकेँ बेकार बुझि, आत्महत्या करैक विचार मनमे ठानि लेलक।

आत्महत्या करैले विदा भेल। निराश मन दुखक अथाह सागरमे डुमए लगलै आकि पाछूसँ एक आदमी कान्हपर हाथ दऽ कहलकै- “मित्र, ऐ अमूल्य जिनगीकेँ गमौलासँ की हएत? हम मानै छी जे अहाँक विपैत अहाँकेँ आत्महत्या करैले बेबस कऽ देलक। मुदा की अहाँ ऐ विपैतकेँ हँसैत-हँसैत पाछू नै धकेल सकै छी?”

आत्मीयताक शब्द सुनि सियान बोम फाँड़ि कानए लगल। कनबो करैत आ अपन सभ मजबूरी ओइ आदमीकेँ कहबो करैत। मजबूरी सुनि शिनीचियोकेँ आँखिमे नोर आबि गेलैन। तत्काल ओ सियानकेँ भोजनक जोगार करैले किछु रूपैआ दऽ देलखिन। सियान घुमि कऽ घर आबि भोजनक बेवस्था केलक। वएह शिनीची जापानक प्रसिद्ध कवि छैथ।

अहीठाम ओ संकल्प केलैन जे अप्पन कमाइक तीन-चौथाइ भाग ओहन बेकतीक सेवामे लगाएब जे कष्टमय जिनगीमे पड़ल अछि। घरपर आबि शिनीची एकटा गुप्तदानक पेटी बना मुख्य चौराहापर रखि देलैन। ओइ पेटीक ऊपरमे लिखि देलखिन-

“जइ सज्जनकेँ सचमुच पाइक खगता होनि ओ ऐ पेटीसँ अपना काज जोकर निकालि लैथ।”

सभ दिन साँझकेँ शिनीची आबि पेटी खोलि देख लैथ। जौं पेटी खाली रहैत तँ दऽ दैथ।



सिखबैक उपय

एकटा गरुड़ छल। ओकरा एकटा बच्चा छेलइ। बच्चाकेँ पीठपर लऽ गरुड़ एकठामसँ दोसर ठाम जा कऽ चरौर करै छल। साँझू पहरकेँ बच्चाकेँ पीठपर लदने घर अबै छल। उड़ै जोकर बच्चा भऽ गेल छेलै मुदा पीठपर बैसैक जे आदैत लागि गेल रहै से छोड़बे ने करैत। कएक दिन गरुड़ बुझौलकै मुदा ओ अपन बानि छोड़बे ने करैत। मने-मन गरुड़ सोचलक जे सोझे कहनेसँ नै मानत तँए रस्ता धड़बए पड़त।

दोसर दिन बच्चाकेँ पीठपर नेने गरुड़ उड़ैत विदा भेल। जखन खूब ऊपर गेल तखन आस्तेसँ अपन पाँखि समेट बच्चाकेँ छोड़ि देलक। बच्चा निच्चाँ गिरए लगल। अपनाकेँ निच्चाँ गिरैत देख बच्चा पाँखि फड़फड़बए लगल। आस्तेसँ निच्चाँ उतरल। आँखि उठा-उठा गरुड़ देखबो करैत आ बँचबैक उपैयो सोचैत। निच्चाँमे आबि बच्चा पाँखि चलबैक परियास करए लगल, जइसँ उड़ब सीख लेलक। साँझुपहर जखन सभ एकठाम भेल तखन बच्चा बापक शिकाइत करैत माएकेँ कहलक-

“माए, आइ जौं पाँखि नै फड़फड़ेने रहितौं तँ बाबू बिच्चे रस्तामे मारि दइतए।”

माए बुझि गेली। हँसैत बेटाकेँ कहलखिन-

“बौआ, जे अपनेसँ नै सिखत, स्वावलंवी बनत, ओकरा सिखबैक एकटा ईहो रस्ता छिऐ।”



कर्तव्यपरायन सुगा

एकटा जमीनदार रहैथ। हुनका बहुत खेत रहैन। धानक खेती केने रहैथ। खेतक चारू कोणपर रखबार खोपड़ी बना ओगरबाहि करै छल। रखबारकेँ रहितो सुगा सभ उड़ैत आबि, धानो खाइत आ सीस काटि-काटि लैयो जाइत। एकटा एहेन सुगा छल जे अपने खेतेमे खा लैत आ उड़ै काल छह गोट सीस काटि लोलमे लऽ उड़ि जाइत। एक दिन रखबार ओकरा जालमे फँसा लेलक। सुगाकेँ नेने जमीनदार लग रखबार लऽ गेल।

सुगाकेँ देख जमीनदार पुछलकै-

“धानक सीस काटि केतए जमा करै छेँ?”

निर्भीक भऽ सुगा उत्तर देलकैन-

“दूटा सीस कर्ज सठबैले, दूटा कर्ज लगबैले आ दूटा परमार्थ-ले लऽ जाइ छी। कुल छह-टा सीस, अपन पेट भरलापर लऽ उड़ि जाइ छी।”

अचम्भित होइत जमीनदार पुछलकै-

“की मतलब?”

सुगा बाजल-

“बृद्ध माए-बाप छैथ जिनका उड़ि नै होइ छैन, तिनका-ले दूटा सीस। दूटा बच्चा अछि तेकरा-ले दूटा सीस आ पड़ोसीया दुखित अछि दूटा सीस हुनका-ले।”

सुगाक बात धियानसँ सुनि जमीनदार गुम्म भऽ गेला। किछु समय मने-मन विचारि रखबारकेँ कहलखिन-

“ऐ सुगाकेँ चीन्हि लहक। जौं कहियो धोखासँ पकड़ाइयो जा तँ छोड़ि दिहक।”



तस्वीर

एकटा चित्रकार तीनटा तस्वीर बनौलक। एकटा सोचमे, दोसर हाथ मलैत आ तेसर माथ धुनैत। एक गोरे तीनू तस्वीरकेँ देख चित्रकारसँ पुछलक-

"तीनू तीन रंगक बुझि पड़ैए।"

उत्तर दैत चित्रकार कहलक-

"ई तीनू एक्के आदमीक तीन अवस्थाक छी।"

"कोन-कोन अवस्थाक छी।"

"पहिल बिआहसँ पहुलका छी। जखैन युवक कल्पनामे उड़ैए। सोचैए जे केते सुन्नर कनियाँ भेटत। दोसर बिआह पछातइक छी। जखैन पारिवारिक जिनगी शुरू होइ छै आ जिम्मेवारी बढ़ै छइ। जिम्मेवारी बढ़लाक बादे समस्यासँ टकराए पड़ै छइ। तखैन बुझि पड़ै छै जे कोन जंजालमे पड़ि गेलौं तँए हाथ मलैए। तेसर तस्वीर ओ छी जखैन स्त्रीक वियोग आकि विरोध होइ छइ। तखैन माथ घुनैत सोचए पड़ै छै जे हमर कपार फूटि गेल। अपने किरदानीसँ अपन, परिवारक आ खानदनक नाक कटा देलिऐ। जौं हमहूँ सही रस्तापर आबि चलैत रहितौं तँ एहेन दिन नै देखए पड़ैत।"



मितक खगता

एकटा पैघ पोखैर छल। ओकर उत्तरबरिया महारमे मोर रहै छल आ दछिनबरियामे मोरनी। दुनू असगरे-असगरे रहैत रहए। एक दिन मोर मोरनी ऐठाम जा बिआहक प्रस्ताव रखलक। मोरक प्रस्ताव सुनि मोरनी पुछलकै-

"अहाँकेँ कएटा दोस अछि?"

नजैर दौगबैत मोर उत्तर देलकै-

"एक्कोटा नहि।"

मोरक जवाब सुनि मोरनी बिआह करैसँ इनकार कऽ देलक। तखन मोरक मनमे एलै जे सुखसँ जीबैले दोस जरूरी अछि। ओतएसँ विदा भऽ मोर पुबरिया महार होइत चलल। पुबरिया महारमे सिंह रहै छल। आ पछबरियामे काछु। सिंह बैसल-बैसल झपकी लइ छल। मोर सिंहक आगूमे ठाढ़ भऽ गेल। मोरकेँ बजैक साहसे ने होइ। बड़ी खान धरि मोरकेँ ठाढ़ भेल देख सिंह पुछलकै-

"की बात?"

निराश मोने मोर कहलकै-

"भैया, हम अहाँसँ दोस्ती करए एलौं हेन। किएक तँ जिनगी-ले मितक खगता होइ छइ।"

सिंह मानि दोस्ती कऽ लेलक। सिंहसँ दोस्ती भेला पछातइ मोर पछबरिया महार आबि काछुसँ सेहो दोस्ती केलक। पछबरिये महारक गाछपर टिटही सेहो रहै छल। जे अपन काज इमानदारीसँ करै छल।

जखन कखनो शिकारीक आगमन होइ आकि कोनो आफत अबैबला रहै तँ टिटही सभकेँ जानकारी दऽ दइत।

दोस्ती केला पछातइ मोर मोरनी लग आबि सभ बात कहलक। मोरनी बिआह करैले राजी भऽ गेल। दुनूक बीच बिआह भऽ गेलइ। दुनू एक्के ठाम रहए लगल।

एक दिन एकटा शिकारी शिकारक भाँजमे पहुँचल। भरि दिन शिकारी शिकारक पाछू हरान भेल रहए मुदा केतौ किछु नै भेलइ। थाकिओ गेल रहए आ भूखो लागि गेल रहइ। गाछक निच्चाँमे सुसताए लगल। गाछक निच्चाँमे चिड़ैक चट देख गाछपर चढ़ि चिड़ैकेँ पकड़ैक विचार केलक। गाछेपर सँ मोर-मोरनी सेहो शिकारीकेँ देखै छल। शिकारीकेँ गाछपर चढ़ैत देख दुनू परानी -मोर-मोरनी- सोचए लगल जे आइ दुनूक जान जाएत। मोर उड़ैत टिटही लग गेल। टिटही जोर-जोरसँ बोली देमए लगलै। सिंह बुझि गेल। शिकार पकड़ैले सिंह विदा भेल। ताबे कछुआ सेहो पानिसँ निकैल किनछैरमे आबि गेलइ। सिंहकेँ देख शिकारी भगैक ओरियान करए लगल आकि काछुपर नजैर पड़लै। काछुकेँ पकड़ए शिकारी किनछैरमे गेल आकि काछु ससैर पानिमे चलि गेल। शिकारी पानिमे पैइसए लगल आकि गादि -दलदल- मे लसकि गेल। ने आगू बढ़ि होइ आ ने पाछू भऽ होइ। ताबे सिंह आबि शिकारीकेँ पकैड़ लेलक। शिकारीकेँ पकड़ल देख मोरनी मोरकेँ कहलक-

“बिआह करैसँ पहिने जे मितक संख्या पुछने रही से देखलिऐ। आइ जौं दोस्ती नै केने रहितौं तँ की होइत?”



स्वार्थपूर्ण विचार

एकटा बच्चाक मृत्यु भऽ गेलइ। अभिभावक संग किछु गोरे ओकरा उठा कऽ असमसान लऽ गेल। बर्खा होइत रहए। असमसानमे सभ विचारए लगल जे एहेन दुरकाल समैमे लाशकेँ की कएल जाय? अपनामे सभ विचारिते छल आकि बिलसँ एकटा सिआर निकैल कहलकै-

“एहेन समैमे लाशकेँ जरौनाइसँ नीक माटिमे गारनाइ हएत। धरती माएक गोदमे समरपित करब सभसँ नीक हएत।”

सिआरक बात समाप्तो ने भेल छल आकि काछु कहए लगलै-

“धारमे फेक दियौ। ऐसँ नीक दोसर नै हएत।”

ताबे एकटा गीध उड़ैत आबि कहए लगलै-

“सभसँ नीक हएत जे ओहिना फेक दियौ, धारेमे नहा लिअ आ गामपर चलि जाइ जाउ।”

कठियारीबला सभ तीनूक चलाकी बुझि गेल। तीनूकेँ धैनवाद दैत विदा केलक। बर्खो छुटि गेलइ। सभ मिलि चीता खुनि जारैन दऽ डाहि देलक।



संगीक महत

एकटा गाछ लग एकटा फूलक लत्ती जनमि कऽ लटपटाइत बढ़ैत गाछक फुनगी धरि पहुँच गेल। गाछक आश्रए पाबि ओ लत्ती फुलए-फड़ए लगल। लत्तीक फड़-फूल देख गाछक मनमे द्वेष जागए लगलै जे हमरे बले ई लत्ती एते बढ़ि, फड़ै-फुलाइए। जौं हम सहारा नै दैतिऐ तँ कहिया- केतए ने माल-जाल चरि नष्ट कऽ देने रहितै। लत्तीपर रोब जमबैत गाछ कहलकै-

"तोरा हम जे आदेश दियौ से तूँ कर। नहि तँ मारि कऽ भगा देबौ।"

वृक्ष लत्तीकेँ कहिते छल आकि दूटा बटोही ओही रस्ते जाइ छल। लत्तीसँ सुशोभित गाछ देख एकटा राही दोसरकेँ कहलक-

"संगी, ऐ वृक्षकेँ दखियौ जे केते सुन्नर लगैए। निच्चाँमे केते-शीतल केने अछि। ऐठाम बैस बीड़ी-तमाकुल कऽ लिअ, तखैन आगू बढ़ब।"

लत्ती संग अपन महत सुनि गाछक रोब समाप्त भऽ गेलइ। ओइ दिनसँ दुनू मिलि प्रेमसँ रहए लगल।



उपहास

कोनो अधलो प्रचलन माने चलैन आकि ढर्राकेँ तोड़ब अपने-आपमे कठिन कार्य होइत। जखन कखनो कियो समाज आकि परिवारमे गलत कार्यकेँ छोड़ि स्वस्थ आकि तर्कयुक्त कार्य आरम्भ करैत तँ खाली परिवारेटा मे नै समाजोमे सभ उपहास करैए। जइसँ धैर्यवान तँ स्थिर रहैत मुदा साधारण मनुख अधीर भऽ जाइत।

पहिने इंग्लैंडमे छत्ता ओढ़नाइकेँ गमाड़पन बुझल जाइ छेलइ। जइ दुआरे लोक बरखोमे भीजैत चलैत मुदा छाता नै ओढ़ैत। ऐ गलत प्रथाक विरोध करैत हेनरी जेम्स छाता ओढ़ब शुरू केलैन। सदिखन ओ छाता संगेमे रखैथ। जइसँ जेमहर होइत चलैथ व्यंग्यक बौछार हुअ लगैन। मुदा तेकर एक्को पाइ परवाह नै करैथ।

देखा-देखी लोक हुनकर अनुकरण करए लगल। किछु दिन पछातइ सभ छाता राखए लगल। जइसँ चलैन बनि गेल। चलैन एते बढ़ि गेलै जे स्त्रीगणो आ राजमहलोक सभ छाता ओढ़ए लगल।

बादमे जएह सभ व्यंग्य करैत वएह सभ हेनरी जेम्सकेँ बधाइ देमए लगलैन। बधाइ देनिहारकेँ हेनरी जेम्स कहथिन-

“जे कियो, उपहास आ व्यंग्यक विरोधसँ नै डरत, वएह छोट-सँ-पैघ धरि परिवर्तन कऽ सकैए।”

चाहे शिक्षा हो आकि खेती आकि आन-आन जिनगीक पहलू,

रुढ़िवादी पुरान प्रथाकेँ तोड़ए पड़त। जाबे ओ नै टुटत ताबे नव समाजक निर्माण कल्पना रहत। तँए किछु प्रथाकेँ तोड़ि आ किछुकेँ सुधाइर चलए पड़त। अइले सभमे साहस आनए पड़त।



महादान

अज्ञानक निवारण करब सभसँ पैघ पुण्य परमार्थ छी। जे स्वध्याय आ ज्ञानार्जनसँ होइए। उत्तराखंडमे एकटा पुरान नगरमे सुबोध नामक राजा राज्य करै छला। राजा सुबोधक निअम छेलैन जे राजक काज शुरू करैसँ पहिने, आएल याचक सभकेँ दान दइ छेलखिन। ऐ निअममे कहियो भूल नै भेलैन। एक दिन सभ याचककेँ दान दऽ देलखिन मुदा विचित्र स्थिति पैदा भऽ गेलैन। एकटा याचक ओहन आएल छल जे दान-ले तँ हाथ पसारै छल मुदा मुहसँ किछु नै बजैत। सभ हरान होइत जे हिनका की देल जानि? एतदर्थ बुधियार सबहक सलाहकार बोर्ड बनौलैन। कियो विचार दन्हि जे वस्त्र देल जाए तँ कियो अन्न देबाक सलाह देथिन। कियो सोना-चानीक विचार देथिन। मुदा समस्याक यथार्थ समाधान हेबे ने करैत। सुबोधक पत्नी उपवर्गा रहथिन। उपवर्गा कहलकैन-

“राजन, जइ आदमीक मुहसँ बोल नै निकलै ओकरा आन कोनो चीज देब उचित नहि। तँए एहेन लोककेँ मुहमे बोल देब सभसँ उत्तम हएत। अर्थात् ज्ञानदान। ज्ञानसँ मनुख अपन सभ इच्छा-आकांक्षाक पूर्ति कऽ सकैए आ दोसरोकेँ मदैत कऽ सकैए।”

उपवर्गाक विचार सभकेँ जँचलैन। ओइ आदमी-ले शिक्षा बेवस्था कएल गेल। ओइ दिन सुबोध अपन दानक सार्थकता बुझलैन।



भाग्यवाद

भाग्यवाद, शकुन, फलित ज्योतिष जकाँ अनेको प्रकरण अछि जे जनसमुदायकेँ जंजालमे ओझरा शोषणक रस्ता शोषक-ले खोलि दइए। एकटा ज्योतिषी सुख-दुख, जनम-मरणक बात कहि मनसम्फे धन जमा कऽ ताड़ी-दारू खूब पीऐ छला। एक दिन एकटा जमीनदारक ऐठाम पहुँच, हुनक हाथ देख कहलखिन जे एक बर्खक अभियनतरे अहाँक मृत्यु भऽ जाएत। ज्योतिषीक बातक बिसवास कऽ जमीनदार दिनो-दिन सोगाए लगला। जमीनदारकेँ तीनटा बेटा। तीनू पिताक आज्ञापालक। पिताकेँ सोगाइत देख मझिला बेटा पुछलकैन-

"बाबूजी, अपने दिनानुदिन किए रोगाएल जाइ छी?"

चिन्तित मोने जमीनदार उत्तर देलखिन-

"बौआ, हमर औरदा पूरि गेल। सालक भीतरे मरि जाएब।"

"ई, अहाँ केना बुझलिऐ?"

"ज्योतिषी हाथ देख कहलैन।"

मझिला बेटा ज्योतिषीकेँ बजा पुछलकैन-

"अहाँ अपने केते दिन जीब?"

हँसैत ज्योतिषी उत्तर देलखिन-

"तीस बरख।"

ज्योतिषीक बात सुनि ओ घरसँ फरुसा आनि सोझे ज्योतिषीक गरदैनपर लगा देलक। ज्योतिषीक मुड़ी धरसँ अलग भऽ गेलइ। तखन

ओ पिताकेँ कहलक-

“हिनकर उमेर तीस बरख बँचले छेलैन तखन आइ किए मरला? ई सभ ठक छी। ठकक बातमे पड़ि अहाँ अनेरे सोगाएल जाइ छी।”

जमीनदारक भ्रम टुटि गेलैन। धीरे-धीरे निरोग हुअ लगला।



सद्वृति

स्कन्द पुराणक कथा छी। एक बेर कात्यायन देवर्षि नारदसँ पुछलकैन-

“भगवान, आत्म-कल्याण-ले भिन्न-भिन्न शास्त्रमे भिन्न-भिन्न उपय आ उपचार बतौल गेल अछि। गुरुजन सेहो अपन-अपन विचारानुसार केते तरहक साधन-विधानक महात्म्य बतौने छैथ। जेना- जप, तप, तियाग, वैराग्य, योग, ज्ञान, स्वध्याय, तीर्थ, व्रत, धियान- धारण, समाधि इत्यादि अनेको रस्ता कहने छैथ। जे सभ करब असम्भवे नै असाध्यो अछि। समान्यजन तँ निर्णय नै कऽ सकैए जे ऐमे केकरा चुनल जाए? कृपा कऽ अपने एकर समाधान करियौ जे सर्वसुलभ सेहो होइ आ सुनिश्चित मार्ग सेहो होइ।”

धियानसँ नारद कात्यायनक बात सुनि कहलखिन-

“हे मुनिश्रेष्ठ, सद्ज्ञान आ भक्तिक एक्के मार्ग अछि। जे छी मनुखकेँ सत्कर्ममे प्रवृत्त करब। स्वयं संयमी बनि अपन सामर्थ्यसँ गिरल आदमीकेँ उठबए आ उठलकेँ उछालैमे नियोजित करए। सत्प्रवृत्तिये असल देवी छी। जेकरा जे जेते श्रद्धासँ सिंचैए ओ ओते विभूतिकेँ अर्जित करैए। आत्म-कल्याण आ विश्व-कल्याणक समन्वित साधना-ले परोपकार-रत् रहब श्रेष्ठ अछि। चाहे बेकती कोनो जाति आकि धर्मक किए ने होइथ।”



आश्रम नहि सोभाव बदली

एकटा युवक उद्धत सोभावक छल। बात-बातमे खिसिया कऽ आगि-अंगोड़ा भऽ जाइत। जौं कियो बुझबै-सुझबै छेलै तँ ओ घर छोड़ि संयासी बनैक धमकी दिअ लगइ। युवकसँ परिवारक सभ परेशान रहैत। एक दिन पिता खिसिया कऽ संयासी बनैले कहि देलक।

घरसँ किछुए दूर हटि संयासीक आश्रम छेलइ। जे ओकरा बुझल छेलइ। घरसँ निकैल युवक सोझे संयासीक आश्रम पहुँच गेल। आश्रमक संचालक ओइ युवकक उदण्डतासँ परिचित छला। युवककेँ आश्रममे पहुँचते, संचालक रस्तापर आनै दुआरे पुचकारि कऽ लगमे बैसा विचार पुछलखिन। ओ युवक संयासक दीक्षा लइक विचार व्यक्त केलक। दोसर दिन दीक्षा दइक आश्वासन संचालक दऽ देलखिन।

दीक्षाक विधानमे पहिल कर्म छल गोसाँइ उगैसँ पहिने समीपक धारमे नहा कऽ एनाइ। आलसी प्रवृत्ति आ जाड़सँ डरैबला युवककेँ ई आदेश खूब अरवड़लै। मुदा करैत की? निअम पालन तँ करए पड़तै।

कपड़ाकेँ देवालक खुट्टीपर टांगि युवक नहाइले गेल। जखन युवक नहाइले गेल आकि संचालक कपड़ाकेँ चिड़ी-चोंत कऽ देलकै। नहा कऽ थरथराइत युवक आएल तँ देखलक। तामसे आरो थरथराए लगल। मुदा करैत की?

दीक्षाक मुहूर्त्त संचालक सौंझुका बनौलक। ताधैर मात्र किछु फल-फलहरी खेबाक छेलइ। तँए ओइ युवक-ले नून मिलौल करैला

परोसि कऽ थारीमे देल गेलइ। एक तँ करैला ओहिना तीत दोसर छुच्छे। कण्ठसँ निच्चाँ युवककेँ उतरबे ने करए।

भोरमे उठब, जाड़मे नहाएब, फाटल-चीटल कपड़ा पहिरब आ तैपरसँ तीत करैला खेनाइ! युवक खिन्न हुअ लगल। संचालक सभ बुझैथ। युवककेँ बजा संचालक कहलखिन-

“संयासी बनब कोनो खेल नै छिऐ। ऐ दिशामे बढ़निहारकेँ डेग-डेगपर मनकेँ मारए पड़ै छइ। परिस्थितिसँ ताल-मेल बैसा, संयम बरैत, अनुशासनक पालन करए पड़ै छइ। तखन कियो संयासी बनैए।”

भरि दिन युवक अपन प्रस्तावपर सोचैत-विचारैत रहल। तेसर पहर अबैत-अबैत ओ पुनः घुमि कऽ घर आबि गेल। संयम साधना आ मनोनिग्रहक नाउँए तँ संयास छी। जे घरोपर रहि लोक पालन कऽ सकैए।

सोभाव बदलने वातावरणो बदैल जाइ छइ।



पुरुषार्थ

संसारक कुशल-क्षेम बुझैले भगवान एक दिन नारदकेँ पृथ्वीपर पठौलखिन। पृथ्वीपर आबि नारद एकटा दीन-हीन बुढ़ आदमी लग पहुँचला। ओ वेचारे -वृद्ध-आदमी- अन-वस्त्र-ले कलहन्त छल। नारद जीकेँ देखते चीन्हि गेलखिन। कनैत-कलपैत कहए लगलैन-

"अहाँ घुमि कऽ जखन भगवान लग जाएब तखन कहबैन जे हमरा सन-सन लोक-ले जीबैक जोगार करैथ।"

बुढ़क बात सुनि उदास मोने नारद आगू बढ़ला। आगू बढ़िते एकटा धनीक आदमीसँ भेँट भेलैन। ऊहो नारदकेँ चीन्हि गेलैन। ओ धनीक नारदकेँ कहलकैन-

"भगवान हमरा कोन जंजालमे फँसौने छैथ जे दिन-राति परेशान-परेशान रहै छी। कम धन दितैथ जे गुजरो चलैत आ चैनोसँ रहितौं। तँए भगवानकेँ कहबैन जे जंजाल कम कऽ दैथ।"

दुनूक बात सुनलापर नारद मने-मन सोचए लगला जे कियो धने तबाह तँ कियो निर्धने तबाह। सोचैत-विचारैत नारद आगू बढ़ला। थोड़े आगू बढ़लापर बाबाजीक झुण्ड भेटलैन। नारदकेँ देख बाबाजी घेरि कऽ कहए लगलैन-

"स्वर्गमे तोहीं सभ मौज करबह। हमरो सभले राजसी ठाठ जुटाबह नहि तँ चुट्टासँ मारि-मारि भुस्सा बना देबह।"

नारद घुमि कऽ भगवान लग पहुँचला। यात्राक वृतान्त भगवान नारदसँ पुछलकैन। तीनू घटनाक वृतान्त नारद सुना देलखिन। हँसैत

नारायण कहए लगलखिन-

“देवर्षि, हम केकरो कर्मक अनुसार किछु दइले बेबस छी। जे कर्महीन अछि ओकरा केतएसँ किछु देबै। अहाँ फेर जाउ। ओइ वृद्ध गरीबकेँ कहबै जे भाय अपन गरीबी मेटबैले संघर्ष करू। अपन पुरुषार्थकेँ जगाउ। तखन सभ किछु भेटत। दोसर ओइ धनीककेँ कहबै जे अहाँकेँ धन दोसराक उपकार करैले देलौं। से नै कऽ संग्रही बनि गेलौं तँए अहाँ धनक जंजालमे फँसि गेल छी। आ ओइ बाबाजी सभकेँ कहबै जे परमार्थीक भेष बना कोढ़ि आ स्वार्थी बनि गेल छी, तँए अहाँ सभकेँ नरक हएत।



नैष्ठिक सुधन्वा

महाभारतमे सुधन्वा आ अर्जुनक बीच लड़ाइक कथा आएल अछि। दुनू महाबलि युद्ध विद्यामे निपुन। दुनूक बीच लड़ाइ छिड़ल। धीरे-धीरे लड़ाइ जोर पकड़ैत गेलइ। लड़ाइ एहेन भयंकर रूप लऽ लेलकै जे निर्णयक दौड़ आबिए ने रहल छेलइ।

अन्तिम बाजी ऐ विचारपर अड़ल जे फैसला तीन वाणमे हुअए। या तँ एतबेमे कियो हारि जाए नहि तँ लड़ाइ बन्न कऽ दुनू हारि कबूल कऽ लिअए। जीवन-मरणक प्रश्न दुनूक सामने। कृष्ण सेहो रहथिन। कृष्ण अर्जुनकें मदैत करैत रहथिन। हाथमे जल लऽ कृष्ण संकल्प केलैन जे "गोवरधन उठौला आ ब्रजक रक्षा करैक पुण्य हम अर्जुनक वाणक संग जोड़ै छी।"

सुधन्वा संकल्प केलक-

"पत्नी धरम पालनक पुण्य अपन अस्त्रक संग जोड़ै छी।"

दुनू अस्त्र अकास मार्गसँ चलल। अकासेमे दुनू टकराएल। अर्जुनक अस्त्र कटि गेल। सुधन्वाक अस्त्र आगू बढ़ल मुदा निशान चूकि गेलइ।

दोसर अस्त्र पुनः उठल। कृष्ण अपन पुण्य अस्त्रक संग जोड़ैत कहलखिन-

"गोहिसँ हाथीक जान बँचाएब आ द्रौपदीक लाज बँचबैक पुण्य जोड़ै छी।"

अपन अस्त्रक संग जोड़ैत सुधन्वा बाजल-

“नीतिपूर्वक उपारजन आ दोषरहित चरित्रक पुण्य जोड़ै छी।”

दुनू अस्त्र अकासेमे टकराएल। सुधन्वाक वाण अर्जुनक वाणकेँ काटि धरासायी कऽ देलक। तेसर अस्त्र बाँकी रहल। ऐपर निर्णय आबि गेल। अर्जुनक वाणक संग जोड़ैत कृष्ण कहलखिन-

“बेर-बेर ऐ धरतीपर अवतार लऽ धरतीक भार उतारैक पुण्य जोड़ै छी।”

अपन वाणक संग जोड़ैत सुधन्वा कहलक-

“स्वार्थ-ले धनकेँ एक्को क्षण बिनु सोचल आ सदैत परमार्थमे लगौल पुण्य जोड़ै छी।”

दुनू वाण आकास मार्गसँ चलल। अर्जुनक वाण कटि कऽ निच्चाँ गिड़ल। दुनू पक्षमे के अधिक समर्थ, ई जानकारी देवलोकमे पहुँचल। देवलोकसँ फूलक वर्षा सुधन्वापर हुअ लगल। लड़ाइ समाप्त भेल। भगवान कृष्ण सुधन्वाक पीठि ठोकि कहलखिन-

“नरश्रेष्ठ, अहाँ साबित कऽ देलौं जे नैष्ठिक गृहस्थ साधक कोनो तपस्वीसँ कम नै होइए।”



सद्गृहस्त

एकटा गृहस्त छला। संयमसँ जीवन-यापन करै छला। परिवारकेँ सुसंस्कारी बनबैमे सदिखन लगल रहैथ। नीतिपूर्वक आजीविकासँ जिनगी बितबैथ। परिवारक काज आ खर्चसँ जे समय आ धन बँचैत रहैन ओ परमार्थमे लगबैथ। ओ गृहस्त कहियो तपोभूमि नै गेला मुदा घरेमे तपोवन बना नेने छला। देवतो प्रसन्न रहै छेलखिन।

एक दिन गृहस्तक क्रियासँ खुशी भऽ इन्द्र आबि वर मांगैले कहलखिन। गृहस्त असमंजसमे पड़ि गेला जे की मंगबैन। जखन असंतोषे नै तखन अभाबे कथीक? स्वाभिमानी गमौलाक उपरान्ते कियो केकरोसँ किछु पबैए। ई बात सोचि गृहस्त मने-मन विचारए लगला जे जइसँ ऋृणो-भार नै हुअए आ देवतो अपमान नै बुझैथ से करबाक अछि। बड़ीकाल धरि सोचैत-विचारैत गृहस्त इन्द्रसँ मंगलकैन-

"हमर छाया जेतए पड़ै ओतए कल्याणक बर्खा होइ।"

इन्द्र वरदान तँ दऽ देलखिन मुदा अचम्भित भऽ गृहस्तसँ पुछलखिन-

"हाथ रखलापर कल्याणो होइ छै आ आनंदो, प्रशंसो आ प्रत्युपकारक सम्भवनो होइ छइ। मुदा छायासँ कल्याण भेलोपर लाभसँ बंचित रहए पड़ै छइ। तखैन एहेन विचित्र वर किए मंगलौं?"

मुस्कियाइत गृहस्त कहलखिन-

"देव, सोझहाबलाक कल्याण भेने अपनामे अहंकार पनपैए।

जइसँ साधनामे बाधा उपस्थिति होइए। छाया केकरापर पड़लै, के केते लाभान्वित भेल, ई पता नै लागब जीवन-ले श्रेयस्कर छी।”

साधनाक यएह रूप पैघ होइ छइ। एहने क्रमक प्रगतिक रस्तापर चलैत-चलैत बेकती महामानव बनैए।



सद्भाव

अपन शिष्यक संग महात्मा इसा केतौ जाइत रहैथ। साँझ पड़ि गेलइ। राति बितबैले एकठाम ठहैर गेला। संगमे पाँचेटा रोटी खाइले छेलैन। रोटीक हिसाबे खेनिहार अधिक तँए सभकेँ पेट भरब कठिन छेलइ। अपनामे शिष्य सभ यएह गप-सप्प करैत रहए। इसो सुनलखिन। मुस्कियाइत इसा कहलखिन-

“सभ रोटीकेँ टुकड़ी-टुकड़ी तोड़ि एकठाम कऽ लिअ आ चारू भागसँ सभ बैस, खाउ। जइसँ सभकेँ एक रंग भोजन भेट जाएत।”

महात्मा इसाक विचार मानि, सभ सएह केलक। संतोषक जनम सबहक हृदैमे भऽ गेल। सभ कियो खेनाइ शुरू केलक। रोटी सठैत-सठैत सबहक पेटो भरि गेलइ। तखन एकटा शिष्य बाजल-

“ई गुरुदेवक चमत्कार छिऐन।”

शिष्यक बात सुनि इसा कहलखिन-

“ई अहाँ लोकैनक सद्भावक सहकार छी नै कि चमत्कार। अगर अहाँ सभ अपनामे छीना-झपटी करितौं तँ ई सम्भव नै होइतए। जैठाम सद्भावसँ परिवारक सम्बन्ध होइ छै तैठाम अहिना प्रभुक अयाचित सहयोग भेटैए।”



आलस्य वनाम पिशाच

वन विहार करैले वासुदेव, बलदेव आ सात्यकि घोड़ापर चढ़ि निकलला। घनघोर जंगल रहने तीनू गोरे रस्तामे भटैक गेला, जाइत-जाइत एहेन सघन वनमे पहुँच जाइ गेला जैठामसँ ने पाछू होएब बननि आ ने आगू बढ़ब। मुन्हारि साँझ भऽ गेल छेलइ। अन्हारमे चलब आरो कठिन भऽ गेलैन। अचताइत-पचताइत तीनू गोरे अँटैक गेला। एकटा झमटगर गाछ छेलै जहिक निच्चाँमे घोड़ा बान्हि तीनू गोरे राति बितबैक कार्यक्रम बनौलैन। खाइ-पीबैले किछु रहबे ने करैन तँए गाछेक निच्चाँमे दूबिपर सुतैक ओरियान केलैन। मुदा मनमे शंका होइत रहैन जे जौं तीनू गोरे सूति रहब आ घोड़ा कियो खोलि कऽ लऽ जाए? तीनू गोरे विचारलैन जे एक-एक पहर जागि अपनो आ घोड़ोक ओगरबाहि कऽ लेब आ बेरा-बेरी सूतियो लेब।

पहरा करैक पहिल पारी सात्यकिक भेलैन। वासुदेव आ बलदेव सूति रहला। सात्यकि जगल रहला। कनीकाल पछातइ गाछपर सँ पिशाच उतैर सात्यकिकेँ मल्लयुद्ध करैले ललकारलक। ओहने उत्तर सात्यकियो देलक। दुनूक बीच घुस्सा-घुस्सी हुअ लगल। सौंसे पहर दुनूक बीच मल्लयुद्ध चलैत रहल। सात्यकिक देहमे चोटो लगलै, छालो ओदरलै। पहर बित गेल।

दोसर पारी बलदेवक आएल। सात्यकि सूति रहल। बलदेव पहरा करए लगल। थोड़ेकाल पछातइ पिशाच पुनः आबि चुनौती देलकैन। बलदेवो ओहने उत्तर देलकै। पिशाचक आकार सेहो नमहर भऽ गेल छेलइ। दुनूक बीच मल्लयुद्ध शुरू भेल। पिशाच बलदेवोकेँ

दुरगैत कऽ देलकैन। दोसरो पहर बितल। तेसर पहरक पारी वासुदेवक छेलैन। पुनः पिशाच आबि हुनको चुनौती देलकैन। मुदा वासुदेव हँसबो करैथ आ कहबो करथिन-

"बड़ मजगर अहाँ छी। निन्न आ आलससँ बँचैले मित्र जकाँ मखौल करै छी।"

पिशाचक बल घटए लगलै। आकारो छोट होइत गेलइ। भिनसर भेल। नित्यकर्मसँ तीनू गोरे निवृत्ति भऽ चलैक तैयारी करए लगला। तखन सात्यकि आ बलदेव अपन रतुका चरचा करैत जेतए-जेतए चोट लगल रहैन सेहो देखोलखिन। हँसैत वासुदेव कहलखिन-

"ई पिशाच आरो किछु नै छी। ई मात्र कुसंस्कार रूपी क्रोध छी। ओकरो ओहने प्रत्युत्तर भेटलै तँए बढ़ैत गेल। मुदा जखैन ओकरा उपेक्षाक रूपमे देखलिऐ तखैन ओ छोट आ दुर्बल भऽ गेल।"



स्वर्ग आ नर्क

विद्यालयक ओसारपर बैस गुरु आ शिष्य गप-सप्प करैत रहैथ। एकटा शिष्य गुरुसँ स्वर्ग आ नर्कक सम्बन्धमे पुछलकैन। शिष्यकेँ बुझबैत गुरु बजला-

“स्वर्ग आ नर्क अही धरतीपर अछि। जे कर्मक अनुसार अही जिनगीमे भेटै छइ।”

गुरुक उत्तरसँ शिष्य सन्तुष्ट नै भेल। शंका बनले रहलै। पुनः गुरुसँ अपन शंका व्यक्त केलक। गुरु बुझलैन जे बिना बेवहारिक जिनगी देखौने शिष्य सन्तुष्ट नै हएत। ओ उठि शिष्य सभकेँ संग केने गाम दिस विदा भेला।

गाममे एकटा बहेलियाक घर छेलइ। ओइठाम पहुँचते सभ देखलक जे पेट-पोसैले बहेलिया जीव-हत्या कऽ रहल अछि। तेतबे नहि, जीव हत्यो केने ने देहपर वस्त्र छै आ ने भरि पेट भोजन भेटै छइ। धियो-पुतोक देहपर माछी भिनकै छइ। एक्को क्षण ओतए रहैक इच्छा केकरो नै होइ छेलइ। चुपचाप गुरुजी शिष्यक संग ओतएसँ विदा भऽ गेला। दोसर ठाम पहुँचला। ओ बेश्याक घर छेलइ। युवावस्थामे ओ बेश्या खूब पाइयो कमेने छेली आ भोगो केने छेली। मुदा बुढ़ाड़ीमे आबि अनेको रोगसँ ग्रसित भऽ परिवारो-समाजोसँ तिरस्कृत भेल छेली। पेटक दुआरे भीख मंगै छेली। सभ कियो देख ओतएसँ विदा भऽ गेला।

तेसर परिवार गृहस्तक छल। जैठाम जा सभ देखलखिन जे

गृहस्त जेहने संयमी छैथ तेहने परिश्रमी। सोभावसँ उदार आ सद्गुणी सेहो छैथ। जइसँ परिवार सुख-समृद्धिसँ भरल-पूरल छेलइ। गृहस्तक परिवार देख गुरुजी शिष्यक संग आगू बढ़ि चारिम परिवारमे पहुँचला। पोखैरक मोहारपर एकटा संत कुटी बनौने रहैथ। शिक्षा आ प्रेरणा पबैले दिन-राति समाजक लोक अबैत-जाइत रहै छल। संतजी मस्त-मौला जिनगी बितबैत रहैथ। ने मनमे एक्को मिसिया क्रोध आ ने कोनो तरहक चिन्ता।

चारू परिवार देख शिष्यक संग गुरुजी विद्यालय दिस चलला। रस्तामे शिष्यकेँ कहलखिन-

“पहिल जे दुनू परिवार देखलिऐ ओ नरकक रूपमे छल आ बादक जे दुनू परिवार देखलिऐ ओ स्वर्गक रूपमे।



यथार्थक बोध

शिखिध्वज ब्रह्मज्ञानी बनए चाहैत रहैथ। ओ सुनने रहथिन जे तियाग आ वैराग्यसँ मनुख ब्रह्मज्ञानी बनैए। तँए शिखिध्वज घर-परिवार छोड़ि जंगलमे कुटी बना रहए लगला। ओइ वनमे तपस्वी शतमन्यु सेहो रहै छेलखिन। शतमन्युकेँ पता लगलैन जे एकटा नवांकुर घर-परिवार छोड़ि कुटी बना रहैए।

शतमन्यु आबि शिखिध्वजकेँ कहलखिन-

“गामक घर-गिरहस्ती उजारि वनमे वएह सभ सरंजाम जुटबैमे लागि गेलौं, तइसँ की लाभ? वैराग्य तँ अहंता आ लिप्सासँ हेबाक चाही। जौं भऽ सकए तँ घरेमे तपोवन बना सकै छी।”

शतमन्युक विचार सुनि शिखिध्वजकेँ वास्तविकताक बोध भऽ गेलैन। ओ घुमि कऽ घर आबि परिवारक बीच रहि सेवा-साधनामे जुटि गेला। शिखिध्वज एकाकी मुक्तिक जगह सामूहिक मुक्तिक मार्ग अपनौलैन। हुनके वंशमे बाल्यखिल्य ऋृषि भेला जे सौंसे जम्बूद्वीपकेँ देवभूमि बना देलखिन।



विद्वताक मद

एक दिन महाकवि माघ राजा भोजक संग वन-विहार कऽ घुमल अबैत रहैथ। रस्तामे एकटा झोपड़ी देखलखिन। ओइ झोपड़ीमे एकटा वृद्धा टोकरी माने तकली कटैत रहैथ। ओइ वृद्धासँ माघ पुछलखिन-

"ई रस्ता केतए जाइत अछि?"

वृद्धा माघकेँ चीन्हि गेली। ओ हँसैत उत्तर देलखिन-

"वत्स, रस्ता तँ केतौ नै जाइत अछि। जाइत अछि ओइपर चलैबला राही। अहाँ सभ के छी?"

माघ कहलखिन-

"हम सभ यात्री छी।"

मुस्कियाइत वृद्धा बजली-

"तात्, यात्री तँ सुरूज आ चान दुइए टा छैथ। जे दिन-राति चलैत रहै छैथ। सच-सच कहू जे अहाँ के छी?"

थोड़े चिन्तित होइत माघ कहलखिन-

"माँ, हम क्षणभंगुर आदमी छी।"

थोड़े गम्भीर होइत पुनः वृद्धा कहलकैन-

"बेटा, यौवन आ धनेटा क्षणभंगुर होइए। पुराण कहैए जे ऐ दुनूक बिसवास नै करी।"

माघक चिन्ता आरो बढ़लैन। रोषमे कहलखिन-

“हम राजा छी।”

हुनका मनमे एलैन जे राजाक नाओं लेलासँ ओ सहैम जेती। मुदा ओ वृद्धा निर्भीक भऽ उत्तर देलकैन-

“नै भाय, अहाँ राजा केना भऽ सकै छी? शास्त्र तँ दुइए टा राजा- यम आ इन्द्र मानने अछि।”



अनन्त

"हरि अनन्त हरि कथा अनंता" –-तुलसी

एक दिन भगवान वुद्ध आनन्दक संग एकटा सघन वनसँ गुजरैत रहैथ। रस्तामे दुनू गोरेक बीच ज्ञानक चर्च चलै छल। आनन्द पुछलखिन-

"देव, अपने तँ ज्ञानक भण्डार छिऐ। अपने जे जनै छी ओ हमरा बुझा देलौं?"

आनन्दक बात सुनि उलैट कऽ वुद्धदेव पुछलखिन-

"ऐ जंगलक जमीनपर केते सुखल पात पड़ल छै, जइ गाछक निच्चाँमे ठाढ़ छी ओइ गाछमे केते सुखल पात लगल छइ? आ अपना सबहक पएरक निच्चाँ केते पड़ल अछि। सभटा मिला कऽ केते हएत?"

वुद्धदेवक प्रश्नसँ आनन्द निरुत्तर भऽ गेला। आनन्दकेँ उत्तर नै दैत देख तथागत कहलखिन-

"ज्ञानक विस्तार ओते अछि जेते ऐ वन प्रदेशमे सुखल पातक परिवार। अखैन धरि हमहूँ एतबे बुझलौं हेन जे जेते वृक्षक ऊपर सुखल पात अछि। मुदा पएरक निच्चाँ जे अछि ओ हमहूँ ने बुझै छी।"



हँसैत लहास

जिनगीकेँ जिनगी बुझि मनुखकेँ जीबाक चाही। जौं से नै भेल तँ जिनगीक कोनो महत तँ नै रहि जाइत। जे कियो जिनगीकेँ कमेनाइ-खेनाइ धरि रखैत, ओकर संस्कार मरलोपर ओहिना रहि जाइत। एक दिन दूटा शव एक्के बेर असमसान पहुँचल। कठिआरीक लोक डाहैक ओरियान करए लगल। एकटा शव दोसरकेँ देख ठहाका मारि हँसए लगल। हँसैत शवकेँ देख दोसर शव पुछलक- “बन्धु, एहेन कोन बात भऽ गेल जे अहाँ हँसि रहल छी। मुदा दुनू गोरे एक्के स्थितिमे छी?”

हँसैत शव उत्तर देलक- “बन्धु, अहाँकेँ मन अछि कि नै मुदा हमरा तँ मन अछि। दुनू गोरे संगे गामक स्कूलमे पढ़ने रही। पढ़ला पछातइ अहाँ वणिक वृत्तिमे लगि दिन-राति पाइएक हिसाबो आ भोग-विलासमे लगि गेलौं। आब अहाँक ओहन स्थिति भऽ गेल अछि जे असमसानो घाटपर पाइएक हिसाब आ भोगे-विलासक गर लगबै छी।”

“और अहाँ?” -दोसर पुछलक।

“जाधैर जीबै छेलौं मस्तीमे रहलौं। ने कहियो बेसी पाइक खगता भेल आ ने तइले मनमे चिन्ता। जहिना चिन्ता मुक्त पहिने छेलौं तहिना अखैन छी। अच्छा आब अहूँ जाउ आ हमहूँ जाइ छी। अछिया तैयार भऽ गेल। नमस्कार।” -कहि पहिल शव चीता दिस बढ़ि गेल आ दोसर कनगुरिया ओंगरीपर हिसाब जोड़ए लगल।



अनगढ़ चेतना

ज्ञान अनगढ़ चित्तकेँ सुगढ़ बनबैए। जइसँ सोचै आ चलैक दिशा निर्धारित होइए। ओना मनुखक अनगढ़ताक प्राप्ति जन्मजात होइ छइ। जहिना शरीरक रक्षा-ले भोजनक प्रयोजन होइत अछि तहिना मनुखता प्राप्त करैले विद्याक। वशिष्ठजी रामकेँ भयंकर वनमे विचरण करैबला उनमत्तक आँखिक देखल कथा सुनबैत कहलखिन-

"उनमत्त देखैमे तँ स्वस्थ बुझि पड़ैत मुदा ओकर जे क्रिया-कलाप होइत ओ विल्कुल पागल सदृश होइत। सदिखन रस्ताक व्यतिक्रम करैत। जहाँ-तहाँ बौआएलो घुमैत आ अन्ट-सन्ट रस्ता सेहो बनबैत। जइसँ अपनो देह-हाथक नोकसान करैत आ काँट-कुशमे ओझराइलो रहैत। मुदा तैयो अपनाकेँ बुधियार बुझि दोसराक नीको विचारकेँ मोजर नै दइत। जइसँ सदिखन डर आ चिन्तासँ मन त्रस्त रहैत। मुदा तैयो ने अधला रस्ता छोड़ैत आ ने केकरो नीक करैत।"

वशिष्ठक विचार सुनि राम पुछलखिन-

"भगवन, ओ उन्मादी केतए रहैए, ओकर नाओं की छिऐ आ ओकर कोनो उपचार छै की नहि?"

वशिष्ठ- "वत्स, ओ कियो आन नहि, मनुखक अनगढ़ चेतना छी। जे जालमे फँसल ओइ चिड़ै सदृश अछि जे मरैक रस्ता देख फड़फड़ाइत तँ अछि मुदा निकलैक रस्ते ने देखैत।"



सत्य विद्या

विद्याध्ययन साधना छी। जइसँ अन्तः क्षेत्र शुद्ध आ पुरुषार्थक जनम होइत। जेकरा संपादित केने बिना मानव जीवनक सभ उपलब्धि व्यर्थ।

जिनगी भरि भरद्वाज मुनि तपस्या करैत रहला। जखन मरैक बेर एलैन तँ देवदूत लेमए एलैन। देवदूतकेँ भारद्वाज मुनि कहलखिन-

“हमरा अही लोकमे फेर जनमए देल जाउ। स्वर्ग जा कऽ की करब?”

मुनिक बात सुनि, आश्चर्जित होइत देवदूत पुछलकैन-

“तपक लक्ष्य तँ स्वर्ग प्राप्त करब होइए।”

भारद्वाज कहलखिन-

“ज्ञान संचय आ पूर्ण सत्य तक पहुँचैले अखन हमर ज्ञान-सम्पदा बहुत कम अछि। तँए, ओते जनम धरि तपस्या करए चाहै छी जाधैर सत्यकेँ लगसँ नै देख सकिऐ।”

स्वर्गसँ ज्ञान बहुत पैघ होइए। स्वर्गसँ सुविधा भेटै छै मुदा ज्ञानसँ आनन्द।



समता

गुरुकुलमे जे विद्याध्ययन होइत ओ अमृत सदृश होइत। किएक तँ ओ साधनाक नै उच्च स्तरीय आदर्शक निर्माण करैत। ऐ हेतु गुरुकुलक छात्र उपभोगकेँ नै उपयोगक महत सत्-प्रयोजन-ले अपन ऐगला माने भावी दिशाधाराकेँ निर्धारित करैए। एक दिन सम्पन्न घरसँ आएल छात्र गुरुकुल संचालक आत्रेयसँ पुछलकैन-

“भगवन, जे कियो अपना घरसँ नीक भोजन आ नीक वस्त्र मंगा सकै छैथ ओ ओकर उपयोग किए ने कऽ सकै छैथ? ऊहो किए निर्धने परिवारक छात्र जकाँ जीवन-यापन करत?”

गम्भीर मुद्रामे आत्रेय कहलखिन- “छात्र, श्रेष्ठ माने उत्तम मनुख जइ समाजमे रहै छैथ ओ ओइ समाजक अनुकूल जीवन-यापन करै छैथ। यएह समता अपनो आ दोसरो लेले सौजन्य उत्पन्न करैए। सम्पन्नताक प्रदर्शन इर्ष्या आ अहंकारकेँ उत्पन्न करैए। जइसँ विग्रहक जनम होइए। जे सहयोगक नींवकेँ दोमि दइए। विषमतेसँ समाजमे अनेको विग्रह ठाढ़ होइत अछि। अपराध बढ़ैए, जइसँ अनाचारक जनम सेहो होइत अछि। ऐठाम माने गुरुकुलमे समान जीवन जीबैक रस्ता सिखौल जाइत अछि। धनिक अपन धन गरीबकेँ उठबैमे लगबए नै कि निजी सुविधा-सम्वर्द्धनमे।”

समताक दूरगामी सत्-परिणामकेँ छात्र बुझि अधिक उपयोगक विचारकेँ बदैल लेलक।



जेते चोट तेते सक्कत

कोशाम्बीक राजा शूरसेनसँ मंत्री भद्रक पुछलकैन-

“राजन, अपने श्रीमन्त छी। राकुमारक शिक्षा-ले एकसँ एक विद्वान् रखि सकै छिऐ। तहन अपने ऐ पुष्प सन बच्चाकेँ वन्य प्रदेशमे बनल गुरुकुलमे किए पठबै छिऐन? जैठाम सुविधाक घोर अभाव छइ। एहेन कष्टमय जीवनचार्यामे बच्चाकेँ पठाएब उचित नहि?”

मंत्रीक विचार सुनि मुस्कियाइत शूरसेन उत्तर देलखिन-

“हे भद्रक, जहिना आगिमे तपौलासँ सोना चमकै छै तहिना कष्टपूर्ण जीवनचर्यासँ मनुख बनैए। कष्टे मनुखकेँ धैर्य, साहस आ अनुभव दइ छइ।

वातावरणक प्रभाव सभसँ बेसी नव उमेरक बच्चेपर पड़ैए। ऋृषि सम्पर्क आ कष्टमय जिनगी राजमहलमे थोड़े भेट सकैए। ऐठाम तँ हम ओकरा भोगीए-विलासी बना सकै छी। जौं क्षणिक मोहमे पड़ब तँ ओकर भविष्ये चौपट्ट भऽ जेतइ। तँए ओकर उज्ज्वल भविस-ले गुरुकुल पठाएब उचित अछि।”



परिष्कार

गुरुकुलमे विद्याध्ययन सभ जाति, सभ वर्ण आ सभ समुदाय-ले हितकारी अछि। अगर जौं किनको अपन पैतृक बेवसाय करबाक होनि, तिनको पैघ उपलब्धि-ले संस्कारक शिक्षाक ग्रहन अत्यन्त अनिवार्य अछि।

एक गाममे क्षत्रिय आ वैश्य रहै छल। ब्राह्मणक बालक तँ गुरुकुल पढ़ैले चलि गेला। दुनूक -क्षत्रीओ आ वैश्योक- मनमे छल जे हम योद्धा बनब तँ हम वणिक। अनेरे विद्याध्ययनमे समय किए लगाएब। मुदा जखन कनी असथिर भऽ सोचलक तँ अपनापर शंका जरूर भेलइ। मनमे खुट-खुटी एलइ। मने-मन सोचलक जे से नहि तँ कुल पुरोहितसँ किए ने पुछि लिऐन। दुनू जा कऽ पुरोहितसँ पुछलकैन। कुल पुरोहित उत्तर देलखिन-

“ब्रह्मविद्याक तात्पर्य संयासी बनि भीख मांगब नै होइत। ओ जीवनक अन्तिम भागमे अधिकारी बेकती द्वारा ग्रहण कएल जाइ छइ। ब्रह्मविद्याक प्रयोजन गुण, कर्म, सोभावकेँ परिष्कार करब होइ छइ। जे सभ स्तरक प्रगैत-ले आवश्यक अछि। क्षत्रिय आ वैश्य जौं ओइ विद्याकेँ ग्रहण करत तँ अपन-अपन जिनगीक कार्यक्षेत्रमे अधिक सफल आ सुन्नर ढंगसँ सम्पादन करत।”

प्राचीनकालमे गुरुकुलमे, कठिनसँ कठिन कार्यक भार छात्रकेँ देल जाइ छल। जइसँ भारीसँ भारी काज करबाक अभ्यास बनै छेलइ। कुल पुरोहितक परामर्श मानि ऊहो दुनू -क्षत्रिय और वैश्य-

अपन-अपन बालककेँ गुरुकुल भेजब शुरू केलक।

गुरुकुलसँ अध्ययन कऽ लौटलापर अपन काजकेँ, बिनु अध्ययन केलहाक तुलनामे अधिक सफल भेल।



कथनी नै करनी

एकटा लोहार तीर बनबैक विद्यामे निपुन छल। तीरो अद्भुत बनबै छल।

तीर बनबैक कलाकेँ सीखैले दोसर लोहार आबि पुछलक-

“भाय, तोँ केना वाण बनबै छह, से हमरो कहह।”

पहिल लोहार जवाब देलकै-

“भाय, कहलेटा सँ सभ लूरि नै होइ छइ। तँए हम वाण बनबै छी, तूँ धियानसँ देखह।”

सुनि दोसर लोहार लगमे बैस देखए लगल। तखने एकटा बरियाती बगलक रस्तासँ गुजरै छल। बरियातियो खूब झमटगर। दर्जनो गाड़ी, रंग-बिरंगक बजाक संग सजाबटो सुन्नर रहए। दोसर लोहार, तीर बनौनाइ देखब छोड़ि, बरियाती देखए लगल।

जखन बरियाती आँखिक अढ़ भऽ गेल, तखन ओ लोहार बाजल-

“बड़ सुन्नर बरियाती छेलइ।”

तीर बनबैबला लोहार कहलक-

“भाय, हमरा ने तखैन देखैक फुरसत छल आ ने अखैन तोहर बात सुनैक अछि। जाधैर कोनो काजकेँ तत्परतासँ नै कएल जाएत ताधैर काजक सफलताक कोन आश। तँए, जे काज तत्परता आ एकाग्रतासँ कएल जाएत, वएह काज सफल हएत।”

अपसोच करैत दोसर लोहार सोचए लगल जे एकाग्रताक अभ्यास करब सभसँ जरूरी अछि। जौं से नै करब तँ जीवनमे कहियो कोनो काजमे सफल नै हएब।

ज्ञानक सूत्र केतौसँ भेटए ओकर अंगीकार जरूर करक चाही।



शालीनता

विद्या बेकतीकेँ विनम्र बनबैए। ओकर अन्तरंगक स्तरकेँ ऊपर उठबैए। शिक्षा केतौ भेट सकैए मुदा विद्याक सूत्र केतौ-केतौ भेटैए। जइ बेकतीकेँ विद्याक सूत्र भेट जाइत ओइ बेकतीक काया-कल्प भऽ जाइत। छान्दोग्य उपनिषदक छअम प्रपाठमे उद्दालक आ श्वेतकेतुक संवाद अछि। विद्यालयक परीक्षा पास कऽ श्वेतकेतु आएल। मुदा ने ओकर आत्म परिष्कृत भेल आ ने उदण्डता कमल। जइसँ श्वेतकेतुक पिता उद्दालककेँ दुख भेलैन। खिसिया कऽ कहलखिन-

“अगर बेकतीत्वमे शालीनताक समावेश नै भेल तँ अनेरे कियो किए पढ़ैमे समय नष्ट करत?”

महसूस करैत श्वेतकेतु कहलकैन-

“अगर ई रहस्य जौं हमर शिक्षक जनितैथ तँ जिनगी भरि शिक्षके किए रहितैथ वा तँ ऋृषि बनैबतैथ वा द्रष्टा।”

श्वेतकेतुक विचार सुनि पिता मने-मन सोचए लगला जे पुत्रक प्रति पितोक दायित्व होइत। एकटा गुल्लरिक फड़ आनि उद्दालक फोड़लैन। गुल्लरिक भीतरमे छोट-छोट अनेको बीआ छेलइ। ओइ बीआकेँ देखबैत कहलखिन-

“ऐ नान्हि-नान्हिटा बीआक भीतर विशाल वृक्ष छिपल अछि। तहिना जेकरा आत्म-ज्ञान भऽ जाइ छै ओ वृक्षे सद्दश विकासो करैए आ फड़बो-फुलेबो करै अछि। तहूँ ओइ तत्वकेँ चिन्हऽ।”



मजूरी

एक दिन गाड़ीक प्रतीक्षामे लियो टाल्सताय स्टेशनपर ठाढ़ रहैथ। एकटा अमीर परिवारक महिला, साधारण आदमी बुझि हुनका कहलकैन-

“हमर पति सामनेबला होटलमे छैथ। अहाँ जा कऽ हुनका ई चिट्ठी दऽ अबयौन। ऐ काज-ले दू आना पाइ देब।”

चिट्ठी नेने टाल्सताय होटल जा दऽ देलखिन। घुमि कऽ आबि अपन कमेलहा दू आना पाइयो लऽ लेलैन। कनीकाल पछातइ एकटा अमीर आदमी आबि, प्रणाम कऽ टाल्सतायसँ गप-सप्प करए लगल। ओ आदमी हुनकासँ नम्रतापूर्वक गप्प करैत। गप-सप्पक क्रममे ओ आदमी टाल्सतायकेँ आदर सूचक शब्द “काउंट” सँ सम्बोधित करैत रहैन। बगलमे बैसल ओ महिला सभ किछु देखैत-सुनैत। ओ महिला एक गोरेकेँ पुछलक-

“ई के छैथ?”

ओ आदमी लियो टाल्सतायक नाओं कहलखिन। टाल्सताइक नाओं सुनि ओ महिला, टाल्सताय लग आबि क्षमा मांगि अपन दुनू आना पाइ घुमा दइले कहलकैन। हँसैत टाल्सताय उत्तर देलखिन-

“बहिनजी, ई हमर मजूरीक पाइ छी। एकरा हम किन्नहु नै घुमाएब।”



जीवन यात्रा

गंगोत्रीसँ गंगाजल धरतीसँ बाहर निकैल चलि पड़ल। पहाड़सँ निच्चाँ आरो निच्चाँ होइत मैदानमे पहुँचल। एक गोरे ऐ प्रक्रियाकेँ गम्भीरतासँ देख रहल छल। आगू मुहेँ जल बढ़ैत गेल, बढ़ैत गेल। जइमे अनेको जल-नद आबि-आबि मिलैत गेल। जइसँ एक विशाल नदी बनि गेल।

ओ नदी जाइत-जाइत समुद्रमे मिलि गेल। जे बेकती देख रहल छेलइ। ओइ बेकतीक मनमे भेलै जे जलक ई मुरुखपाना छी। किएक तँ जे हिमालयक उच्च शिखर छोड़ि, अनेक प्रकारक दुख उठा, नोनगर पानिमे मिलल। एकरा मुरुखपाना नै कहबै तँ की कहबै? ओइ बेकतीक मनःस्थितिकेँ नदी बुझि गेल। कहलक-

“अहाँ हमर यात्राक मर्म नै बुझि सकलौं। केतबो ऊँच हिमालय किए ने हुअ मुदा ओ अपूर्ण अछि। पूर्णता तँ गहराइमे होइ छै, जैठाम पहुँचलापर मनक सभ कामना समाप्त भऽ जाइ छइ। हम हिमालय सन महान ऊँचाइक आत्मा छी जे पूर्णता पबैले निरन्तर चलैत समुद्रक गहराइमे पहुँचलौं तँए, हमरा बेहद खुशी अछि, अप्पन लक्ष्य धरि पहुँच गेलौं।”



ज्योति

जनक और याज्ञवल्क्यक बीच ज्ञानक चरचा चलै छल। जनक पुछलखिन-

"सुर्यास्त भेलापर -सुरूज डुमलापर- अन्हारक सघन वनमे रस्ता केना ताकल जाए?"

जनकक प्रश्न सुनि मुस्कियाइत याज्ञवल्क्य उत्तर देलखिन-

"तरेगन रस्ता बता सकैत।"

याज्ञवल्क्यक उत्तरसँ असन्तुष्ट होइत जनक पुछलखिन-

"अगर मेघौन होइ? संगे दीपकक प्रकाश सेहो नै उपलब्ध होइ, तखैन?"

जनकक प्रश्नक गम्भीरताकेँ बुझैत याज्ञवल्क्य कहलखिन-

"अपना सुझि-बुझिक सहारा लेबाक चाही।"

विवेकक प्रकाश हर मनुखमे होइ छइ। जे कहियो नै मुझाइत। ओइ सूतल विवेककेँ जगाएबे ऋृषि समुदायिक पवित्र कर्तव्य छी।



पवनक विवेक

चन्द्रमाकेँ दू सन्तान- एक बेटा आ एक बेटी। बेटाक नाओं पवन आ बेटीक आँधी। एक दिन आँधीक मनमे उपकल जे पिता संसारिक पिता जकाँ हमरो दुनू भाए-बहिनमे भेद करै छैथ। आँधीक बेथाकेँ चन्द्रमा बुझि गेलखिन। बेटीक आत्मनिरीक्षण-ले चन्द्रमा एकटा अवसर देबाक विचार केलैन।

दुनू भाए-बहिनकेँ बजा पुछलखिन-

“बाउ, अहाँ सभ स्वर्गक इन्द्रक काननक परिजात नामक देववृक्षकेँ देखने छी?”

दुनू भाए-बहिन कहलखिन-

“हँ।”

पिता-

“अहाँ दुनू ओतए जाउ आ सात खेप ओकर परिक्रमा कए कऽ आउ।”

पिताक आज्ञा मानि दुनू गोरे चलि देलक। आँधी हू-हू-आ कऽ दौगल। जइसँ गरदा, खढ़-पात आ कूड़ा-कड़कट उड़बैत लगले पहुँच आ सात बेर परिक्रमा कऽ चोट्टे घुमि कऽ आबि गेल। मने-मन आँधी सोचैत जे हम्मर काज देख पिता प्रशंसा करता।

पवन पाछू घुमि कऽ आएल। ओकरा संग सौंधी-सुगन्ध सेहो आएल। जइसँ सौंसे घर गमैक उठल।

मुस्कियाइत चन्द्रमा बेटीकेँ कहलखिन-

“बेटी, अहाँ नीक जकाँ बुझि गेल हेबै जे जे अधिक तेज गतिसँ चलत ओ खाली झोरा लऽ कऽ औत मुदा जे सोबहाविक गतिसँ चलत ओ मनकेँ मुग्ध करैबला सुगन्ध सेहो लौत। जइसँ सौंसे वातावरण सुगन्धित होएत।

वानप्रस्थक यात्रा पवन देव सदृश उदेसपूर्ण होइत।



आत्मबल-2

जइ समैमे डाक्टर राधाकृष्णन कौलेजमे पढ़ैत रहैथ, घटना ओइ समैक छी। कौलेजमे पादरी शिक्षक अधिक रहथिन।

एक दिन एकटा प्रोफेसर, किलासेमे हिन्दू धर्मक निन्दा खुलेआम केलैन। बालक राधाकृष्णन सेहो किलासमे छला। प्रोफेसरक बातसँ हुनका एते क्रोध भेलैन जे सम्हारि नै सकला। उठि कऽ ठाढ़ होइत पुछलखिन-

“महाशय, की इसाई धरम आन धर्मक निन्दा केनाइ सिखबैए?

राधाकृष्णनक प्रश्न सुनि ओ तमसा कऽ बजला-

“और की हिन्दुधर्म दोसराक प्रशंसा करैए?”

राधाकृष्णन जवाब देलखिन-

“हँ, हम्मर धरम कोनो धर्मक अधला नै करैए। गीतामे कृष्ण कहने छथिन ‘कोनो देवताकेँ उपासना केलासँ हमरे उपासना होइत अछि।’ आब अहीं कहू जे हम्मर धरम केकर निन्दा करैए?”

प्रोफेसर निरुत्तर भऽ गेला।



खुदीराम बोस

स्वतंत्रता संग्रामक प्रखर सिपाही खुदीराम बोसकेँ मुजफ्फरपुर जेलमे फाँसी भेलैन। जइ समय फाँसी भेल रहैन ओइ समय खुदीरामक वएस मात्र अठारह बरख आठ मासक रहैन। ओना हुनकर जनम बंगालमे भेल छेलैन मुदा ओ अपनाकेँ भारत माताक बेटा बुझै छला। हुनकापर अंग्रेज किंग फोर्डक हत्याक आरोप लगौल गेल छेलैन। ओ जेहने कर्मठ तेहने हँसमुख छला। फाँसीसँ किछु समय पहिने जेलर उदार पूर्वक आम आनि खाइले दैत कहलकैन-

"चुपचाप खा लिअ। कियो बुझए नहि।"

खुदीराम आम रखि लेलैन। साँझू पहर जखन दोहरा कऽ जेलर आबि पुछलकैन तँ ओ जवाब देलखिन-

"जखैन आइ फाँसीए होइबला अछि, तँ डरसँ किछु खाइ-पीबैक मन नै होइए। अहाँक आम ओहिना कोनमे राखल अछि।"

आमक गुद्दा खा कऽ बोस खोंइचाक खपलोइयामे मुहसँ हवा भरि ओहिना रखि देने रहथिन। कोनमे पहुँच जखन जेलर आम उठौलक तँ पचकि गेलइ। जैपर जेलर भभा कऽ हँसल। जेलरक हँसी देख खुदीरामो खूब जोरसँ ठहाका मारि हँसला।

मृत्युक एक्को पाइ डर हुनका नै छेलैन।

खुदीरामक फाँसीक चरचा, लोकमान्य तिलक अपन पत्रिका "केशरी"मे "देशक दुर्भाग्य" शीर्षक नाओंसँ लेख लिखलैन। जैपर तिलककेँ छह मासक कारावास भेलैन।❍

शिष्यकेँ शिक्षेटा नै परीक्षो

गुरुकुलमे ई अनिवार्य नै जे नीक -आलीशान- मकानक बन्द कोठरीए-टामे शिक्षा देल जाए। अनिवार्य ई जे छात्रक मनःस्थितिक अनुरूप प्राकृतिक पाठशालामे बेवहारिक शिक्षा भेटइ। जइसँ बेकतीत्वमे प्रखरताक समावेश-सम्वर्धन भऽ सकए।

महर्षि जरत्कारुक गुरुकुलमे छात्र विद्रुध प्रवेश पौलक। किछुए दिन पछातइ विद्रुधक प्रतिभासँ गुरु जरत्कारु प्रभावित होइत कहलखिन-

“बाउ, पौरुषक -पुरुषत्व- परीक्षामे उतीर्ण भेलेपर कियो बरिष्ठ -महान- बनि सकैए। अहाँ पराक्रमक संग-संग पोथीओ पढ़ू।”

महर्षिक परामर्शसँ सहमत होइत विद्रुध कहलकैन-

“अपनेक जे आदेश हुअए, तैयार छी।”

विद्रुध कऽ एक साए गाए प्रभुदारण्यमे चरबैक आदेश दैत कहलखिन-

“जखैन हजार गाए भऽ जाए तखैन घुमि कऽ आएब।”

पोथी सभ सेहो लऽ लेलक। साए गाएकेँ हजार गाए बनबैमे विद्रुधकेँ बारह बरख समय लगल। बच्चो सभ पुष्ट। किएक तँ कोनो बच्चाकेँ दूध पीबैमे कोताही नै करैत। ऐ बारह बर्खक बीच विद्रुध अनेको साधक, विद्वानसँ सम्पर्क बना सीखबो केलक आ रस्ताक बाधासँ सेहो निपटल। जइसँ ओकर प्रतिभामे आरो चारि चान लगि गेलै घुमि कऽ एलापर चेहरासँ ब्रह्मतेज टपकैत। किएक तँ अपन

बुधिक प्रयोगसँ पढ़बो केलक आ बुझबो आ सीखबो केलक।

विद्रुधक मेहनैत आ साहस देख जरत्कारु हृदैसँ आनन्दित होइत अपन आश्रमक भार दऽ नमहर काज करए अपने चलि गेला।



लौह पुरुष

ई घटना 1946 इस्वीक छी। बम्बइ बन्दरगाहमे नौ-सैनिक विद्रोह केलक। अंग्रेज शासक ओकरा -नौ-सैनिककेँ- गोलीसँ भुजि देबाक धमकी देलक। जेकरा जवाबमे भारतक नौ-सेना माटिमे मिला देब कहलक। स्थिति भयानक बनि गेल। पाछू हटैले कियो तैयार नहि। ओइ समय सरदार वल्लभ भाय पटेलक हाथमे बम्बइक नेतृत्व छेलैन। जिनकापर सभ टकटकी लगौने। मुदा सरदार पटेलक मनमे एक्को मिसिया घबड़ाहट नहि। बम्बइक गवर्नर बजा कऽ मारे अन्ट-सन्ट कहलकैन। गवर्नरक बात सुनि, शेरक बोली सद्दश गरजि कऽ सरदार पटेल उत्तर देलखिन-

“ओ -गवर्नर- अपना सरकारसँ पुछि लिअ जे अंग्रेज भारतसँ मित्र जकाँ विदा हएत आकि लाश बनि।”

अंगेरज गवर्नर सरदार पटेलक जवाबसँ ठर्रा गेल। आखिरकार ओकरा समझौता करए पड़ल। वएह सरदार पटेल स्वतंत्र भारतक पहिल गृहमंत्री बनला।

कोनो आदमीमे साहस ओहिना नै बनैत। पुरुषार्थक बलपर विकसित होइत।



जंग लगल

एक बेर भगवान वुद्धक समक्ष श्रेष्ठ पुत्र सुमन्त आ श्रमिक पुत्र तरुण संगे प्रब्रज्या लेलक। दुनू गोरे भावनापूर्वक संघारामक अनुशासनक पालन करए लगल। किछु मासक प्रगैतक जानकारी दैत प्रधान भिक्षु (संघाराम) कहलकैन-

“तरुणक अपेक्षा सुमन्त अघिक स्वस्थ आ पढ़ल-लिखल अछि। भावनो प्रवल छइ। मुदा सौंपल गेल काज आ साधनोक उपलब्धि तरुणमे सुमन्तक अपेक्षा अधिक अछि। जेकर कारण बुझिमे नै अबैए।”

संधारामक विचार सुनि तथागत -वुद्ध- कहलखिन-

“अखैन सुमन्त जंग लगल लोहाक औजार सदृश अछि। जंग छुटैमे किछु समय लागत।”

तथागतक बात संघाराम नीक-नाहाँति नै बुझि सकल। तँए प्रश्न वाचक नजैर-सँ-नजैर मिला टकर-टकर मुँह दिस तकैत रहलैन।

स्पष्ट करैत वुद्ध कहलखिन-

“सुमन्तक अधिक समय आलस्य आ प्रमादमे बितल अछि। जइसँ बेकतीत्व, जंग लगल औजार सदृश भऽ गेल अछि। मुदा तरुण एहेन उपकरण अछि जेकरामे जंग छुबो ने केलक अछि। तँए, लगले फल पाबि रहल अछि। सुमन्तक जंग छोड़बैमे पर्याप्त समय आ साधना लागत। तखैन जा कऽ अभीष्ट फल निकलत।”



जीवकक परीक्षा

आदर्श शिक्षक खाली अध्ययने नै छात्रकेँ ओइ विद्यामे एहेन पारंगत बना दैत, जइसँ ओ स्वर्ण बनि चमैक उठैत। तक्षशिला विश्वविद्यालयमे सात बरख आयुर्वेदक शिक्षा पाबि आचार्य वरस्पैत जीवकक परीक्षा लऽ कऽ विदा करबाक समय निकाललैन। समय निकालि गुरु (वरस्पैत) जीवककेँ हाथमे खुरपी दैत कहलखिन-

“एक योजनक बीच एकटा एहेन पौघा उपाड़ि कऽ नेने आउ जेकर औषधि नै बनैत हुअए।”

खुरपी लऽ जीवक विदा भेल। मास दिन घुमैत रहल मुदा एक्कोटा एहेन गाछ नै भेटलै जेकर औषधि नै बनैत होइ। मास दिन पछातइ जीवक घुमि कऽ आबि वरस्पैतकेँ कहलकैन-

“गुरुदेव, हमरा एक्कोटा एहेन गाछ नै भेटल जेकर औषधि नै बनैत होइ।”

जीवककेँ गरदैन लगबैत वरस्पैत कहलखिन-

“वत्स, अहाँ सफल भेलौं। आब अहाँ जाउ, आयुर्वेदक प्रचार करू।”



तप

श्रमे ओ देवता छी जे सभ सिद्धिक स्वामी छी। आयुष्यकेँ पूर्वाद्धेमे एकर सम्पादन-ले विधाता मनुखकेँ शक्ति सम्पन्न बना दइ छथिन। जखने एकर उपेक्षा होइत तखने समाज अबेवस्थित हुअ लगैत। राजा बिराल मुनि बैवस्वतकेँ प्रणाम कऽ चुपचाप बैस गेला। सूक्ष्मदर्शी गुरु -बैवस्वत- बुझि गेलखिन जे कोनो गम्भीर चिन्तामे बिराल पड़ल छैथ।

पुछलखिन- "बिराल, आइ अहाँ अशान्त जकाँ बुझि पड़ै छी। कथीक चिन्ता अछि से हमरो कहू?"

अपन अन्तर्वेदनाकेँ प्रगट करैत बिराल कहलखिन-

"देव, नै जानि किए प्रजाजन अशान्त छैथ। सभ कियो धरम आ शान्तिसँ विमुख भेल जा रहल छैथ। जइसँ धन-धान्यक अभाव आ प्रेम-भाव टुटि रहल अछि। अपराध वृत्ति बढ़ि रहल अछि।"

बिरालक विचार धियानसँ सुनि बैवस्वत कहलखिन-

"जइ देशमे लोक मेहनैतसँ देह चोरौत, श्रमकेँ सम्मान जनक स्थान नै देत, ओइठाम केना समृद्धि भऽ सकैए।"

श्रम ओहन तप छी जइसँ समाजक सभ दोष मेटा जाइत अछि। तँए, श्रमकेँ साधना बुझि सभकेँ ऐमे लगि जेबाक चाही। जइ परिवार, समाज आ देशमे श्रमकेँ जेते महत देल जाएत, ओ ओते उन्नैत करत।



उल्टा अर्थ

शिक्षा केहेन देल जाए, की देल जाए ई गम्भीर प्रश्न छी।

एक गोरेकेँ दूटा सन्तान छल। एक बेटा दोसर बेटी। सम्पन्न परिवार। दुनू सन्तानकेँ बच्चेसँ सुख-सुविधा भेटैत रहल। जइसँ वयस्क होइत-होइत अनेको व्यसनक आदैत लगि गेलइ।

अपन दुनू बच्चाकेँ बिगड़ल देख पिताक मनमे चिन्ता भेलैन। भीतरे-भीतर सोगाए लगला। जइसँ रोगी जकाँ खिन्न हुअ लगला। एक दिन एकटा मित्र पुछलकैन-

“मित्र, अहाँ दिनानुदिन खिन्न किए भेल जा रहल छी?”

मित्रक बात सुनि ओ उत्तर देलकखिन-

“मित्र, सभ किछु अछैतो दुनू बच्चा बिगैड़ गेल अछि। वएह चिन्ता मनकेँ पकड़ने अछि।”

दुनू गोरे विचारि तँइ केलक जे दुनू बच्चाकेँ एक मास महाभारतक कथा, जइमे धरम आ सदाचारक सभ तत्व मौजूद अछि, सुनौल जाए। सएह केलक।

मास दिन महाभारतक कथा सुनला पछातइ दुनू आरो बिगैड़ गेल। बेटा अपना मितकेँ कहलक-

“भगवान श्री कृष्णकेँ सोलह हजार रानी छेलैन तँ दस-बीससँ सम्बन्ध राखब केना अधला हएत?”

तहिना बेटियो अपन बहिनाकेँ कहलक-

"कुन्तीकेँ कुमारियेमे बेटा भेलै जे श्रेष्ठ नारीक श्रेणीमे छैथ तखैन हम कोन अधला काज करै छी।"

आब प्रश्न उठैत जे एना किए भेल?

अखैन धरि जे कथा श्रवणक बेवहार अछि ओ अपूर्ण अछि। दृष्टिकोण बदलैले एहेन प्रभावी वातावरण बनबए पड़त जइमे कथाक चर्च आ क्रियामे समुचित समन्वय हेबाक चाही। तखने दृष्टिकोण बदलत आ समुचित उपयोगी बनत।



जाति नहि पानि

वुद्धदेवक प्रमुख शिष्य आनन्द श्रावस्तीमे भिक्षाटन करैत रहैथ। गरमी मास तँए रौदो तीख। हुनका पिआस लगलैन। लगमे पानिक कोनो जोगार नै देख किछु आगू बढ़ला। एकटा युवतीकेँ इनारपर पानि भरैत देखलखिन। पानि देख मनमे सवुर भेलैन। इनार लग पहुँच ओइ युवतीकेँ आनन्द कहलखिन-

“दाय, हमरा बड़ जोर पिआस लगल अछि कनी पानि पियाउ?”

पानि नै दऽ ओ युवती कहलकैन-

“साधुबाबा, हम चण्डालक बेटी छी हम्मर छुबल पानि केना पीब?”

कनीकाल गुम्म रहि आनन्द कहलखिन-

“बुच्ची, हम तोरा तँ जाति नै पुछलियह। पानि मंगलियह।”

पिआससँ तरसैत आनन्दकेँ देख ओइ युवतीकेँ दया लगल। मुदा मनमे विचित्र द्वन्द्व उपैक गेलइ। अन्तमे ओ पानि भरि आनन्दकेँ देलकैन, पानि पीब आनन्द तृप्त भऽ गेला।

महात्मा नारायण स्वामी कहने छैथ जे जाति-पाति आ अस्पृश्यताक बन्धन हिन्दू जाति-ले कलंक छी। यएह बन्धन सभ जातिकेँ छिन्न-भिन्न केने अछि। एकरे चलैत सभ जातिक बीच घृणा आ द्वेष पसरल अछि।



ऊँच-नीच

एक राति, जखन पुजेगरी मन्दिरक केबाड़ बन्न कऽ चलि गेल, स्तम्भक माने खुट्टाक पाथर देवमूर्ति बनल पाथरसँ पुछलक-

“की भाय, हम सभ तँ एक्के पहाड़क पाथर छी। फेर अहाँक पूजा होइए आ हम जे मकानक -मन्दिरक- भार उठैने छी से हम्मर कोनो मोजरे नहि?”

देवताक आसनपर बैसल पाथर मने-मन विचार करए लगल। मुदा प्रश्नक जवाब नै बुझि कहलक-

“भाय, हम ऐ रहस्यकेँ नै जनै छी। पुजेगरी विद्वान छैथ हुनकासँ बुझि काल्हि कहब।”

प्रातःकाल पुजेगरी आबि पूजा करए लगल। फूल-पात चढ़ा, दुनू हाथ जोड़ि पुजेगरी धियान केलैन आकि देव-पाथर पुछलखिन-

“मन्दिरमे जेते पाथर अछि सभ तँ गुण-जातिसँ एक्के अछि। फेर हम किए पूजणीए छी?”

पुजेगरी-

“हे देव, अपने बड़ पैघ बात पुछलौं। एक गुण, घर्म आ जातिक सभ वस्तुक उपयोग एक्के पद-ले हुअए, ई सर्वथा असम्भव अछि। प्रकृति केकरो एक रंग नै रहए दइए। जे मनुखोमे अछि। बहुतो मनुखमे एक तरहक प्रतिभा आ गुण-घर्म होइए मुदा ओहूमे अपन श्रेष्ठ कर्मक कारणे कियो सभसँ आगू बढ़ि जाइत आ कियो पाछू पड़ि जाइत। तँए एकर अर्थ ई नै जे ओ -पाछू पड़ल- अपनाकेँ हेय बुझए।

किएक तँ परिवर्त्तन सृष्टिक निअम छिऐ। आइ जे ऊपर अछि ओ काल्हियो ऊपरे रहत एकर कोनो गारंटी नै छइ। तहिना जे निच्चाँ अछि ओ सभ दिन निच्चेँ रहत सेहो बात नहि।”



पागलखाना

एकटा छोट-छीन देश आनन्द लोक। देशमे लोकक संख्या जमीने अनुकूल। उर्वर माटि मीठ पानि, मधुर हवाक मिलान तँए मनुखसँ लऽ कऽ गाछ-बिरीछ, फल-फूल, जीव-जन्तु धरि आनन्दसँ रहैत। दुनियाँक आन देशमे तँ ढेरो सम्प्रदाय अछि मुदा ओइ देशमे दुइएटा। दू सम्प्रदाय रहनौं कहियो अपनामे झगड़ा-झंझट नै होइत। एक्के इनारक पानि पिऐत, एक्के पोखैरमे नहाइत। एक्के स्कूलमे पढ़ैत आ मौका-कुमौका एक्के जहलोमे रहैत। तेतबे नहि, बाढ़ि, रौदी, बिहाड़ि, शीतलहरी सेहो संगे झेलैत।

एक दिन दुनू सम्प्रदायक बीच एकटा गाममे झगड़ा अइले भऽ गेलै जे दुनू अपन-अपन सम्प्रदायकेँ दोसरसँ पैघ कहए लगलै। एकठामसँ झगड़ा शुरू भेल आ सगरे देश पसैर गेल। झगड़ोक रूप बदलए लगलै। गारि-गरौवैलसँ पटका-पटकी होइत खून-खच्चर हुअ लगलै। अन्तमे दुनू सम्प्रदाय दू देश बना लेलक।

दुनू देशक सिपाही सिमापर बाँसक खुट्टा गारि-गारि सिमान काएम करए लगल। अदहासँ जखन आगू बढ़ल तँ सिमापर एकटा पागलखाना पड़ैत रहए।

दुनू देशक सिपाही पगलखन्नाक बगलमे बैस विचारए लगल जे ऐठाम केना सिमा काएम करब? दुनूमे सँ कियो अपना दिस पगलखन्ना लेमए नै चाहैत।

दुनूक बीच विवाद शुरू भेल। दुनू अपन काज रोकि अपना-

अपना सरकारकेँ खबैर देलक। सरकार पागलक संख्या पता लगबए चाहलक जे दुनू सम्प्रदायक कए-कए गोट पागल अछि। तइले आदेश देलक। दुनू देशक सिपाही मिलि कऽ पागलखाना जा पुछलक-

“अपन-अपन सम्प्रदायक नाओं कहू?”

सभ पागल हल्ला करैत कहए लगलै-

“अरे बेकूफ, भाग एतऽ सँ हम सभ एक छी आ एक रहब।”



परिचय



नाओं : जगदीश प्रसाद मण्डल
जन्म : 5 जुलाई 1947 ई.,
माता : स्व. मकोबती देवी।
पिता : स्व. दल्लू मण्डल।
पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।
पता : गाम- बेरमा, भाया- तमुरिया,
प्रखण्ड- लखनौर, अनुमण्डल- झंझारपुर,
जिला- मधुबनी, (बिहार) पिन : 847410, **मो.** 9931654742

मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा। **जीविकोपार्जन :** कृषि (मुख्यत: तरकारी खेती) **शिक्षा :** एम.ए. द्वय (हिन्दी, राजनीति शास्त्र) **साहित्य लेखन :** 2001 ईस्वीक पछाइतसँ...। **सम्मान/पुरस्कार :** 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड', 'वैदेह सम्मान', 'यात्री सम्मान', 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार' तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सम्मानित/पुरस्कृत।

मौलिक रचना संसार- 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर- नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन- उपन्यास। 26. कल्याणी, 27. सतमाए, -28. समझौता, 29. तामक तमघैल, 30. बीरांगना- एकांकी। 31. तरेगन, 32. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 33. शंभुदास, 34. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 35. गामक जिनगी, 36. अर्द्धांगिनी, 37. सतभैंया पोखैर, 38. गामक शकल-सूरत, 39. अपन मन अपन धन, 40. समरथाइक भूत, 41. अप्पन-बीरान, 42. बाल गोपाल, 43. भकमोड़, 44. उलबा चाउर, 45. पतझाड़, 46. लजबिजी, 47. उकड़ू समय, 48. मधुमाछी, 49. पसेनाक धरम, 50. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 51. फलहार, 52. खसैत गाछ, 53. एगच्छा आमक गाछ, 54. शुभचिन्तक, 55. गाछपर सँ खसला, 56. डभियाएल गाम, 57. गुलेती दास, 58. मुड़ियाएल घर, 59. बीरांगना, 60. स्मृति शेष, 61. बेटीक पैरुख, 62. क्रान्तियोग, 63. त्रिकालदर्शी, 64. पैंतीस साल पछुआ गेलौं- लघु कथा संग्रह। ○○○



पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड न. 06,
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

₹ 251

ISBN : 978-93-87675-19-3